विश्व भाषा हिन्दी

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

गवेषणा पुस्तक माला–4

विश्व भाषा हिन्दी

संपादक

वशिनी शर्मा

संपादन सहयोग

आशुतोष शुक्ल

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

प्रथम संस्करण : 1999

मूल्य : रु० 75-00

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हिन्दी संस्थान मार्ग, आगरा–282 005 द्वारा प्रकाशित और राष्ट्र भाषा प्रेस, राजामण्डी, आगरा–282 002 से मुद्रित

आमुख

('गवेषणा' विश्व भाषा हिन्दी विशेषांक से)

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, नागपुर (1975), द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन, **मारीशस** (1976), तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन, **दिल्ली** (1983) और चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन, **मारीशस** (1993) में आयोजित किए गए। इसी क्रम में पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन **ट्रिनिडाड और टुबेगो** में दिनांक 4 अप्रैल से 8 अप्रैल, 1996 तक ट्रिनिडाड की स्वायत्त संस्था **'हिन्दी निधि'** और **'विश्वविद्यालय वेस्टइंडीज'** मिलकर कर रहे हैं। **'हिन्दी निधि'** के अध्यक्ष श्री चनका सीताराम ने दिनांक 23 नवम्बर, 1995 के पत्र द्वारा मुझसे अनुरोध किया कि केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की शोध पत्रिका का इस अवसर के लिए एक विशेषांक निकाला जाए। इसी संदर्भ में **'गवेषणा'** का **'विश्व भाषा हिन्दी विशेषांक'** समर्पित है।

हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संस्थान हिन्दी के अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान का मान्यता प्राप्त एवं प्रतिष्ठा प्राप्त उच्च स्तरीय केन्द्र है। संस्थान राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा के अखिल भारतीय स्वरूप की पहचान स्थापित करने, अखिल भारतीय व्यवहार तथा भारत की सामासिक संस्कृति की संवाहिका के रूप में उसका प्रचार-प्रसार करने तथा हिन्दी भाषा के साहित्य के साथ अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यों का उच्चतर अध्ययन सम्पन्न करने तथा इन कार्यों के माध्यम से भारत की राष्ट्रीय एकता एवं एकीकरण में हिन्दी की भूमिका को सार्थक एवं सुदृढ़ रूप में विकसित करने के लिए संकल्पित है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विदेशों में हिन्दी भाषा तथा उसके माध्यम से आधुनिक भारत की चेतना एवं उसके मूल्यों को प्रसारित करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है। विगत 25 वर्षों में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा 60 देशों के 1207 छात्रों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

गवेषणा का यह **'विशेषांक'** अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में शैक्षिक एवं प्रयोजनवती भाषा के रूप में हिन्दी की सार्थक भूमिका का आकलन करने के उद्देश्यों की प्राप्ति में कितना सफल सिद्ध हुआ है— इसका निर्णय तो विद्वान पाठक ही करेंगे; समय और साधन की सीमा के भीतर काम करते हुए हम यह विशेषांक निकाल सके हैं— यह हमारे लिए संतोष का विषय है।

मैं **गवेषणा** के 'विश्व भाषा हिन्दी विशेषांक' के सभी लेखकों, सम्पादकों तथा संस्थान के प्रकाशन विभाग के सदस्यों को साधुवाद देता हूँ। निर्धारित दायित्वों के अनुसार अपना कार्य अत्यन्त निष्ठा एवं श्रम के साथ सम्पन्न करने वालों में **गवेषणा** के सम्पादक डॉ. सीताराम शास्त्री तथा प्रकाशन प्रबन्धक डॉ. देवेन्द्र कुमार शर्मा के नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय हैं।

20 मार्च, 1996

महावीर सरन जैन
निदेशक

आमुख

हिन्दी भाषा की अर्थवत्ता, हिन्दी-उर्दू का सम्बन्ध, हिन्दी भाषा क्षेत्र तथा हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र आदि बिंदुओं को लेकर न केवल सामान्य व्यक्ति के मन में बहुत सी भ्रान्त धारणाएँ बनी हुई हैं बल्कि हिन्दी भाषा के कतिपय विद्वानों, आलोचकों तथा अध्येताओं का मन भी तत्संबंधित भ्रान्तियों से मुक्त नहीं है। हिन्दी की विश्व भाषा की भूमिका के सम्बन्ध में विचार करते समय इन भ्रान्त धारणाओं का निराकरण आवश्यक है।

मानक हिन्दी की मूलाधार बोली हिन्दी भाषा की खड़ी बोली है किन्तु खड़ी बोली ही हिन्दी नहीं है। भारत के (1) उत्तर प्रदेश, (2) बिहार, (3) मध्य प्रदेश, (4) राजस्थान, (5) हिमाचल प्रदेश, (6) हरियाणा, (7) दिल्ली, (8) चंडीगढ़— ये सभी हिन्दी भाषी राज्य/संघ शासित प्रदेश हैं।

हिन्दी भाषा का क्षेत्र बहुत व्यापक है तथा हिन्दी क्षेत्र में ऐसी बहुत सी उप-भाषाएँ हैं जिनमें पारस्परिक बोधगम्यता का प्रतिशत बहुत कम है किन्तु ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पूर्ण भाषा-क्षेत्र एक भाषिक इकाई है तथा इस हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र के बहुमत भाषा-भाषी अपने-अपने क्षेत्रीय रूपों को हिन्दी भाषा के रूप में मानते एवं स्वीकार करते आए हैं।

मातृभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करने वालों की संख्या का प्रतिशत उत्तर-प्रदेश में 90.11, बिहार में 80.86, मध्य प्रदेश में 85.55, राजस्थान में 89.56, हिमाचल प्रदेश में 88.88, हरियाणा में 91.00, दिल्ली में 81.64 तथा चंडीगढ़ में 61.06 है।

भाषिक दृष्टि से उर्दू अलग भाषा नहीं है अपितु हिन्दी भाषा क्षेत्र की 'खड़ी बोली' (दिल्ली के चतुर्दिक व्यवहृत जनभाषा) पर आधारित फारसी लिपि में लिखी जाने वाली एक शैली है जिसमें अरबी-फारसी के शब्दों के प्रयोग के प्रति झुकाव रहता है।

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कारणों से सम्पूर्ण भारत में मानक हिन्दी के व्यावहारिक रूप का प्रसार बहुत अधिक है। भारत में किसी भी क्षेत्र में व्यावहारिक हिन्दी को बोलकर कोई व्यक्ति यात्रा कर सकता है, किसी भी क्षेत्र के शहर के बाजार में जाकर सामान खरीद सकता है, किसी रेलवे स्टेशन पर कुली तथा टैक्सी एवं रिक्शे वालों से बात कर सकता है, किसी भी होटल में जाकर बातचीत कर सकता है, किसी भी सरकारी अथवा अर्द्धसरकारी कार्यालय में जाकर सूचना प्राप्त कर सकता है। हिन्दीतर भाषी राज्यों में बहुसंख्यक द्विभाषिक-समुदाय द्वितीय भाषा के रूप में अन्य किसी भाषा की अपेक्षा हिन्दी का अधिक प्रयोग करता है जो हिन्दी के सार्वदेशिक व्यवहार का प्रमाण है। भारत के इन राज्यों

में से कुछ राज्य ऐसे भी हैं जिनमें उनकी आबादी के 5 प्रतिशत से अधिक ऐसे निवासी हैं जो हिन्दी-उर्दू का मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। इस दृष्टि से महाराष्ट्र (15.09%), कर्नाटक (11.93%), आन्ध्र प्रदेश (11.13%), पश्चिम बंगाल (8.72%), गोवा (7.13%), पंजाब (7.29%) राज्यों तथा अंडमान निकोबार (17.63%) तथा दादर-नागर हवेली (05.05%) केन्द्र शासित प्रदेशों का उल्लेख करना प्रासंगिक है।

सन् 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की पूरी आबादी 83,85,83,988 है और मातृभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करने वालों की संख्या 33,72,72,114 है तथा उर्दू को स्वीकार करने वालों की संख्या 04,34,06,932 है। हिन्दी एवं उर्दू को मातृभाषा के रूप में स्वीकार्य करने वालों की संख्या का योग 38,06,79,046 है जो भारत की पूरी आबादी का 44.98 प्रतिशत है।

अंग्रेजी भाषियों की पूरे विश्व की संख्या 33,70,00,000 है। (गिनीज बुक ऑफ नालिज, 1997 पृष्ठ 57) ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, आयरलैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, आदि सभी देशों के अंग्रेजी भाषियों की संख्या के योग से अधिक जनसंख्या केवल भारत में हिन्दी एवं उर्दू भाषियों की है।

भारत की राजभाषा हिन्दी है तथा पाकिस्तान की राज्यभाषा उर्दू है। इस कारण हिन्दी-उर्दू भारत एवं पाकिस्तान में संपर्क भाषा के रूप में व्यवहृत हैं। भारत एवं पाकिस्तान के अलावा हिन्दी एवं उर्दू मातृभाषियों की बहुत बड़ी संख्या 1. बंगलादेश, 2. नेपाल, 3. मारीशस, 4. फिजी, 5. गयाना, 6. सूरीनाम, 7. त्रिनिडाड एवं टुबेगो, 8. म्यंमार, 9. भूटान, 10. बहरीन, 11. कुवैत, 12. ओमान, 13. कतार, 14. सऊदी अरब गणराज्य, 15. दक्षिण अफ्रीका, 16. श्रीलंका तथा अन्य अनेक देशों में है जहाँ आप्रवासी भारतीय एवं आप्रवासी पाकिस्तानी विशाल संख्या में निवास करते हैं तथा आपसी व्यवहार के लिए हिन्दी-उर्दू का प्रयोग करते हैं।

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, नागपुर (1975), द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन, मारीशस (1976), तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन, दिल्ली (1983), चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन, मारीशस (1993) तथा पंचम विश्व हिन्दी सम्मेलन, त्रिनिडाड और टुबेगो (1996) में आयोजित किए गए। इसी क्रम में छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन लन्दन में 14 सितम्बर से 18 सितम्बर, 1999 तक आयोजित है जिसका विशेष महत्व है।

'गवेषणा' संस्थान की शोध पत्रिका है। यह पत्रिका 1962-63 से निरन्तर निकल रही है। इस पत्रिका में विविध विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा लिखित शोध-पत्रों का प्रकाशन होता रहा है। विगत तीन दशाब्दियों में जो अमूल्य शोध सामग्री छपती रही है, उसको अब **'गवेषणा पुस्तक माला'** के रूप में पुनः मुद्रित कर संस्थान सुधी पाठकों के उपयोगार्थ प्रस्तुत कर रहा है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने पाँचवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर **'गवेषणा'** का विश्व भाषा हिन्दी विशेषांक प्रकाशित किया था जिसकी अधिकांश प्रतियाँ त्रिनीदाद में सम्मेलन के

प्रतिभागियों में वितरित कर दी गई थीं। विभिन्न विद्वानों की माँग थी कि इसका पुस्तक रूप में प्रकाशन किया जाए। छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर 'विश्व भाषा हिन्दी' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें गवेषणा में प्रकाशित लेखों को अद्यतन बनाने का प्रयास किया गया है तथा कुछ नए लेख जोड़े गए हैं। सभी लेख विभिन्न देशों में हिन्दी के व्यवहार तथा इसके शिक्षण-प्रशिक्षण की स्थिति का प्रतिबिंबन करते हैं।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की ओर से 'विश्व भाषा हिन्दी' का प्रकाशन करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि उक्त पुस्तक अपने आकार में भले ही बहुत छोटी है मगर यह अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में शैक्षिक एवं प्रयोजनशील भाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका का आकलन करने में समर्थ होगी। मैं इसके सभी लेखकों, सम्पादकों तथा संस्थान के प्रकाशन विभाग के सदस्यों को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने निर्धारित दायित्वों के अनुसार अपना कार्य निष्ठा एवं श्रम के साथ सम्पन्न किया है।

(महावीर सरन जैन)
निदेशक

स्वागतं ते जायताम्

('गवेषणा' विश्व भाषा हिन्दी विशेषांक से)

1. त्रिनिदाद और टुबैगो की पावन धरती पर एकत्र उन सभी हिंदी प्रेमियों एवं विद्वानों का **गवेषणा** परिवार की ओर से स्वागत है जो हिंदी को एक सक्षम शासकीय भाषा के साथ-साथ प्रेम और विश्व बंधुत्व के प्रतीक के रूप में घोषित करने के लिए आत्मार्पित हैं। इसी प्रयास में **गवेषणा** का यह विशेषांक समर्पित है।

2. हिंदी मात्र एक देश की भाषा नहीं है। हिंदी के बारे में सोचने, बोलने या करने का तात्पर्य एक नये विश्व धर्म और अंतर्राष्ट्रीय अनुशासन तथा मानवीय समरसता का सूत्रपात करना है। इस तथ्य को समझने के लिए विश्व के रंगमंच पर भाषाओं की अस्मिताओं के मध्य हिंदी की स्थिति और प्रतिष्ठा को समझने की आवश्यकता है।

3. सर्वप्रथम विश्व जनसंख्या में भारत की स्थिति का आकलन करें। विश्व की 5 अरब, 71 करोड़, 64 लाख जनसंख्या में भारत की जनसंख्या 93 करोड़ 50 लाख है जो विश्व जनसंख्या का 16 प्र. शं. है। भारत की तुलना में समृद्ध माने जाने वाले कतिपय देशों का जनबल देखिए— अमेरिका 26 करोड़ 33 लाख, ब्रिटेन 5 करोड़ 83 लाख, रूस 14 करोड़ 80 लाख, जापान 12 करोड़ 51 लाख, जर्मनी 8 करोड़ 16 लाख, फ्रांस 5 करोड़ 80 लाख, कनाडा 2 करोड़ 95 लाख। मानव जनबल में भारत के साथ इन देशों की तुलना करना ही निरर्थक है। केवल चीन, जिसकी जनसंख्या 1 अरब 22 करोड़ 15 लाख है, के साथ हमारी तुलना हो सकती है। गरीबी एवं अशिक्षा को छोड़ दें तो भारत एवं चीन विश्व के महानतम देश हैं। विश्व का भविष्य इन्हीं दो देशों के हाथों में है।

4. अब हम विश्व की भाषाओं की बात करेंगे। विश्व में 2500 से 5000 भाषाओं/बोलियों का अनुमान है। अमेरिकी भाषाविदों ने 2796 भाषाओं की सूची बनाई है। इनमें दस लाख से अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ 160 से अधिक नहीं हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला गया है कि विश्व में प्रमुख भाषाओं को बोलने वाले मात्र 15 प्र. श. हैं, शेष 85 प्र. श. गौण भाषाएँ बोलने वाले हैं। हिंदी उन प्रमुख भाषाओं में आती है जिन्हें 15 प्र. श. लोग बोलते हैं।

5. विश्व के मानचित्र में मातृभाषा के रूप में प्रयुक्त भाषाओं की स्थिति मनोरंजक है। विश्व के धरातल पर हिंदी के विस्तार को समझने के लिए यह जानना अनिवार्य है।

भारत में मातृभाषा के रूप में लगभग 1652 भाषाएँ/बोलियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं। इनमें 33 भाषाएँ ऐसी हैं, जिनके प्रयोक्ता एक-एक लाख से अधिक हैं। भारत में 41 करोड़ 80 लाख लोगों की मातृभाषा हिंदी है। विश्व के संदर्भ में कहा जाता है कि चीनी 1 अरब 16 करोड़ 70 लाख तथा अंग्रेजी 47 करोड़ लोगों की मातृभाषा है। अत: हिंदी को तीसरे स्थान पर रखा गया है। वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। अँग्रेजी ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, आयरलैंड, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड इन छह देशों की भाषा है। उर्दू और पंजाबी को मिलाकर भारत के आप्रवासी देशों में मातृभाषा हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 80 करोड़ से कम नहीं है। इस दृष्टि से हिंदी विश्व में द्वितीय स्थान की अधिकारिणी है। यदि मान भो लें कि हिंदी मात्र 41 करोड़ 80 लाख जन की मातृभाषा है, तब भी विश्व की मातृभाषाओं में इसका अपना विशिष्ट स्थान है। विश्व की प्रमुख 130 भाषाओं को मातृभाषा के रूप में 5 अरब 83 करोड़ 10 लाख लोग प्रयोग करते हैं। इनमें हिंदी का मान निकालें तो वह 7.20 प्र. श. निकलता है। यदि पूरे भारत की मातृभाषाओं का मान देखें तो लगभग उनका प्रतिशत 21 आता है। सारांश यह है कि 7.20 प्रतिशत लोग हिंदी को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। इस दृष्टि से देखें तो विश्व मंच पर शिक्षा, शासन, वाणिज्य, व्यापार, उद्योग, प्रौद्योगिकी आदि में हिंदी का अधिकारिक स्थान सुरक्षित होना चाहिए।

6. अब हम गवेषणा के इस विशेषांक का परिचय देंगे—

(1) हिंदी ही नहीं भारत की प्रमुख भाषाओं का दावा उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है। इसी पृष्ठभूमि में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन नागपुर में (1975), द्वितीय सम्मेलन मारिशस में (1976), तृतीय सम्मेलन दिल्ली (1983) में और चतुर्थ सम्मेलन मारिशस (1993) में आयोजित किये गए। इसी क्रम में तमिल, मलयालम, तेलुगु, मराठी आदि भारतीय समृद्ध भाषाओं के अनेकों विश्व सम्मेलन आयोजित किये गए। विश्व के किसी भी देश में इतने विश्व सम्मेलन न भूतो न भविष्यति। विगत चार विश्व सम्मेलनों की उपलब्धियों का हमने इस अंक में पहली बार जायजा लिया है।

(2) इस विशेषांक की विषयवस्तु प्रो. महावीर सरन जैन के 'आधार-पत्र' के बाद शुरू होती है। प्रो. जैन ने हिंदी भाषा तथा साहित्य के शिक्षण के संदर्भ में विश्व के देशों को सात भागों में बाँट कर उनमें हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन पर प्रकाश डाला है। इस अंक के लेख लगभग उसी क्रम में रखने का प्रयास किया गया है। इसी आधार लेख में पिछले 25 वर्षों से संस्थान में विदेशियों को हिंदी सिखाने का भी विस्तृत विवरण दिया गया है।

(क) आतिथेय देश त्रिनिदाद, मॉरिशस आदि आप्रवासी देशों की कुल जनसंख्या 44 लाख 10 हजार है। साक्षरता 87 प्र. श. है। इनमें अँग्रेजी, फ्रेंच, क्रियोल आदि

राजभाषाएँ प्रचलित हैं, लेकिन बहुसंख्यक लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। इस संदर्भ में चार लेख इन देशों में हिंदी की स्थिति पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं। सुदूरस्थ ये हमारे सगे लघु देश कई क्षेत्रों में भारत से अधिक समृद्ध हैं।

(ख) पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, बांग्लादेश, मालदीव आदि छह भारत के पड़ोसी देश राजनीतिक रूप से **दक्षेस या सार्क** के रूप में जाने जाते हैं। भारत समेत इन सात देशों की जनसंख्या 1 अरब 23 करोड़ 81 लाख 12 हजार है। इन देशों की साक्षरता 52.32 प्र. श. है। हजारों सालों से सांस्कृतिक संबंध की प्रगाढ़ता के कारण हिंदी इन देशों में अति लोकप्रिय है। इस चिर परिचित तथ्य को संक्षेप में समझाने का प्रयास किया गया है।

(ग) एशिया महाद्वीप में इंडोनेशिया, मलेशिया, कंबोडिया, थाइलैंड आदि देश सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के इष्ट मित्र हैं। राजनीतिक दृष्टि से **आसियान** संगठन के ये सदस्य हैं। इन देशों की जनसंख्या 28 करोड़ 96 लाख है। साक्षरता 77.8 प्र. श. है। इनके हजारों लघुद्वीप समूहों में सैकड़ों बोलियाँ बोली जाती हैं। हिंदी का प्रचार इन देशों में निराशाजनक है। आधुनिक रूस, जापान, तुर्की आदि देशों में हिंदी का अध्ययन प्रगति पर है।

(घ) यूरोप महाद्वीप के देशों में हिंदी की स्थिति के संबंध में अन्यत्र काफी लिखा गया है, तथापि संक्षेप में कतिपय देशों की यहाँ चर्चा की गई है। एक विस्तृत लेख में अमेरिका महाद्वीप के देशों में हिंदी के शिक्षण का परिचय दिया गया है।

(3) इस विशेषांक के लगभग सभी शोध-लेख पहली बार लिखे गये हैं। सर्वेक्षणात्मक इन लेखों में अधिक से अधिक सूचनाएँ देने का प्रयास किया गया है। अधिकांश लेखकों को विदेशों में रहकर हिंदी शिक्षण का सुदीर्घ अनुभव है। हमारे इन विद्वान मित्रों एवं सहकर्मियों के सहयोग से यह विशेषांक एक मौलिक कृति बन सका है। **गवेषणा** परिवार इन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

(4) इस अंक का "विविधा" स्तंभ विश्वस्तर पर हिंदी के प्रसार और उसके स्वरूप गठन में आधुनिक इलैक्ट्रानिक जनसंचार माध्यम प्रत्यक्ष, परोक्ष रूप में देश विदेशों में क्या प्रभाव डाल रहा है, इसका इस अंक के संबंधित लेख से कुछ अनुमान लगाया जा सकता है, लेकिन इसके व्यापक प्रभाव को भविष्य के लिए छोड़ना उचित होगा। आगे के एक-दो दशकों में विश्व-भाषा के रूप में हिंदी का क्या स्वरूप होगा, यह कम महत्व की बात न होगी। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली पत्राचार द्वारा तथा भारत सरकार राजभाषा नीति के क्रियान्वयन द्वारा देश और विदेशों में हिंदी के प्रसार के लिए जो प्रयास कर रहे हैं, उसका आकलन इस विविधा में पठनीय है।

(5) विगत सभी सम्मेलनों में कुछ शब्दों की आवृत्ति बार-बार हुई है—'हिंदी प्रेम की भाषा है', 'हिंदी वसुधैव कुटुंबकम् का प्रतीक है', 'हिंदी सौहार्द, मैत्री, सहयोग का माध्यम है' आदि-आदि। गवेषणा परिवार की हार्दिक कामना है कि त्रिनिदाद की पावन धरती पर हिंदी के ये दायित्व वास्तविक कर्म क्षेत्र में दो कदम और आगे बढ़ें। इस भगीरथ प्रयास पथ पर **गवेषणा** का यह अंक एक किरण भी बन सके तो हम अपना प्रयास सफल मानेंगे।

संस्थान के निदेशक प्रो. महावीर सरन जैन की सतत अनुप्रेरणा तथा सहायक संपादक डॉ. रविप्रकाश श्रीवास्तव एवं संपादन सहायक (कु.) वीना माथुर के निरंतर सहयोग से यह विशेषांक समय पर निकल सका। मैं इनका आभारी हूँ। यह अंक समय पर और सुन्दर निकला इसके प्रयासों के लिए मैं प्रकाशन विभाग की प्रशंसा करता हूँ।

— सीताराम शास्त्री

भूमिका

विगत अप्रैल 1996 को त्रिनिदाद में पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया था। उसी संदर्भ में केंद्रीय हिंदी संस्थान ने अपनी शोध पत्रिका 'गवेषणा' का 'विश्व भाषा हिंदी' शीर्षक से एक विशेषांक निकाला था। उक्त विशेषांक की 300 प्रतियाँ सम्मेलन के प्रतिनिधियों में वितरित की गई थीं। विश्व की समस्त भाषाओं में भारतीय भाषाओं का स्थान तथा विकसित एवं संपन्न भाषाओं में हिंदी के स्थान तथा महत्व को रेखांकित करना इस विशेषांक का अभिप्रेत था। इस सत्प्रयास में संस्थान कितना सफल रहा, यह इस बात से स्पष्ट होता है कि गवेषणा के इस विशेषांक की प्रतियाँ लघु अवधि में समाप्त हो गईं। पाठकों की निरंतर माँग को देखते हुए यह निर्णय लिया गया कि इसे पुस्तकाकार पुनः मुद्रित किया जाए। इसी उद्देश्य से संस्थान के निदेशक ने इसके संपादन का कार्य मुझे सौंपा था। आदेश के दिशा-निर्देशों के अनुरूप मैंने पत्रिका की सामग्री को पुस्तकाकार प्रस्तुत किया है।

पत्रिका की सामग्री तथा पुस्तक की सामग्री की प्रस्तुति में तकनीकी अंतर होता है। प्रत्येक शोध पत्रिका के स्वरूप और उसके लेखों के अपने-अपने विशिष्ट फार्मेट होते हैं। गवेषणा का भी अपने आकार का एक ले-आउट है। उसके शोध-लेखों के प्रारंभ में सारांश या रूपरेखा दी जाती है और अंत में हिंदी लेख का अंग्रेजी में, तथा अंग्रेजी लेख का हिंदी में सारांश दिया जाता है। गवेषणा के सामान्य अंकों में शोध-लेख के अतिरिक्त चर्चा-परिचर्चा, समीक्षा, चयनिका, समाचार वृत्त आदि स्तंभ होते हैं। स्वाभाविक ही है कि पुस्तक में उक्त स्तंभों की उपयोगिता नहीं रह जाती। अतः इन्हें प्रस्तुत पुस्तक में भी स्थान न देने का निर्णय लिया गया।

संयोग की बात है कि गवेषणा के पूर्वोक्त विश्व भाषा हिन्दी विशेषांक में निदेशक के आमुख और संपादकीय लेख के अतिरिक्त समस्त लेख विषय की प्रकृति या कथ्य के आधार पर एक विशेष क्रम में रखे गये थे— भारतीय प्रवासियों का देश, भारत के पड़ोसी देश, एशिया महाद्वीप, योरप महाद्वीप, अमेरिका महाद्वीप और भारत में स्थित विदेशी भाषा के रूप में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के केंद्र-जैसे केंद्रीय हिंदी संस्थान, केंद्रीय हिंदी निदेशालय आदि।

मेरा प्रयास यह रहा कि संबंधित लेखकों द्वारा ही लेखों को अद्यतन बनाने में सहायता मिले जिसमें कुछ सीमा तक सफलता मिली भी और कई लेखकों ने अपनी सामग्री को अद्यतन बनाया। इन प्रयासों से लेखों के स्वरूप में निखार आया है ऐसा मेरा विश्वास है।

पत्रिका की मूल सामग्री में कुछ परिवर्तन अनुक्रम में किए गए तो कुछ अतिरिक्त सामग्री भी जोड़ी गई, जैसे—जापान और हंगरी में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति से संबद्ध लेख। उपयोगिता तथा उपयुक्तता के आधार पर नवीन सामग्री इस पुस्तक में सम्मिलित की गई है, जैसे—'पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन : एक सिंहावलोकन'। इसी के साथ संस्थान के उन विदेशी छात्र-छात्राओं का हमने सम्मान किया है जो हिंदी के प्रति अपनी आस्था प्रकट करने में किसी से भी पीछे नहीं हैं।

अंत में, मैं इस पुनीत और गुरुतर कार्य को संस्थान के निदेशक के आदेशानुसार संपन्न कर सकी और उनके विश्वास को बनाये रख सकी इसकी मुझे प्रसन्नता है। इस कार्य में गवेषणा के वर्तमान संपादक डॉ. चतुर्भुज सहाय एवं विश्व हिंदी विशेषांक के संपादक डॉ. सीताराम शास्त्री का सहयोग के लिए आभार मानती हूँ। प्रकाशन प्रबंधक एवं प्रकाशन विभाग को भी सहयोग के लिए अनेकानेक धन्यवाद।

अगस्त, 1999

वशिनी शर्मा
संपादक

विषयक्रम

विश्व हिन्दी सम्मेलन : एक सिंहावलोकन

टी. के. नारायण पिल्लै

परिप्रेक्ष्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले ही भारत ने दुनिया की बड़ी शक्तियों का ध्यान आकर्षित कर लिया था। भारतीय राजनेताओं, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों एवं चिंतकों के नाम विश्व विख्यात होने लगे थे। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध, अहिंसा पर आधारित स्वाधीनता का संघर्ष विश्व के इतिहास में अद्वितीय रहा। स्वतंत्र भारत की राजनीतिक सुस्थिरता, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति, विश्व की संघर्षशील शक्तियों के राजनीतिक एवं सामरिक प्रभावों से मुक्त उसकी स्वतंत्र विदेश नीति, और एशिया विशेषकर दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में उसकी भौगोलिक स्थिति आदि ने अन्तर्राष्ट्रीय जंगत में भारत के सम्मान को बढ़ाया है। क्षेत्रीय विस्तार और जनसंख्या की दृष्टि से भारत दुनिया में दूसरे स्थान पर है। लोकतांत्रिक व्यवस्था वाला यह सबसे बड़ा देश है। गुटनिरपेक्ष विदेश नीति के आधार पर नवस्वतंत्र विकासशील देशों को संगठित करने और सामूहिक रूप में विश्व बंधुत्व, विश्व शांति, समता, मानवता एवं आर्थिक न्याय का आन्दोलन चलाने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विश्व की राजनीति में आज भारत की बात का वजन है। ऐसे महान देश की भाषा हिंदी का आदर अन्तर्राष्ट्रीय जगत में होना स्वाभाविक है।

भारत की वर्तमान आर्थिक उदारीकरण की नीति के कारण भी विश्व के महान एवं शक्तिशाली देशों की रुचि भारत में बढ़ी है। अत: स्वाभाविक है कि भारत की भाषा हिंदी की लोकप्रियता अंतर्राष्ट्रीय जगत में बढ़ी है। आज विश्वभर के लगभग 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। इस पृष्ठभूमि में विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजनों का विशेष महत्व है।

जब किसी भाषाई समुदाय का विस्तार हो जाता है और विभिन्न कारणों से यह भाषाई समुदाय विश्व के विभिन्न कोनों में पहुँच जाता है तो उस भाषा का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व बढ़ जाता है। यदि राजनीति, वाणिज्य, उद्योग, प्रशासन, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रो में उसका प्रयोग भी बढ़ता है तो निश्चय ही उस भाषा का एक अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप रूपायित होता है। इस अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को रूपायित करने में, उसका विकास करने में तथा उसे अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता दिलवाने में विश्व स्तर के प्रयासों की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति के रूप में विभिन्न भाषाओं के विश्व सम्मेलनों का आयोजन पिछले 15-20 वर्षों से हो रहा है। हिंदी

को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से आयोजित पाँच विश्व हिंदी सम्मेलनों का प्रयास इस दृष्टि से अत्यन्त प्रशंसनीय रहा है।

भाषा का प्रश्न केवल राजनैतिक अथवा वाणिज्यिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। भारतीय मूल के लोग जो विभिन्न देशों में बस गए हैं, अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान को हिंदी के माध्यम से सुरक्षित रखना चाहते हैं। अपनी मूल भूमि की संस्कृति से बहुत दूर बस जाने की विवशता, उनमें एक प्रकार की बेचैनी और nostalgia पैदा करती है जो अपनी मूल भाषा और संस्कृति से होने वाले अतिशय प्रेम के रूप में प्रकट होती है। यही कारण है कि विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन में प्रवासी भारतीयों के देशों— मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, दक्षिणी अफ्रीका आदि ने विशेष रुचि दिखाई है। भारत की जनता और सरकार का यह पावन कर्तव्य हो जाता है कि उनकी इन भावनाओं का सम्मान करे और विश्व मंच पर हिंदी को उचित स्थान दिलाने में उनकी सहायता करें, क्योंकि भाषा के प्रति इस प्रकार के अतिशय प्रेम रखने वाले ही, भले ही उनकी संख्या कम हो, सांस्कृतिक विकास के कारक बनते हैं।

पाँच विश्व हिंदी सम्मेलनों के बाद यह छठा विश्व हिंदी सम्मेलन लंदन में आयोजित हो रहा है। इस अवसर पर यह समीचीन होगा कि पिछले विश्व हिंदी सम्मेलनों की उपलब्धियों का एक सिंहावलोकन किया जाए। इस सिंहावलोकन के प्रकाश में ही इस सम्मेलन के प्रमुख मुद्दों पर विचार किया जाना चाहिए।

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन–नागपुर (10-13 जनवरी 1975)

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की पहल पर 10 जनवरी 1975 से 13 जनवरी 1975 तक नागपुर में हुआ। सम्मेलन के लिए भौगोलिक दृष्टि से भारत के मध्यभाग में स्थित नागपुर का चयन बहुत ही उचित रहा। सम्मेलन में भारत के कोने-कोने से तीन हजार प्रतिनिधि और पर्यवेक्षक उपस्थित हुए। इनके अतिरिक्त सोवियत संघ, अमरीका, कनाडा, जापान, बंगलादेश, इटली, श्रीलंका, मॉरीशस, त्रिनिदाद आदि 30 देशों के लगभग 122 प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

सम्मेलन का उद्घाटन 10 जनवरी 1975 को मॉरीशस के प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम की अध्यक्षता में संपन्न समारोह में भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। उन्होंने हिंदी को समृद्ध बनाने तथा विश्व की समृद्ध भाषाओं में गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री श्री वी. पी. नायक थे और महासचिव श्री अनन्त गोपाल शेवडे। इस सम्मेलन में यूनेस्को के प्रतिनिधि के रूप में श्री अशय डिलियान ने भी भाग लिया था। उन्होंने हिंदी के विकास की हर संभव सहायता का आश्वासन भी दिया। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मृति में एक विशेष डाक टिकट भी जारी किया गया।

सम्मेलन में तीन दिन तक अनेक विचार गोष्ठियों का आयोजन किया गया। इसके मुख्य विषय थे—

1. हिंदी की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति
2. विश्व मानव की चेतना, भारत और हिंदी।
3. आधुनिक युग और हिंदी : आवश्यकताएँ एवं उपलब्धियाँ।
4. शाश्वत मूल्यों की खोज।
5. जन संचार : जन साधारण में संचार साधनों की भूमिका।
6. विश्व मानव का मूल्यगत और भाषा तथा लेखन के संदर्भ में युवा पीढ़ी की मानसिकता।
7. प्रशासन, विधि और विधायी कार्यों की भाषा।
8. ज्ञान और विज्ञान का माध्यम।
9. भाषा शिक्षण और सहायक सामग्री।

इस सम्मेलन में निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित किए गए—

1. राष्ट्रसंघ में हिंदी को मान्यता प्रदान की जाए।
2. महात्मा गांधी की कर्मभूमि वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना की जाए।
3. सम्मेलन की उपलब्धियों को स्थायित्व प्रदान करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने की दृष्टि से कोई एक स्थायी योजना बनाई जाए।

यह निश्चित है कि सारे देश में एक सद्भावनापूर्ण वातावरण उत्पन्न करने में और भाषाई संघर्ष एवं वैमनस्य के स्थान पर भाषाई सौहार्द, मैत्री एवं सहयोग का युग उदित करने में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन सफल रहा।

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन–मॉरीशस (28-30 अगस्त 1976)

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के बोध वाक्य "वसुधैव कुटुम्बकम्" को स्वीकार किया गया था। जाति, धर्म एवं वर्ण विहीन विश्व परिवार के आदर्श को दृढ़ करने वाली शक्तियों को बल देने में प्रेम सेवा और शान्ति की भाषा हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है यही इस सम्मेलन का विश्वास था। सम्मेलन का उद्घाटन भारत के स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री डॉ. कर्ण सिंह की अध्यक्षता में संपन्न समारोह में मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. सर शिवसागर रामगुलाम ने किया। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री दयानन्द वसन्तराय थे। इस सम्मेलन में मारीशस और भारत के अलावा, इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, इटली, स्वीडन, हंगेरी, केनिया, जाम्बिया, तंजानिया, मेडागास्कर आदि 20 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के चार विचार-सत्रों में निम्नलिखित प्रमुख विषयों पर विचार विनिमय हुआ—

1. हिंदी की अन्तर्राष्ट्रीय शैली और स्वरूप।

2. जन संचार के साधन और हिंदी।

3. स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका।

4. विश्व में हिंदी के पठन-पाठन की समस्याएँ।

सम्मेलन में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित प्रस्तावों का समर्थन किया गया और निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गए—

1. सम्मेलन की यह धारणा है कि जनसंचार के सभी साधनों का हिंदी के प्रचार-प्रसार में उपयोग हो ताकि वह एक विश्व और एक परिवार की उदात्त भावना का प्रचार प्रसार कर सके।

2. हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भारत, मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद, गयाना आदि देशों की स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इन सभी संस्थाओं को उनके देश की सरकारों के द्वारा तथा जनता के द्वारा समुचित सहायता मिलनी चाहिए।

3. विश्व के अनेक देशों में हिंदी के पठन-पाठन संबंधी अनेक समस्याएँ हैं। पाठ्य पुस्तकों, वैज्ञानिक उपकरणों आदि की समस्याएँ शीघ्र दूर की जानी चाहिए।

4. मॉरीशस में एक विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना हो जो विश्व की हिंदी-गतिविधियों का समन्वय कर सके।

5. एक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका प्रकाशित की जाए जो भाषा के माध्यम से ऐसे वातावरण का निर्माण करे जिसमें मानव, विश्व का नागरिक बना रह सके और विज्ञान और अध्यात्म की महान शक्ति एक नए समन्वित सामंजस्य का रूप धारण कर सके।

6. हिंदी की स्वैच्छिक संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में मॉरीशस के हिंदी साहित्य का समावेश किया जाए।

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन–दिल्ली (20-30 अक्तूबर 1983)

यह अभी तक आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलनों में सबसे विशाल था। इसका आयोजन 28 से 30 अक्तूबर 1983 तक नई दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष केंब्रिज़ विश्वविद्यालय के डॉ. आर. एस. मेग्रेगर थे। सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की कुल संख्या 6566 थी जिनमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिनिधियों के अतिरिक्त विभिन्न देशों के 260 प्रतिनिधियों की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय थी।

इस सम्मेलन में जो त्रिदिवसीय विचार-गोष्ठियों का आयोजन किया गया था उन्हें दो खण्डों में विभाजित किया गया था : (क) खुला अधिवेशन और (ख) समानान्तर गोष्ठियाँ। खुले अधिवेशन में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा हुई—

1. अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के प्रसार की संभावनाएँ और प्रयास।

2. भारत के सांस्कृतिक संबंध और हिंदी

3. मानव मूल्यों की स्थापना में हिंदी की भूमिका।

समानान्तर गोष्ठियों के सत्रों में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा हुई—

1. भारत में हिंदी भाषा, साहित्य, शिक्षण तकनीकी, पत्रकारिता, स्वैच्छिक संस्थाओं का योगदान, देवनागरी लिपि आदि से संबंधित 6 सत्र।

2. भारतीय मूल के जन समुदाय में हिंदी का प्रसार : समस्याएँ एवं संभावनाएँ— एक सत्र।

3. संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में हिंदी का प्रयोग : संभावनाएँ— एक सत्र।

4. हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ : आदान प्रदान— 6 सत्र।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में हिंदी की महान कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा उपस्थित रहीं। समारोह में 41 विद्वानों का अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया जिनमें हिंदी के विख्यात साहित्यकार भाषाविद्, पत्रकार, वैज्ञानिक, विदेशी और हिंदीतर भाषी हिंदी विद्वान, प्रचारक तथा अन्य भारतीय भाषाओं के सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे।

इस सम्मेलन के अवसर पर हिंदी के विकास तथा प्रसार की अद्यतन झाँकी प्रस्तुत करने वाली एक विशाल एवं अभूतपूर्व प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी के एक भाग में विभिन्न विषयों में प्रकाशित हिंदी पुस्तकें प्रदर्शित थीं, दूसरे भाग में हिंदी के बढ़ते हुए व्यवहार की झलक थी और तीसरे भाग में देवनागरी लिपि के विभिन्न यंत्र प्रदर्शित थे। ''विश्व हिंदी'' और ''विश्व के मानचित्र पर हिंदी'' शीर्षक से दो स्मारिकाओं का विमोचन भी उल्लेखनीय रहा।

सम्मेलन में पहले दो सम्मेलनों के प्रस्तावों का समर्थन किया गया तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के उन्नयन और विकास के संबंध में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि सम्मेलन के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी समिति का गठन किया जाए।

चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन-मॉरीशस (2-4 दिसंबर 1993)

चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान में 2-4 दिसंबर 1993 को मॉरीशस सरकार के तत्वावधान में आयोजित हुआ। सम्मेलन के दो मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए गए थे—

1. विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करना।

2. विश्व में हिंदी भाषा तथा साहित्य की उपलब्धियों एवं संभावनाओं पर विचार-विमर्श करना।

इसमें 22 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन मारीशस के प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने किया। उद्घाटन समारोह में सर जगन्नाथ ने घोषणा की कि मारीशस सरकार त्रिभाषा सूत्र के पक्ष में है जिसके तहत छात्रों को दो यूरोपीय और एक भारतीय भाषा पढ़नी होगी। सम्मेलन में प्रस्ताव पारित किया गया कि विश्व भर में बसे हिंदी भाषी, हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में उसका उचित दर्जा दिलाने के लिए अपनी सरकारों से आग्रह करें। अन्य प्रस्तावों में विश्व हिंदी विद्यापीठ और मॉरीशस में विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना की माँग दोहराई गई। सम्मेलन में त्रिनिदाद के प्रतिनिधि ने प्रस्ताव रखा कि 1995-96 में वहाँ भारतीय मूल के लोगों के आगमन की 150वीं वर्षगाँठ मनाई जाएगी, उस अवसर पर पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन वहाँ आयोजित किया जाए। इस प्रस्ताव के कार्यान्वयन के फलस्वरूप पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन अप्रैल, 1996 में त्रिनिदाद में संपन्न हुआ।

पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पूर्व में संपन्न चार सम्मेलनों में पारित प्रस्तावों के कार्यान्वयन की स्थिति पर विचार किया गया।

इन सम्मेलनों की उपलब्धियों का आकलन

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित किए गए प्रस्तावों का समर्थन बाद के तीनों सम्मेलनो में किया गया। किंतु यह हिंदी प्रेमियों के लिए बहुत निराशाजनक बात है कि इन प्रस्तावों के कार्यान्वयन में कोई उत्साहवर्द्धक परिणाम सामने नहीं आया है। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के पश्चात 21 वर्ष बीत चुके हैं, किंतु संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को उचित स्थान दिलवाने की दिशा में विशेष प्रगति नहीं हुई है। यह सत्य है कि इसी बीच भारत के प्रतिनिधियों ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्मेलनों में हिंदी में बोलने का साहसिक कार्य किया है, किंतु उनके इस सद्प्रयास का जितना असर होना चाहिए था उतना नहीं हुआ है। संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी नई भाषा को स्थान दिलाने के लिए दो अनिवार्य आवश्यकताएँ बताई जाती हैं: पहली तो यह कि इसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में इस आशय का एक प्रस्ताव पेश किया जाना है जिसकी स्वीकृति के लिए बड़े बहुमत की अपेक्षा होती है; दूसरी आवश्यकता पर्याप्त धनराशि की है जो भारत जैसे विकासशील देशों को भारी लग सकती है। धनराशि की व्यवस्था, जिस प्रकार अरबी भाषा के लिए 19 अरबी राष्ट्रों ने मिलकर की उसी प्रकार हिंदी प्रेमी राष्ट्र मिलकर कर सकते हैं, किंतु संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य राष्ट्रों के बीच हिंदी के पक्ष में बहुमत एकत्रित करने का कार्य प्रभावशाली तरीके से होना चाहिए। विश्व हिंदी सम्मेलनों के मंचों को इस कार्य के लिए अधिक मजबूत बनाया जाना चाहिए। इतना ही नहीं प्रत्येक सम्मेलन के बाद राजनयिक संबंधों के सहारे बहुमत एकत्रित करने का प्रयास तेज किया जाना चाहिए, लेकिन इस बात को तभी बल मिलेगा जब भारत सरकार के विभिन्न विभाग भारत में अपना अधिकांश कामकाज

हिंदी में करें, विदेशों में स्थित भारतीय राजदूतावासों में हिंदी का यथेष्ट प्रयोग हो और विदेशों में हिंदी के पठन-पाठन की पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ।

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से लेकर पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन तक अनेक वर्षों से भारत में अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की माँग उठती रही है। किंतु इस दिशा में भारत सरकार की ओर से भी सन 1993 तक कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया गया। प्रस्तावित विश्वविद्यालय का स्थान, स्वरूप आदि पर विचार करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने एक समिति नियुक्त की। समिति ने दिल्ली में इसकी स्थापना की संस्तुति की, किंतु बाद में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन द्वारा निर्धारित स्थान, वर्धा में इसकी स्थापना का निर्णय हुआ, किंतु अब तक विश्वविद्यालय का स्वप्न यथार्थ में परिणत नहीं हो पाया है। अतः उसका पूर्ण स्वरूप भी अब तक सामने नहीं आया है। यह उत्साह वर्द्धक बात है कि हाल में भारत सरकार ने वर्धा में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना की दिशा में कुछ ठोस कदम उठाए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की परिकल्पना हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के मुख्य केन्द्र के रूप में की गई है। इसमें हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन अध्यापन के साथ-साथ, तुलनात्मक साहित्य, रचनात्मक लेखन, पत्रकारिता, अनुवाद आदि के प्रशिक्षण की सुविधाएँ होंगी। हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में विश्व के किसी भी भाग में हुए काम को संकलित करने की व्यवस्था भी होगी। यह भी उचित होगा कि भारत के विभिन्न अंचलों में तथा विश्व के विभिन्न देशों में इसके केन्द्र स्थापित किए जाएँ। आवश्यकतानुसार विभिन्न स्थानों पर सूचना केन्द्रों की स्थापना हो जो हिंदी भाषा एवं साहित्य से संबंधित अद्यतन सूचनाएँ उपलब्ध करा सकें।

सितंबर 1999 में लंदन में आयोजित होने वाले छठे विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर, ऐसे सम्मेलनों को अधिक उपयोगी एवं प्रभावशाली बनाने की दृष्टि से निम्नलिखित सुझावों पर विचार किया जा सकता है—

(1) विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन के लिए विश्व स्तर की एक स्थायी समिति गठित की जाए।

(2) विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन एक निश्चित अन्तराल में नियमित रूप से हो।

(3) सम्मेलनों में लिए जाने वाले निर्णयों एवं पारित किए जाने वाले प्रस्तावों के कार्यान्वयन की देखरेख की निश्चित व्यवस्था की जाए।

(4) प्रत्येक सम्मेलन में पूर्व में लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन का पूर्ण लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाए।

(5) भारत में तथा कम से कम भारतीय मूल जनबहुल देशों में शैक्षिक, प्रशासनिक तथा सार्वजनिक क्षेत्रों में हिंदी के व्यवहार को बढ़ावा दिया जाए।

(6) भारत के हिंदी भाषा लेखकों द्वारा सृजित साहित्य को ही नहीं, बल्कि अहिंदी भाषी भारतीयों तथा विदेशियों द्वारा सृजित साहित्य को भी उचित स्थान और सम्मान दिया जाए।

(7) ''वसुधैव कुटुंबकम्'' के आदर्श को दृष्टि में रखकर विश्वभाषाओं से आदान-प्रदान की दिशा में उदार दृष्टिकोण अपनाया जाए।

(८) प्रत्येक सम्मेलन के कार्यवृत्त को और उपलब्धियों को पर्याप्त प्रचार दिया जाए, सम्मेलनों में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों तक ही सीमित न रह जाए। प्रचार की सामग्री (स्मारिका, कार्यवृत्त आदि) कम से कम उन सभी विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं को उपलब्ध करायी जाए जहाँ हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था हो।

(9) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, अन्य भाषा एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण कार्य करने वाली सर्वोच्च संस्था है। इस संस्था की विशेषज्ञता का लाभ विदेशों में हिंदी के पठन-पाठन के लिए उठाया जाए।

विश्व के विभिन्न शक्तिशाली देशों के बीच भारत की स्थिति सुदृढ़ होती जा रही है। विकासशील देश भारत को आदर्श के रूप में देखने लगे हैं। इन अनुकूल परिस्थितियों का लाभ उठाकर भारतीय संस्कृति की संवाहिका हिंदी को सभी अर्थों में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के पद पर आसीन कराने में ऐसे विश्व हिंदी सम्मेलनों की प्रमुख भूमिका रहेगी।

स्रोत सामग्री : 1. प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम विश्व हिंदी सम्मेलनों की स्मारिकाएँ एवं प्रतिवेदन।

पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन : एक सिंहावलोकन

आशुतोष शुक्ल

उपोद्घात

भारत पुरातन काल से ही विश्व संस्कृति का केंद्र रहा है। भारत की प्राचीनतम सांस्कृतिक विरासत और सभ्यता, समर्थ भाषा व समृद्ध साहित्य, ज्ञान-विज्ञान, दर्शन और आध्यात्मिक उत्कर्ष विश्व को प्राचीन काल से ही प्रभावित करते रहे हैं। मध्यकाल में भारत पर विदेशियों के शासन के कारण यहाँ का सांस्कृतिक एवं भाषायी विकास तथा प्रसार अवरुद्ध रहा, और इस समयांतराल में भारत में विदेशी भाषाओं का यथा-उर्दू, अंग्रेजी का व्यवहार अधिकाधिक हुआ। आज भारत अंग्रेजों की गुलामी से तो मुक्त है किंतु औपनिवेशिक दासता की मानसिकतावश अंग्रेजी की गुलामी की प्रवृत्ति, भाषायी दासता आज भी भारत में विद्यमान है। स्वाधीनता संग्राम में भारतवासियों ने हिंदी को संप्रेषण का मुख्य माध्यम बनाया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी को राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया गया। भारत सरकार का यह महत्वपूर्ण दायित्व था कि वह संविधान की 351 वीं धारा के अनुसार राजभाषा हिंदी का विकास एवं प्रचार-प्रसार करे और उसे भारतीय संस्कृति की संवाहिका के रूप में पूर्णत: स्थापित कराए। किंतु कतिपय राजनैतिक कारणों से आज स्वतंत्रता के 52 वर्षों बाद भी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जगत में, मुख्यत: भारत के अंदर हिंदी को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका है जो अपेक्षित था। यद्यपि भारत सरकार द्वारा हिंदी को विश्वमंच पर, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिए बराबर प्रयास किये जा रहे हैं। आज विश्व में सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में हिंदी का तीसरा स्थान है। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन एवं उच्चस्तरीय शोधकार्य हो रहा है। हिंदी शिक्षण की सैकड़ों सरकारी, अर्द्ध-सरकारी, गैर-सरकारी व स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। विश्व-पटल पर धीरे-धीरे हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान बनता जा रहा है। हिंदी को विश्व मंच पर स्थापित करने उसकी प्रसार वृद्धि करने और उसे वर्तमान स्थिति तक पहुँचाने में विश्व हिंदी सम्मेलनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ''प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन'' 10 से 13 जनवरी, 1975 तक नागपुर (भारत) में आयोजित हुआ था। इसके उपरांत ''द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन'' 28 से 30 अगस्त, 1976 तक मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान में आयोजित किया गया। तदुपरांत ''तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन'' 28 से 30

अक्टूबर, 1983 तक भारत की राजधानी नई दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में आयोजित हुआ। तदनन्तर "चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन" 2 से 4 दिसंबर, 1993 तक मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान में संपन्न हुआ।

पाँचवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

पहली बार पाँचवे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन पश्चिमी जगत में किया गया। भारत से हजारों मील दूर दक्षिण अमरीका के कैरेबियन सागर में स्थित ट्रिनीडाड और टुबैगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में 4 से 8 अप्रैल, 1996 तक पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन ट्रिनीडाड की स्वायत्त संस्था "हिंदी निधि" और "वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय" ट्रिनीडाड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। यह आयोजन ट्रिनीडाड और टुबैगो द्वीप पर भारतीयों के आगमन की 150 वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष में आयोजित विभिन्न समारोहों की शृंखला की एक कड़ी के रूप में था। इसे ट्रिनीडाड-टुबैगो की सरकार और भारत सरकार का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। इस सम्मेलन में ट्रिनीडाड-टुबैगो, गयाना, भारत, नेपाल, मॉरीशस, रूस, पोलैंड, चीन, कनाडा, सूरीनाम, अमेरिका, इंग्लैंड, जापान तथा दक्षिण अफ्रीका आदि लगभग 35 देशों के 350 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस विशाल सारस्वत आयोजन में विभिन्न देशों की सरकारें द्वारा भेजे गये प्रतिनिधि मंडल, प्रख्यात हिंदी विद्वान, लेखक, साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं पत्रकार आदि सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य था "आप्रवासी भारतीय और हिंदी"। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले भारत सरकार के प्रतिनिधि मंडल के नेता अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री माता प्रसाद थे। इसके अन्य 11 सदस्यों में हिंदी के गणमान्य विद्वान, लेखक, कवि, साहित्यकार, शिक्षाशास्त्री, भाषाविद् और पत्रकार सम्मिलित थे। इसके साथ ही भारत की स्वयंसेवी संस्थाओं से दो प्रतिनिधि और "हिंदी निधि" की ओर से सम्मान हेतु विशेष आमंत्रित सदस्यों के रूप में डॉ. विद्यानिवास मिश्र और डॉ. रामचंद्र राव ने भाग लिया। राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक भी इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए। कतिपय कारणों से प्रतिनिधि मंडल के 6 महानुभाव और सम्मानार्थ आमंत्रित 3 विद्वान सम्मेलन में नहीं पहुँचे सके।

सम्मेलन का शुभारम्भ

4 अप्रैल, 1996 को 5 बजे ट्रिनीडाड के सान फरनांडो, नापरीमा बाउल में ट्रिनीडाड और टुबैगो गणराज्य के राष्ट्रगीत से समारोह का शुभारंभ हुआ। श्रीमती इंदिरा सीताराम और श्रीमती चित्रा डोडा मणि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर सम्मेलन का श्रीगणेश किया गया। तत्पश्चात् सभी धर्मों के विचार प्रस्तुत किये गये। पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर ट्रिनीडाड के राष्ट्रपति महामहिम नूर हसन अली, उनकी पत्नी तथा मंत्रिमंडल के सदस्य एवं सांसद और ट्रिनीडाड में स्थित अनेक देशों के राजदूत दर्शक दीर्घा में विराजमान थे। इस अवसर पर 2000 से भी अधिक पर्यवेक्षक और प्रतिनिधि उपस्थित थे। मंच पर ट्रिनीडाड के प्रधानमंत्री

श्री वासुदेव पांडेय एवं विदेशमंत्री श्री राल्फ मराज तथा ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त श्री लक्ष्मीमल सिंधवी आसीन थे। इस अवसर पर वहाँ नेपाल, गयाना, सूरीनाम, जापान व मॉरीशस आदि देशों के मंत्री तथा अनेक देशों के हिंदी विद्वान एवं साहित्यकार भी उपस्थित थे। सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के अध्यक्ष श्री माता प्रसाद ने अन्य सदस्यों के साथ इसमें भाग लिया।

सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में ट्रिनीडाड और टुबैगो गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री वासुदेव पांडेय ने कैरेबियन स्तर पर हिंदी के अध्ययन-अध्यापन पर अधिक बल देने को कहा। उन्होंने हिंदी को अपनी पैतृक संपत्ति मानते हुए कहा कि हिंदी हमारी अस्मिता की पहचान है। उन्होंने संकल्प व्यक्त किया कि हमें हर हाल में इसे संपन्न बनाना है। श्री पाण्डेय ने इस अवसर पर भारतीय संस्कृति और विचारधारा को अपनाने पर भी बल देने को कहा। उन्होंने कहा कि हिंदी का ज्ञान भारत के साथ गहरे वाणिज्यिक संबंधों को दृढ़ करने में सहायक होगा। साथ ही उन्होंने हिंदी को ऐच्छिक विषय के रूप में अपने देश के स्कूलों में पढ़ाये जाने की व्यवस्था का भी आश्वासन दिया। इस उद्घाटन अवसर पर ट्रिनीडाड एवं टुबैगो ''हिंदी निधि'' के अध्ययक्ष श्री चंका सीताराम ने विद्यालयी स्तर पर हिंदी को एक ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाने की माँग सरकार के समक्ष रखी थी। उन्होंने भारत सरकार द्वारा दी गयी सहायता के प्रति आभार प्रकट करते हुए पोर्ट ऑफ स्पेन में महात्मा गांधी सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना और सक्रिय रूप से कार्य करने के लिए भारत की सराहना की। वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय के उप-कुलपति प्रोफेसर जी. रिचर्ड्स ने स्वागत भाषण दिया।

भारतीय शिष्ट मंडल के नेता श्री माता प्रसाद का अभिभाषण

भारतीय प्रतिनिधि मंडल के अध्यक्ष के रूप में अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री माता प्रसाद ने सम्मेलन के इस उद्घाटन अवसर पर समारोह में उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए विश्व धरातल पर हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने इस अभिभाषण में कहा कि— ''डढ़े सौ वर्ष के इस जयंती वर्ष में ट्रिनीडाड और टुबैगो की मिली-जुली संस्कृति की मैं सराहंना करता हूँ कि जनतांत्रिक परंपरा में भारतीय संस्कृति के कैरेबियन स्वरूप का विकास हुआ है। हमें अपने भाइयों पर अपार गर्व है कि वे मजदूर होकर आए और उन्होंने न केवल राजनीतिक दासता के विरुद्ध संघर्ष किया बल्कि उन्होंने इन द्वीपों को नया रूप दिया और इस भूम्रि को उर्वर बनाया। इसके साथ ही उन्होंने अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाये रखते हुए दूसरी संस्कृतियों के साथ सौहार्द और सौमनस्य के साथ जीने का पथ प्रशस्त किया। यहाँ के भाइयों ने विश्व संस्कृति के नये रूप के विकास में उज्ज्वल भूमिका निभायी है।'' और बीच में जब महामहिम श्री माता प्रसाद ने भोजपुरी में बोलना प्रारंभ किया तब तो खचाखच भरा हुआ समारोह स्थल करतल ध्वनि से गूँज उठा। भोजपुरी में बोलते हुए उन्होंने कहा— ''.....हमके ई अउर खुशी बा कि इहाँ जवन भारतवंसी भाइ रहत अहें ओनकर पूर्वज भारत के जउने भाग से, डेढ़ सौ साल पहिले आइ रहेन, भारत के उही भाग के हम हूँ रहई वाला हई। हम आजु के मौके पर, आपके ओही पुर्वुजन के हाथ जोरि के परनाम

करत बानी....." श्री माता प्रसाद जी ने अपने ओजस्वी भाषण में हिंदी को विश्व स्तर पर समुचित सम्मान दिलाने की बात भी उठायी। उन्होंने कहा कि— "हिंदी भाषा का इतिहास बताता है कि फिजी, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, ट्रिनीडाड, सूरीनाम, गयाना आदि अनेक देशों की राजनैतिक और आर्थिक स्वतंत्रता में इसने सर्वाधिक योगदान दिया है। आज हमारी सबकी आवश्यकता है कि भारत से बाहर की हिंदी सेवा का आकलन किया जाए और अनेक प्रकार के प्रभावों को आत्मसात करने वाली विश्व भाषा हिंदी को मान्यता दिलाने की भरपूर कोशिश की जाए।"

पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन के शुभारंभ की घोषणा के उपरांत सम्मेलन के अवसर पर भारत सरकार (विदेश मंत्रालय) द्वारा प्रकाशित "स्मारिका" का प्रधानंत्री श्री वासुदेव पांडेय द्वारा विमोचन/लोकार्पण किया गया। इस स्मारिका का संपादन डॉ. परमानंद पांचाल ने किया था और इसमें देश-विदेश के मूर्धन्य हिंदी विद्वानों के लेख संग्रहीत थे।

सम्मेलन में विश्व के 18 हिंदी सेवी विद्वानों का सम्मान

5 अप्रैल को सायं 7.30 बजे पोर्ट ऑफ स्पेन के हिल्टन होटल में विश्व के 18 प्रमुख हिंदी सेवी विद्वानों के सम्मान में अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर 14 विद्वान ही उपस्थित थे। सम्मेलन में न पहुँचने वाले विद्वानों में 3 भारत के (डॉ. लोकेश चंद्र, डॉ. नामवर सिंह और डॉ. नगेन्द्र) और चौथे चेक गणराज्य के डॉ. ओदोलेन स्मेकल थे। विद्वानों का सम्मान ट्रिनीडाड-टुबैगो के प्रधानमंत्री श्री वासुदेव पांडेय, विदेश मंत्री श्री राल्फ मराज, ट्रिनीडाड-टुबैगो में भारत के उच्चायुक्त श्री जे. डोडा मणि और भारत के अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री माता प्रसाद द्वारा कराया गया। सभी विद्वानों को सम्मानार्थ एक ऊनी शाल, एक स्मृति चिह्न और साथ में एक सम्मान पत्र प्रदान किया गया। विद्वानों का स्वागत-सम्मान करतल ध्वनि के साथ संपन्न हुआ। समारोह में वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भी उपस्थित थे। अंत में आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। सम्मानित किये गये हिंदी विद्वानों के नाम इस प्रकार हैं— डॉ. अभिमन्यु अनत (मारीशस), डॉ. ओदोलेन स्मेकल (चेक गणराज्य), प्रो. कात्सुरो कोगा (जापान), डॉ. ज्ञान हंसदेव अधीन (सूरीनाम), प्रो. ज्योंग हो ली (कोरिया), प्रो. चिन तिंगहान (चीन), प्रो. पी. अलेक्सेविच बारान्निकोव (रूस), प्रो. एम. क्रिजीस्तोफ ब्रिस्की (पोलैंड), डॉ. राम दयाल राकेश (नेपाल), डॉ. रामभज सीताराम (दक्षिण अफ्रीका), श्री स्टीफन इवानोइच नालिवायको (उक्रेन), डॉ. रूपर्ट स्नेल (इंग्लैंड), प्रो. हरिशंकर आदेश (कनाडा), डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. रामचंद्र देव, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. नामवर सिंह, तथा डॉ. लोकेश चन्द्र (भारत)

सम्मेलन में आयोजित विचार गोष्ठियाँ

पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर 5 से 8 अप्रैल, 1996 तक वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय के इंजीनियरी संकाय में— जिसे 'हिंदी नगर' का नाम दिया गया था— कई सत्रों

में विचार गोष्ठियाँ आयोजित की गयीं, जिनमें देश-विदेश से आये हिंदी विद्वानों ने अपने-अपने विचार प्रकट किये और लेख पढ़े। इस सामूहिक सत्र की अध्यक्षता हिंदी के प्रख्यात विद्वान डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने की थी। पंडित मिश्र ने हिंदी को एक जीवन शैली, एक आस्था, एक विश्वास की संज्ञा देते हुए कहा कि जिस व्यक्ति में विश्वास है वह किसी से पराजित नहीं हो सकता। और उसी विश्वास का नाम हिंदी है। उन्होंने कहा कि हिंदी ने उपनिवेश के विरुद्ध आवाज उठाकर सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है किंतु अभी तक यह व्यवहार की भाषा नहीं बन पायी है। डॉ. मिश्र ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में कहा कि "कैरेबियन में अपनी पहचान बनाने के लिए हिंदी के प्रचार-प्रसार पर अधिक बल देने की आवश्यकता है आज हमारे सामने कौन-सी चुनौतियाँ हैं, और हिंदी की इसमें क्या भूमिका हो सकती है, इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।" इस सत्र में विद्वानों ने भारत से बाहर भारतवंशियों की जनस्मृति में भारतीय संस्कृति तथा भारतीय भाषा हिंदी के प्रति नये आकर्षण का उल्लेख किया। सम्मेलन के इस प्रारंभिक सत्र में हिंदी भाषा एवं साहित्य से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये गये। हालैंड के विद्वान डॉ. मोहन कांत गौतम ने भारतवंशियों के भाषाप्रेम एवं नव भाषा के उदय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। सामूहिक सत्र में विभिन्न देशों के प्रतिनिधि विद्वानों द्वारा अपने-अपने विचार रखे गये। इनमें से कुछ प्रमुख देशों द्वारा व्यक्त विचार संक्षेप में यहाँ उद्धृत हैं—

दक्षिण अफ्रीका के सरकारी प्रतिनिधि श्री फारुख हुसैन ने इस सत्र में दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की उपस्थिति, महात्मा गांधी के योगदान तथा भारतीय भाषाओं के अध्ययन जैसे विषयों पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने सूचित किया कि भाषा का अध्ययन कक्षा स्तर 6 से आरंभ होकर 10 तक नियमित चलता है। भारतीय संस्कृति की गहरी छाप दक्षिण अफ्रीका में देखी जा सकती है और भारत नाट्यम् जैसी नाट्य शैली वहाँ ऐच्छिक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में है। दक्षिण अफ्रीका के जनमानस में भारत का विशेष स्थान है। श्री हुसैन द्वारा छठे सम्मेलन के लिए दक्षिण अफ्रीका का प्रस्ताव किया गया, जिसका करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

मॉरीशस के प्रतिनिधि मंडल के नेता, वहाँ के मंत्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मॉरीशस में बहुसंख्यक समाज अल्पसंख्यक समाज की फ्रांसीसी भाषा का उपयोग करता है, परंतु यहाँ हिंदी के प्रचार में आर्य समाज, हिंदू महासभा और गांधी जी का बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी सभी प्राथमिक शालाओं में पढ़ाई जाती है और हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण की सुविधाएँ भी वहाँ उपलब्ध हैं। आज हिंदी विश्वविद्यालय स्तर पर स्वीकृत है। मॉरीशस में अनेक पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं।

गयाना के प्रतिनिधि मंडल के नेता, वहाँ के मंत्री ने इस सामूहिक सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि 80 हिंदी विद्यालय, गयाना में सक्रिय हैं। उनके देश के लोग हिंदी संगीत से प्रभावित हैं तथा रामकथा की चौपाइयों और हनुमान चालीसा का अत्यंत श्रद्धा से गान करते हैं। यहाँ के लोगों में भी अपनी मूल जड़ से जुड़ने का आकर्षण है।

सूरीनाम के प्रतिनिधि मंडल में वहाँ के संसद सदस्य, नेता ने बताया कि सूरीनाम प्रवासियों का देश है। यह बहुभाषी देश है। यहाँ की राजभाषा डच है। किंतु सारे सूरीनामवासी सरनामी हिंदी में बोलते हैं। यहाँ 1873 में भारतीय मजदूर आये थे। 1945 के बाद यहाँ भारतीय संस्कृति से जुड़ाव में तेजी आयी है। सरनामी भोजपुरी पर आधारित हिंदी है जो रोमन लिपि में लिखी जाती है। साथ ही देवनागरी का भी प्रचलन है जिसमें पुस्तकें, पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। 1960 के बाद से भारतवंशियों की सांस्कृतिक एकता संपूर्ण हुई। आज यह चिंता है कि इस सांस्कृतिक चेतना को सजीव कैसे रखा जाए। इसी सत्र में संसद सदस्या, सूरीनामी प्रतिनिधि ने अपने वक्तव्य में सभा को सूचित किया कि संविधान में हिंदी के विकास की पर्याप्त स्वतंत्रता है। आवश्यकता है कि ट्रिनीडाड-टुबैगो, गयाना और सूरीनाम तीनों कैरेबियन देशों का एक संगठन बने जो हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों को सक्रिय कर सके। इसे पूरे सम्मेलन ने स्वीकार्यता प्रदान की।

नेपाल के प्रतिनिधि, वहाँ के मंत्री माननीय गजेन्द्र नारायण सिंह ने सामूहिक सत्र को संबोधित करते हुए बताया कि नेपाल में 90 प्रतिशत लोग हिंदी समझते हैं। कुल पढ़ी-लिखी आबादी का लगभग 70 प्रतिशत तो हिंदी पढ़ लिख भी सकता है। हिंदी भाषा-क्षेत्र हिंदी को द्वितीय भाषा बनाने के लिए संघर्षरत है। हिंदी सम्मेलन में पहली बार सरकारी प्रतिनिधि मंडल भेजा गया है। नेपाल में 1964 तक हिंदी प्राथमिक पाठशालाओं में पढ़ाई का माध्यम थी, किंतु नेपाली संसद में हिंदी का भाषण दर्ज नहीं किया जाता है। हिंदी भाषी मध्य देशियों को फौज व सरकारी नौकरियों में बहुत कम अवसर दिया जाता है क्योंकि इनके पास नागरिकता प्रमाणपत्र नहीं होते। तराई क्षेत्र के 20 जिलों में हिंदी भाषी रहते हैं, उनकी जनसंख्या पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वालों से अधिक है। किंतु संसद में पहाड़ी क्षेत्र के नेपालियों का प्रतिनिधित्व अधिक है। घोषित रूप से नेपाल हिंदू राष्ट्र है किंतु वहाँ हिंदीभाषी लोग उपेक्षित हैं। हिंदी की इस स्थिति पर कुछ न कुछ अवश्य किया जाना चाहिए।

संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिनिधि ने सभा को सूचित किया कि उनके देश में तीन बड़ी संस्थाएँ हैं जो हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य देखती हैं। अनेक अन्य संस्थाएँ भी हैं। अमेरिका में भारतवंशियों की बड़ी संख्या विद्यमान हैं। हिंदी की अनेक उच्चस्तरीय पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं। प्रतिनिधि ने अगले सम्मेलन को न्यूयार्क में आयोजित करने का प्रस्ताव भी रखा।

ट्रिनीडाड के प्रतिनिधियों ने इस सत्र में मूल संस्कृति की स्मृति के विषय को अधिक वैज्ञानिक ढंग से सभा के समक्ष रखते हुए भारत और भाषा के संबंध में अपने आलेख/निबंध प्रस्तुत किये। उनका कहना था कि वर्तमान विश्व की परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति का बड़ा महत्व है। भारतीयता के प्रति भी सम्मोहन बढ़ा है। ट्रिनीडाड में अभी दो स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। इस संख्या को और अधिक बढ़ाया जायेगा। भारतीय संगीत, भारतीय भाषा और भारतीयता से ट्रिनीडाड वासियों ने अपने को गहरे से जोड़ा हुआ है।

प्रथम दिवस दिनांक 5-4-96 को सामूहिक सत्र के बाद अपराह्न 1.20 बजे दो समानांतर 12 शैक्षिक सत्र हुए, जिनमें एक का विषय था "लांगवेज आइडेंटिटी" तथा दूसरे का "एकसपेरीमेंट्स विद दि ड्रामा"।

सम्मेलन के अन्य तीन दिवसों में विभिन्न सत्रों में अनेक देशों से आए हुए विद्वानों ने अपने-अपने आलेख पढ़े। हिंदी भाषा तथा साहित्य एवं कंप्यूटर आदि विषयों से संबंधित आलेखों के माध्यम से प्रतिभागियों को अद्यतन जानकारी देने का प्रयास किया। 6 अप्रैल, 1996 को सारे दिन वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय के सभागार में सामूहिक सत्र के पश्चात अन्य कक्षों में विभिन्न विषयों पर समानांतर सत्र चले, जिनमें चालीस विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। इनमें आप्रवासी भारतीयों में हिंदी चेतना पर विचार-विमर्श प्रमुख विषय था। देश-विदेश के विद्वान इसमें सम्मलित हुए। कई विषयों के अध्यक्ष मंडलों में भारतीय विद्वानों ने भी भाग लिया। इस विचार-विमर्श में केरल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. वी.पी. मुहम्मद कुंज मेत्तर भी सम्मिलित थे। 7-4-96 को भी पूरे दिन विभिन्न विषयों पर शैक्षिक सत्र हुए। सत्रों के समन्वयकर्ता भारतीय विद्वान प्रो. जगन्नाथन थे। इस दिन 60 विविध विषयों पर विभिन्न कक्षाओं में अलग-अलग विचार-विमर्श हुए। दोनों दिन के विभिन्न सत्रों के अध्यक्ष मंडलों में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य सर्वश्री डॉ. हिमांशु जोशी, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. केदारनाथ सिंह, श्री गिरिराज किशोर, श्री गोविंद मिश्र, डॉ. शेषेन्द्र शर्मा, डॉ. इंद्रनाथ चौधरी, श्री जी. आर. मुट्टु (सांसद), डॉ. रमा सिंह, श्रीमती कमला सिंधवी ने सम्मिलित होकर अपनी विद्वत्ता से हिंदी विद्वानों को प्रभावित किया। 8-4-96 को पूर्वाह्न में विभिन्न कक्षों में अलग-अलग विषयों पर सत्र संपन्न हुए, जिनमें 60 विषयों पर चर्चा हुई।

सम्मेलन के अवसर पर संपन्न अन्य कार्यक्रम

5 अप्रैल, 1996 को सामूहिक सत्र से पूर्व "हिंदी के बढ़ते कदम" नामक पुस्तक व चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। तदनंतर एक कंप्यूटर प्रदर्शनी का भी उद्घाटन हुआ। उक्त चित्र व पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भारत सरकार की ओर से डी. ए. वी. पी. द्वारा किया गया था। इसमें हिंदी भाषा और साहित्य की एक चित्रमय भव्य झाँकी 60 पैनलों में प्रस्तुत की गयी थी। हिंदी के विभिन्न कालों के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों एवं कवियों के चित्रों को इसमें दर्शाया गया था। इसमें देवनागरी लिपि के क्रमिक विकास का भी सचित्र चित्रण प्रदर्शित किया गया। सम्मेलन की समाप्ति पर प्रदर्शनी की सभी पुस्तकें, चित्र, एवं सामग्री भारत सरकार की ओर से ट्रिनीडाड और टुबैगो की "हिंदी निधि" को उपहारस्वरूप भेंट कर दी गईं।

इसी दिन सम्मेलन में भारत सरकार की ओर से भारतीय उपक्रम सी-डेक द्वारा एक कंप्यूटर, साफ्टवेयर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी में कार्य करने के लिए विकसित विभिन्न साफ्टवेयरों (लीला, मंत्र, अल्प, शब्द-रत्न आदि) का प्रदर्शन किया गया और हिंदी के प्रयोग में उनकी उपादेयता पर प्रकाश डाला गया। अंत में वहाँ प्रदर्शित कंप्यूटर व साफ्टवेयरों को भी ट्रिनीडाड के प्रधानमंत्री को सप्रेम भेंट कर दिया गया।

पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन के कुछ दिन पूर्व ही भारत एवं ट्रिनीडाड-टुबैगो के सांस्कृतिक संबंधों को दृढ़ता प्रदान करने के लिए वहाँ के आप्रवासी भारतीयों की रुचि को ध्यान में रखकर भारत सरकार की ओर से श्रीराम भारतीय कला केंद्र, नई दिल्ली की रामलीला मंडली और कानपुर से ग्रेट गुलाब थियेटर ग्रुप की नौटंकी वहाँ भेजी गयी थी। रामलीला और नौटंकी के इन कलाकारों द्वारा कई दिनों तक विभिन्न स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर प्रदर्शित किये गये। इन कार्यक्रमों को वहाँ के नागरिकों एवं सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों की अपार भीड़ ने अत्यधिक उत्साह के साथ देखा और सराहा। कुछ चुनी हुई हिंदी फिल्में भी भारत से वहाँ भेजकर प्रदर्शित करायी गयीं।

सम्मेलन के अंतिम दिन ''लेखकों से मिलिए'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न देशों से आये साहित्यकारों तथा कवियों ने अपने-अपने संस्मरण एवं विचार व्यक्त किये और कविताएँ सुनायीं। इस अवसर पर प्रसिद्ध कवि डॉ. केदारनाथ सिंह ने कहा कि ''कविता जिसके लिए लिखी जाती है, उसी तक नहीं पहुँच पाती।'' उन्होंने इस अवसर पर ''माँझी का पुल'' और ''हिमालय'' नामक कविताएँ भी सुनायीं। प्रसिद्ध तेलुगु कवि शेषेन्द्र शर्मा ने अपनी कविताओं का पाठ किया और कहा कि ''यहाँ मुझे तेलुगु कवि कहा गया। वास्तव में कवि के लिए कोई भाषा नहीं होती।'' इस कार्यक्रम में भारत के गिरिराज किशोर, हिमांशु जोशी, रमा सिंह, गंगा प्रसाद विमल, विनीता अग्रवाल, कमल कुमार आदि ने एवं अन्य कई विदेशी कवियों ने भी भाग लिया। विश्व हिंदी सम्मेलन में आयोजित कवि सम्मेलन में अनेक देशों के कवियों ने हिंदी तथा भोजपुरी कविताएँ सुनायीं। इसकी अध्यक्षता इंग्लैंड में भारत के राजदूत डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंधवी ने की।

पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन का समापन

8 अप्रैल, 1996 को सायं 4 बजे पोर्ट ऑफ स्पेन के ब्राइड लाए प्रिमायर में कारनवाल के साथ धूमधाम से पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन का समापन समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर ट्रिनीडाड-टुबैगो की सीनेट के अध्यक्ष माननीय गणेश रामदयाल जी ने समापन भाषण दिया। उन्होंने ट्रिनीडाड-टुबैगो में सम्मेलन की सफलता पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम ने अपनी कठिनाइयों को रेखांकित करते हुए त्रुटियों के प्रति क्षमा याचना की। ईस्टर मंडे के अवसर पर शाम को पोर्ट ऑफ़ स्पेन नगर में अफ्रीकी, भारतीय और सूरीनामी लोक कलाकारों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसमें भारतीय प्रतिनिधि-मंडल सहित अन्य देशों के प्रतिनिधियों ने सम्मिलित होकर अपना मनोरंजन किया। समापन समारोह के इस अवसर पर महामहिम श्री माता प्रसाद जी के अभिभाषण के उन अंशों को यहाँ उद्धृत किया जाना अत्यंत समीचीन प्रतीत होता है जो हिंदी के विकास के संदर्भ में हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

''हिंदी के विकास में भोजपुरी, ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि का सहयोग तो है ही साथ ही उसे फारसी, अरबी से भी पर्याप्त शब्द संपदा मिली है। इसके अतिरिक्त उसने

अन्य भारतीय भाषाओं के बहुत से शब्द अपने में समाहित कर लिये हैं। आज हिंदी, मॉरीशस, ट्रिनीडाड-टुबैगो तथा गयाना में भोजपुरी एवं सूरीनाम में सरनामी भाषा के रूप में व्यवहार में लायी जाती है।........अब हिंदी राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर चुकी है तथा अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर अग्रसर है। हिंदी के संवर्द्धन में मॉरीशस, गयाना, सूरीनाम, फिजी, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका आदि का विशेष योगदान है। .....यह वह समय है जब इसे अंतर्राष्ट्रीय परिवेश में विकसित होना है। इसे इतना उदार होना है कि अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं की शब्द संपदा को अपने में आत्मसात कर ले और इसका एक सर्वमान्य स्वरूप विकसित हो, ताकि लोग इसके माध्यम से विश्व की एक सामासिक संस्कृति का विकास कर सकें।''

पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

दिनांक 7-4-96 को श्री देवस्वरूप संयुक्त सचिव राजभाषा विभाग के संयोजकत्व में एक मंतव्य प्रारूप समिति का गठन किया गया। इसमें तीन हिंदी विद्वानों के साथ ही शिक्षा विभाग के संयुक्त सचिव श्री अभिमन्यु सिंह और विदेश विभाग के उपसचिव (हिंदी) श्री पी. के. गोरावारा सम्मिलित थे। समिति ने मंतव्यों का एक प्रारूप तैयार करके अगले दिन दिनांक 8-4-96 को सामूहिक सत्र में प्रस्तुत किया। इनमें मुख्य प्रस्ताव हिंदी सम्मेलनों के लिए एक सचिवालय की स्थापना और एक समन्वय समिति भारत और मॉरीशस की सरकारों द्वारा बनाने का सुझाव था। इसमें केवल सरकारी प्रतिनिधियों को ही रखे जाने का सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने विरोध किया। बाद में सरकारी प्रतिनिधियों के साथ ही गैर सरकारी प्रतिनिधियों के रूप में पर्याप्त संख्या में हिंदी के विद्वानों को समन्वय समिति में रखने का संशोधन सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। इसके विचार-विमर्श में श्री राहुल देव और श्री लक्ष्मीमल्ल सिंधवी ने विशेष रुचि ली। सम्मेलन में भारत सरकार के प्रतिनिधि, केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की वर्धा में स्थापना की सूचना दी तथा बताया कि इसके कार्यानुपालन की अन्य तैयारियाँ भी की जा रही हैं। अन्य मंतव्यों को बिना किसी बहस के सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। ट्रिनीडाड में संपन्न पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन (4-8 अप्रैल, 96) में पारित किये गये मंतव्य निम्न प्रकार थे।

1. हिंदी और भारतवंशी समाज के मध्य एक जीवंत समीकरण बनाने के समर्थन के साथ आशा व्यक्त की गयी कि विश्वव्यापी भारतवंशी समाज हिंदी को अपनी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित कर एक विश्व हिंदी मंच बनाने में सफल होगा।

2. विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन की सुविधा के लिये मॉरीशस में शीघ्र ही पूर्व प्रस्तावित एक स्थायी सचिवालय की स्थापना की जाए। साथ ही इसके त्वरित कार्यान्वयन के लिए मॉरीशस एवं भारत सरकार द्वारा एक अंतर-सरकारी समिति का गठन किया जाए। जिसमें सरकारी प्रतिनिधियों के अतिरिक्त पर्याप्त संख्या में हिंदी के प्रति निष्ठावान साहित्यकारों को सम्मिलित किया जाए। यह समिति सचिवालयी व्यवस्था एवं अन्य संबद्ध विषयों के विभिन्न पहलुओं पर विचार कर एक सर्वांगीण योजना/कार्यक्रम प्रस्तुत करेगी।

३. सभी देशों विशेषत: जहाँ भारतीय मूल तथा आप्रवासी भारतीय बसते हैं, की सरकारों से आग्रह किया गया कि वे अपने देशों में विभिन्न स्तरों पर हिंदी अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करें।

4. विश्व स्तर पर हिंदी भाषा को प्राप्त जनाधार और जनभावना को देखते हुए सभी देशों, जहाँ भारतीय मूल तथा आप्रवासी भारतीय बसते हैं, में हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न स्वयं सेवी संस्थाओं तथा विद्वानों से अनुरोध किया गया कि वे अपनी सरकारों से आग्रह करें कि वे हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के लिए अपना राजनयिक योगदान तथा समर्थन दें।

अंत में भारत सरकार द्वारा महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित करने के निर्णय का स्वागत करते हुए आशा व्यक्त की गयी कि इससे हिंदी को विश्वव्यापी बल मिलेगा।

सम्मेलन की विशेषताएँ एवं उपलब्धियाँ

पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन पिछले विश्व हिंदी सम्मेलनों की अपेक्षा कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण और विशेष उल्लेखनीय रहा है। यह पहला अवसर था जब विश्व हिंदी सम्मेलन विश्व के पश्चिमी भूखंड पर आयोजित किया गया। यह पहला अवसर था कि हिन्दी के संदर्भ में सम्मेलन में इतने वैविध्यपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन / प्रदर्शन हुआ। इस सम्मेलन में भारत की ओर से इतनी विशाल और भव्य पुस्तक एवं चित्र प्रदर्शनी आयोजित हुई, जो पहले कभी नहीं हुई, जिसमें हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के विकास की 60 पैनलों में चित्रमय झाँकी दर्शायी गयी। इसमें देवनागरी लिपि, प्राचीन पांडुलिपियों से लेकर आधुनिक यांत्रिक सुविधाओं, हिंदी की ऐतिहासिक एवं अद्यतन पत्रिकाओं, मूर्धन्य साहित्यकारों के चित्र, कोलाज और म्युरल प्रस्तुत किये गये। इसमें देश एवं विदेश के प्रख्यात हिंदी विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखी गयी पुस्तकें भी प्रदर्शित थीं। इसी के साथ पहली बार भारत की ओर से पुणे की एक संस्था सी-डेक उपक्रम द्वारा कंप्यूटर एवं साफ्टवेयर प्रदर्शनी आयोजित की गयी जिसमें रोमन में टाइप करने पर अंग्रेजी और हिंदी साथ-साथ टाइप होते थे। इन प्रदर्शनियों में ट्रिनीडाड के प्रधानमंत्री, सांसद, विधिवेत्ता तथा विद्वानों ने अत्यधिक रुचि दर्शायी। इन्हें देखने के लिए विभिन्न देशों से आये प्रतिनिधि बराबर आते रहे और सभी ने इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। यह भी पहला अवसर था कि संचार माध्यमों ने इस सम्मेलन को अत्यधिक महत्व देते हुए इसकी अच्छी कवरेज की। स्थानीय टेलीविजन ने भी अपने कार्यक्रमों में इसे प्राथमिकता दी। भारतीय दूरदर्शन ने सेटलाइट से जोड़कर पोर्ट-ऑफ स्पेन से पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन के कार्यक्रमों को भारत में सीधे प्रसारित किया। पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन के इस अवसर पर विश्व के हिंदी के 18 मूर्धन्य विद्वानों का अभिनंदन एवं सम्मान किया गया। इस सम्मेलन की विचार गोष्ठियों में विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर किये गये विचार-विमर्श एवं उनके प्रस्तुत आलेखों के माध्यम से हिंदी के संवर्द्धन, विकास एवं प्रसार वृद्धि के लिए निश्चित रूप से विश्व को एक दिशा प्राप्त हो सकेगी और विश्व में हिंदी के विकास एवं प्रसार का मार्ग प्रशस्त होगा।

इस सम्मेलन की कई उपलब्धियाँ रहीं। यह एक महान और अविस्मरणीय सम्मेलन रहा जिसमें आप्रवासी भारतीय और भारतवंशियों के संदर्भ में हिंदी के व्यवहार और हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप का आकलन किया गया। इस सम्मेलन में भारत देवनागरी लिपि, भाषा, साहित्य, संगीत, कला, भारतीय संस्कृति और दर्शन के विविध पक्षों को विश्व के समक्ष उजागर करने में काफी हद तक सफल रहा। भारतीय साहित्य, संगीत, कला, भाषा, संस्कृति, और दर्शन के प्रति विश्व सदैव से जिज्ञासु रहा है। इस सम्मेलन में भारत की ओर से आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा इन विविध पक्षों की जो प्रस्तुति की गयी उससे निश्चित रूप से इन्हें जानने-पहचानने एवं समझने की उत्कंठा विश्व के तमाम देशों में और अधिक बलवती हुई है, और यही उत्कंठा विदेशियों को हिंदी के प्रति सहज ही और अधिक आकर्षित करेगी। साथ ही विश्व के कोने-कोने में जो बड़ी संख्या में भारतवंशी, आप्रवासी भारतीय निवास कर रहे हैं, उनमें इस सम्मेलन से हिंदी के विकास तथा प्रचार-प्रसार के प्रति और अधिक उत्साह जाग्रत हुआ है। इस सम्मेलन से पश्चिमी देशों का भी रुझान हिंदी की ओर बढ़ा है। फलत: हिंदी का उत्तरोत्तर क्षेत्र विस्तार होना, उसके व्यवहार क्षेत्र में अभिवृद्धि होना अवश्यंभावी है। अब वह दिन दूर नहीं जब हिंदी विश्वमंच पर अपना महत्वपूर्ण, शीर्ष स्थान प्राप्त कर विश्व भाषा का पूर्ण दर्जा प्राप्त कर सकेगी। भारतीय आप्रवासी, भारतवंशी और भारतीय भाषा एवं संस्कृति से जुड़े हुए विभिन्न देशों के अन्य लोग आज विश्व भर में फैले हुए हैं। विश्व में इनकी इसी विद्यमानता के माध्यम से भारतीय संस्कृति और भाषा के सूत्रों द्वारा ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की कल्पना को साकार करने में और विश्व शांति तथा भाइचारे की भावना का प्रसार करने की दिशा में भारत को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने में अवश्य सहायता प्राप्त होगी।

भविष्य के लिए कुछ सुझाव

विश्व फलक पर हिंदी को अधिकाधिक उभारने के लिए भारत को कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। सर्वप्रथम भारत को भारत में शासन, न्याय, व्यापार-वाणिज्य, ज्ञान-विज्ञान, तकनालॉजी, शिक्षा, राजनीति एवं समाज आदि जीवन के अनेकानेक क्षेत्रों में और सभी राज्यों में हिंदी के व्यवहार को सुनिश्चित करना होगा। जब तक भारत में ही हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित नहीं होगा तब तक अन्य देशों में हिंदी की प्रसार वृद्धि एवं इसके अध्ययन-अध्यापन के लिए किस प्रकार भारत जोरदार और सार्थक अपील कर सकेगा। भारत की राजभाषा/राष्ट्रभाषा तो हिंदी है, किंतु सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वर्चस्व अंग्रेजी का ही कायम है। किसी भी विदेशी द्वारा जीविकोपार्जन के उद्देश्य से हिंदी नहीं पढ़ी जाती है। क्योंकि भारत में हिंदी में नहीं अपितु अंग्रेजी में प्रशासन व कामकाज होता है। आज के भौतिकवादी युग में व्यक्ति उसी शिक्षा की ओर उन्मुख होता है जो उसकी जीविका का साधन बन सके। अत: यदि हिंदी को अन्य देशों में प्रचारित-प्रसारित करना है, विश्व में उसे स्थापित करना है तो भारत में हिंदी की उपयोगिता सिद्ध करनी होगी। इसके लिए एक निश्चित योजना तैयार कर उसका क्रियान्वयन किया जाना अपेक्षित है। जिससे भारत में हिंदी का प्रयोग / व्यवहार क्षेत्र विस्तृत हो सके, संपूर्ण भारत भाषायी दृष्टि से एकता के सूत्र में बंधकर विश्व के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन "हिन्दी समिति", यू. के., "गीतांजलि-बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय", "भारतीय भाषा संगम" एवं यू. के. के हिन्दी प्रेमियों के अन्य संगठनों के सहयोग से 14 से 18 सितम्बर, 1999 तक लन्दन में आयोजित हो रहा है। इस सम्मेलन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय होगा "हिन्दी एवं भावी पीढ़ी"। सम्मेलन में प्रस्तुत करने के लिए हिन्दी के साहित्यकारों, लेखकों एवं विद्वानों से 30 विभिन्न विषयों पर आलेख आमंत्रित किए गए हैं। इसमें देश-विदेश के अनेक विद्वानों द्वारा निर्धारित विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए जा रहे हैं। यह इस शताब्दी का अंतिम विश्व हिन्दी सम्मेलन होगा, जिसमें 21 वीं सदी में विश्व में नई पीढ़ी के सम्मुख हिन्दी के संदर्भ में भावी स्थितियों-परिस्थितियों का आकलन एवं विचार-विमर्श होगा।

इस सम्मेलन को अधिकाधिक उपयोगी और प्रभावशाली बनाने के लिए भारत को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। हिंदी को राष्ट्रीय मंच से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने के लिए सार्थक प्रयास करने होंगे। हिंदी के माध्यम से भारतीय संस्कृति की महान विरासत के विषय में विश्व में जागरूकता लाने के प्रयासों में गति लानी होगी। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए हिंदी को बढ़ावा देना होगा। विश्व की दूसरी भाषाओं के साथ ही हिंदी को भी ज्ञान-विज्ञान एवं आधुनिक तकनॉलाजी के अध्ययन-अध्यापन के माध्यम के रूप में स्थापित कर विश्व में/संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी को स्वीकृति दिलाने का प्रयास करना होगा। विदेशों के साथ राजनैतिक एवं आर्थिक तथा वाणिज्यिक संबंधों में और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए भी हिंदी का अधिकाधिक उपयोग/व्यवहार किया जाना आवश्यक होगा। इसके साथ ही भविष्य में आयोजित होने वाले विश्व हिंदी सम्मेलनों को और अधिक उपादेय बनाने तथा विश्वभाषा हिन्दी के उन्नयन एवं संवर्द्धन के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर समुचित क्रियान्वयन एवं इनके लिए सार्थक प्रयास अपेक्षित होगा।

1. विश्व हिंदी सम्मेलनों के लिए एक स्थायी सचिवालय की स्थापना और इसके कार्यान्वयन के लिए एक अंतर-सरकारी समिति का गठन। इस संदर्भ में मॉरीशस में प्रस्तावित विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना हेतु त्वरित कार्रवाई।

2. सम्मेलनों में पारित प्रस्तावों एवं निर्णयों को कार्यरूप देने की समुचित व्यवस्था हेतु निश्चित योजना का निर्धारण।

3. पूर्व सम्मेलनों के निर्णयों के कार्यान्वयन का पूर्ण विवरण तैयार कर प्रस्तुत करना और इनका रिकार्ड रखने की व्यवस्था।

4. विश्व हिंदी सम्मेलनों के नियमित आयोजनार्थ एक निश्चित समयांतराल का निर्धारण।

5. अहिंदी भाषी भारतीयों और अन्य भाषा-भाषी विदेशियों द्वारा हिंदी के विकास एवं प्रसार के लिए की जा रही सेवाओं, उनके लेखन व साहित्य सृजन को उचित स्थान, सम्मान तथा प्रोत्साहन प्रदान करना।

6. भारत में शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, प्रशासन, व्यापार-वाणिज्य, राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में हिंदी के व्यवहार को सुनिश्चित करते हुए भारतवंशी तथा आप्रवासी भारतीय बहुल देशों में, तदनंतर अन्य देशों में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना।

7. देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा की सामर्थ्य तथा वैज्ञानिकता के विविध पक्षों को विश्व में प्रचारित व प्रसारित करने के लिए आवश्यक सामग्री के माध्यम से उचित व्यवस्था करना।

8. देश-विदेश की हिंदी सेवी संस्थाओं, स्वयंसेवी संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओं, आदि-आदि के साथ भारत में अन्य/विदेशी भाषा के शिक्षण कार्य में अनवरत सन्नद्ध केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, केंद्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्ली, देश के केंद्रीय विश्वविद्यालय, मुक्त विश्वविद्यालय एवं हिंदी विश्वविद्यालय जैसी उच्चस्तरीय शैक्षिक संस्थाओं से विदेशी अध्येताओं, छात्रों को हिंदी सिखाने-पढ़ाने के लिए पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाए।

9. हिंदी को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए विभिन्न देशों की आवश्यकतानुसार हिंदी की पाठ्यपुस्तकें, द्विभाषी (हिंदी एवं अन्य/विदेशी भाषा) कोश, व्याकरण, अनुवाद, दृश्य-श्रव्य सामग्री (ऑडियो-वीडियो कैसेट्स), कंप्यूटर पर आधारित शिक्षण सामग्री आदि हिंदी शिक्षण (अन्य/विदेशी भाषा के रूप में) से संबंधित सामग्री को तैयार करने और विभिन्न देशों को उपलब्ध कराने के लिए एक निश्चित योजना।

10. भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा के प्रसार एवं विकास के लिए विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना। विदेशों से आने वाले शिष्ट मंडलों, अतिथियों, पर्यटकों और राजनयिकों के साथ हिंदी का अधिकाधिक व्यवहार करना और अन्य देशों में स्थित भारतीय दूतावासों में हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करना। साथ ही अन्य देशों के साथ भारतीय द्विपक्षीय संबंधों को हिंदी के माध्यम से समुन्नत एवं संवर्द्धित करना।

11. विश्व हिंदी सम्मेलनों, धार्मिक सम्मेलनों, विदेशों में होने वाले अन्य विविध सम्मेलनों, विभिन्न देशों के साथ होने वाली मैत्रीपूर्ण द्विपक्षीय वार्त्ताओं, अन्य देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं अन्य गणमान्य राजनेताओं के भारत आगमन तथा भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और अन्य गणमान्य मंत्रियों की अन्य देशों की सद्भावना यात्राओं के साथ अन्य विशिष्ट अवसरों पर भारत द्वारा बराबर यह आग्रह किया जाना चाहिए, इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि विभिन्न देश हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए अपना-अपना राजनयिक योगदान और पूर्ण समर्थन प्रदान करने की कृपा करें।

आशा है उपरिलिखित बिंदुओं पर गंभीरतापूर्वक विचार कर हिंदी की श्री समृद्धि को उत्तरोत्तर बढ़ाते हुए 'विश्व भाषा हिन्दी' को विश्व शिखर पर स्थापित किया जा सकेगा। और हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने का अधिकार शीघ्र ही प्राप्त हो सकेगा। भारत सरकार हिंदी के चतुर्दिक विकास और सर्वत्र प्रसार के लिए इस लेख में उल्लिखित विचारों के संदर्भ में आवश्यक कार्य योजना पर कार्यान्वयन कर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

स्रोत सामग्री :

1. राजभाषा भारती : अंक 75, अक्टूबर सितम्बर, 96 राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में संकलित आलेख—
   i. पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन : एक रिपोर्ट— माहामहिम श्री माता प्रसाद
   ii. पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन के बारे में सरकारी प्रतिनिधि मंडल में सम्मिलित मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) के अधिकारियों की रिपोर्ट
   iii. ट्रिनीडाड एवं टुबैगो में संपन्न पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन— डॉ. परमानंद पांचाल
2. साहित्य अमृत : अंक 11, जून, 96— "पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन"— रामजन्म शर्मा
3. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रकीर्णक सामग्री

हिन्दी का अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

विदेशों में हिन्दी भाषा और साहित्य का शिक्षण

महावीर सरन जैन

प्रयोक्ताओं की संख्या की दृष्टि से हिंदी विश्व की तीन प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व के लगभग 46 देशों में हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन की व्यवस्था है। जिन देशों में आप्रवासी भारतीयों की आबादी देश की जनसंख्या में 40 प्रतिशत से अधिक है, उन देशों में सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में हिंदी का शिक्षण होता है। उन देशों के अधिकांश आप्रवासी भारतीय जीवन के विविध क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग करते हैं एवं अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक के रूप में हिंदी को ग्रहण करते हैं, जिन देशों के निवासी हिंदी को एक **'विश्व भाषा'** के रूप में सीखते हैं, पढ़ते हैं तथा हिंदी में लिखते हैं उन देशों की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में प्राय: स्नातक एवं/अथवा स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी की शिक्षा का प्रबन्ध है। कुछ देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी में शोध कार्य करने और डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने की भी व्यवस्था है।

1. विदेशों में हिन्दी का व्यवहार एवं अध्ययन-अध्यापन :

भारत से इतर जिन देशों में हिंदी बोली जाती है तथा/अथवा जहाँ हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है उन देशों को हम तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—

(क) वे देश जहाँ आप्रवासी भारतीय बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं:
1. मारीशस, 2. फीजी, 3. सूरीनाम 4. गयाना, 5. ट्रिनीडाड एण्ड टुबेगो।

(ख) भारत के पड़ोसी देश :
6. पाकिस्तान, 7. बंगलादेश, 8. श्रीलंका, 9. नेपाल, 10. भूटान, 11. म्यंमार (बर्मा)।

(ग) अन्य देश।

महाद्वीप	देश
(1) **अमेरिका महाद्वीप**	: 12. संयुक्त राज्य अमेरिका 13. कनाडा, 14. मैक्सिको 15. क्यूबा।
(2) **यूरोप महाद्वीप**	: 16. रूस, 17. ब्रिटेन (इंग्लैंड) 18. जर्मनी, 19. फ्रांस, 20. बेल्जियम, 21. हालैंड (नीदरलैंड), 22. आस्ट्रिया,

23. स्विटजरलैंड, 24. डेनमार्क, 25. नार्वे, 26. स्वीडन, 27. फिनलैंड, 28. इटली, 29. पोलैंड, 30. चेक, 31. हंगरी, 32. रोमानिया, 33. बल्गारिया, 34. उक्रेन, 35. क्रोशिया।

(3) **अफ्रीका महाद्वीप** : 36. दक्षिणी अफ्रीका, 37. री-यूनियन द्वीप।

(4) **एशिया महाद्वीप** : 38. चीन, 39. जापान, 40. दक्षिण कोरिया, 41. मंगोलिया, 42. उज़बेकिस्तान, 43. ताजिकिस्तान, 44. तुर्की, 45. थाइलैंड।

(5) **आस्ट्रेलिया** : 46. आस्ट्रेलिया।

इन देशों में कुछ देश ऐसे है जहाँ के एकाधिक विश्वविद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं में हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था है। इसके विपरीत कुछ देशों में वहाँ के केवल एक विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है।

1.1. आप्रवासी भारतीयों की विपुल आबादी वाले देश :

1. मारीशस— यहाँ की लगभग दस लाख की आबादी में आप्रवासी भारतीय 52 प्रतिशत हैं। प्राथमिक हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में हिंदी प्रचारिणी सभा एवं आर्य परोपकारिणी सभा— इन दो स्वैच्छिक संस्थाओं के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। लगभग 300 गैरसरकारी स्कूलों में हिंदी की सांध्यकालीन कक्षाएँ लगती हैं। माध्यमिक स्तर पर लगभग 22 सरकारी तथा 75 गैरसरकारी स्कूलों में लगभग 20 हजार छात्र प्रतिवर्ष हिंदी का अध्ययन करते हैं। 'महात्मा गांधी संस्थान' द्वारा हिंदी का डिप्लोमा कोर्स तथा माध्यमिक स्कूलों के हिंदी अध्यापकों के लिए पी. जी. सी. ई. डिप्लोमा कोर्स चलाए जा रहे हैं। सन् 1990 से मारीशस विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से हिंदी का बी. ए. आनर्स का तीन वर्षों का कोर्स आरम्भ हो गया।

2. फीजी— यहाँ की लगभग छः लाख की आबादी में आप्रवासी भारतीय 51 प्रतिशत हैं। भारतीय स्कूलों में पहली और दूसरी कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम हिंदी है। तीसरी कक्षा से हिंदी केवल एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। यहाँ के एक मात्र विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का प्रावधान है। 'भारतीय फिल्में यहाँ बड़ी लोकप्रिय हैं, रेडियो फीजी पर प्रायः दिनभर हिंदी गीत और कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।' (1)

3. सूरीनाम— देश की आबादी में आप्रवासी भारतीय 40 प्रतिशत के लगभग हैं जो परस्पर अनौपचारिक वार्ता के समय सरनामी हिंदी का तथा औपचारिक अवसरों पर सरनामी मिश्रित मानक हिंदी का प्रयोग करते हैं। सनातन धर्म सभा की ओर से संचालित 100 से अधिक स्कूलों में हिंदी का अध्यापन एक विषय के रूप में होता है। सन् 1977 में पारामारीबो में गठित स्वैच्छिक संस्था 'हिंदी परिषद्' के द्वारा आयोजित पाठ्यक्रमों में लगभग एक हजार

से अधिक परीक्षार्थी प्रतिवर्ष हिंदी की परीक्षाएँ देते हैं 1977 से 1994 तक की अवधि में लगभग 18 हजार व्यक्ति हिंदी सीख चुके हैं। 'विदेशों में हिंदी का प्रचार' योजना के अन्तर्गत भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, पारामारीबो में हिंदी के एक अध्यापक कार्यरत हैं।

4. गयाना— यहाँ की लगभग आठ लाख की आबादी में आप्रवासी भारतीय 51 प्रतिशत से अधिक हैं। यहाँ के कुछ माध्यमिक स्कूलों में कक्षा 6 से कक्षा 8 तक हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है। गयाना विश्वविद्यालय में बी. ए. के स्तर पर एक विषय के रूप में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् की ओर से गयाना के जार्जटाउन में 'भारतीय सांस्कृतिक केंद्र' की स्थापना की गई है। 'विदेशों में हिंदी प्रचार योजना' के अन्तर्गत इस केन्द्र में हिंदी के एक अध्यापक कार्यरत हैं। संस्थाओं द्वारा प्राय: मन्दिरों में लगभग 100 पाठशालाएँ चलाई जाती हैं जिनमें पढ़ने वाले विद्यार्थी गयाना हिंदी प्रचार सभा द्वारा संचालित हिंदी की जूनियर तथा सीनियर परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं।

5. ट्रिनीडाड एण्ड टुबेगो— यहाँ की लगभग दस लाख की आबादी में आप्रवासी भारतीय 40 प्रतिशत से अधिक हैं। यहाँ 1987 से सरकारी संस्था 'नीहर्स्ट' में हिंदी के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। इसके अतिरिक्त यूनीवर्सिटी ऑफ वेस्ट इंडीज में हिंदीपीठ की स्थापना की गई। 'विदेशों में हिंदी प्रचार योजना' के अन्तर्गत इस देश में हिंदी के प्रोफेसर कार्यरत हैं— एक 'नीहर्स्ट' में तथा दूसरे यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टइंडीज में। द हिंदी फाउंडेशन ऑफ ट्रिनीडाड एण्ड टुबेगो (हिंदी निधि), सनातन धर्म महासभा, भारतीय विद्या संस्थान आदि संस्थाओं के द्वारा यहाँ के अनेक विद्यालयों में हिंदी की कक्षाएँ चलाई जा रही हैं तथा हिंदी प्रशिक्षण की सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। देश में हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि हिंदी निधि एवं यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टइंडीज के संयुक्त तत्वावधान में यहाँ की राजधानी पोर्ट-ऑफ-स्पेन में 4 अप्रैल से 8 अप्रैल, 1996 में पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ।

1.2. भारत के पड़ोसी देश— 6. पाकिस्तान, 7. बंगलादेश, 8. श्रीलंका, 9. नेपाल 10. भूटान एवं 11. म्यंमार में हिंदी शिक्षण की अलग-अलग स्थितियाँ हैं। पाकिस्तान, श्रीलंका एवं नेपाल के विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। पाकिस्तान में वहाँ के एक विश्वविद्यालय में तथा इस्लामाबाद के 'स्कूल ऑफ माडर्न लैंग्वेजिज' में, श्रीलंका में कलणिय स्थित विश्वविद्यालय में, नेपाल में काठमांडु स्थित त्रिभुवन विश्वविद्यालय में यह व्यवस्था है। श्रीलंका में स्नातक स्तर पर 'हिंदी डिग्री कोर्स' है तथा नेपाल में स्नातक तथा स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर हिंदी अध्यापन कार्य होता है। अप्रैल, 95 में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की सूचना के अनुसार सन् 1995 में बंगला देश में ढाका विश्वविद्यालय में हिन्दी का चार वर्षों का भाषा पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो जाएगा। हिंदी की पढ़ाई बंगला देश में 'इंडियन इंटरनेशनल स्कूल' में, भूटान में पाँच स्कूलों में, नेपाल में अनेक कॉलेजों एवं स्कूलों में तथा म्यंमार में मन्दिरों, धर्मशालाओं, गैरसरकारी स्कूलों एवं आर्य समाजों में होती है।

इन सभी देशों में जन समाज के एक बड़े वर्ग की कामकाज की भाषा हिंदी है। पाकिस्तान की राज भाषा 'उर्दू' है। बोलचाल में हिंदी एवं उर्दू में कोई भेद नहीं है। इन सभी देशों में बाजारों में हिंदी बोली जाती है तथा समझी जाती है। हिंदी के गाने एवं हिंदी फिल्में भी हर जगह लोकप्रिय हैं।

1.3. अन्य देश :

1.3.1. ऐसे देश जहाँ के एकाधिक विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थानों में हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था है :

12. संयुक्त राज्य अमेरिका— भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा अप्रैल, 95 में दी गई सूचना के अनुसार यहाँ के 24 विश्वविद्यालयों के 'दक्षिण एशिया अध्ययन विभागों' में उच्च एवं/अथवा प्रारम्भिक तथा इंटरमीडिएट स्तरों पर ऐच्छिक विषय के रूप में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। अमेरिका में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन भाषा केन्द्रित है। इन विश्वविद्यालयों में शिकागो, कैलिफोर्निया, विस्कान्सिन, कोलंबिया, पेन्सिलेवानिया, वाशिंगटन, टेक्सस तथा वर्जिनिया विश्वविद्यालय प्रमुख हैं। (2)

अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, हिंदी साहित्य सभा, हिंदी संघ, भारतीय विद्याभवन आदि विभिन्न संस्थाएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं आप्रवासी भारतीयों के मध्य भाषा एवं संस्कृति की जागृति एवं युवा पीढ़ी में भारतीय भाषाओं एवं भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग उत्पन्न करने के लिए सक्रिय हैं।

13. कनाडा— यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया में सामान्य हिंदी के दो वर्षों के पाठ्यक्रम के तथा मांट्रियाल के विश्वविद्यालय में प्रारम्भिक स्तर के हिंदी पाठ्यक्रम के अध्यापन की व्यवस्था है। ऑटवा में सन् 1971 में संस्थापित 'मुकुल हिंदी स्कूल' में सभी कक्षाओं में हिंदी पढ़ाई जाती है। टोरान्टो में भी कुछ हाईस्कूलों में हिंदी भाषा की कक्षाएँ लगती हैं।

हिंदी परिषद, क्यूबेक हिंदी संघ, लिटरेरी सोसाइटी आदि अनेक हिंदी संस्थाएँ ऑटवा, टोरान्टो, माँट्रियाल तथा वैंकुवर नगरों में हिंदी प्रचार-प्रसार के कार्यों में संलग्न हैं। यहाँ से हिंदी पाक्षिक 'विश्व भारती' का प्रकाशन होता है।

14. रूस— मस्क्वा (मास्को) स्थित प्राच्य अध्ययन सस्थान तथा पेतेरबुर्ग स्थित जीवित प्राच्य भाषा संस्थान में सन् 1920 से ही हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता रहा है। सम्प्रति मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी में हिंदी के छह वर्षों के पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। पेतेरबुर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी तथा व्लादिवोस्तोक स्टेट यूनिवर्सिटी में आवश्यकतानुसार मुख्य विषय अथवा गौण विषय के रूप में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है।

15. ब्रिटेन (इंग्लैंड)— तीन विश्वविद्यालयों में हिंदी के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। लंदन विश्वविद्यालय एवं कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में बी. ए., एम. ए., एम. फिल. तथा पी-एच.

डी. के स्तरों पर हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। यार्क विश्वविद्यालय में बी. ए. स्तर पर भाषाविज्ञान विषय के एक अंग के रूप में हिंदी के प्रशिक्षण का प्रावधान है।

ब्रिटेन के आप्रवासी भारतीयों के सांस्कृतिक जीवन में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। इंग्लैण्ड में हिंदी की कई स्वैच्छिक संस्थाएँ हैं जिनमें यू. के. हिंदी समिति तथा हिंदी परिषद् (लंदन) हिंदी के प्रचार प्रसार में विशेष रूप से सक्रिय हैं। हिन्दू मन्दिरों में प्राय: हिंदी की कक्षाएँ लगती हैं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हिंदी में सम्पन्न होते हैं।

16. जर्मनी— हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था प्रमुखत: निम्नलिखित विश्वविद्यालयों में है—

1. हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन 2. फ्री विश्वविद्यालय, बर्लिन 3. लीपजिग विश्वविद्यालय 4. मार्टिन लूथर विश्वविद्यालय 5. बॉन विश्वविद्यालय 6. हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय 7. हैम्बुर्ग विश्वविद्यालय।

इसके अतिरिक्त जिन विश्वविद्यालयों में हिंदी के प्रशिक्षण का प्रावधान है तथा जहाँ अनियमित रूप में हिंदी की कक्षाएँ लगती हैं वे हैं—

1. फ्रेंकफुर्त विश्वविद्यालय 2. ग्योटिंगम विश्वविद्यालय 3. कील विश्वविद्यालय 4. फ्राइगबुर्ग विश्वविद्यालय 5. कोलेन विश्वविद्यालय 6. मारबुर्ग विश्वविद्यालय 7. म्युनिख विश्वविद्यालय 8. म्युन्स्टर विश्वविद्यालय 9. ट्युबिंगन विश्वविद्यालय।

17. फ्रांस— पेरिस स्थित 'सौरबेन विश्वविद्यालय' में हिंदी का तीन वर्षों का पाठ्यक्रम है। तत्पश्चात् डाक्टरेट के लिए शोधकार्य की व्यवस्था है। पेरिस स्थित 'प्राच्य भाषाओं एवं सभ्यताओं के राष्ट्रीय संस्थान' में हिंदी में द्विवर्षीय सर्टिफिकेट, त्रिवर्षीय डिप्लोमा, चतुर्वर्षीय उच्च डिप्लोमा तथा पाँच वर्षीय कोर्स तथा छह वर्षीय उच्च अध्ययन डिप्लोमा के लिए शिक्षण की व्यवस्था है।

18. हालैंड (नीदरलैंड)— हालैंड में हिंदी के प्रशिक्षण की व्यवस्था दो प्रकार से है— 1. भारतीय, पाकिस्तानी तथा सूरीनाम से आकर हालैंड में बसे लगभग एक लाख आप्रवासी भारतीयों के लिए निजी संगठनों या स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न केन्द्रों में हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं। इन केन्द्रों में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। परीक्षाओं का आयोजन 'हिंदी परिषद्', नीदरलैंड द्वारा होता है। देश के देन हाख, आम्स्तरदम, यूत्रेख्त, रौतरदाम, देल्फत, लाइडन तथा ख्रोनिखन नगरों तथा कई उपनगरों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक सभाएँ आयोजित करके धार्मिक प्रवचन, कथा, पूजा-कार्यक्रम, यज्ञ कर्म, वेद पाठ, श्रीमद् भगवद्गीता चिन्तन तथा श्रीरामचरितमानस चर्चा में हिंदी प्रयोग के साथ-साथ हिंदी के कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं। [3]

2. लायडन विश्वविद्यालय में हिंदी के चार वर्षों के पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

19. स्विट्जरलैंड— लवसाने तथा ज्युरिख के विश्वविद्यालयों में हिंदी के प्रारम्भिक पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं।

20. डेनमार्क— कोपेनहोगेन 'स्टूडियो स्कोल' में तथा अर्हुस विश्वविद्यालय के 'इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी' में हिंदी के प्रशिक्ष्ण की व्यवस्था है।

21. नार्वे— ओसलो तथा कुछ अन्य नगरों में प्राथमिक विद्यालयों में हिंदी अध्ययन की सुविधा है। ओसलो विश्वविद्यालय में हिंदी में मास्टर डिग्री के लिए अध्ययन-अध्यापन का प्रावधान है।

22. स्वीडन— स्टॉकहोम विश्वविद्यालय में हिंदी के आधारभूत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। उप्पसला विश्वविद्यालय में विशेष रूप से धर्म एवं दर्शन विषयों में एम. ए. तथा डाक्टरेट करने वाले विद्यार्थियों के लिए हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है।

23. इटली— वेनिस वविश्वविद्यालय में 'इंडोलोजी एवं फार-ईस्ट' विभाग मिलान विश्वविद्यालय, मिलान स्थित 'इटालियन इंस्टीट्यूट फार मिडिल एण्ड फार ईस्ट', ट्यूरिन विश्वविद्यालय के 'आधुनिक आर्य परिवार की भाषाओं का विभाग' तथा नेपल्स विश्वविद्यालय में हिंदी का प्रशिक्षण होता है। वेनिस तथा नेपल्स विश्वविद्यालय में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की उच्चस्तरीय परम्परा रही है।

24. पोलैंड— वार्सा स्थित विश्वविद्यालय तथा क्राकूव स्थित 'यागिलोनियन विश्वविद्यालय' में हिंदी के पाँच वर्षों के डिग्री पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

25. चेक गणराज्य— चार्ल्स यूनिवर्सिटी प्राग में हिंदी के स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। प्राग के भाषा विद्यालय में भी हिंदी अध्यापन का प्रावधान है।

26. हंगरी— बुदापेस्त स्थित 'ओत्वोश लोरान्द' विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा-विज्ञान विभाग में तथा 'कोरोशि चोमा तारशशाग' में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का प्रावधान है।

27. दक्षिणी अफ्रीका— दक्षिण अफ्रीका हिंदी शिक्षा संघ लगभग 50 पाठशालाओं के माध्यम से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करता है। यूनिवर्सिटी ऑफ डरबन में स्नातक/स्नातकोत्तर स्तरों पर हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है।

28. जापान— तोक्यो और ओसाका के विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्ययन और अध्यापन की व्यवस्था है। यहाँ विश्वविद्यालय स्तर पर 6 वर्षीय कोर्स है।

तोक्यो स्थित 'एशिया-अफ्रीका भाषावैज्ञानिक संस्थान' में हिंदी का द्विवर्षीय कोर्स है।

इन 3 संस्थाओं में डेढ़ सौ से अधिक छात्र छात्राएँ हिंदी को मुख्य विषय के रूप में पढ़ रहे हैं। अन्य विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, शिक्षा संस्थानों में हिंदी वैकल्पिक विषय के रूप में अर्थात् द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। [4]

29. दक्षिणी कोरिया— सियोल एवं योंगइन स्थित 'हांकुक' विश्वविद्यालय (हांकुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज) तथा पूसान स्थित विश्वविद्यालय (पूसान कॉलेज ऑफ फॉरेन स्टडीज) में हिंदी शिक्षण की सुविधा है। हांकुक यूनिवर्सिटी में हिंदी की पढ़ाई का चार वर्षीय स्नातक कोर्स है। हांकुक यूनिवर्सिटी सिओल में 1972 से, योंगइन केम्पस में सन् 1984 से तथा पूसान में सन् 1984 से हिंदी का अध्ययन-अध्यापन आरम्भ हुआ। [5]

30. आस्ट्रेलिया— कैनबरा स्थित विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर ऐच्छिक विषय के रूप में अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त 'ला त्रोवे', 'मोनाश', 'कवीन्स लैंड' विश्वविद्यालयों में भी हिंदी प्रशिक्षण का प्रावधान है।

1.3.2. वे देश जहाँ केवल एक विश्वविद्यालय/शिक्षण संस्थान में हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था है :

इस उपवर्ग में उन देशों को भी समाहित कर लिया गया है जहाँ कुछ वर्ष तक एकाधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती थी।

देश का नाम	विश्वविद्यालय/शिक्षण संस्थान का नाम	प्रशिक्षण का स्तर
31. मैकिसको	एल कोलेहियो दे मेहिको	प्रारम्भिक स्तर (अनियमित)
32. क्यूबा	विदेशी भाषाओं का उच्च संस्थान	स्नातक स्तर
33. बेल्जियम	घेंट विश्वविद्यालय, घेंट	चार वर्षों का डिग्री पाठ्यक्रम
34. आस्ट्रिया	वियना विश्वविद्यालय का 'इंस्टीट्यूट आफ इंडोलॉजी'	डिप्लोमा कोर्स
35. फिनलैंड	हेलसिंकी विश्वविद्यालय	प्राथमिक स्तर-एक वर्ष का पाठ्यक्रम माध्यमिक स्तर-एक वर्ष का पाठ्यक्रम
36. रोमानिया	बुकारेस्त विश्वविद्यालय	चार वर्षों का पाठ्यक्रम
37. बल्गारिया	सोफिया विश्वविद्यालय	'इंडोलॉजी' विषय के पाँच वर्षों के पाठ्यक्रम के एक अंग के रूप में प्रशिक्षण
38. उक्रेन	कीव स्थित विश्वविद्यालय	कॉलेज स्तर

39. क्रोशिया गणराज्य	जग्रेब विश्वविद्यालय	स्नातक स्तर
40. चीन	बीजिंग विश्वविद्यालय का 'पूर्वी भाषाएँ और साहित्य विभाग'	स्नातक स्तर
41. मंगोलिया	भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र, उलान बातर	सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम
42. उजबेकिस्तान	ताशकंद विश्वविद्यालय	पाँच वर्षों का पाठ्यक्रम
43. ताजिकिस्तान	ताजिक स्टेट विश्वविद्यालय	स्नातकोत्तर स्तर
44. तुर्की	अंकारा विश्वविद्यालय	स्नातक
45. थाईलैंड	बैंकाक स्थित विश्वविद्यालय	स्नातकोत्तर स्तर
46. रियूनियन द्वीप	रियूनियन विश्वविद्यालय	प्रारम्भिक स्तर

इन 46 देशों के अतिरिक्त कुछ देशों में भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, भूटान आदि देशों के नागरिक काफी बड़ी संख्या में नौकरी, व्यापार, उद्योग आदि में कार्यरत हैं। इनके बीच बोलचाल की हिंदी-उर्दू का व्यवहार होता है। हिंदी के गाने, गजलें, भजन तथा हिंदी फिल्में यहाँ बहुत लोकप्रिय हैं। इन देशों में निम्नलिखित देश उल्लेखनीय हैं:

47. अर्जेन्टिना, 48. इराक, 49. ईरान, 50. इंडोनिशिया, 51. ओमान, 52. कतार, 53. कुवैत, 54. केन्या, 55. जांबिया, 56. तंजानिया, 57. ताइवान, 58. नाइजेरिया, 59. फिलीपाइन्स, 60. बहरीन, 61. बोत्स्वाना, 62. मलेशिया, 63. यमन, 64. लेबनान, 65. सऊदी अरब, 66. सिंगापुर।

इन देशों में से कुछ देशों के स्कूलों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है।

2. विदेशों में हिन्दी : शिक्षण सामग्री, व्याकरण एवं भाषावैज्ञानिक अध्ययन, अनुवाद तथा सर्जनात्मक साहित्य :

2.1. हिन्दी भाषा की पाठ्य पुस्तकें

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका— यहाँ के विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिंदी प्राध्यापकों ने हिंदी भाषा की अनेक पाठ्य पुस्तकों का निर्माण किया है। प्रमुख पुस्तकें निम्नलिखित हैं:

1. हेनिंग्सवाल्ड : स्पोकन हिन्दुस्तानी— दो खण्ड (सन् 1945) अमेरिकन कौंसिल ऑफ् लर्नेड सोसाइटी, वाशिंगटन।
2. फेअरबैंक्स : हिंदी एक्सरसाइज़ेज एण्ड रीडिंग्ज (सन् 1955) कार्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क।

3. गम्पर्ज : हिंदी रीडर— भाग-1 (1960) यूनिवर्सिटी ऑफ़ केलिफोर्निया, बर्कले।
4. हार्टिन : हिंदी बेसिक रीडर्स-यूनिट 1-8 (1960) सेन्टर फ़ार एप्लाइड लिंग्विस्टिक ऑफ़ माडर्न लैंग्वेज़िज, वाशिंगटन।
5. अग्यूलर तथा ब्रूस आर. प्रे. तथा अन्य (प्रीति कौल, जौहरी तथा ब्रजेन्द्र सिंह): ए बेसिक कोर्स इन हिंदी (1961) मिशिगन यूनिवर्सिटी।
6. गम्पर्ज एवं जून रूमरी तथा अन्य (डॉ. अमर बहादुर सिंह एवं सी. एम. नईम.): कन्वर्सेशनल हिंदी-उर्दू-दो खण्डों में (1962-63) यूनिवर्सिटी आफ़ केलिफोर्निया।
7. फ़ेअरबैंक्स तथा पंडित : हिंदी : ए स्पोकिन एप्रोच (1965) दकन कालेज, पूना।
8. फ़ेअरबैंक्स तथा डॉ. मिश्र : स्पोकन एण्ड रिटिन हिंदी (1966) कार्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क।
9. डॉ. यमुना काचरू : इंटरमीडिएट हिंदी कोर्स (1966) इलिनाय यूनिवर्सिटी।
10. ऊषा सकसेना : इंटरमीडिएट हिंदी विद ग्लोसरी एण्ड स्ट्रक्चरल नोट्स (1967), विस्कोन्सिन यूनिवर्सिटी, मैडीसन।
11. रिचर्ड एम. हैरिस तथा रमानाथ शर्मा : ए बेसिक हिंदी रीडर (1969) कार्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क।

(2) सोवियत रूस— डॉ. दीमिशित्स, डॉ. उलत्सिफ़ेरोव एवं डॉ. गोर्यूनोव ने तीन खण्डों में हिंदी भाषा की पाठ्य पुस्तक का निर्माण किया है जिसका प्रकाशन नाउका प्रकाशनगृह मास्को से 1979 से 1983 की अवधि के बीच हुआ।

(3) जर्मनी— हम्बोल्ट विश्वविद्यालय में सन् 1967 में हिंदी व्याकरण गाइड का निर्माण हुआ। डॉ. लोठार लुत्से तथा डॉ. बहादुर सिंह द्वारा निर्मित 'द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी' का प्रकाशन सन् 1970 में हुआ।

(4) इंग्लैंड— डॉ. मैकग्रेगर के संपादकत्व में 'एकसरसाइजिज़ इन स्पोकन हिंदी' शीर्षक पाठ्य पुस्तक सन् 1970 में निर्मित हुई। सन् 1972 में इनकी 'आउट लाइन ऑफ हिंदी ग्रामर विद एक्सरसाइजिज़' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित हुई।

(5) जापान— प्रो. क्यूयादोइ ने हिन्दी व्याकरण और पाठमाला (1963) तथा हिंदी पाठमाला (1966) का निर्माण किया। प्रो. कात्सुरो कोगा के सम्पादकत्व में 1966 में हिंदी पाठमाला भाग— I तथा 1977 में हिंदी पाठ्य पुस्तक भाग-II प्रकाशित हुई। जापान में अन्य पाठ्य पुस्तकें भी निर्मित हुई हैं जिनमें प्रो. तोमिओ मिज़ोकामी कृत 'हिंदी: ग्रेमिटिकल मेनुअल' उल्लेखनीय है जिसका प्रकाशन सन 1980 में हुआ।

(6) चेक— डॉ. विन्तर्सेथ पोरीज्य की 'हिन्दोस्टीना' (हिन्दी भाषा का पाठ्यक्रम) एक उल्लेखनीय पाठ्य पुस्तक है जिसका सन् 1963 में प्राग के स्टेट पैडागाजिल पब्लिशिंग हाउस से प्रकाशन हुआ। इस पाठ्यपुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें चेक भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी में भी व्याख्याएँ प्रस्तुत हैं।

(7) हंगरी— आर्पाद दैब्रेत्सैनी (1911-1984) ने हिन्दी की दो पाठ्य पुस्तकें तैयार कीं :

1. नौसिखियों के लिए हिंदी की पाठ्य पुस्तक, बुदापेस्त (1959)
2. हंगरी भाषियों के लिए हिंदी भाषा पाठ्यक्रम, बुदापेस्त (1983) [6]

(8) रोमानिया— रोमानियन छात्रों के लिए डॉ. विद्यासागर ने सन् 1972 में 'कुर्स द लिम्बा हिंदी' तथा डॉ. सूरजभान सिंह ने सन् 1980-81 में 'मेनुअल द लिम्बा हिंदी' (दो भाग) का निर्माण किया। बुकारेस्त विश्वविद्यालय ने इनका प्रकाशन किया।

(9) स्पेन— स्पेनिश छात्रों के लिए श्रीमती आन्ना थापर ने 'ग्रामिटिका द हिंदी' शीर्षक से हिंदी भाषा की पाठ्य पुस्तक लिखी जिसका प्रकाशन अल्हम्ब्रा प्रकाशन संस्थान, मेड्रिड से सन् 1987 में हुआ।

(10) कोरिया— कोरियन छात्रों के लिए प्रो. उ-जो-किम ने 'हिंदी पाठ' एवं प्रो. हैंगजंग स ने 'हिंदी उच्चारण शिक्षण' का प्रणयन किया है।

(11) ट्रिनीडाड एण्ड टुबेगो— केरेबियन देशों में पाठ्य पुस्तकों के निर्माण की दृष्टि से ट्रिनीडाड का नाम उल्लेखनीय है। इस देश के छात्रों को हिंदी पढ़ाने की दृष्टि से कमला रामलखन ने 'हिंदी प्रभात' शीर्षक से आधारभूत पाठ्य सामग्री का निर्माण किया है। इसका प्रकाशन देवनागरी पब्लिशर्स द्वारा 1993 में किया गया है।

2.2. वार्तालाप :

रूस से हिंदी भाषा की जो पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनमें हिंदी में बातचीत के भी नमूने हैं। वार्तालाप पुस्तिकाओं की दृष्टि से चेक विद्वान डॉ. ओदोलेन स्मेकल कृत 'हिंदी वार्तालाप', जर्मन के डॉ. (श्रीमती) डगमर मर्कोबा अंसारी तथा एम. अहमद अंसारी की 'जर्मन-हिंदी बातचीत' तथा जापान के प्रो. कयूया दोइ की 'हिंदी-जापानी वार्तालाप' अधिक चर्चित हैं।

2.3. शब्दकोश :

विदेशों में जिन विदेशों भाषाओं के साथ हिंदी के शब्दकोश प्रकाशित हुए हैं उनमें जर्मनी, हंगेरियन, रोमानियन, रूसी, उज्बेकी, जापानी प्रमुख हैं।

1. हिंदी-जर्मन शब्दकोश : डॉ. हेल्मट नेस्पिताल

2. हिंदी-जर्मन शब्दकोश : एरिका क्लेम
3. जर्मन-हिंदी कोश : डॉ. श्रीमती मारग्रेट गात्स्लाफ़
4. हंगेरियन-हिंदी शब्दकोश : पेतैर कोश
5. हिंदी-रोमानिया शब्दकोश : डॉ. विद्यासागर दयाल-सहलेखक-इयोन पेतेरेस्कु
6. रोमानिया-हिंदी शब्दकोश : डॉ. विद्यासागर दयाल-सहलेखक-इयोन पेतेरेस्कु
7. हिंदी-रूसी कोश : डॉ. अलेक्जेइ पेत्रोविच वारान्निककोव
8. हिंदी-उज्बेकी शब्दकोश : डॉ. श. अह्मेदोव
9. संक्षिप्त हिंदी— जापानी शब्दकोश : प्रो. क्यूया दोइ

2.4. हिन्दी भाषा : भाषावैज्ञानिक अध्ययन :

सत्रहवीं, अट्ठारहवीं एवं उन्नीसवीं शताब्दियों से हिंदी भाषा के विकास में विदेशी विद्वानों का योगदान सर्वविदित है। जॉन जोशुआ केटलेर, बेंजामिन शूल्ज तथा कैसियानों बेलिगत्ती ने हिंदी के व्याकरणों के लेखन की परम्परा का सूत्रपात किया। केटलेर ने हिंदुस्तानी भाषा का व्याकरण सन् 1698 में पहले डच भाषा में लिखा। बाद में इसका लैटिन में अनुवाद हुआ। बेंजामिन शूल्ज ने सन् 1745 में तथा कैसियानो बेलिगत्ती ने सन् 1771 में अपने-अपने व्याकरण मूलतः लैटिन में ही लिखे। [7]

इनके बाद जिन विदेशी विद्वानों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया उनमें फ्रेंच भाषी गार्सां द तासी, इतालवी भाषा पेंजानो विकारियो, डॉ. एल. पी. टेस्सीटरी तथा अंग्रेजी भाषी हेरासिम लेवेडेफ, जान शेक्सपीयर, पादरी आदम, रेवरेंड विलियम एथारिंगटन, एस. एच. केलाग (अमेरीकी पादरी), एडविन ग्रीव्स, जान टी. प्लाट्स, पामर, पाल व्हाले, डॉ. गिलक्राइस्ट, हेनरी थामस कोलब्रुक, मोनियर विलियम, जान बीम्स, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, डॉ. ए. एफ. रुडाल्फ हार्नले के नाम उल्लेखनीय हैं।

बीसवीं शताब्दी में द्वितीय महायुद्ध के बाद विभिन्न देशों में हिंदी भाषा से सम्बन्धित प्रमुख भाषा वैज्ञानिक अध्ययनों का विवरण प्रस्तुत है:

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका—

1. यमुना काचरू : 'एन इन्ट्रोडक्शन टू हिंदी सिन्टैक्स' [8]
2. फ्रैंकलिन साउथवर्थ : 'द स्टूडेन्ट्स हिंदी-उर्दू रिफरेंस मैनुअल' [9]

(2) इंग्लैण्ड— प्रो. आर. एस. मेकग्रेगर : 'आउटलाइन ऑफ हिंदी ग्रामर विद एक्सरसाइजिज़' [10]

(3) जर्मनी— डॉ. श्रीमती मारग्रेट गात्स्लाफ : 'हिंदी व्याकरण' [11]

(4) रूस— डॉ. लाज्मन दीमशित्स : 'हिंदी व्याकरण' [12]

(5) जापान— जापान के भाषा वैज्ञानिकों ने हिंदी के विविध पक्षों पर भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अनेक कार्य सम्पन्न किए हैं। प्रकाशित पुस्तकों, शोधप्रबंधों एवं लेखों की सूची प्रो. कात्सुरो कोगा ने 'जापान में हिंदी अध्ययन की स्थिति' शीर्षक लेख में प्रस्तुत की है। (13)

इनमें निम्नलिखित अध्ययन अधिक उल्लेखनीय हैं :

1. हिंदी व्याकरण : प्रो. सावा 2. हिंदी ध्वनिग्राम और वर्तनी : तेजीसाकाता 3. फोनोलॉजी : नोरोहिका उचिदा 4. हिंदी भाषा का परिचयात्मक व्याकरण :. तोशिओ तानाका एवं काजुहिको माचिदा 5. आधुनिक हिंदी में संयुक्त क्रियाएँ : तोमियो मिजोकामि।

2.5. हिन्दी की साहित्यिक कृतियों का विदेशी भाषा में अनुवाद :

(1) रूस— अकादमिशियन वारान्निक्कोव ने तुलसीकृत रामचरितमानस का रूसी भाषा में अनुवाद किया। मध्ययुगीन हिंदी कवियों में कबीर, सूर, तुलसी तथा मीराबाई की रचनाओं के रूसी भाषा में अनुवाद हो चुके हैं। हिंदी के जिन कहानीकारों की कहानियों के रूसी भाषा में अनुवाद हुए हैं उनमें प्रेमचंद, वृन्दावनलाल वर्मा, यशपाल, जैनेन्द्र कुमार, भगवतीचरण वर्मा, इलाचंद्र जोशी, अमृतलाल नागर, उपेन्द्रनाथ अश्क, फणीश्वरनाथ रेणु, मोहन राकेश, रांगेय राघव, भीष्म साहनी, विष्णु प्रभाकर तथा अमृतराय उल्लेखनीय हैं। उपन्यासों में प्रेमचंद के गोदान और कर्मभूमि, यशपाल के झूठा-सच तथा दिव्या, रेणु कृत मैला आंचल के अनुवाद हो चुके हैं। जिन आधुनिक कवियों की चुनी हुई कविताओं के अलग-अलग संग्रह अनुवादित होकर प्रकाशित हुए हैं उनमें निराला, पंत, दिनकर, बच्चन तथा रघुवीर सहाय अधिक महत्वपूर्ण हैं। 1973 में 'दीपावली' शीर्षक से आधुनिक हिंदी कविताओं का जो संग्रह प्रकाशित हुआ है उसमें 27 हिंदी कवियों की 200 रचनाएँ हैं। इन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा, दिनकर, बच्चन, शिवमंगलसिंह सुमन, केदारनाथ अग्रवाल, मुक्तिबोध, अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, गिरजाकुमार माथुर, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, श्रीकांत वर्मा, नरेश मेहता, नागार्जुन तथा धूमिल समाहित हैं।

हिंदी साहित्यिक कृतियों का रूसी भाषा में अनुवाद करने तथा साहित्य संबंधी अध्ययन करने वाले अध्येताओं में 1. ई. पी. चेलीशेव 2. बेकायेवा 3. विश्वेव्स्काया 4. बालिन 5. गफरोवा 6. गुनामोवा 7. सेरेब्रयान्नी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। (14)

2. जापान— आधुनिक हिंदी साहित्य के रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं का जापानी भाषा में विपुल मात्रा में अनुवाद हुआ।

अज्ञेय, अमरकांत, काशीनाथ सिंह, कैलाश वाजपेयी, कुंवर नारायण, गजानन माधव मुक्तिबोध, केदारनाथ सिंह, जगदीशचंद्र माथुर, जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्र कुमार, नागार्जुन, निर्मल वर्मा, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', प्रेमचंद, बेढब बनारसी, भगवतीचरण वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, भीष्म साहनी, मधुकर सिंह, मन्नू भण्डारी, मस्तराम कपूर, महादेवी वर्मा, मार्कण्डेय,

मिथिलेश्वर, मोहन राकेश, यशपाल, रामधारी सिंह 'दिनकर', राही मासूम रजा, विजयदेव नारायण साही, विष्णु प्रभाकर, शमशेर बहादुर सिंह, शिवानी, शेखर जोशी, श्रीकांत वर्मा, सुदर्शन, सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', हजारी प्रसाद द्विवेदी, हरिशंकर परसाई आदि साहित्यकारों की रचनाओं का अनुवाद हो चुका है। (15)

3. जर्मनी— डॉ. (श्रीमती) मारग्रेट गात्स्लाफ ने यशपाल, प्रेमचंद एवं कृशनचन्दर की कहानियों का तथा प्रेमचंद के 'निर्मला' एवं भीष्म साहनी के 'बसंती' उपन्यासों का जर्मन भाषा में अनुवाद किया है। श्रीमती इरोना त्सेहरा के संपादकत्व में 'आधुनिक हिंदी गीत' पुस्तक प्रकाशित है। श्री सेतान्दवीर ने 'सूरदास कृष्णायन' शीर्षक से दो खण्डों में सूरदास के पदों का जर्मन भाषा में अनुवाद किया है।

4. इटली— वेनिस विश्वविद्यालय की डॉ. मारियोल्ला ऑफरेदी ने प्रेमचंद के 'गोदान' तथा कुँवर नारायण की काव्यकृति 'आत्मजयी' का तथा डॉ. चेचीलिया कोस्सियो ने फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' का इतालवी भाषा में अनुवाद किया है।

5. इंग्लैंड— डॉ. मैकग्रेगर ने नंददास के पदों का अनुवाद किया है।

6. नीदरलैंड— प्रो. वेगेल ने प्रेमचंद की कहानियों का डच भाषा में अनुवाद किया है।

7. फ्रांस— श्रीमती वौदवील ने रामचरितमानस, ढोला मारु रा दूहा तथा कबीर की रचनाओं का फ्रेंच में अनुवाद किया है।

8. पोलैंड— श्री पारनोव्स्की ने 'मैला आंचल' का तथा डॉ. मारिया क्षिश्तोफ बृस्की ने लक्ष्मीनारायण लाल और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का अनुवाद किया है। आधुनिक हिंदी लेखकों की रचनाओं के अनुवाद का काम भी चलता रहता है। प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्र कुमार, कृशनचंदर, फणीश्वरनाथ रेणु, ऊषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी आदि की रचनाओं का अनुवाद पोलिश भाषा में प्रकाशित किया गया था। (16)

9. हंगरी— डॉ. एवा अरादी ने प्रेमचंद तथा आधुनिक हिंदी कहानीकारों की कहानियों का हंगेरियन भाषा में अनुवाद किया है।

10. रोमानिया— 'गोदान' तथा 'मैला आंचल' के रोमानियन अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। श्री निकोलाय ज्बेर्या ने 'रोमानियन दंत कथा' का, श्री स्तेरियान कोर्नेल ने श्री जयंत विष्णु नारलीकर एवं श्री अग्निहोत्री की कुछ वैज्ञानिक कहानियों का तथा दनिल एंका ने प्रेमचंद की 22 कहानियों का सीधे हिंदी से रोमानियन भाषा में अनुवाद किया है।

11. बल्गारिया— 'गोदान' तथा 'निर्मला' का अनुवाद हो चुका है।

12. चीन— तुलसीकृत रामचरितमानस का, प्रेमचंद के उपन्यास निर्मला, रंगभूमि तथा प्रेमाश्रम का तथा प्रेमचंद की कहानियों का चीनी भाषा में अनुवाद हो चुका है।

2.6. विदेशी साहित्यिक कृतियों/लोककथाओं का हिन्दी में अनुवाद :

1. पोलैंड— डॉ. मारिया क्षिश्तोफ बृस्की ने पोल्स्की (पोलिश) के राष्ट्रीय महाकाव्य 'आदम मित्स्क्य एविच' का हिंदी अनुवाद किया है।

•**2. चेक** — डॉ. ओदोलेन स्मेकल एवं शारदा यादव ने चेक और मोराविया में प्रचलित 27 लोककथाओं का संकलन एवं हिंदी अनुवाद किया है। (17)

डॉ. ओदोलेन स्मेकल तथा उमाशंकर सतीश ने नोबेल पुरस्कार विजेता विश्वविख्यात चक कवि स्व. यरोस्लाव साईफर्त की 67 कविताओं का हिंदी रूपान्तर किया है। (18)

3. रोमानिया— कामेन काराजिउ ने रोमानियन महाकवि मिहाइ एमिनेस्कु की कुछ कविताओं का हिंदी अनुवाद किया है।

4. चीन— श्रीमती सू-इन-हुवान ने चीनी लोककथाओं का हिंदी अनुवाद किया है।

5. जापान— श्री गिरीश बख्शी एवं प्रो. तोमिओ मिजोकामि ने 101 जापानी गीतों का हिंदी अनुवाद किया है। इन गीतों को अंतर्राष्ट्रीय स्वर लिपि के साथ-साथ हिंदुस्तानी संगीत की स्वर लिपि में भी प्रस्तुत किया गया है। (19)

2.7. विदेशों में हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन :

हिंदी साहित्य का इतिहास तथा साहित्यिक कृतियों का उन्नीसवीं शताब्दी एवं बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में आलोचनात्मक अध्ययन करने वाले विदेशी विद्वानों में गासाँ द तासी (20), ग्रियर्सन (21) एवं डॉ. एल. पी. टेस्सीटरी (22) के नाम सर्वविदित हैं।

समकालीन विद्वानों में रूस के ई. पी. चेलीशेव का 1968 में लिटरेचुरा हिंदी (हिंदी साहित्य) तथा 1992 में नताल्या मिखाइलोना साजनोवा का मध्यकालीन अष्टछाप के प्रसिद्ध भक्त कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर ग्रंथ प्रकाशित हुए। 1985 में चीनी भाषा में हिंदी साहित्य पर ग्रंथ प्रकाशित हुआ। जापानी विद्वान प्रो. तानाका ने आधुनिक हिंदी साहित्यकारों एवं विद्वानों पर मौलिक रूप से विस्तृत शोध कार्य सम्पन्न किए। साहित्य का इतिहास, मध्यकालीन हिंदी साहित्य तथा आधुनिक हिंदी साहित्य के क्षेत्र में आलोचनात्मक अध्ययन करने वाले जापानी विद्वानों का विवरण प्रो. कात्सुरो कोगा ने अपने एक लेख में प्रस्तुत किया है। (23)

2.8. विदेशों में हिन्दी-साहित्य सर्जन एवं प्रमुख रचनाकार :

मारीशस, फीजी, सूरीनाम जैसे देशों में हिंदी के रचनाकारों की संख्या सैकड़ों में है। इस लेख में सभी रचनाकारों के नाम देना संभव नहीं है। यहाँ हिंदी के प्रमुख रचनाकारों का परिचय एवं उन प्रसिद्ध ग्रंथों का उल्लेख किया जाएगा जिनमें रचनाकारों की रचनाएँ संकलित हैं अथवा जिनमें रचनाकारों का परिचय प्रस्तुत है।

(क) मारीशस— 1971 में प्रकाशित 'प्रवासी स्वर' में मारीशस के 11 कवियों की कविताएँ संकलित हैं। प्रमुख कवि हैं— बृजेन्द्र भगत, सोमदत्त बखौरी तथा अभिमन्यु अनत। कहानीकारों में प्रमुख हैं— श्रीमती भानुमती नागदान, हरिनारायण महावीर, रामदेव धुरन्दर,

ईश्वर जागा सिंह। डॉ. कामता कमलेश द्वारा संकलित 'मारीशस की हिंदी कहानियाँ' शीर्षक ग्रंथ में मारीशस के हिंदी कहानीकारों की 23 कहानियाँ संग्रहीत हैं।[24] गगनांचल के मारीशस अंक में 8 हिंदी रचनाकारों की साहित्यिक कृतियों का तथा 10 हिंदी लेखकों के लेखों का समावेश है। रचनाकार हैं— सिद्ध हस्त एकांकीकार, कथाकार एवं लेखक अभिमन्यु अनत तथा लालची गंगादीन, कथाकार हैं— पूजानंद नेमा तथा सोनालाल नेमधारी तथा कवि हैं— परमेश्वर तिवारी, हरिनारायण सीता, ब्रजेन्द्र मधुकर एवं इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ। लेखक हैं— 1. जी. बन्धु 2. अनिरुद्ध द्वारका 3. धर्मवीर धूरा शास्त्री 4. पुलस्त्य रुद्रमन 5. खे. लीला 6. धनदेव बहादुर 7. अजामिल माताबदल 8. बिदवन्ती अजोध्या 9. सत्यदेव प्रीतम 10. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि।[25]

मारीशस की हिंदी प्रचारिणी सभा ने हीरक महोत्सव के अवसर पर 'काव्य परिचय' शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन किया है जिसमें स्वर्गीय सूर्यप्रसाद मंगर भगत, जयरुद्र दोसिया, सोमदत्त बखौरी जैसे श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं के साथ-साथ वर्तमान स्थापित कवियों— हरिनारायण सीता, जनार्दन कालीचरण, सच्चिदानंद शर्मा, परमेश्वर बिहारी 'शिवरत्न', डॉ. बीरसेना जागासिंह, डॉ. मुनीश्वर लाल चिन्तामणि, हेमराज सुन्दर, राजवन्ती अजोध्या। 'नेहा' जयवन्ती रंगू 'शोभा' की कृतियाँ संकलित हैं।[26] श्री विष्णु प्रभाकर ने अपने एक लेख में मारीशस के अनेक रचनाकारों का उल्लेख किया है।[27] मारीशस के सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाकार हैं :

1. सोमदत्त बखौरी 2. अभिमन्यु अनत 3. पं. वासुदेव विष्णु दयाल तथा 4. प्रह्लाद रामशरण।

1. श्री सोमदत्त बखौरी— इन्होंने काव्य कृतियों तथा यात्रा-वृत्तान्तों का प्रणयन किया है। काव्य कृतियों में 'मुझे कुछ कहना है' (1967) तथा 'बीच में बहती धारा' (1971) तथा 'यात्रा-वृत्तान्तों की पुकार' (1972) विशेष चर्चित हैं।

2. अभिमन्यु अनत— आपका सृजनशील व्यक्तित्व बहुआयामी है। आपने उपन्यास, कहानी, नाटक तथा कविता इन सभी विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके अनेक उपन्यास प्रकाशित हैं जिनमें 'और नदी बहती रही', 'एक बीघा प्यार', 'गाँधीजी बोले थे', 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' तथा 'लाल पसीना' विशेष रूप से चर्चित हैं। 'एक बीघा प्यार' के प्रकाशन के बाद अभिमन्यु को साहित्य संसार में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई 'और नदी बहती रही' तथा 'गाँधीजी बोले थे' इन दोनों उपन्यासों में भारतीय मूल के मजदूरों की दर्दभरी कहानियों का तथा जमीन-मालिकों के अत्याचारों का मर्मस्पर्शी चित्रण है। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' का कथानक देश की एक प्रसिद्ध लोककथा पर आधारित है। 'लाल पसीना' अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासनकाल में प्रताड़ित एवं संतप्त भारतीय मूल के कुली-मजदूरों की दर्द भरी गाथा है। उपन्यास में भारतीय मजदूरों का अपार श्रम, उनकी कार्य के प्रति निष्ठा, कठोर यातनाओं के बावजूद उनका धीरज तथा समस्याओं का साहसपूर्वक सामना करने का उनका दृढ़ संकल्प आदि की सशक्त एवं मार्मिक अभिव्यंजना हुई है।

3. पं. वासुदेव विष्णु दयाल— बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न आप हिंदी के प्रसार-प्रचार के पुरोधा हैं। अनेक भाषाओं में आपकी लगभग 50 पुस्तकें प्रकाशित हैं।

4. प्रह्लाद रामशरण— इतिहासकार, बाल साहित्य के प्रणेता, लोक साहित्य के सर्जक, कथाकार, निबंधकार प्रह्लाद रामशरण मारीशस के नवलेखकों में सर्वाधिक उभरकर सामने आए हैं। आपकी लगभग 25 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

(ख) फ़ीजी— श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी ने अपने 'हिंदी : घर से बाहर' शीर्षक लेख में फ़ीजी के अनेक साहित्यकारों का उल्लेख किया है। [28] इन साहित्यकारों में जोगेन्द्र सिंह 'कंवल' का नाम प्रसिद्ध है जिन्होंने 6 उपन्यासों का प्रणयन किया है। उन्हें उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 'सवेरा' उपन्यास पर पुरस्कृत किया ज़ा चुका है।

(ग) सूरीनाम— पुरानी पीढ़ी के रचनाकारों में स्व. श्री रहमानखान का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने 'दोहा शिक्षावली' एवं 'ज्ञान प्रकाश' का प्रणयन किया। वर्तमान पीढ़ी के रचनाकारों में अमर सिंह रमण, श्रीनिवासी, जीतनारायण, सुरजन परोही, सूरज, रामदेव रघुवीर के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री उमाशंकर सतीश ने सूरीनाम के लगभग 15 कवियों की कविताओं की चर्चा की है। [29]

(घ) नेपाल— श्री सूर्यनाथ गोप ने 'नेपाल में हिंदी' शीर्षक निबंध में नेपाल के हिंदी साहित्य तथा हिंदी के रचनाकारों की जानकारी प्रस्तुत की है [30] नेपाल के लेखकों में बुन्नीलाल एवं केदार मान 'व्यथित' के नाम उल्लेखनीय हैं। बुन्नीलाल ने अनेक रचनाओं का प्रणयन किया। इनके 'नयन कहर दरियाव' शीर्षक उपन्यास में नेपाल के पूर्वांचल का जीवन सशकत रूप में चित्रित है। नेपाली साहित्य के ख्याति प्राप्त वरिष्ठ कवि केदारमान 'व्यथित' की हिंदी की दो काव्य कृतियाँ विशेष चर्चित हैं— 1. हमारा देश : हमारा स्वप्न 2. अग्नि श्रृंगार।

(ङ) चेक गणराज्य— विश्व के धरातल पर हिंदी के विदेशी रचनाकारों में चेक के कविवर डॉ. ओदोलेन स्मेकल सर्वाधिक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। इनकी कविताओं में भारतीय चेतना सशक्त रूप से अभिव्यंजित हुई है। [31] डॉ. स्मेकल की 8 काव्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं :

1. तेरे दान किए गीत (1982) 2. मेरी प्रीत तेरे गीत (1982) 3. स्वातिबूँद (1983) 4. नमो नमो भारतमाता (1983) 5. अविराम (1984) 6. कलम को लेकर चल (1985) 7. मधुमिलन सेतु (1988) 8. हमारा हरित नीम (श्रेष्ठ कविताएँ-खण्ड-1 एवं 2) (1984)

3. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में विदेशी छात्रों का शिक्षण :

सत्र 1998-99 तक केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा 66 देशों के 1727 छात्रों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। निम्नलिखित कोटियों के विदेशी छात्रों को संस्थान के विदेशी पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है—

(क) भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की विदेशों में हिंदी प्रचार की योजना के अन्तर्गत चुने गए छात्र।

(ख) सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत चुने गए छात्र।

(ग) विभिन्न देशों की सरकारों/अभिकरणों/संस्थाओं द्वारा प्रतिनियुक्त/प्रायोजित छात्र।

(घ) स्ववित्तीय आधार पर प्रवेश के इच्छुक छात्र।

उन देशों के नाम दिए जा रहे हैं जहाँ के छात्रों ने केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। देश के आगे छात्रों की संख्या का भी उल्लेख है।

(क) वे देश जहाँ आप्रवासी भारतीय बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं :

देश का नाम	छात्र संख्या
1. मारीशस	30
2. फ़ीजी	67
3. सूरीनाम	20
4. गयाना	64
5. ट्रिनीडाड एण्ड टुबेगो	33
(ख) भारत के पड़ोसी देश :	
6. पाकिस्तान	01
7. श्रीलंका	41
(ग) अन्य देश	
महाद्वीप	
अमेरिका महाद्वीप :	
8. संयुक्त राज्य अमेरिका	115
9. कनाडा	11
10. मैक्सिको	04
11. क्यूबा	02
12. कोलम्बिया	08
13. ब्राजील	18
14. अर्जेन्टीना	04
15. इक्वेडोर	01
16. चिली	02

17.	पेरू	03
	यूरोप महाद्वीप :	
18.	रूस	43
19.	ब्रिटेन (इंग्लैण्ड)	62
20.	जर्मनी	53
21.	फ्रांस	65
22.	बेल्जियम	09
23.	हालैंड (नीदरलैंड)	23
24.	आस्ट्रिया	01
25.	स्विटजरलैंड	02
26.	डेनमार्क	02
27.	नार्वे	03
28.	आयरलैण्ड	04
29.	स्वीडन	10
30.	फिनलैंड	12
31.	इटली	26
32.	पोलैंड	73
33.	चेक	02
34.	हंगरी	20
35.	रोमानिया	14
36.	बल्गारिया	02
37.	उक्रैन	08
38.	क्रोशिया	01
39.	यूगोस्लाविया (पूर्व नाम)	01
40.	अजर बिजान	01
41.	लिथुआनिया	12
42.	स्पेन	09
43.	जार्जिया	02
	अफ्रीका महाद्वीप :	
44.	दक्षिण अफ्रीका	09
45.	तंजानिया	01
46.	नाइजीरिया	03

47. माली	03
48. जाइर (Zaire)	02
एशिया महाद्वीप :	
49. चीन	31
50. जापान	200
51. दक्षिण कोरिया	241
52. मंगोलिया	39
53. उजबेकिस्तान	18
54. ताजिकिस्तान	02
55. हांगकांग	02
56. थाईलैंड	14
57. अफगानिस्तान	01
58. इण्डोनेशिया	20
59. कज़ाखस्तान	09
60. तुर्कमेनिस्तान	04
61. फिलीपिन्स	07
62. कम्बोदिया	02
63. वियतनाम	24
64. सिंगापुर	15
65. इजराइल	01
आस्ट्रेलिया महाद्वीप :	
66. आस्ट्रेलिया	20
(घ) विभिन्न देशों के लिए आयोजित विशेष पाठ्यक्रम	175
योग	**1727**

केंद्रीय हिंदी संस्थान में प्रशिक्षित छात्र अपने-अपने देशों में उत्तरदायित्वपूर्ण रूप में तथा निष्ठा के साथ हिंदी का काम कर रहे हैं। इस दृष्टि से शंकरदयाल सिंह जी ने अपने ''भूमि से अधिक भावना है त्रिनिडाड'' शीर्षक लेख में जो उद्‌गार व्यक्त किए हैं उन्हें उदधृत करना समीचीन होगा :

''मैं जहाँ कहीं भी गया, मुझे एक बात से आंतरिक खुशी हुई कि केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली एवं आगरा से हिंदी में प्रशिक्षित शिक्षक विदेशों में लगभग हर जगह बड़े ही

जागरूक तथा उत्तरदायित्वपूर्ण तरीके से हिंदी का काम कर रहे हैं। उनमें केंद्रीय हिंदी संस्थान के प्रति मैंने गहरी निष्ठा देखी। सूरीनाम में श्री साहतो, जो केंद्रीय हिंदी संस्थान के कभी छात्र रहे थे, इन दिनों वहाँ के हिंदी संस्थान के निदेशक हैं। उन्होंने सूरीनाम के उन सभी ऐसे लोगों को एक जगह बुलाकर मिलाया जो कभी संस्थान के छात्र रहे थे। इसी भाँति त्रिनिडाड में वहाँ के ऐसे सभी हिंदी प्रशिक्षणार्थी, जिनका संबंध केंद्रीय हिंदी संस्थान से रहा था, एकत्र हुए। अयाचित ही मुझे इससे गौरवबोध हुआ कि अपने यहाँ संस्थान को बहुत से लोग घर की मुरगी दाल बराबर समझते हैं। ऐसी मुरगियाँ बाहर जाकर हिंदी के लिए पौष्टिक आहार प्रदान कर रही हैं।'' (32)

4. विदेशी अध्येताओं के लिए संस्थान द्वारा निर्मित/प्रकाशित सामग्री :

अन्य भाषा तथा विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में केंद्रीय हिंदी संस्थान ने हिंदी की उच्चस्तरीय पुस्तकों का निर्माण एवं प्रकाशन किया है। संस्थान द्वारा हिंदी भाषा, भाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण, अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान, कोशविज्ञान, शैलीविज्ञान, मनोभाषा-विज्ञान तथा हिंदी भाषा एवं साहित्य का हिंदीतर भाषाओं तथा उनके साहित्य के साथ तुलनात्मक/व्यतिरेकी अध्ययन आदि से संबद्ध विभिन्न विषयों पर उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है।

विदेशी छात्रों एवं अध्येताओं के लिए संस्थान द्वारा प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तकों की सूची दी जा रही है—

1. मौखिक कौशल : खंड-एक-आरम्भिक स्तर (उच्चारण शिक्षण एवं अभ्यास)
   पाठ-निर्माण: रविप्रकाश गुप्त, अजेय पंडित
   संपादन एवं संयोजन : सतीश कुमार रोहरा (प्रथम संस्करण : 1991)

प्रस्तुत पुस्तक प्रारम्भिक स्तर के विदेशी शिक्षार्थियों को मौखिक कौशल में प्रशिक्षित करने के लिए तैयार की गई है।

2. मौखिक कौशल : खंड-दो-आरम्भिक स्तर (श्रवण कौशल, वाचन कौशल, वार्तालाप कौशल एवं रचना कौशल)
   पाठ-निर्माण : रविप्रकाश गुप्त, अजेय पंडित
   संपादन एवं संयोजन : सतीश कुमार रोहरा (प्रथम संस्करण : 1991)

इस पुस्तक में श्रवण कौशल तथा वाचन कौशल के अतिरिक्त वार्तालाप कौशल के शिक्षण के लिए भी सामग्री दी गई है। विदेशी अध्येताओं द्वारा मौखिक कौशलों के लिए प्रस्तुत पुस्तक उपयोगी है।

3. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
   पाठ-निर्माण : मीरा सरीन, संघमित्रा
   संपादन एवं संयोजन : सतीश कुमार रोहरा (प्रथम संस्करण : 1990)

इस पुस्तक का उद्देश्य विदेशी छात्रों को हिंदी साहित्य के इतिहास की जानकारी देना है। पुस्तक में हिंदी के प्रत्येक काल की मुख्य धाराओं, प्रमुख प्रवृत्तियों, प्रसिद्ध रचनाकारों तथा उनकी रचनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। विदेशी छात्रों को हिंदी साहित्य का इतिहास पढ़ने में विशेष कठिनाई इस कारण होती है क्योंकि वे हिंदी समाज की सांस्कृतिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि से परिचित नहीं होते। इस पुस्तक में प्रत्येक काल की सामाजिक, सांस्कृतिक स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक प्रवृत्तियों का उल्लेख किया गया है।

4. हिंदी साहित्य की रूपरेखा
पाठ-निर्माण : रविप्रकाश गुप्त, रवीन्द्र कुमार शर्मा
संपादन एवं संयोजन : सतीश कुमार रोहरा (प्रथम संस्करण : 1991)

कम से कम एक वर्ष तक हिंदी का अध्ययन करने वाले विदेशी छात्रों को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखी गई है। हिंदी साहित्य के इतिहास-शिक्षण की कठिनाई एवं नीरसता को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक वार्तालाप शैली में लिखी गई है। छात्र प्रश्न करते हैं और अध्यापक उनका उत्तर देते हैं। प्रश्नोत्तर के माध्यम से हिंदी साहित्य की एक झलक इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है।

5. व्यावहारिक हिंदी संरचना और अभ्यास
प्रधान सम्पादक— बाल गोविन्द मिश्र,
सम्पादक— चतुर्भुज सहाय, अरुण चतुर्वेदी;
लेखक—रामलाल वर्मा, अरुण चतुर्वेदी, राजबली पाठक
(तृ० संशो० संस्करण, 1999)

इस पुस्तक में पाठों के वास्तविक भाषा व्यवहार को आधार बनाया गया है, प्रयोग की स्थितियाँ भी स्पष्ट की गई है। पुस्तक में अभ्यास प्रभूत मात्रा में दिए गए हैं। प्रत्येक पाठ के अंत में गृहकार्य हेतु प्रश्नावली दी गई है।

6. हिंदी शब्दावली और प्रयोग : भाग-1, भाग-2 — सीताराम शास्त्री
(द्वि० संशो० संस्करण 1998-99)

दो भागों में प्रस्तुत इस पुस्तक में लेखक ने हिंदी सीखने वाले अन्य भाषा भाषी छात्रों के लिए हिंदी में भाषाबोध तथा आर्थी प्रयोग कर अभिक्रमित सामग्री प्रस्तुत की है। अभ्यास सामग्री तीन स्तरों पर प्रस्तुत की गई है—

ध्वनि संरचना, शब्द संरचना तथा पदबंध संरचना। समस्त सामग्री कार्यपत्रक के रूप में है। दोनों भागों में 50-50 कार्यपत्रक दिए गए है—

7. प्रयोजनमूलक हिंदी व्याकरण : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, शारदा भसीन (द्वि० सं० 1992)

इस पुस्तक का निर्माण हिंदी को द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा के रूप में सिखाने की दृष्टि से किया गया है। हिंदी भाषा के आधारभूत व्याकरणिक एवं संरचनात्मक पाठ्य

बिन्दुओं की अनुस्तरित सामग्री प्रस्तुत की गई है तथा शिक्षार्थी के अधिगम की पुष्टि के लिए प्रत्येक बिन्दु पर विभिन्न अभ्यासों की योजना की गई है।

8. हिंदी की आधारभूत शब्दावली— वी. रा. जगन्नाथन (तृ० सं० 1997)

इस पुस्तक में लेखक ने हिंदी भाषा शिक्षण के संदर्भ में हिंदी के 2000 शब्द आवृत्ति के आधार पर संकलित किए हैं।

9. उच्च स्तरीय अंग्रेजी-हिंदी अभिव्यक्ति पुस्तक— सीताराम शास्त्री, वशिनी शर्मा (1982)

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे हिंदी वाक्य संकलित हैं जो दैनंदिन संदर्भों में प्रयुक्त होते हैं। इनका संकलन पर्यटक की आवश्यकताओं को विशेष रूप से ध्यान में रखकर किया गया है।

10. देवनागरी लेखन तथा हिंदी वर्तनी व्यवस्था— डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा (तृ० सं० 1991)

इस पुस्तक में देवनागरी लेखन पद्धति तथा हिंदी भाषा की वर्तनी व्यवस्था का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक होने के साथ-साथ हिंदी शिक्षण में उपयोगी होने के कारण अनुप्रयोगात्मक हो गया है। इसमें देवनागरी के लिपि चिह्नों का वैज्ञानिक विश्लेषण है तथा हिंदी वर्तनी की विशेषताओं का वर्णन करने के साथ उसमें संभावित अशुद्धियों का विवरण और उन्हें दूर करने के उपायों का निर्देश दिया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक देवनागरी लेखन पद्धति तथा हिंदी वर्तनी व्यवस्था के विषय में सैद्धांतिक जानकारी देने के साथ-साथ उन्हें सीखने में भी सहायता प्रदान करती है।

11. हिंदी लिपि : भाग 1, 2, 3, लेखक— श्री विजयराघव रेड्डी (1976)

इस पुस्तक में मात्राओं से युक्त व्यंजन, दो या अधिक वर्णों से युक्त संयुक्त व्यंजन तथा उनसे बने शब्दों और वाक्यों के लेखन के लिए चौदह उपयोगी और वैज्ञानिक रीति से निर्मित पाठ दिए गए हैं।

5. विदेशी अध्येताओं के लिए संस्थान द्वारा निर्मित श्रव्य, श्रव्य-दृश्य एवं कंप्यूटर साधित भाषा शिक्षण सामग्री :

I. श्रव्य सामग्री :

(1) सुधारात्मक उच्चारण पाठ— विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण बिन्दुओं के आधार पर 30 उच्चारण पाठों का निर्माण किया गया है।

(2) कविताओं का कैसेट— संस्थान द्वारा प्रसिद्ध हिंदी कवियों की चुनी हुई कविताओं को कैसेट पर कवि परिचय के साथ प्रस्तुत किया गया है। सूर, तुलसी, भूषण से लेकर अज्ञेय, भवानी प्रसाद मिश्र, निराला आदि की कविताएँ इसमें प्रस्तुत की गई हैं।

(3) हिन्दी कविता वाचन— इस श्रव्य कैसेट में हिंदी के प्रसिद्ध कवियों के पद, कवित्त, सवैया, दोहे आदि के वाचन का आदर्श रूप प्रस्तुत किया गया है।

(4) वाचन-बोधन— इसमें नियंत्रित वाचन और अनुतान सहित वाचन का आदर्श रूप प्रस्तुत किया गया है।

(5) मौखिक कौशल अभिव्यक्ति— विदेशी पाठ्यक्रम की 200 स्तर की मौखिक कौशल की पुस्तिका के आधार पर श्रव्य कैसेटों का निर्माण किया गया है जिसमें नियंत्रित वाचन और सामान्य वाचन के बाद बोधन परीक्षण का प्रावधान है।

II. कम्प्यूटर साधित भाषा शिक्षण :

(1) केंद्रीय हिंदी संस्थान ने इलैक्ट्रोनिकी विभाग और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली के सहयोग से **गुरु** नामक पैकेज निर्मित किया है। इसमें दो मोड्यूल हैं— शिक्षक मोड्यूल और प्रशिक्षणार्थी मोड्यूल। छात्र इस पैकेज की सहायता से वार्तालाप, शब्दावली एवं लिपि सीख सकते है।

(2) टिक : यह भारतीय सांस्कृतिक संकल्पनाओं को सीखने का स्वमूल्यांकन एवं परीक्षण का पैकेज है। इससे छात्र अपने ज्ञान का आकलन स्वयं कर सकते हैं।

III. वीडियो साधित भाषा शिक्षण :

(1) शादी की तैयारी :

दृश्य-श्रव्य (वीडियो) माध्यम भाषा शिक्षण की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण युक्ति है। इस परियोजना के अंतर्गत संस्थान के भाषा प्रौद्योगिकी एकक ने "शादी की तैयारी" वीडियो फिल्म का निर्माण किया है। यह वीडियो फिल्म विदेशी भाषाभाषी छात्रों एवं अन्यभाषाभाषी छात्रों को भारतीय संस्कारों का परिचय देने हेतु निर्मित की गई है। इस शृंखला में भोजन व्यवस्था, गहनों की खरीदारी, कपड़ों की खरीदारी आदि भी शामिल हैं। इसके दो भाग हैं। पहले में शादी की तैयारी के समय भोजन व्यवस्था के लिए की जा रही चर्चा का विवरण है। दूसरा भाग भारतीय व्यंजनों की जानकारी और सांस्कृतिक टिप्पणियों से संबद्ध है। पारिवारिक चर्चा में रिश्तों और संबोधनों पर भी प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण पिपरसानिया : अपनी पुरातन संस्कृति से जुड़े फ़ीजी के भारतीय, 'गगनांचल', वर्ष 8, अंक 2-3, पृ. 57, भारतीय सांस्कृति सम्बन्ध परिषद, नई दिल्ली (1985)।
2. डॉ. केरीन शोमर : अमरीका में हिंदी, 'विश्व हिंदी' (तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित), पृ. 277, नई दिल्ली (1983)।

3. डॉ. उमादत्त शर्मा 'सतीश' : नीदरलैंड के भारतवंशी और हिंदी शिक्षण, 'गगनांचल', वर्ष 8, अंक 2-3, पृ. 120, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली (1985)।

4. प्रो. कात्सुरो कोगा : जापान में हिंदी अध्यापन की स्थिति, हिंदी शिक्षण : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य', पृ. 53-54, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (1988)।

5. प्रो. ली. जंग हो : कोरिया में हिंदी शिक्षण की स्थिति, 'हिंदी शिक्षण : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य', पृ. 153-154, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (1988)।

6. मारिया नेज्येशी : हंगरी में भारतीय अध्ययन, 'हिंदी शिक्षण : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य', पृ. 112, के. हि. सं., आगरा (1988)।

7. डॉ. उदय नारायण तिवारी (निर्देशक), मैथ्यु वेच्चुर (अनुवादक) : हिंदी के तीन प्रारम्भिक व्याकरण, संत पौलुस प्रकाशन, इलाहाबाद (1976)।

8. यमुना काचरू : एन इन्ट्रोडक्शन टू हिंदी सिन्टैक्स, यूनिवर्सिटी आफ़ इलिनोय (1965-66)।

9. फ्रैंकलिन साउथ वर्थ : द स्टूडेन्ट्स हिंदी-उर्दू रिफरेंस मैनुअल, द यूनिवर्सिटी आफ़ अरिजोना प्रेस (मुद्रित-1965)।

10. मेकग्रेगर, आर. एस. : आउटलाइन आफ़ हिंदी ग्रामर विद एक्सरसाइजिज़, आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आक्सफोर्ड (1972)।

11. डॉ. मारग्रेट गात्सलाफ : ग्रामटिखेर लेइटफेडन दर हिंदी, हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन।

12. डॉ. ज. म. दीमशित्स : हिंदी व्याकरण की रूपरेखा, दिल्ली (1966) : हिंदी व्याकरण, मास्को (1983)।

13. प्रो. कात्सुरो कोगा : जापान में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति, 'हिंदी शिक्षण : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य', पृ. 59-61, के. हि. सं., आगरा (1988)।

14. इ. पी. चेलिशेव : सोवियत संघ में हिंदी, 'गगनांचल', वर्ष 7, अंक 1, पृ. 74-76, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली (1984)।

15. प्रो. कात्सुरो कोगा : जापान में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति, हिंदी शिक्षण : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य', पृ. 62-67, के. हि. सं., आगरा (1988)।

16. तात्याना रूत्कोव्स्का : वार्सा विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा (दूसरे महायुद्ध के बाद), हिंदी शिक्षण : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य', पृ. 159, के. हि. सं., आगरा (1988)।

17. डॉ. ओदोलेन स्मेकल (संकलन) एवं शारदा यादव (अनुवादक) : चाँद का सितारा, स्टार पब्लिकेशंज प्रा. लि., नई दिल्ली (1984)।

18. ओदोलेन स्मेकल एवं उमाशंकर सतीश : कवियों की प्रेमिका, स्टार पब्लिकेशंस प्रा. लि., नई दिल्ली (1994)।

19. गिरीश बख्शी एवं तोमिओ मिजोकामि : लोकप्रिय जापानी गीत (हिंदी में), ओसाका यूनिवर्सिटी आफ़ फॉरेन स्टडीज (1994)।

20. गार्सां द तासी : इस्त्वार द ला लीतिरेत्यूर ऐंदुई ए हिन्दुस्तानी (फ्रेंच भाषा में हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास) (1839)।

21. ग्रियर्सन : माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ हिन्दुस्तान (1889)।

22. डॉ. एल. पी. टेस्सीटरी : इल रामचरितमानस ए इल रामायण, ज्योर्नेल डेला सोसाइटी एशियाटिका इटालियाना, नं. 212 (1911)।

23. प्रो. कात्सुरो कोगा : जापान में हिंदी अध्ययन अध्यापन की स्थिति, 'हिंदी शिक्षण : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य', पृ. 62-64, के. हि. सं., आगरा (1988)।

24. डॉ. कामता कमलेश : मारीशस की हिंदी कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

25. 'गगनांचल' (मारीशस.अंक), वर्ष 8, अंक 4, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली (1985)।

26. अजामिल माताबदल (सम्पादक) : काव्य परिचय, हिंदी प्रचारिणी सभा, लोंग माउंटेन, मारीशस (अगस्त, 1995)।

27. विष्णु प्रभाकर : मारीशस, 'गगनांचल' (विश्व हिंदी अंक), वर्ष 6, अंक 4, पृ. 92-93, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली (1983)।

28. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी : हिंदी : घर से बाहर, 'गगनांचल' (विश्व हिंदी अंक), पृ. (84-85)।

29. उमाशंकर सतीश : सूरीनाम में हिंदी, जुगल किशोर एण्ड कम्पनी, देहरादून।

30. सूर्यनाथ गोप : नेपाल में हिंदी और हिंदी साहित्य, 'विश्व हिंदी' (तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित), पृ. 206-207, नई दिल्ली (1983)।

31. विश्वनाथ मिश्र : स्मेकल की भारतीय चेतना, 'गगनांचल', वर्ष 8, अंक 1, पृ. 116-121, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली (अक्टूबर 1984-जनवरी 85)।

32. शंकरदयाल सिंह : धार के इस पार, धार के उस पार, पृ. 382, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-6 (1993)।

भारतीय
आप्रवासी बहुल देश

भारत से दूर भारत में हिन्दी

सुरेश कुमार

भूमिका

भारत से दूर "भारत"— दूरस्थ भारत— में परम्परागत रूप से पाँच देश आते हैं— फ़ीजी, मारीशस, त्रिनिदाद, गयाना, सूरीनाम। इन पाँचों में कुछ मूलभूत समानताएँ हैं। सभी में भारतीय लोग लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व शर्तबन्द मजदूर के रूप में आए थे। सभी में प्रवजन की प्रक्रिया प्रधान रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार (अवधी-भोजपुरी क्षेत्र) से हुई, यद्यपि फ़ीजी और मारीशस में अन्य राज्यों— मुख्यतया आंध्र, तमिलनाडु, पंजाब— से भी (अपेक्षाकृत कुछ कम संख्या में) लोग पहुँचे। लगभग सभी में भारतवंशियों का जनसंख्या प्रतिशत 50% से अधिक है (सूरीनाम में 50% से कुछ कम हैं)। सभी देशों में भारतीयों की विपरीत परिस्थितियों में रहने की विवशता ने हिंदी की स्थिति को कुछ विशिष्ट बना दिया जिसके तीन क्रमिक आयाम इस प्रकार है—

हिंदी का विस्थापन

हिंदी का अनुरक्षण

हिंदी का विकास

फलस्वरूप दूरस्थ भारत में हिंदी का एक विशिष्ट स्वरूप विकसित हुआ जिसे हम "प्रवासिनी हिंदी" का नाम दे सकते हैं और जिसे भारतीय हिंदी के एक महत्वपूर्ण भेद के रूप में मान्यता देना उचित होगा। इस पृष्ठभूमि पर हम प्रवासिनी हिंदी के कतिपय अपेक्षया महत्वपूर्ण पक्षों पर विचार करेंगे। विचार करते समय परोक्ष परिदृश्य के रूप में, वर्तमान राजनीतिक-आर्थिक-भाषिक दृष्टि से सामान्यतया विश्व की तथा विशेष रूप से भारत की परिस्थितियों को ध्यान में रखेंगे, क्योंकि भाषा का विस्थापन, अनुरक्षण, विकास उपर्युक्त सभी राजनीतिक-आर्थिक-अन्य भाषागत कारकों से प्रभावित होता है।

प्रवासिनी हिंदी की पारिस्थितिकी

प्रवासिनी हिंदी की पारिस्थितिकी के सम्बन्ध में मूलभूत तथ्य निम्नलिखित तालिका में संकलित हैं—

देश का नाम	क्षेत्र (व. कि. मी. में)	जनसंख्या (लाख में)	भाषाएँ	शिक्षा का प्र. श.
(क) त्रिनिदाद	5,128	13	अंग्रेज़ी, हिंदी	96%
गयाना	2,14,969	8	अंग्रेज़ी, उर्दू, हिंदी	95%
सूरीनाम	1,63,820	4.10	हिंदी, क्रियोल डच, अंग्रेज़ी	65%
(ख) मारीशस	2,040	11	अंग्रेज़ी, फ्रेंच, क्रियोल, हिंदी	94%
फ़ीजी	18,376	8	अंग्रेज़ी, काईबीती, हिंदी	85%

इस मानचित्र से प्रवासिनी हिंदी के विषय में कुछ महत्वपूर्ण संकेत मिलते हैं—

1. हिंदी को प्राय: मुख्य रूप से सभी देशों में अंग्रेज़ी से तो स्पर्धा करनी होती है, कुछ देशों में एक और भाषा से भी स्पर्धा करनी होती है— मारीशस में फ्रेंच से, सूरीनाम में डच से, फ़ीजी में काईबीती से। इस स्थिति के राजनीतिक-ऐतिहासिक कारण हैं।

2. यही कारण है कि राजनीतिक-सांस्कृतिक दृष्टि से प्रवासिनी हिंदी प्रधान तथा प्रभावी भाषा के रूप में नहीं उभर पाई।

3. तथापि हिंदी संभवत: एकमात्र एशियाई भाषा है जो प्रवासिनी होकर भी एक संप्रेषण-प्रणाली तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था के रूप में पूर्णतया विस्थापित नहीं हुई। अपितु कुल मिलाकर एक सुस्थापित व्यवस्था के रूप में, सामान्य रूप से भारतवंशी समाज तथा विशेष रूप से हिंदी भाषी समुदाय को एक सुनिश्चित सांस्कृतिक पहचान प्रदान करती है।

4. कतिपय ऐतिहासिक तथा स्थानीय कारणों से फ़ीजी तथा मारीशस में हिंदी का जितना सर्वतोमुखी विकास हुआ उतना अन्य तीन में नहीं।

5. हिंदी के अनुरक्षण में एक ओर 'हिन्दुत्व' का योगदान रहा (धार्मिकता का प्रतीक), दूसरी ओर हिंदी फिल्मों का (मनोरंजन का साधन)। बहुसंख्यक भारतवंशी मूलत: हिन्दू और अवधी-भोजपुरी भाषी थे। अत: गोस्वामी तुलसीदास का रामचरितमानस, जो अवधी-भोजपुरी क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय सांस्कृतिक-धार्मिक ग्रन्थ के रूप में शिक्षित-अशिक्षित दोनों वर्गों में सुप्रतिष्ठित है तथा वाचिक परम्परा में संरक्षित है, प्रवासियों के लिए 'हिन्दुत्व' की रक्षा का सशक्त साधन बन गया। हिन्दू मन्दिरों में हिंदी की कक्षाएँ लगना तथा धार्मिक-सामाजिक संगठनों द्वारा हिंदी शिक्षण की व्यवस्था करना इसी स्थिति का द्योतक है। दूसरे छोर पर हिंदी फिल्मों— विशेष रूप से फिल्मी गानों— ने मनोरंजन की आवश्यकता की पूर्ति की। इन दोनों स्थितियों में हिंदी का माध्यम हिंदी के अनुरक्षण का कारण बना।

प्रवासिनी हिंदी के व्यवहार क्षेत्र

सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से हम भारतीय हिंदी के कतिपय रूपों की चर्चा करते हैं— बोली रूप (भौगोलिक-क्षेत्रीय आधार पर), मानक रूप (राष्ट्रीय आधार पर), पिजिन रूप— बम्बइया हिंदी, कलकतिया हिंदी आदि (स्थान विशेष की सम्प्रेषणात्मक आवश्यकताओं के आधार पर) आदि। कुछ ऐसी ही स्थिति प्रवासिनी हिंदी की भी है। ग्रामीण अंचलों में अवधी-भोजपुरी (विशेपतया भोजपुरी) का प्रचलन है। शहरी क्षेत्रों में, विशेषतया औपचारिक सार्वजनिक अवसरों पर, मानक हिंदी का व्यवहार होता है। जहाँ तक रोजमर्रा के अनौपचारिक सार्वजनिक जीवन का प्रश्न है, मारीशस में 'मारीशसी हिंदी', फ़ीजी में 'फ़ीजी हिंदी', और सूरीनाम में 'सरनामी हिंदी' नाम से अभिहित हिंदी के स्थानीय रूप विकसित हो गए हैं। इनकी अलग-अलग पहचान का मुख्य आधार तीनों देशों में व्यवहृत अन्य भाषाओं— अंग्रेजी, फ्रेंच, डच, काईबीती आदि— के साथ सम्पर्क की स्थिति है। अपने-अपने देशों में, इन भाषाओं के सम्पर्क में आकर इन भाषाओं के, जितना आवश्यक है उतने, प्रभाव को आत्मसात् करते हुए प्रवासिनी हिंदी अनौपचारिक सम्प्रेषण का सफल माध्यम बनी हुई है। (फ़ीजी हिंदी औपचारिक सम्प्रेषण का माध्यम भी है)।

अपने इस बहु-आयामी व्यक्तित्व के आधार पर प्रवासिनी हिंदी विभिन्न औपचारिक व्यवहार क्षेत्रों में प्रतिष्ठित हुई है। मुख्य क्षेत्र हैं— शिक्षा, साहित्य, जनसंचार, प्रशासन। इन सब में सामान्यतया मानक हिंदी का व्यवहार होता है।

शिक्षा में हिंदी— शिक्षा क्रम में हिंदी की गतिविधियों को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(1) प्रधानतम बात यह है कि हिंदी शिक्षा का एक विषय है, माध्यम नहीं।

(2) औपचारिक व्यवस्था : प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूल, और विश्वविद्यालय— तीनों स्तरों पर हिंदी की शिक्षा का प्रबन्ध है । फ़ीजी, गयाना, मारीशस और त्रिनिदाद में विश्वविद्यालय स्तर की हिंदी शिक्षा की सुविधा उपलब्ध है। स्कूल की हिंदी शिक्षा का बेहतर प्रबन्ध मारीशस और फ़ीजी में है।

(3) अनौपचारिक व्यवस्था : इसमें स्थानीय तथा भारत की स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा तथा पत्राचार माध्यम से हिंदी शिक्षा का समावेश है। स्वैच्छिक संस्थाओं का योगदान सबसे अधिक है। सूरीनाम में स्वैच्छिक संस्थाएँ ही अधिक सक्रिय हैं।

(4) हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण तथा पाठ्यपुस्तक निर्माण : इसके लिए मारीशस और त्रिनिदाद में सरकारी संस्थान कार्यरत हैं।

हिंदी में साहित्य रचना तथा रंगमंच— इस दृष्टि से मारीशस का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। मारीशस में कविता, उपन्यास, कहानी, सभी प्रमुख विधाओं में पुस्तकाकार

मौलिक लेखन होता है। अनेक गौण विधाओं में भी लेखन कार्य होता है परन्तु अधिक नहीं; ये हैं जीवनी, संस्मरण, नाटक, एकांकी, यात्रा विवरण, समालोचना। इतिहास के क्षेत्र में लेखन मारीशस की एक विशिष्ट विशेषता है। उल्लेखनीय प्रवृत्ति यह है कि साहित्यिक रचनाओं के उद्दिष्ट पाठक प्रधान रूप से मुख्य भूमि भारत के निवासी हैं। भारतीय हिंदी की साहित्य धारा से जुड़ने की आकांक्षा इसका संभावित कारण है। रचनाओं का प्रकाशन मारीशस के अलावा भारत में भी होता है।

हिंदी रंगमंच की सक्रियता की दृष्टि से मारीशस, फ़ीजी और सूरीनाम उल्लेखनीय हैं। इन देशों में कवि सम्मेलनों का आयोजन भी एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति है।

जनसंचार में हिंदी— रेडियो और टी. वी. पर हिंदी को स्थान दिया गया है। मारीशस, फ़ीजी और सूरीनाम में हिंदी के कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हैं। इन देशों में हिंदी प्रेस भी सक्रिय हैं— समाचारपत्र, साप्ताहिक पत्र तथा मासिक पत्रिकाएँ निकलती हैं। मासिक पत्रिकाओं में साहित्यिक रचनाओं को भी स्थान मिलता है।

प्रशासन में हिंदी— इस दृष्टि से फ़ीजी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। फ़ीजी की संसद में हिंदी का प्रयोग करने की अनुमति है। कार्यालयों में भी हिंदी का व्यवहार होता है। न्यायालयों में भी हिंदी का व्यवहार होता है। फ़ीजी की बहुभाषिकता में हिंदी का सुनिश्चित तथा संविधान-सम्मत स्थान है।

निष्कर्ष

दूरस्थ भारत में बसी प्रवासिनी हिंदी के उपर्युक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कुछ बातें कही जा सकती हैं :

1. प्रवासिनी हिंदी अपनी जनशक्ति और निष्ठाशक्ति से विदेशी धरती पर अपना स्थान बनाने में सफल रही। इसमें स्वैच्छिक प्रयास और शासकीय संरक्षण दोनों का योगदान है। तथापि यह कहना उपयुक्त होगा कि स्वैच्छिक प्रयास ने शासकीय संरक्षण प्राप्त करने में सफलता पाई।

2. हिंदी विस्थापन की कुछ प्रवृत्तियाँ गयाना और त्रिनिदाद में इस दृष्टि से मिलती हैं कि वहाँ प्राथमिक स्कूली शिक्षा के स्तर पर हिंदी शिक्षा की सुदृढ़ तथा व्यापक व्यवस्था नहीं है (इसीलिए विश्वविद्यालय स्तर पर वह जीवित रहते हुए भी सशक्त नहीं हो पाती), यद्यपि स्वैच्छिक प्रयत्नों से इस न्यूनता की एक सीमा तक पूर्ति हो पाती है। हिंदी अनुरक्षण की दृष्टि से मारीशस, फ़ीजी और सूरीनाम एक वर्ग में आते हैं— इनमें अनुरक्षण की स्थितियाँ अधिक सकारात्मक तथा सशक्त हैं। गयाना और त्रिनिदाद दूसरे वर्ग के देश हैं— जहाँ अनुरक्षण की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत दुर्बल है। हिंदी विकास की दृष्टि से मारीशस और फ़ीजी का एक अलग वर्ग है। इसमें हिंदी की विकासशीलता का ग्राफ उर्ध्वमुखी है। यदि फ़ीजी की विशेषता इस बात में है कि वहाँ संसद, न्यायालयों और सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग किया जा सकता है

तो मारीशस में हिंदी में साहित्यिक लेखन की पुष्ट परम्परा, तथा शासकीय स्तर पर हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण की सुदृढ़ व्यवस्था मिलती है जो हिंदी के अनुरक्षण को प्रबल आधार देते हुए हिंदी के विकास की प्रवृत्तियों को पुष्ट करती है।

3. संभवत: भारतीय हिंदी की अपेक्षा प्रवासिनी हिंदी से अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी के स्वरूप का निर्धारण अधिक मात्रा में होगा। इसका एक पहलू तो यह है कि मारीशसी हिंदी, फ़ीजी हिंदी, और सूरीनामी हिंदी (सरनामी) के नाम से प्रवासिनी हिंदी की भी स्थानीय भाषाशैलियाँ (भौगोलिक-सामाजिक आधार पर विकसित पिजिन भाषाभेद) विकसित हो गई हैं जिन्हें न केवल सामाजिक सम्मान प्राप्त है अपितु शासकीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त है— फ़ीजी हिंदी इस दृष्टि से विशेषतया उल्लेखनीय है। दूसरा पहलू यह है कि प्रवासिनी हिंदी की परिस्थिति में बहुभाषिकता की स्थिति के कारण प्रवासिनी हिंदी अन्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विदेशी भाषाओं— अंग्रेज़ी, फ्रेंच, डच— से विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियों को ग्रहण करती है, और इस प्रकार अपने-अपने स्थानीय स्तरों पर विकसित हो रही सामासिक संस्कृति की वाहिका बन रही है (तुलना करें भारतीय संविधान की धारा 351 से जिसमें हिंदी के बृहत्तर स्वरूप तथा उसके सामासिक संस्कृति के वाहक होने की बात कही गई है)। तीसरा उल्लेखनीय पहलू है मारीशस में लिखित हिंदी साहित्य का पश्चिम की विकसित भाषाओं में अनुवाद होना जो एक स्वत:-स्फूर्त प्रवृत्ति अधिक है। अनुवाद के माध्यम से साहित्यिक आदान-प्रदान की यह स्थिति किसी भी भाषा के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप का अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ आधार बनती है।

4. प्रवासिनी हिंदी की शक्ति के आधार पर हिंदी भाषा समुदायों को एक राष्ट्रीय भाषा समुदाय के रूप में शासकीय मान्यता प्राप्त होना भी उल्लेखनीय बात है। मारीशस में हिंदी स्पीकिंग यूनियन को सरकार ने मान्यता प्रदान की है।

टिप्पणी

यह लेख निम्नलिखित स्रोतों के सम्बन्धित अंशों के आधार पर लिखा गया है— "केन्द्रीय हिन्दी संस्थान रजत जयन्ती ग्रन्थ" 1991; श्री हरिबाबू कंसल: "विश्व में हिंदी (2)", 1995; डॉ. सतीश कुमार रोहरा (सं.) : "हिंदी शिक्षण : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य", 1988; "विश्व में हिंदी", 1983।

ट्रिनीडाड में हिन्दी की परम्परा

सुरेश ऋतुपर्ण

दक्षिण अमेरिका के देश वेनुजुएला के समुद्र तट से कुछ ही दूरी पर कैरिबियन समुद्र में दो सुन्दर द्वीपों का एक सदाबहार देश है ट्रिनीडाड एवं टुबैगो। ट्रिनीडाड अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, कार्निवाल और मोहक समुद्र-तटों के लिए दुनिया भर के सैलानियों में सदा से आकर्षण का केन्द्र रहा है।

भारत की खोज में निकला कोलंबस जब अनायास भारत की ओर न आकर विपरीत दिशा में निकल गया और जब वह सन् 1498 में इस देश के करीब पहुँचा तो उसे लगा जैसे वह भारत ही पहुँच गया है। उसने इस देश के धुर-दक्षिण में स्थित ''थ्री सिस्टर्स'' नामक शिखरों का प्रथम दर्शन किया, जिन्हें ''होली ट्रिनीटी'' कहा जाता है। इसी ''होली ट्रिनीटी'' के कारण इस देश का नामकरण ट्रिनीडाड हुआ है। इस देश के मूल निवासी 'अरावाक्स' कहलाते थे लेकिन भ्रमवश कोलम्बस ने उन्हें ''इंडियन'' कहकर ही पुकारा था। परिस्थितियों का व्यंग्य देखिए कि लगभग 350 वर्ष बाद 30 मई, 1845 को जब 213 भारतीय मूल के लोगों को लेकर 'फँटेल रजॉक' नामक जलपोत ट्रिनीडाड के ''पोर्ट ऑफ स्पेन'' बंदरगाह पर पहुँचा तो कौन जानता था कि यहाँ भारत से दूर एक और भारत बस जाएगा।

दास प्रथा की समाप्ति के बाद जब हर ओर सस्ते और मेहनती श्रमिकों की मांग बढ़ने लगी तो ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीय श्रमिकों को लाने की योजनाएँ बनने लगीं। फलत: सन् 1834 में पहली बार मॉरीशस में भारतीय श्रमिकों का एक दल भेजा गया।

मॉरीशस में भारतीय श्रमिकों की सफलता को देखकर मई 1838 में ब्रिटिश गुयाना (अब गयाना) में 396 श्रमिकों का दल भेजा गया और इस तरह एक नए प्रकार की दासता की वह ऐतिहासिक प्रक्रिया आरम्भ हुई जिसके अन्तर्गत हजारों भारतीय श्रमिक कैरीबियन व दक्षिण अमेरिका के देशों में पहुँचे। शर्तबन्दी प्रथा के अन्तर्गत श्रमिकों को भेजने का यह सिलसिला सन् 1917 तक चलता रहा जब तक महात्मा गांधी, महामना मदन मोहन मालवीय, दीनबंधु सी. एफ. एन्ड्रयूज, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी प्रभृति महानुभावों के अथक प्रयासों से यह प्रथा समाप्त नहीं कर दी गयी।

ट्रिनीडाड में भारतीय श्रमिकों के पहुँचने, उनके कष्टों, पीड़ाओं एवं संघर्षों, उनकी आशा-निराशा, उन्नति एवं सफलता आदि सभी बातों की कहानी लगभग वही है जो उस समय के अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों में चीनी के व्यापार को लाभकारी बनाने वाले भारतीय श्रमिकों की

कहानी है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि इन श्रमिकों के माध्यम से ही हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति की वे परम्पराएँ वहाँ पहुँची जो डेढ़ शताब्दी बीत जाने पर भी मरी नहीं हैं वरन् अनेक रूपों में पल्लवित एवं पुष्पित हो रही हैं।

इन श्रमिक दलों में भारत के कई प्रांतों के लोग थे लेकिन प्रमुखता बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों की थी। बिहार, गोरखपुर, आजमगढ़, बनारस आदि के आसपास के ये लोग सामान्यत: भोजपुरी, अवधी और ब्रजभाषा बोलने वाले थे। इसी ज्ञान के सहारे उन्होंने भारतीय संस्कृति एवं हिंदी भाषा का बिरवा यहाँ लगाया।

चूँकि इन श्रमिकों के मालिक आंग्ल भाषा-भाषी थे, अत: आरम्भ में आंग्ल-भाषा से अपरिचित इन लोगों की पारस्परिक अभिव्यक्ति ने एक ऐसी बहुमेल भाषा को जन्म दिया जिसमें भारत के कई प्रांतों की भाषाओं की शब्द-सम्पदा घुल-मिल गयी थी। यह एक प्रकार की खिचड़ी भाषा ही थी लेकिन भोजपुरी एवं अवधी का अंशदान अधिक होने के कारण सामान्यत: इसे लोग भोजपुरी हिंदी की संज्ञा प्रदान करते हैं। लेकिन यहाँ इस तथ्य को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि यह भोजपुरी, बनारस आजमगढ़, गोरखपुर आदि के आस-पास बोली जाने वाली भोजपुरी के अधिक निकट थी। अत: कहा जा सकता है कि ट्रिनीडाड में हिंदी का बीज इसी अवधी-भोजपुरी से पड़ा है।

आरम्भ में इस भाषा का प्रचार-प्रसार एक ओर बोलचाल की भाषा के रूप में था तो दूसरी ओर यह भाषा उनकी सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम भी थी। तुलसीकृत 'रामचरित मानस', 'हनुमान चालीसा' आदि धार्मिक पुस्तकें इनके लिए संजीवनी के समान थीं। दिन भर की थकान और अपमान के हलाहल को वे रामायण के पाठ एवं श्रवण के सहारे पचा जाते थे। राम का वनवास उनका अपना वनवास था। वे स्वयं राम जैसे ही थे और गन्ने के खेतों में गाली देकर और कोड़े मार-मार कर काम कराने वाला निर्दयी ओवरसियर अत्याचारी रावण से किसी भी प्रकार कम न था। राम का वनवास तो 14 वर्ष के बाद समाप्त हो गया था पर इनके वनवास का कोई अंत नहीं था। इसलिए दु:ख और अंधकार के दिनों में रामायण ही एकमात्र सहारा थी। फ़ीजी में तो किसी भी प्रकार के पूजापाठ के बाद "रामायण महारानी की जय" अवश्य ही बोली जाती है।

आरम्भ में ट्रिनीडाड के अनेक गांवों में छोटी-छोटी पाठशालाएँ खोलकर हिंदी पढ़ने-पढ़ाने का काम शुरू किया गया। जो थोड़ी बहुत हिंदी जानता था वही पहला अध्यापक हो गया। लेकिन हिंदी भाषा शिक्षण का विधिवत् अभ्यास न होने के कारण इस प्रकार के अनेक प्रयास विफल भी हुए।

उन्हीं दिनों सन् 1864 में कनाडा के एक पादरी "जॉन मॉर्टन", स्वास्थ्य लाभ हेतु ट्रिनीडाड आए और एक दिन अनायास ही उन्हें अपने जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण ध्येय मिल गया और वह ध्येय था इन प्रवासी भारतीयों के बच्चों को शिक्षा देने का, जो तत्कालीन सरकार की ओर से उपेक्षा पा रहा था। उन्होंने कनाडा लौटकर "यूनाइटेड प्रस्बीटिरियन चर्च ऑफ

कनाडा'' की वैदेशिक धर्म प्रचार परिषद के सामने अपने ध्येय की वकालत की और जिसे मान लिया गया। कुछ वर्षों के बाद सन् 1870 में एक अन्य पादरी ''रेवरेन्ड केनेथ जेम्स ग्रांट'' के साथ मिलकर ''जॉन मॉर्टन'' ने शर्तबन्दी प्रथा में आये भारतीयों के बच्चों को अंग्रेजी और हिंदी भाषा की शिक्षा देनी आरम्भ की।

प्रस्बीटिरियन स्कूलों में, जो केनेडियन मिशन स्कूल भी कहलाते थे, हिंदी सभी विद्यार्थियों को पढ़नी पड़ती थी। तब उनके गिरजाघरों में रविवार की आराधना भी केवल हिंदी में होती थी क्योंकि उस समय बने नए-नए ईसाइयों को केवल हिंदी ही समझ में आती थी। यहाँ यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि इनकी शिक्षा का मूल आधार अंग्रेजी ही था लेकिन हिंदी का प्रयोग वे इन भारतीयों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए करते थे। बहरहाल, इससे ट्रिनीडाड में कुछ समय तक हिंदी का काफी प्रचार-प्रसार हुआ।

यहाँ एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति की ओर भी संकेत किया जाना चाहिए। उस समय के कुछ प्रमुख पंडितों एवं हिंदी भाषा के जानकारों ने अपने साथी भाइयों को हिंदी भाषा पढ़ाने में विशेष रुचि नहीं दिखाई क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उनके अतिरिक्त अन्य लोग भी इस भाषा को पढ़-लिखकर पंडिताई के धंधे में उनके प्रतिद्वंद्वी बनें। इसके ठीक विपरीत केनेडियन मिशन के लोगों ने अपने नए-नए दीक्षित सभासदों को हिंदी इसलिए पढ़ाई कि वे हिंदी में बाइबिल पढ़ सकें और मसीही भजन गा सकें।

आरम्भ में इन भारतीयों ने मिशन स्कूलों के प्रति अनिच्छा ही दिखाई थी क्योंकि वे धर्म परिवर्तन नहीं चाहते थे लेकिन इसके साथ ही साथ उनके मन में अपने बच्चों के भविष्य की चिन्ता भी थी और तब अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने का एकमात्र रास्ता ये मिशन स्कूल ही थे। अंतत: उन्होंने अपने बच्चों को इन मिशन स्कूलों में भेजना शुरू किया। हरी राम किसुन, हैरी रामकिशुन बना दिए गए। विस्टन डुकरन, रिचर्ड रामलखन सिंह, लिन्डा सावित्री महाराज, राल्फ म्रराज, आदि ऐसे ही कुछ अन्य नाम हैं।

देखते ही देखते पूरा परिदृश्य बदलने लगा। दादा-पिता की पीढ़ी भोजपुरी हिंदी बोलती रही और उनकी दूसरी-तीसरी पीढ़ी अंग्रेजी बोलने में पारंगत हो गयी। धीरे-धीरे एक ओर इस पढ़ी-लिखी पीढ़ी के लोगों ने समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान बनाना आरम्भ किया तो दूसरी ओर राजनीतिक कारणों से हिंदी को किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं मिल रहा था। उसे यह सोच कर निरन्तर दबाया जा रहा था कि यदि इनकी भाषा चली गयी तो इनकी संस्कृति भी चली जाएगी, जैसा कि जमैका, ग्रेनेडा आदि कुछ देशों में हुआ भी। फलत: धीरे-धीरे आगे आने वाली पीढ़ियों की मातृभाषा भी अंग्रेजी होती चली गयी।

अब तक प्रस्बीटिरियन स्कूलों ने भी अपना मकसद पूरा होने के बाद से हिंदी का प्रयोग समाप्त कर दिया था। इस तरह जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार-प्रसार इन भारतीय मूल के लोगों में बढ़ता गया वैसे-वैसे वे हिंदी भाषा को भूलते गए। पाँचवें दशक तक आते-आते हिंदी इतिहास की वस्तु बनती चली चली गयी लेकिन सौभाग्य से मरी नहीं।

आज भी ट्रिनीडाड के मध्य एवं दक्षिण भाग में स्थित शगुआनस, कूवा, सिपरिया, पीनाल देबे आदि कस्बों में ऐसे अनेक लोग मिल जाएँगे जो अच्छी खासी हिंदी बोल लेते हैं। ऐसे लोगों की संख्या तो और भी बड़ी है जो अपनी विशिष्ट शैली वाली अंग्रेजी में अनेक हिंदी शब्दों का बेधड़क प्रयोग करते हैं और समझते हैं। उदाहरण के लिए ऐसे शब्दों की एक सूची प्रस्तुत कर रहा हूँ।

भोजन एवं खान-पान से जुड़े शब्द— हॉट रोटी, दाल, दालपुरी, तकारी या तलकारी, उरदी, चाना (चना), बारा (बड़ा), भात, अमचार, घी, बैंगनी, भाजी, आलू, मोहन भोग, कचौरी सहीना, फुलौरी, खिचरी, भेली (गुड़), काला निमक, गुलाब जामुन, पेरा (पेड़ा), लड्डू, पिलाउ (पुलाव), करही (कढ़ी), सुहारी, जिलेबी, खीर, परसाद, चोखा, डमाडोल, मुराई (मूली), करेली, बनधनिया आदि।

बर्तन आदि से जुड़े शब्द— चिमटा, बेलना, झरना (पौनी), सूप, मूसल, चकिया, चलनी, थरिया, लोटा, बालटी, दाल-घोटनी, कढ़ाई, चूल्हा, सिललौढ़ा आदि। सिल के प्रयोग की एक महत्वपूर्ण रस्म ब्याह-शादी में देखने में आती है। उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में, शायद अन्यत्र भी हो, बेटी के ब्याह में सिल-उठाई की एक रस्म आज भी प्रचलित है। यह रस्म ट्रिनीडाड में भी देखने को मिली। किसी एक पंडित-पुरोहित के घर सिल रहती है और वह जगह-जगह ऐसे अवसरों पर काम में लाई जाती है।

शारीरिक अंगों से जुड़े शब्द— गोड़, करेजा, मूड़ी, तारु, उंगरी आदि।

घर की वस्तुओं से जुड़े शब्द— खटिया, झारु, पीढ़ा, कुटिया।

शृंगार एवं अलंकार की वस्तुएँ— हंसुलिया, चुरियां, काड़ा (कढ़ा), धोती, कुर्त्ता, सारी, ओढ़नी आदि।

पेय पदार्थों से जुड़े शब्द— पानी, दूध, चाय, सरबत आदि।

नशे से जुड़े शब्द— दारू, चिलम, तमाखू, भांग, गांजा, चरस, अफीम आदि।

फल-फूल आदि से जुड़े शब्द— आम, केला, नरियल, जामुन, गन्ना, निब्बू, गुलाब, चमेली, चम्पा, गेंदा, नीम, पीपल, बेल आदि।

पूजादि से जुड़े शब्द— पान के पत्ता, जनेऊ, कंठी, तिलक, दिया, सत्यनारायण कथा, गरुण पुराण, पुरोहित पंडित जी, जजमान, रामलीला, रामायण, यज (यज्ञ), नजर-झाड़े आदि।

संबंध वाचक शब्द— आजा-आजी, नाना-नानी, काका-काकी, मौसी-मौसा, भौजाई, माई, भुनोई, सार (साला), बड़का-छुटका, गुरू-चेला, दुल्हा-दुल्हिन, बहिना-भाई, महाराज, मराज आदि।

कुछ अन्य प्रयोग— तनी-मनी (तनिक सा), बिहान (कल), झंझट, गड़बड़, दोगला, खसम, छिनाल, रंडी, नाइन, नाऊ, सादी, ब्याह, फगवा, छापा, तिल्लाना, ठुमरी, चौताल, कागद, नमस्ते, सीताराम, तासा, धनताल, बिरहा, चैती, कजरी, निमकहराम, पागल, लकड़पेच, मंजीरा, हारमोनियम, तबला, ढोलक, सितार आदि।

सामान्यत: जब भी दो लोग मिलते हैं, वे ''नमस्ते'' या ''सीताराम'' शब्द का प्रयोग करते हैं। कुछ लोग हालचाल पूछने के लिए कहते हैं— ''कैसन हाल?'' और इसका उत्तर देते हैं— ''धीरे-धीरे'' अर्थात् सब ठीक-ठाक है।

अत: यह कहा जा सकता है कि आज ट्रिनीडाड में हिंदी सामान्य बोलचाल की भले ही न रही हो लेकिन यहाँ के प्रवासी भारतीयों में हिंदी भाषा का संस्कार आज भी मौजूद है और यदि उसे तनिक भी अनुकूल वातावरण मिले तो हिंदी भाषा एक बड़े समुदाय की भाषा बनने की पूरी संभावनाएँ रखती है और इस प्रकार का वातावरण तैयार करने के प्रयास समय-समय पर होते रहे हैं। सन् 1952 में तत्कालीन भारतीय राजदूत श्री आनंदमोहन सहाय के प्रयासों से ''हिंदी एजूकेशन बोर्ड'' की स्थापना की गयी तथा उसके पहले अध्यक्ष श्री एडवर्ड जोजेफ पिल्लई बनाए गए। पहले पाँच वर्ष तक यह संस्था बड़ी सक्रिय रही, पर बीच में कुछ वर्ष शिथिलता के भी आएं। भारत स्थित ''भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद'' भी ''हिंदी एजूकेशन बोर्ड'' को सहायता प्रदान करती थी और जब उनकी ओर से भेजी गयी अध्यापिका श्रीमती इन्दुताई केलकर वहाँ पहुँचीं तो ''हिंदी एजूकेशन बोर्ड'' का कार्य फिर से राह पर आया। श्रीमती केलकर के बाद सन् 1966 में श्री हरिशंकर आदेश का ट्रिनीडाड आगमन एक ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुआ।

श्री हरिशंकर आदेश ने हिंदी के साथ ही साथ भारतीय संगीत की शिक्षा देना भी आरम्भ किया और अभूतपूर्व सफलता पाई। वस्तुत: ट्रिनीडाड में बसे भारतीय मूल के लोगों की नयी पीढ़ी हिंदी भाषा सीखने के लिए कोई ऐसा कारण चाहती थी जो उन्हें आनंद भी दे सके। भारतीय संगीत तथा खासकर भारतीय फिल्म संगीत ने उन्हें निरंतर आकर्षित किया था अत: वे हिंदी भाषा सीखकर उसका पूरा आनंद लेना चाहते थे। इसके साथ ही वे एक कलाकार के रूप में भी उभरना चाहते थे। और इस आकांक्षा को हिंदी सीखकर ही सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता था।

श्री आदेश ने उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देनी शुरू की और यथासम्भव माध्यम हिंदी ही रखा। उन्होंने सन् 1969 में ''भारतीय विद्या संस्थान'' की विधिवत् स्थापना की। इस संस्थान ने पिछले 27 वर्षों में हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रचार में अभूतपूर्व योगदान दिया है। आज भी इस संस्थान के बैनर तले पूरे देश में अनेक केन्द्र कार्यरत हैं तथा उनमें हिंदी भाषा और भारतीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। श्री उत्तम महाराज, श्री कुमार सत्यकेतु, श्री मोहन सामलाल, श्री कालीचरन दुकी, सुश्री उमा बुधराम, सुश्री कमला रामलखन, सुश्री लीला मुसाई आदि अनेक उत्साही जन आज भी इस

कार्य में समर्पित भाव से जुटे हुए हैं। सुश्री कमला रामलखन ने अभी हाल में 'हिंदी प्रभात' नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की है जो ट्रिनीडाड में हिंदी शिक्षा की दिशा में किया पहला सुविचारित एवं सुव्यवस्थित प्रयास है। यह पुस्तक पूर्णत: ट्रिनीडाड को दृष्टिपथ में रखकर लिखी गयी है। अत: स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति का ध्यान रखा गया है। सुश्री कमला रामलखन ट्रिनीडाड में हिंदी की अत्यन्त प्रसिद्ध अध्यापिका हैं।

भारतीय विद्या संस्थान प्रति वर्ष अगस्त मास में बलान्द्रा के समुद्र तट किनारे एक वार्षिक सांस्कृति शिविर का आयोजन भी करता है जिसमें तीन से सात दिन तक निरन्तर हिंदी भाषा और भारतीय संगीत के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। हिंदी भाषण, वाद-विवाद, अंत्याक्षरी, निबन्ध लेखन जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित होती हैं तथा विजेताओं को हिंदी पुस्तकें व अन्य पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

सन् 1950 के बाद से ही श्री भदेस सगन महाराज के प्रयत्नों से श्री सनातन धर्म महासभा की स्थापना हुई और धीरे-धीरे पूरे देश में अनेक मन्दिर, स्कूल और कॉलेजों की स्थापना की गयी। आज इनकी शिक्षा-संस्थाओं की संख्या 50 से भी ऊपर है। इन स्कूलों की स्थापना से यह आशा बँधी कि अब हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ सकेगा लेकिन इन स्कूलों में धीरे-धीरे जोर हिंदी भाषा शिक्षण के स्थान पर हिन्दू धर्म शिक्षा पर अधिक होता गया। अब फिर से व्यवस्थापकों का ध्यान इस कमी की ओर जाने लगा है तथा "बाल विकास" नामक कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित होने वाली सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के माध्यम से एक बार फिर से हिंदी भाषा के संस्कार को जगाने की चेष्टा की जा रही है। श्रीमती लिन्डा सावित्री महाराज इसकी ऊर्जावान संयोजिका हैं।

इसी तरह का एक और महत्वपूर्ण प्रयास प्रसिद्ध समाज सेविका और शिक्षाविद् श्रीमती कमला तिवारी, "सेकेन्डरी स्कूल सांस्कृतिक संगम" के माध्यम से कर रही हैं जिनमें सेकेन्डरी स्कूलों के किशोर अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा को लेकर प्रतियोगिताओं में उतरते हैं। इन कार्यक्रमों में हिंदी के कार्यक्रम ही होते हैं। साथ ही विभिन्न वाद्य यंत्रों के वादन की प्रतियोगिताएँ भी होती हैं।

सन् 1986 के बाद से ट्रिनीडाड में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को फिर से एक नयी दिशा प्राप्त हुई है और इसका श्रेय "हिंदी निधि" नामक संस्था और इसके उत्साही अध्यक्ष श्री चनका सीताराम तथा उनके कर्मठ सहयोगियों को जाता है। इस संस्था ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक सर्वे कराकर इस बात की जानकारी एकत्रित की है कि अभी भी कितने लोग अपनी नित्य प्रति की जिन्दगी में हिंदी भाषा तथा हिंदी शब्दों का कितना प्रयोग करते हैं।

यह संस्था इस बात के लिए भी निरन्तर प्रयत्नशील है कि ट्रिनीडाड के स्कूलों में, जिस प्रकार स्पेनिश, फ्रेंच व लैटिन भाषा एक विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है, उसी प्रकार हिंदी भाषा को पढ़ने का अवसर भी इच्छुक बच्चों को मिलना चाहिए। इस दिशा में उन्हें कुछ सफलता भी मिली है। देश के कुछ चुने हुए स्कूलों में हिंदी को एक "पायलट प्रोग्राम" के रूप में आरम्भ किया जा चुका है। इस संस्था की ओर से देश के कई हिस्सों में

सांध्यकालीन हिंदी कक्षाएँ लगायी जा रही हैं तथा इन कक्षाओं में बड़ी संख्या में विद्यार्थी हिंदी भाषा सीख रहे हैं। ''हिंदी निधि'' ने अपनी कक्षाओं में पढ़ाने के लिए कुछ पाठ्य पुस्तकों को प्रकाशित करने की योजना भी बनायी है जिनमें से दो पुस्तकें ''हिंदी परिचय'' एवं ''विदेशी हिंदी'' प्राइमर प्रकाशित हो चुकी हैं।

''हिंदी निधि'' ने अपनी स्थापना के कुछ ही वर्षों में देश को हिंदी भाषा के शिक्षण के प्रति जागरूक बनाने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। उन्होंने पिछले वर्षों में अनेक व्रर्कशॉप, सेमिनार एवं हिंदी सम्मेलन आयोजित किए हैं। इनमें से सबसे बड़ा ऐतिहासिक कार्य सन् 1992 के अप्रैल माह में आयोजित 'प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन' था जिसमें भारत समेत सत्रह देशों के विद्वान प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन की पूर्व संध्या पर आयोजित स्वागत-भोज के मुख्य अतिथि ट्रिनीडाड गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति श्री नूर हसनअली थे तथा सम्मेलन का उद्‌घाटन इस देश के प्रधानमंत्री श्री पैट्रिक मैनिंग ने किया था।

इस सम्मेलन की सफलता से प्रेरित होकर ''हिंदी-निधि'' ने यह निर्णय भी लिया कि भारतीयों के ट्रिनीडाड आगमन की 150वीं जयन्ती के अवसर पर सन् 1996 में वे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन करेंगे तथा जिसकी उद्‌घोषणा मॉरीशस में आयोजित चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन (1993) के अवसर पर ट्रिनीडाड के प्रतिनिधि श्री रवीन्द्र नाथ महाराज द्वारा की गयी। दिनांक 4 से 8 अप्रैल 1996 में 'हिंदी-निधि' और 'विश्वविद्यालय वेस्टइंडीज' के संयुक्त तत्वावधान में पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन ट्रिनीडाड और टुबेगो में संपन्न हुआ।

ट्रिनीडाड में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में भारत सरकार एवं ट्रिनीडाड स्थित उसके दूतावास की भूमिका भी अत्यन्त महत्पवूर्ण रही है। जब से भारत सरकार ने ट्रिनीडाड के दूतावास में एक हिंदी अधिकारी की नियुक्ति आरम्भ की है, हिंदी प्रचार-प्रसार की प्रकिया को उल्लेखनीय गति और सफलता प्राप्त हुई है। सन् 1986 के बाद से पोर्ट ऑफ स्पेन स्थित दूतावास के परिसर में ही प्रति सप्ताह ''हिंदी शिक्षा कार्यक्रम'' की दो कक्षाएँ नियमित रूप से लग रही हैं। सन् 1986 में तत्कालीन हिंदी शिक्षा अधिकारी श्री गिरीश पाण्डेय ने इस कार्यक्रम को शुरू किया था। तत्पश्चात् सन् 88-92 के बीच प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इस कार्यक्रम से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। इन कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों व हिंदी में रुचि रखने वाले अन्य व्यक्तियों को भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से विदेशों में हिंदी प्रचार प्रसार योजना के अन्तर्गत प्राप्त अनेक हिंदी पुस्तकें, शब्दकोश व सांस्कृतिक विषयों की पुस्तकें वितरित की जाती हैं। इसे हिंदी का गौरव ही कहा जाएगा कि इन कक्षाओं में ट्रिनीडाड के अनेक गणमान्य व्यक्ति यथा संसद सदस्य, बैरिस्टर, राजनयिक, डॉक्टर, कलाकार व पत्रकार आदि विशिष्ट वर्गों के लोग हिंदी पढ़ने आते हैं। कहना न होगा कि इस तरह ये कक्षाएँ दोनों देशों के पारस्परिक एवं पारम्परिक संबंधों के पल्लवन एवं उन्हें और प्रगाढ़ बनाने की दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण मंच का कार्य करती हैं।

सन् 1988 में भारतीय दूतावास के विशिष्ट प्रयासों से ही ''यूनिवर्सटी ऑफ दि वेस्ट इंडीज'' के सैंट आगस्टीन कैम्पस में बी. ए. स्तर पर हिंदी भाषा का शिक्षण आरम्भ हो गया

था जो बिना किसी व्यवधान के जारी है। विश्वविद्यालय व उससे बाहर भी हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए दूतावास की ओर से अनेक पुरस्कारों की योजना भी जारी है।

भारतीय दूतावास की ओर से एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य यह किया गया है जो विद्यार्थी भारत सरकार की छात्रवृत्ति पाकर भारत से हिंदी पढ़कर लौटे हैं उन्हें एक मंच पर एकत्रित किया जाए। इस ध्येय की प्राप्ति के लिए ''कूवा'' नामक शहर में प्रति सप्ताह ''हिंदी बातचीत'' की कक्षाएँ भी सन् 1988 में शुरू की गयीं और जो आज भी बड़ी लोकप्रिय हैं।

ट्रिनीडाड के एक महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थान ''निहरस्ट'' (N.I.H.E.R.S.T.) के ''स्कूल ऑफ लैंग्वेजिज'' में भी हिंदी कक्षाओं का आयोजन होता है। इन कक्षाओं को चलाने के लिए भारत सरकार एक हिंदी अध्यापक को प्रतिनियुक्ति पर भेजती है।

इसके अतिरिक्त गाँधी सेवा संघ, डिवाइन लाइफ सोसायटी, आर्य प्रतिनिधि सभा, एडिनबर्ग हिन्दू मन्दिर, हिन्दू प्रचार केन्द्र आदि अनेक अन्य संस्थाएँ हैं जो किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों के प्रचार-प्रसार में जुटी हुई हैं।

इस संदर्भ में ट्रिनीडाड में कार्यरत अनेक सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्षे योगदान का उल्लेख भी आवश्यक है। ''नेशनल काउन्सिल ऑफ इंडियन कल्चर'' (एन. सी. आई. सी.), ''नृत्यांजलि थियेटर'', ''मस्ताना बहार'', ''इंडियन कल्चरल पीजेंट'', ''शिवशक्ति डांस ग्रुप'' आदि कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं जिनके कार्यक्रम भारतीय संस्कृति से जुड़े होते हैं और हिंदी में होते हैं। इन कार्यक्रमों को देखकर लोगों में हिंदी सीखने की प्रबल प्रेरणा जागती है। इधर के कुछ वर्षों में ''चटनी सिंगिंग'' के कार्यक्रम भारतवंशियों में बहुत ही लोकप्रिय हुए हैं। पुराने भोजपुरी के लोकगीतों को ही ''हाई टेम्पो'' में गाया जाता है तथा उनको सुनकर अपार जन-समूह नाचने लगता है। कभी-कभी ये नाचना-थिरकना अश्लील भी हो जाता है। इन गीतों को गाने वाले गायकों की बड़ी-बड़ी प्रतियोगिताएँ होती हैं तथा विजेता को वर्ष का ''चटनी किंग'' होने का गौरव मिलता है। इधर वर्षों में 'आनन्द यांकरन' व 'बुधराम होलास' नामक दो गायकों ने बड़ी प्रसिद्धि पाई है।

''नया जमाना'', ''डी. रामप्रसाद इंडियन आर्ट आकेस्ट्रा'', जैसे हिंदी फिल्म संगीत प्रस्तुत करने वाले प्रसिद्ध ऑर्केस्ट्रा-ग्रुप हैं जो अपने माधुर्य और लालित्य के कारण श्रोताओं को थिरकने के लिए मजबूर कर देते हैं। इनके साथ जब पोली सुखराज, रूबी खान गुप्तार, रिनॉल्ड दियाल, नजमूल खान, लिली रामचरन, सैली एडवर्ड आदि गायक-गायिकाएँ गीत गाते हैं जो लगता है जैसे लता मंगेश्वर, आशा भौंसले, मुकेश, रफी, शमशाद बेगम, नूरजहाँ के प्रतिरूप ही माइक पर उतर आए हैं।

सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन के माध्यम से जो हिंदी फिल्में और फिल्मी संगीत यहाँ पहुँचा है, उसने भी हिंदी प्रचार-प्रसार की दिशा में महत्पवूर्ण भूमिका निभाई है। उन गीतों को सुनकर और फिल्मों को देखकर आज की नयी पीढ़ी भी उनका अर्थ जानने को उत्सुक हैं

ताकि उन गीतों का मौलिक स्वाद चखा जा सके। यह उनकी एक ऐसी सांस्कृतिक भूख है जिसमें अपनी जड़ों से जुड़ने और उसे समझने की ललक मौजूद है।

वैसे भी ट्रिनीडाड के लोग, चाहे वे किसी भी रंग और जाति के हों, सभी के सभी संगीत प्रेमी हैं। कहा भी जाता है कि वे बोलते नहीं, गाते हैं; वे चलते नहीं, थिरकते हैं। ''सुहानी रात ढल चुकी, नाँ जाने तुम कब आओगे'', ''आएगा आने वाला'', ''सारंगा तेरी याद में'', ''हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है'', ''चौदहवीं का चाँद हो'' जैसे गीत आज भी लोगों के दिलों दिमाग पर छाये हुए हैं। ''सुहानी रात'' गीत के बिना भारतीय गीत-संगीत का कोई भी कार्यक्रम अधूरा ही समझा जाता है।

भारतीय तीज त्यौहारों को मनाने की भी एक सुदृढ़ परम्परा यहाँ मौजूद है। ये तीज त्यौहार जहाँ उन्हें अपनी जड़ों और परम्पराओं से जोड़ते हैं वहीं हिंदी भाषा को जीवित भी रखते हैं। दीवाली यहाँ का राष्ट्रीय त्यौहार है। ''नेशनल काउन्सिल ऑफ इंडियन कल्चर'' सन् 1986 से मध्य ट्रिनीडाड में ''दीवाली नगर'' नामक विशाल मेला लगाती आ रही है। एक सप्ताह तक चलने वाले कार्यक्रमों में हिंदी के प्रयोग की झाँकी हर ओर देखने को मिलती है। होली के अवसर पर सर्वत्र फगवा गीत गाए जाते हैं। रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, रामनवमी, शिवरात्रि आदि पर्व और त्यौहार बड़े उत्साह से मनाए जाते हैं। इन अवसरों पर गाये जाने वाले भजनों से हिंदी मय होकर वातावरण सजीव हो उठता है।

शादी-ब्याह व जन्मोत्सवों के अवसरों पर भी हिंदी गीतों की पारम्परिक गूंज सुनाई पड़ती है। सोहर और विदाई गीत गाये जाते हैं। विवाह की पूर्व रात्रि, जिसे ''कुकिंग नाइट'' कहा जाता है, पर विवाह की तैयारियों में लगे स्त्री-पुरुष सारी-सारी रात गीत गाते हैं और उनकी धुन पर नाचते हैं।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि ट्रिनीडाड में हिंदी भाषा के पठन पाठन का उत्साह निरन्तर बढ़ रहा है और इसका एक मात्र कारण यह है कि लगभग 150 वर्ष बीत जाने के बाद भी प्रवासी भारतीयों के मनों में भारत की याद रची-बसी है, जैसे मिट्टी में उसकी सुगंध छिपी रहती है और जो पानी पड़ते ही उजागर हो जाती है। उसी तरह ट्रिनीडाड के प्रवासी भारतीयों के हृदयों में भी उनके पुरखों के देश की, उनके आजा-आजी, नाना-नानी, आदि के कठिन संघर्ष और कष्टों की स्मृतियाँ आज भी हरी हैं। वे उनकी पीड़ाओं को भूले नहीं हैं। पुरखों की यह स्मृति उन्हें हिंदी भाषा सीखने की प्रेरणा देती रहती है। अंग्रेजी भाषा बोलते हुए समस्त प्रकार की सुविधाओं के बीच रहते हुए भी वे यह नहीं भूले हैं कि उनकी अस्मिता की पहचान की आधार शिला भारतीय संस्कृति तथा हिंदी भाषा के अलावा और कुछ भी नहीं हो सकती। यही वह शुभ संकेत है जो ट्रिनीडाड में हिंदी के भविष्य के प्रति हमें आशान्वित करता है।

त्रिनीदाद में हिन्दी का स्वरूप

त्रिलोचन पाण्डेय

त्रिनीदाद में हिंदी का स्वरूप दो प्रकार से विचारणीय है— (1) पारंपरिक स्वरूप, (2) प्रशिक्षण-परवर्ती स्वरूप। यहाँ उसके पहले स्वरूप पर विचार किया जा रहा है। दूसरे स्वरूप का विवेचन लेखक ने अपनी पुस्तक 'त्रिनीदाद कार्नीवाल का देश' में किया है।

भारत से लगभग 15 हजार मील दूर 'वेस्ट इंडीज' में अनेक छोटे-बड़े द्वीप-समूह फैले हैं जहाँ त्रिनीदाद एवं टुबेगो सन् 1962 में ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ। उस स्वतंत्र गणराज्य में इस समय 40% से अधिक भारतीय मूल के निवासी जीवन-यापन करते हैं जिन्होंने अफ्रीकी तथा यूरोपीय निवासियों के साथ मिलकर स्थानीय संस्कृति का विकास किया है। भारतीय वंशजों की विशेषता यह है कि ये भारत की अनेक परंपराओं का अभी तक निर्वाह करते हैं और विगत 20-25 वर्षों में उन्होंने भारतीय सम्बन्धों को घनिष्ठ बनाया है। हिंदी का अध्ययन-अध्यापन इन्हीं सम्बन्धों का प्रतिफलन है।

इस समय त्रिनीदाद में हिंदी के दो रूप माने जा सकते हैं— उसका पारंपरिक रूप, तथा उसका शिक्षण-परवर्ती रूप। पहले का सम्बन्ध वहाँ भारतीय मूल के निवासियों की हिंदी से है जिसे बोलचाल की हिंदी कह सकते हैं। दूसरे का सम्बन्ध शिक्षण-प्रशिक्षण के पश्चात् सीखी गई हिंदी से है जो विशेष रूप से प्रयोजनमूलक है। हिंदी के इन दोनों रूपों पर अलग-अलग विचार करना आवश्यक है क्योंकि अध्यापन की दृष्टि से दोनों की समस्याएँ एक जैसी नहीं हैं। सर्व प्रथम इसके पहले रूप अर्थात् बोलचाल की हिंदी पर विचार करना अधिक उपयोगी होगा। स्मरणीय है कि सामान्यत: वहाँ हिंदी का तात्पर्य बोलचाल की हिंदी ही है जिसे घर-परिवार के भीतर प्रयुक्त करते हैं। सामाजिक रूप से अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है।

भारतीयमूल के लोग लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व अपनी बोलचाल की अवधी, भोजपुरी, बिहारी बोलियाँ लेकर वहाँ गए थे और आज उनके वंशज इन्हीं बोलियों के शब्दों, मुहावरों, वाक्यांशों का प्रयोग करते हैं। नवयुवकों की पीढ़ी इनका प्रयोग तो नहीं कर पाती, फिर भी इन्हें समझती है। फिल्मी गीतों, सिनेमा और दूरदर्शन के प्रभाव से हिंदी का आकर्षण बढ़ रहा है और नवयुवक इसका प्रचार-प्रसार करना चाहते हैं। किंतु उन्हें यह समझने में कठिनाई होती है कि बोलचाल की हिंदी मानक हिंदी से भिन्न है। भारत आने पर वे मानक हिंदी से अवश्य परिचित होने लगते हैं, किंतु त्रिनीदाद के स्थानीय लोगों को मानक हिंदी का स्वरूप विशेष रूप से समझाना पड़ता है। वहाँ जाकर भाषा शिक्षण की रूप रेखा तैयार करते समय इस तथ्य की उपेक्षा नहीं कर सकते।

त्रिनीदाद में बोलचाल की हिंदी कैसी है? इसकी कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं— (1) सीमित परिवेश, (2) शब्दों का लौकिकीकरण, (3) भोजन-पदार्थ, सम्बन्धी शब्दावली, (4) धर्म कार्य सम्बन्धी प्रयोग, (5) नातेदारी की शब्दावली, (6) व्यक्तिवाची नाम, (7) विशिष्ट पदावली, (8) अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता, आदि।

(1) पहली विशेषता इसके सीमित परिवेश की है। बोलचाल की हिंदी उन वयस्क तथा वयोवृद्ध स्त्री-पुरुषों के पारस्परिक वार्तालाप तथा परिवारों तक सीमित है जो परिवारिक रूप से चीनी मिलों में कार्यरत हैं, फल-फूलों के उद्यान लगाते हैं, चावल-गेहूँ की खेती करते हैं, अथवा गृह उद्योगों का विकास करते हैं। वे लोग उच्चशिक्षा प्राप्त नहीं हैं। अपने दैनिक व्यवहार में वे अंग्रेजी के साथ हिंदी शब्दों, मुहावरों, कहावतों का यथास्थान प्रयोग करते हैं। भारतीय अतिथियों का स्वागत करते समय उनकी भाषा होती है— ''कइसन हाल?'' बैठा जाई। ''कऊन मुलूक हौवा?'' अर्थात् आपके क्या समाचार हैं? आइए, बैठिए। आप किस स्थान से आए हैं? समय मिलने पर वे इसी शैली में किस्से-कहानियाँ सुनाते हैं, अन्यान्य घटनाओं का उल्लेख करते हैं। इस श्रेणी के अधिकांश व्यक्ति भारत यात्रा को तीर्थ यात्रा की भाँति पवित्र मानते हैं।

भारतीय महिलाओं की हिंदी के प्रति विशेष रुचि है क्योंकि हिंदी कक्षाओं में उनकी संख्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक रहती है। वे अपने परिवारों में जिन आचार-विचारों, रीति रिवाजों, संस्कारों तथा लोक विश्वासों का पालन करती हैं उनसे हिंदी भाषा जुड़ी है। उनके कुल पुरोहित 'पंडित' या 'महाराज' संबोधन से पहचाने जाते हैं और हिंदू समाज में विशेष सम्मानित हैं। उनकी बोलचाल तत्सम प्रधान हंदी है जिसमें शास्त्रों, पुराणों की व्याख्या की जाती है। इस हिंदी की पुनर्व्याख्या अंग्रेजी माध्यम से की जाती है। उल्लेखनीय है कि वहाँ तुलसी कृत 'रामायण' का पठन-पाठन अंग्रेजी के माध्यम से होता है।

(2) दूसरी विशेषता हिंदी शब्दावली के लौकिकीकरण की है जिसे 'क्रियोलीकरण' भी कह सकते हैं क्योंकि त्रिनीदाद की सामान्य बोलचाल 'क्रियोल' कही जाती है। बोलचाल के कुछ हिंदी शब्द स्थानीय परिवेश में इतने घुलमिल गए हैं कि उन्हें कोई आगत शब्दावली नहीं मानते 'रोटी', 'पुलाव', 'सितार', 'तबला', 'गोबर', 'पूजा', 'मूर्ति', 'शिवालय', 'भण्डारा', 'तिलक', 'मोहर' आदि इसी श्रेणी के शब्द हैं जिनका कहीं तो मात्र उच्चारण भिन्न हुआ है, कहीं अर्थ विस्तार हो गया है। कहीं दो शब्दों से निर्मित तीसरा शब्द मूल शब्दों से भिन्न अर्थ का वाचक हो गया है। बोलचाल में ये तीनों प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं।

उदाहरणार्थ 'सितार', 'तबला', 'शिवालय' आदि शब्द 'सीतार', 'ताबला', 'सिवाला' जैसे सुनाई देते हैं। यहाँ केवल उच्चारण भिन्न हुआ है, शब्दों का मूल अर्थ वही है। 'गोबर', 'पूजा' शब्द यदि अपना मूल अर्थ बनाए हुए हैं तो 'मूर्ति' और 'तिलक' शब्दों ने 'मूरठी' और 'टीलक' का रूप ग्रहण कर लिया है। 'मूर्ति' का 'मूरठी' होना केवल ध्वनि परिवर्तन का उदाहरण है, जबकि 'तीलक' का 'टीलक' होना ध्वनि परिवर्तन के साथ अर्थ परिवर्तन का

द्योतक भी है। 'तिलक' हिंदी में टीका लगाना है जो लक्षणा से विवाह की पूर्व स्वीकृति का द्योतक हो जाता है। त्रिनीदाद में टीका लगाने का लक्ष्यार्थ ही प्रचलित हो गया अर्थात् वर को तिलक चढ़ाना। कुछ लोग 'टीलोक' जैसा बोलते हैं और अर्थ विस्तार के कारण इसके साथ दहेज का अर्थ जुड़ गया है। यह परिवर्तन की दूसरी प्रवृत्ति है।

परिवर्तन की तीसरी प्रवृत्ति 'रोटी', 'पुलाव', 'भण्डारा' जैसे शब्दों में दिखाई देगी। 'रोटी' क्रियोलीकरण के पश्चात् नया रूप धारण कर चुकी है। वहाँ न केवल रोटी सेंकने का ढंग अलग है बल्कि उसका तात्पर्य 'पराठा रोटी', 'दोस्ती रोटी', 'दाल रोटी' जैसी सभी प्रकार की रोटियों से हो गया है। भारत में पहले गोलाकार तवे पर एक रोटी पकाई जाती है, फिर चूल्हे की आँच पर अलग सेकी जाती है। पराठा बनाते समय तवे में घी डाल कर उसे सेंका जाता है। वहाँ एक विशालाकार तवे पर चार पाँच रोटियाँ एक साथ पकाई जाती हैं, फिर उन्हें सेका जाता है। पिसी दाल भर कर बनाई रोटी 'दाल रोटी' कहलाती है। इस प्रकार 'दाल' और 'रोटी' शब्दों का अर्थ अलग-अलग न होकर तीसरे अर्थ का वाचक बन गया है।

'पुलाव' का उच्चारण 'पिलाव' या 'पिलाउ' सा होता है जिसके भीतर चावल, मटर के साथ चिकन, बीफ तथा अन्य पदार्थ भी मिलाए जाते हैं। 'भण्डारा' हिंदी भाषी प्रदेश में सामूहिक भोज का द्योतक है जो किसी धार्मिक अवसर पर कराया जाता है। वहाँ इसे 'बण्डारा' कहते हैं, यह उस सामूहिक भोजन का द्योतक है जो वार्षिक अथवा सामयिक श्राद्ध के समय कराया जाता है। वहाँ हिंदू लोग तेरहवीं के दिन 'बण्डारा' में 20-25 व्यक्तियों को भोजन कराते हैं।

(3) तीसरी विशेषता भोजन पदार्थ सम्बन्धी प्रयोगों की है जो सर्वाधिक सुनाई देते हैं। खाद्य पदार्थ एक जैसे ही हैं, उनका केवल उच्चारण भिन्न हो गया है। जिन शब्दों का उच्चारण नहीं बदला, उनकी बोली का क्षेत्र संकुचित हो गया। हरी साग-सब्जी पका कर 'भाजी' या 'तरकारी' बनाई जाती है। वहाँ 'तरकारी' को 'तलकारी' अथवा 'तकारी' कहते हैं। यहाँ ध्वनि परिवर्तन में 'विपर्यय' और 'लोप' की दिशाएँ साथ-साथ लक्षित होती हैं। त्रिनीदाद में उच्चारण की विशेषता यह है कि जितनी सरलता से ह्रस्व स्वरों का दीर्घीकरण किया जाता है उतना दीर्घ स्वरों का ह्रस्वीकरण नहीं किया जाता।

बोलचाल में चने का दाना 'चाना' है और चने की दाल भी 'चाना' अथवा 'छाना' है। हिंदी की 'भजिया' या 'पकौड़ी' वहाँ जाकर 'फुलौरी' बन गई। यह 'फुलौरी' शब्द मूलतः हिंदी की उपभाषा भोजपुरी का है। भोजपुरी में 'फुलार' का अर्थ है फूला हुआ जो अभी तक प्रचलित है। चूँकि भजिया, पकौड़ी बेसन में डुबाने पर फूल जाते हैं, इस कारण वहाँ बेसन डालकर पकाए गए खाद्य पदार्थ 'फुलौरी' कहे जाने लगे। खाने का अचार 'आचार' या 'आछार' हो गया जो स्वर के दीर्घीकरण का उदाहरण है। आम से बनाए जाने के कारण अमचार, अचार शब्द 'आमछार' भी सुनाई पड़ता है। 'च' ध्वनि का 'छ' होना मुख-सुख का द्योतक है।

दीर्घीकरण के अन्य उदाहरण हैं— दही=दाही, नमक = नीमक, मिर्च = मीरचा/ मरीचा, खिचड़ी = कीचरी, मिठाई = मीठाय/मीठै। 'कद्दू' को 'कुम्हड़ा', 'कोंहड़ा' दोनों कहते हैं, वैसे इसका स्थान अँग्रेजी, 'पंपकिन' ने ले लिया है, लौकी = लउकी, जलेबी = जिलेबी, करेला = करेली जैसे शब्द अन्य प्रकार के स्वर-परिवर्तन उपस्थित करते हैं। 'बैंगन' का 'बैजनियाँ' उच्चारण स्थानीय अँग्रेजी में भी स्वीकृत हो गया है। उरद की दाल तथा खड़ा दाना दोनों 'उरदी' है। 'टमाटर' के लिए 'डॉवाडोल' नया शब्द है और भारत की धारीदार 'तरोई' वहाँ 'झिंगी' कहलाती है। 'खुरमा' मिठाई वहाँ जाकर 'कूरमा' हो गई है।

(4) चौथी विशेषता धार्मिक आचार विचार की शब्दावली में लक्षित होगी जहाँ अनेक भाषा परिवर्तन द्रष्टव्य हैं— ध्वनि परिवर्तन, रूपात्मक परिवर्तन, अर्थ संकोच, अर्थादेश आदि। मंदिरों की पूजा सामग्री, परिवारों के भीतर पूजा-स्थान भारतीय प्रथा के अनुसार सजाए जाते हैं। शिव, पार्वती, गणेश, लक्ष्मी, विष्णु, सरस्वती आदि देवी देवताओं की प्रतिमाएँ अथवा चित्र, जिन्हें 'छापा' कहते हैं, विधि-विधान सहित प्रतिष्ठित कराए जाते हैं। इन नामों के साथ 'जी' लगाने की प्रथा है— 'लक्ष्मी जी', 'पारवती जी' अन्यथा ये नाम सामान्य मनुष्यवाची हो जाते हैं। 'लक्ष्मी जी' देवी हैं, मात्र 'लक्ष्मी' किसी महिला का नाम है। इसी क्रम से 'गनेस'-'गनेस जी', 'राम'-'राम जी', 'सुरसुती'-'सुरसुती जी' का अंतर समझा जा सकता है।

संयुक्त व्यंजनों का उच्चारण जन साधारण के लिए सर्वत्र कठिन है, त्रिनीदाद इसका अपवाद नहीं है। ये व्यंजन उच्चारण करते समय या तो लुप्त हो जाते हैं, अथवा निकटवर्ती व्यंजनों का स्थान ले लेते हैं। पीतल का 'लोटा' वहाँ 'लोठर' या 'लोभा' हो गया, 'जनेऊ' का स्थानापन्न 'कंठी' उसके भारतीयमूल का स्मारक है। कंठी धारण करना किसी धार्मिक संप्रदाय में दीक्षित होने का प्रमाण है।

'जग्य', 'रमायन', 'भागवत', 'महापातर', 'पुरोहिताई' शब्द अपना अभिधार्थ छोड़कर सांस्कृतिक अनुष्ठानों के वाचक बन गए हैं। 'जग्य' (यज्ञ) अब कथावाचन का प्रतीक हो गया है। रामायण पाठ करने को 'रमायन जग्य' कहते हैं। 'भागवत' का अर्थ श्रीमद्भागवत पुराण न होकर सात दिनों तक चलने वाला अनुष्ठान है जिसमें नित्य कथा वाचन के उपरांत पूजा कराई जाती है, प्रसाद वितरण किया जाता है। कथा वाचन की पूर्ति 'आरती' से कराई जाती है। मुण्डन संस्कार करने वाले व्यक्ति को 'महापातर' कहते हैं, 'पूजा', देवताओं के प्रति श्रद्धाभाव प्रकट करना है जिसके लिए कोई कर्म काण्ड आवश्यक नहीं। 'पुरोहिताई' करने का अर्थ है पूजा-पाठ की वृत्ति अपनाते हुए आजीविका निर्वाह करना, जिसके प्रति स्थानीय निवासी अत्यंत उदार हैं। 'पुरोहित' और 'पंडित' शब्द लगभग पर्यायवाची हो गए हैं।

(5) पाँचवीं विशेषता नातेदारी या पारिवारिक सम्बन्धों को प्रकट करने वाली शब्दावली है जो भारत त्रिनीदाद के जातीय जीवन की प्रकाशक है। दैनिक व्यवहार में प्रमुख रूप से प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं— 'आजा' (दादा), 'फुआ' (बुआ), 'पोइया' (पिता), 'भुनोई' (बहनोई), 'छुटकी' (छोटी लड़की), 'बउजी' (भाभी), 'दरही' (दलहन), 'सुसरे'

(ससुराल), 'खाकी' (काकी), 'भोइया' (भाई), 'बाबा' (वृद्ध) आदि। घरेलू उपयोग में आने वाली वस्तुएँ हैं— 'चुरहा' (चूल्हा), 'पीरा' (पीढ़ा), 'जारू' (झाड़ू), 'बेलना' (बेलन), 'थरिया' (थाली), 'राखी' (राख), 'कटिया' (खाट), 'सिलोरा' (सिललोढ़ा), 'ताबा' (तवा), 'पाटा' (चौकी), 'छुरी' (चाकू)।

स्त्री-पुरुषों की बोलचाल में कभी वस्त्रों-आभूषणों के भी पारंपरिक उल्लेख मिलते हैं— 'झुल्ला' (झूला), 'सारी' (साड़ी), ओरनी (दुपट्टा), 'नथुनिया' (नथ), 'बाला' (बाली), 'चुरिया' (चूड़ी), 'सेनुर' (सिन्दूर), 'बाजू बॉक' (बाजू बन्द), 'झूमर' (कर्णफूल), 'बीरा' (कंगन), 'जोरा जामा' (दूल्हे के वस्त्र) आदि। शरीर के अंग-प्रत्यंगों का इस प्रकार उल्लेख किया जाता है— 'नथुनी' (नाक के छिद्र), 'नाकुन' (नाखून), 'आँखी' (आँख), 'बीब' (जीभ), 'काना' (कन्धा), 'गोड़' (पैर), 'चुटकी' (चुटिया), 'मूरी' (सिर), 'छाती' (वक्ष) आदि।

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से बोलचाल की शब्दावली कितनी महत्वपूर्ण है, दो देशों के ऐतिहासिक सन्दर्भों को जानने की इसमें कितनी सामग्री है, इसे इतिहास के विद्वान अच्छी तरह जानते हैं। भाषा की दृष्टि से महत्व यह है कि इस शब्दावली का वास्तविक अनुवाद किसी दूसरी भाषा में नहीं कर सकते। इसके साथ भारतीय संस्कृति के आंतरिक आयाम जुड़े हैं जो भारतवासियों के निजी अनुभव हैं। कोई मानक भापा सामाजिक एकरूपता को तो अवश्य प्रदर्शित करती है, किंतु बोलचाल की भाषा संस्कृति-उन्मुख होने के कारण अपनी विविधता में ही जीवित और सशक्त होती है। इस तथ्य को मानव शास्त्रियों ने समझने का प्रयत्न किया है और भाषा तथा संस्कृति के आंतरिक सम्बन्धों की व्याख्या करने के लिए वे प्रयोगकर्ता की भूमिका पर विशेष ध्यान देते हैं।

त्रिनीदाद के सन्दर्भ में इस उपागम (एप्रोच) का तात्पर्य होगा कि उपर्युक्त बोलचाल की शब्दावली को प्रयोगकर्ताओं की दृष्टि से विश्लेषित किया जाए। किंतु यह कार्य किसी मानव शास्त्री या समाज भाषा विद्वानी का है, भाषा-शिक्षक का नहीं।

6. छठी विशेषता व्यक्तिवाची संज्ञाओं की है जिनमें स्थानीय संबोधन-शैली तथा स्त्री-पुरुषों के नामकरण सम्मिलित हैं। परस्पर अभिवादन करते समय 'हाइ', 'हलो' जैसे अंग्रेजी शिष्टाचार के द्योतक शब्दों के अतिरिक्त 'नमस्ते', 'सीताराम', 'नमस्कार' शब्द अधिक प्रचलित हैं। 'नमस्ते' तथा 'नमस्कार' शिक्षित भारतीयों के बीच अधिक प्रचलित हैं, महिलाएँ तथा सामान्य पुरुष 'सीताराम' का अधिक प्रयोग करते हैं। पुरुषों के नामकरण में प्राय: 'चरन' शब्द जुड़ा रहता है जैसे 'राम चरन', 'हरि चरन', अथवा उनका नामकरण हिन्दू देवी-देवताओं के नाम पर होता है। बोलते समय 'राम' का 'राम' ही रहता है किंतु 'कृष्ण' का 'किसून' 'विष्णु' का 'विसून', 'शिव' का 'स्यू' या 'सात्र' हो जाता है। जैसे— 'बाल किसून' (बाल कृष्ण), 'गंगा विसून' (गंगा विष्णु), 'रामबीर सिंह' (रघुवीर सिंह), 'साम लाल' (श्याम लाल), परयाग परसाद (प्रयाग प्रसाद), 'सीचन' (श्री चन्द्र) आदि।

महिलाओं के नाम किसी पौराणिक देवी अथवा किसी गुण विशेष पर रखे जाते हैं—'जसोदरा' (यशोदा), 'ऊरमिला सींग' (उर्मिला सिंह), 'सूनर देई' (सुन्दरी देवी), 'केलाउती' (कलावती), 'कामला नराहन' (कमला नारायण)। पुकारते समय इन्हें संक्षिप्त कर देते हैं— 'जसोदरा', 'कामला', 'रामवती' आदि। स्त्री-पुरुषों के दो-दो नाम रखने की प्रथा है— सामाजिक नाम तथा पारिवारिक नाम, किंतु सामाजिक नाम पुकारा जाता है। अविवाहित महिलाएँ प्राय: अपने नाम के साथ अपने पिता का नाम भी लिखती हैं— 'मोहिनी रामचरन।'

'महाराज' विशेषण से सामाजिक श्रेष्ठता का आभास कराया जाता है। अधिक विशेषता प्रकट करने के लिए मूल नाम के पूर्व पंडित जोड़ा जाता है और बोला जाता है—'पंडित किसून महाराज', अथवा 'पंडित कृस्ना महाराज।' बोलते समय सामाजिक नाम को संक्षिप्त अवश्य करते हैं, किंतु यह पद-मर्यादा के अनुसार किया जाता है। 'बलीराम व्यास' नामधारी व्यक्ति को वरिष्ठ लोग अनौपचारिक रूप से केवल 'बाली' कहेंगे, समकक्ष लोग उसे 'व्यास' मात्र कह सकते हैं। सामान्यत: पहला नाम लेने की प्रथा है। 'श्री', 'मिस्टर', 'कुमारी', या श्रीमती जैसे संबोधन वहाँ अपरिचित जैसे लगते हैं। अभिवादन करते समय व्यक्तिगत स्तर पर औपचारिकता नहीं दिखाई देती।

7. सातवीं विशेषता उस पदावली की है जो विशिष्ट प्रयोगों, मुहावरों, क्रियापदों में मिलती है। कुछ शब्द सामान्य प्रयोगों की अपेक्षा भिन्न अर्थ प्रकट करते हैं। 'जलावे के लकरी', 'खाने के आम', 'दिखाता है', 'चरावे जल', 'बजावे संख', 'विहीन', 'छापा', 'घाम', 'नीमकराम', 'मजूर' आदि प्रयोग लिए जा सकते हैं। 'जलावे के लकरी' का अर्थ जलाने की लकड़ी है। 'खावे के आम' का अर्थ है खाने के लिए आम, 'दिखाता है' का अर्थ है मालूम पड़ता है, 'चरावे जल' का अर्थ है 'जल चढ़ाना', और 'बजावे संख' का तात्पर्य है शंख बजाकर पूजा करना। यहाँ क्रियापदों का प्रयोग संज्ञापदों के पूर्व करना उल्लेखनीय है जिसे स्थानीय विशेषता कहा जाएगा। हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार क्रियापद का प्रयोग संज्ञापद के पश्चात् होना चाहिए। चूँकि दैनिक व्यवहार में क्रिया विशेष का अधिक ध्यान रखा जाता है, इसलिए बोलते समय पहले क्रियापद का प्रयोग होता है। यह भाषिक संरचना की विशेषता है।

सामान्य हिंदी व्यवहार करते समय किस प्रकार भिन्न अर्थ प्रकट करते हैं, इसके लिए 'विहान' शब्द लीजिए। हिंदी में इसका अर्थ है प्रात:काल, जब सूर्योदय होने लगता है। त्रिनीदाद में इसका प्रयोग आगामी कल के लिए होता है, वहाँ 'पइसा' का लक्ष्यार्थ ही एकमात्र अर्थ है अर्थात् केवल धन-संपत्ति। 'छापा' वहाँ सिनेमा, मूर्ति या किसी तस्वीर को कहते हैं। 'घाम' मात्र धूप तक सीमित नहीं है, ग्रीष्म ऋतु तक व्यापक हो गया है। 'नीमकराम' (नमक-हराम) दल बदलू को कहते हैं और 'मजूर' का पर्यायवाची 'कुली' ब्रिटिश शासनकाल में विशेष रूप में भारतीय मजदूर का द्योतक था। ऐसे प्रयोग जीवन प्रणाली के विविध पक्षों की रोचक व्याख्या करते हैं।

८. अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता इस बोलचाल की आठवीं विशेषता है जिसका एक रूप (संबोधन शैली) ऊपर लिया जा चुका है। किसी व्यक्ति, संस्था, कार्यालय का पूरा वर्णन नहीं करते हुए उसे संक्षिप्त कर देते हैं। राजधानी पोर्ट ऑव स्पेन मात्र 'पी. ओ. एस.' कही जाती है, हाई कमीशन मात्र 'मिशन' रह जाता है। 'गुरचरन रामसुख' यदि 'चरन' कहे जाते हैं तो घूरेलाल 'जी. लाल' बन जाते हैं। बोलचाल की भाषा न केवल ध्वनि संरचना में भिन्न होती है, बल्कि उसकी रूपरचना, वाक्य योजना भी भिन्न होती है।

अभिव्यक्ति को संक्षिप्त बनाने के लिए त्रिनीदाद में एकाधिक युक्तियाँ अपनाई जाती हैं— (1) एक शब्द का उच्चारण— 'बाबू लाल' (बाबू लाल राम परसाद), (2) शब्दों के आद्य अक्षरों का प्रयोग— 'पी. एम.' (प्राइम मिनिस्टर), (3) मात्र शब्दांश का उच्चारण— 'हरि' (हरि ओम चरन), (4) उपनाम का प्रयोग— 'टाम' (मैलविल गंगा परसाद)। यह सिद्ध होता है कि प्रयत्न-लाघव किसी भाषा का सार्वभौमिक नियम है।

निम्नलिखित वाक्यों से स्थानीय बोलचाल की हिंदी का अनुमान कर सकते हैं—

1. "आसा रखता हूँ हमारे साथ बिबी जाएगा।"
2. "गरीब के मालीक ये किया हो रहा है।"
3. "ये सब बातें चीटी परकास में मिलेगा।"
4. "कुटिया पर हम लोग लरीकन का पराई।"
5. "मेरा पीछला जनम सबसे ऊतम नाही।"
6. "मेरा वीवाह दो साल के बाद है।"
7. "में चावल से एक काँटा खाता।"
8. "उसका मामा साग हमारा लीया।"
9. "तुमारा पाठसाला नाम मूजे बटा।"
10. "वह पेंसल उसका जेब में होता है।"

त्रिनीदाद के सामान्य भारतीय हिंदी के नाम पर इसी बोलचाल की हिंदी से परिचित हैं और मानक भाषा अथवा प्रयोजनमूलक भाषा जैसे नाम उनके लिए अपरिचित हैं। नए सन्दर्भों में हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण की दृष्टि से वहाँ यह स्थिति विचारणीय है। उनके दैनिक व्यवहार की भाषा अंग्रेजी है, उस देश की राजभाषा अंग्रेजी है। केवल आवश्यक होने पर, वह भी सीमित सन्दर्भ में, वे अपनी टूटी-फूटी (ब्रोकन) हिंदी का प्रयोग कर लेते हैं। उनकी यह हिंदी भी मानक न होकर बोलीगत है, किंतु इसलिए महत्वपूर्ण है कि यह अन्य भाषा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

यह रूप कितना हिंदी की उपभाषा भोजपुरी अथवा अवधी के निकट है, यह तो अभी नहीं कहा जा सकता। यह अनुसंधान का स्वतंत्र विषय हो सकता है। किंतु यह रूप

स्थानीय बोलचाल अंग्रेजी अथवा क्रिओल से अवश्य प्रभावित है। हिंदी को एक अन्य भाषा (विदेशी भाषा) के रूप में सीखते समय यह रूप अध्येता की मानसिकता को निश्चित रूप से प्रभावित करता है। तब अध्येता के सामने भाषिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती है। हिंदी का एक रूप उसे पैतृक दाय के रूप में अपनी परंपरा से मिलता है, दूसरा रूप कक्षा के भीतर अथवा पाठ्य-पुस्तकों में अन्य भाषा के रूप में दिखाई देता है। इन रूप भेदों पर समुचित विचार करना हिंदी अध्यापक का प्राथमिक कर्तव्य है।

शिक्षण की दृष्टि से पारंपरिक हिन्दी का महत्व यह है कि इसके द्वारा भाषा के ध्वन्यात्मक तथा अर्थपरक दोनों पक्ष प्रकाशित होते हैं और ये दोनों पक्ष क्रमश: अध्यापक तथा अध्येता से संबंध रखते हैं। यदि अध्यापक ध्वनि व्यवस्था को आधार बना कर भाषा का रूप स्पष्ट करता है तो अध्येता के लिए उसका अर्थपरक स्वरूप अधिक महत्व रखता है। इसलिए यदि शब्दार्थों की पहले व्याख्या करते हुए उन्हीं शब्दों के ध्वनि शिक्षण की परवर्ती व्यवस्था की जाए, अर्थात् शब्दार्थ को केन्द्र बना कर भाषा शिक्षण प्रारंभ करें तो संभवत: मानक हिंदी को वहाँ अच्छी तरह समझाया जा सकता है।

यह स्थिति हिंदी शिक्षण के एक दूसरे महत्वपूर्ण पक्ष का संकेत करती है जिसका सम्बन्ध भाषा-परिमार्जन से है। जब त्रिनीदाद भारतीय 'हितकारी' के स्थान पर 'हीतकारी', 'किवाड़' के स्थान पर 'कीवारी', अथवा रामसमुझ के स्थान पर 'रामसमूज' का उच्चारण करते हैं तो क्या इन प्रयोगों को मात्र अशुद्ध माना जा सकता है? मानक हिंदी की दृष्टि से इनके शुद्ध रूप अवश्य बतलाए जा सकते हैं किंतु उनके आचार-विचार में ढले हुए रूपों को अशुद्ध किस आधार पर कहा जाएगा?

एक देश की, भाषा की शब्दावली दूसरे स्थान पर पहुँच कर अनुकूलित होती है (एकल्चरेशन)। एक देश के भाषाभाषी भी दूसरे देश में जाकर नए परिवेश के अनुसार अपने को ढालते हैं; तदनुसार उनका मूल उच्चारण परिवर्तित होकर नया रूप ग्रहण करता है। यही परिवर्तन त्रिनीदाद में घटित हुआ है। इसेलिए वहाँ की बोलचाल को मानक हिंदी की तुलना में देखने की अपेक्षा स्थानीय संस्कृति के संदर्भ में देखना अधिक समीचीन होगा। इस प्रकार उनकी हिंदी का पारंपरिक स्वरूप अच्छी तरह समझा जा सकता है। इसके द्वारा शिक्षण-प्रणाली को प्रभावी बनाने में भी सहायता मिलेगी।

भारत के पड़ोसी देश

भारत के पड़ोसी (दक्षेस) देशों में हिन्दी

अरुण चतुर्वेदी

हिंदी विश्व की तीन प्रमुख भाषाओं में से एक है। पिछले तीन दशकों से इसका अंतर्राष्ट्रीय महत्व काफ़ी बढ़ा है। किसी भाषा के महत्व को तीन संदर्भों के आधार पर आँका जा सकता है— क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय। भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ कई महत्वपूर्ण बातों पर निर्भर करता है—

— वह किसी बड़े और महत्वपूर्ण देश की राष्ट्र भाषा व राजभाषा होने के साथ-साथ विश्व के कई देशों में पढ़ी और पढ़ाई जा रही है।

— उसका साहित्य, इतिहास, धर्म, दर्शन तथा संस्कृति अंतर्राष्ट्रीय रुचि की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

— अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उस देश की अपनी अच्छी व्यापारिक साख हो।

हिंदी इन सभी अर्हताओं को पूरा करती है। वह इस समय विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों और सैकड़ों अन्य संस्थाओं में पढ़ी तथा पढ़ाई जा रही है। अमेरिका तथा यूरोपीय देशों की इधर हिंदी के प्रति रुचि काफी बढ़ी है जिसके विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक कारण हैं। एशिया के देशों में हिंदी के प्रति रुचि अपेक्षाकृत कम है जिसका कारण उन देशों में हिंदी के अध्ययन की उपयोगिता तथा साधन और सुविधाओं में कमी होना है। फिर भी इधर विकासशील देशों में अपने अस्तित्व तथा अपनी उन्नति के प्रति चेतना जाग्रत हुई है। उन्होंने अपने विकास के लिए विभिन्न स्तरों पर आपस में जुड़ने तथा आपसी सहयोग की आवश्यकता को तीव्रता से महसूस किया है। इसी शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है 'दक्षेस' यानी दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन। इसकी स्थापना 8 दिसंबर, 1985 को की गई थी तथा इसका मुख्यालय काठमांडू (नेपाल) में है। इसके उद्देश्य मुख्य रूप से निम्नलिखित हैं—

— दक्षिण एशिया के लोगों के कल्याण के लिए प्रयास करना।

— इस क्षेत्र में सुरक्षापूर्ण वातावरण तैयार करना।

— इस क्षेत्र के आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए प्रयास करना।

— इस क्षेत्र से आतंकवाद को समाप्त करना।

इस संगठन के सात सदस्य हैं— भारत, पाकिस्तान, बंगला देश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान तथा मालदीव। इस संगठन से जुड़ने के बाद से इन देशों के परस्पर सांस्कृतिक, व्यापारिक तथा राजनीतिक संबंधों में काफ़ी बदलाव आया है। इन देशों ने विभिन्न स्तरों पर एक दूसरे को सहयोग देने का जो प्रयास प्रारंभ किया है उसके संदर्भ में उनके भाषाई तथा सांस्कृतिक संबंधों की समीक्षा करना कई दृष्टियों से आवश्यक है। प्रस्तुत लेख में दक्षेस देशों में हिन्दी के अध्ययन तथा अध्यापन की स्थितियों को समझने का प्रयास किया गया है।

भारत

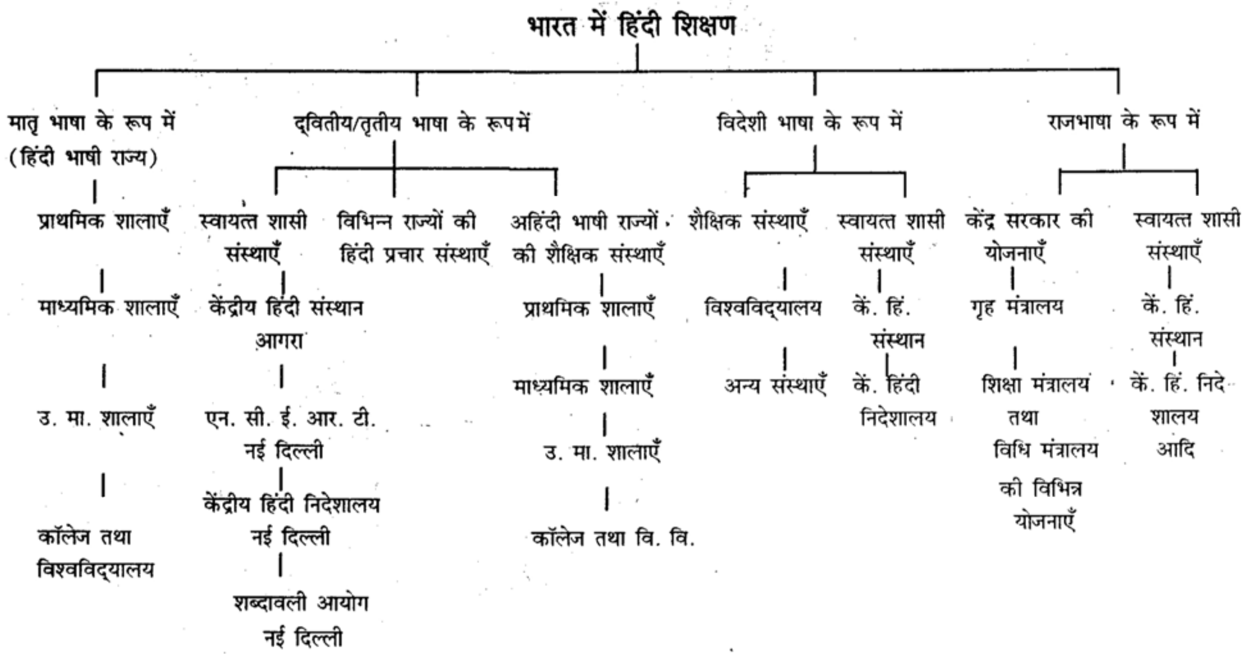
जनसंख्या— 953000000 क्षेत्रफल— 3287263 वर्ग कि. मी.

साक्षरता— 52.11%. भाषाएँ— हिंदी, अँग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ

राजधानी— नई दिल्ली

भारत 'दक्षेस' ग्रुप का सबसे महत्वपूर्ण तथा वरिष्ठ सदस्य है। स्वतंत्रता के बाद से भारत ने हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। भारतीय प्राचीन संस्कृति और सभ्यता, दर्शन तथा साहित्य का कायल तो विश्व पहले से ही था आज उसके आर्थिक और राजनीतिक महत्व को भी स्वीकार किया जा रहा है। इधर विश्व के प्रायः सभी देशों की भारत के प्रति रुचि बढ़ी है। अत: उनमें परस्पर आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंध स्थापित करने की दिशा में तेजी से प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति तथा हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति विभिन्न देशों का बढ़ता लगाव इसी बात का प्रमाण है। हिंदी के अध्ययन-अध्यापन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने विदेशों में स्थित अपने दूतावासों तथा उच्चायोगों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाएँ की हैं। साथ ही विदेश मंत्रालय तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद भी समय-समय पर हिंदी के विद्वानों तथा शिक्षकों को विदेशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा तथा साहित्य के अध्यापन हेतु भेजते रहते हैं। दूसरी ओर भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं में भी विदेशियों के लिए हिंदी के पाठ्यक्रमों की व्यवस्था है।

इस समय भारत सरकार के सामने एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य है राजभाषा हिंदी को संविधान की 351 की धारा के अनुसार इस प्रकार विकसित करना कि संविधान की भावनाओं के अनुरूप भारत की सामासिक संस्कृति के रूप में वह अंग्रेजी की जगह पूरी तरह से स्थापित की जा सके। इस लक्ष्य को अपने जिन विभिन्न अभिकरणों के द्वारा प्राप्त करने के लिए भारत सरकार कृत संकल्प है उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—


भारत में हिंदी शिक्षण
मातृ भाषा के रूप में (हिंदी भाषी राज्य)
प्राथमिक शालाएँ
माध्यमिक शालाएँ
उ. मा. शालाएँ
कॉलेज तथा विश्वविद्यालय
द्वितीय/तृतीय भाषा के रूपमें
स्वायत्त शासी संस्थाएँ
केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा
एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली
केंद्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्ली
शब्दावली आयोग नई दिल्ली
विभिन्न राज्यों की हिंदी प्रचार संस्थाएँ
अहिंदी भाषी राज्यों की शैक्षिक संस्थाएँ
प्राथमिक शालाएँ
माध्यमिक शालाएँ
उ. मा. शालाएँ
कॉलेज तथा वि. वि.
विदेशी भाषा के रूप में
शैक्षिक संस्थाएँ
विश्वविद्यालय
अन्य संस्थाएँ
स्वायत्त शासी संस्थाएँ
कें. हिं. संस्थान
कें. हिंदी निदेशालय
राजभाषा के रूप में
केंद्र सरकार की योजनाएँ
गृह मंत्रालय
शिक्षा मंत्रालय तथा विधि मंत्रालय की विभिन्न योजनाएँ
स्वायत्त शासी संस्थाएँ
कें. हिं. संस्थान
कें. हिं. निदेशालय आदि

पाकिस्तान

जनसंख्या— 144500000 क्षेत्रफल— 796095 वर्ग कि. मी.

साक्षरता— 35% भाषाएँ— उर्दू, सिंधी, पश्तो, बलूची, ब्राह्वी, अंग्रेजी

राजधानी— इस्लामाबाद

विभिन्न कारणों से भारत के साथ पाकिस्तान के संबंध वैसे नहीं रहे हैं जैसे दो अच्छे पड़ोसियों के होने चाहिए। लेकिन धीरे-धीरे नई पीढ़ी में उदारवादी दृष्टिकोण आने से दोनों देशों के बीच संस्कृति, साहित्य तथा खेलों आदि की दृष्टि से संबंधों में सुधार आया है। पाकिस्तान में हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या काफ़ी है। इनमें हिंदी के कार्यक्रम देखने-सुनने वाले तथा साहित्यिक स्तर पर हिंदी पढ़ने-लिखने वाले महाज़रीन तथा वे लोग शामिल हैं जिनके संबंधी भारत में रहते हैं। इसके अलावा पाकिस्तान में रहने वाले अधिकांश मैमन, बोहरे तथा इस्माइली लोग भी गुजराती जानने के कारण हिंदी से परिचित हैं।

पाकिस्तान में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से कुछ भी नहीं हुआ है। इसके कई कारण है; जैसे, हिंदी सीखने की रुचि, इसके लिए उचित प्रोत्साहन तथा इसकी उपयोगिता के अवसरों की कमी आदि। दोनों देशों के बीच उचित व्यापारिक संबंध न होने के कारण भी हिंदी की आवश्यकता महसूस नहीं की जाती। इसके अलावा बढ़ती हुई अमरीकी संस्कृति व डॉलर का आकर्षण तथा अमरीकी राजनीति का प्रभाव भी इस दिशा में बहुत बड़ा अवरोध है। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि पाकिस्तान में हिंदी के प्रति नफ़रत की भावना है। पाकिस्तान के बड़े-बड़े शहरों में हिंदी पढ़ने व बोलने वालों की संख्या काफ़ी है। बहुत से लोगों ने हिंदी फिल्मों तथा धारावाहिकों द्वारा काफ़ी हिंदी सीख ली है।

पाकिस्तान में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन थोड़ा बहुत विश्वविद्यालय स्तर पर ही होता है। इससे निम्न स्तर पर न इसकी माँग है, न ज़रूरत और न ही इस दिशा में कुछ सोचा गया है। कुछ वर्ष पूर्व कराची विश्वविद्यालय में हिन्दी का डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू कियां गया था। पाठ्यक्रम में आधुनिक गद्य-पद्य साहित्य को न रखकर सूर, तुलसी आदि मध्यकालीन कवियों को ही स्थान दिया गया था। हिंदी के आधुनिक रूप को पाठ्यक्रम में नहीं रखा गया था जो उन छात्रों के लिए उपयोगी, तथा रुचिकर होता। फलतः छात्रों की संख्या में निरंतर कमी होती चली गई। लाहौर, पेशावर तथा हैदराबाद विश्वविद्यालयों में भी हिंदी पाठ्यक्रम नाम मात्र के लिए चल रहे हैं। इस्लामाबाद के 'आधुनिक भाषाओं के विभाग' में भी हिंदी को स्थान दिया है लेकिन उसके अध्ययन-अध्यापन की स्थिति वहाँ भी बड़ी विचित्र है।

यदि पाकिस्तान में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन को उचित स्थान दिलाना है तो इस कार्य को योजना बद्ध रूप में करने की आवश्यकता है। सबसे पहले दोनों देशों के बीच प्रगाढ़ व्यापारिक संबंध बनाने की ज़रूरत है और उसके बाद साहित्यिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया को प्रोत्साहन देना होगा। पाकिस्तान का अतीत भारत के साथ जुड़ा

रहा है, अत: इस बात को ध्यान में रखकर ही वहाँ के लिए हिंदी के पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों तथा शिक्षकों का चयन करना होगा।

बंगला देश

जनसंख्या— 123400000 क्षेत्रफल— 148393 वर्ग कि. मी.

सांक्षरता— 35.5% भाषाएँ— बंगला, चकमा, माघ राजधानी— ढाका

बंगला देश, जो स्वतंत्रता से पहले पूर्वी बंगाल तथा 1971 तक पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था, की तीन सीमाएँ भारत से जुड़ी हुई हैं। यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, साहित्य तथा जीवन दर्शन पर भारत और विशेष रूप से बंगाल का प्रभाव है। 1947 से 1971 तक पाकिस्तान द्वारा शासित होने के कारण भारतीयता की छाप यहाँ धूमिल जरूर हो गई थी पर पूर्णत: नष्ट नहीं हुई है। आज आम जनता में हिंदी के प्रति अनुराग प्रचुर मात्रा में दिखाई पड़ता है। पूजा तथा धार्मिक व अन्य समारोहों पर हिंदी गीत सुनाई देते हैं। लेकिन 25 वर्ष पूर्व की स्थिति काफी भिन्न थी। उस समय स्कूल तथा कॉलेजों के सांस्कृतिक अनुष्ठानों में सिर्फ बंगला भाषा के कार्यक्रम होते थे, दूसरी भाषा का प्रवेश वर्जित था। लेकिन इधर युवावर्ग की मानसिकता सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत उदार हुई है जिसके कारण आज वहाँ का प्रत्येक कार्यक्रम एक-दो हिंदी गीतों के बिना बेमज़ा माना जाता है। हिंदी फिल्मों तथा गीतों और दूसरे सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों के द्वारा बंगला देश में हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ा है।

आज बंगला देश में सांस्कृतिक दृष्टि से हिंदी को बंगला के बाद दूसरा स्थान दिया गया है लेकिन जहाँ तक हिंदी के नियमित रूप से अध्ययन-अध्यापन का प्रश्न है, स्थिति बहुत असंतोषजनक है। कुछ सरकारी संस्थाओं जैसे, 'इण्डिया इंटरनेशनल स्कूल' आदि में 7वीं कक्षा तक हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था है। ढाका विश्वविद्यालय में कुछ वर्ष पूर्व हिंदी का पाठ्यक्रम शुरू किया गया था लेकिन उचित ध्यान, व्यवस्था तथा उपादेयता के अभाव में वह अधिक सफल नहीं हो पाया। हिंदी की प्रचार संस्था तथा अन्य निजी संस्थाएँ अपने स्तर पर इस दिशा में थोड़ा बहुत प्रयास कर रही हैं। लेकिन सीमित साधनों तथा प्रोत्साहन के अभाव में यह कार्य येन केन प्रकारेण चल रहा है। आवश्यकता है कि वहाँ सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएँ हिंदी के अध्ययन-अध्यापन को बढ़ावा देने के लिए हिंदी पाठ्यक्रम की उपयोगिता को प्रभावित करें साथ ही पाठ्य पुस्तकों, छात्र वृत्तियों आदि की व्यवस्था करके इस कार्य में सहयोग करें।

नेपाल

जनसंख्या— 22500000 क्षेत्रफल 147181 वर्ग कि. मी.

साक्षरता— 25.6% भाषा— नेपाली, मैथिर, भोजपुरी राजधानी— काठमांडू

नेपाल भारत का पड़ोसी देश है। दोनों देशों में भाषा, संस्कृति, आचार-विचार आदि की दृष्टि से बहुत समानताएँ है। हिंदी और नेपाली भाषाएँ लिपि, शब्दावली, ध्वनि तथा संरचना

की दृष्टि से इतनी निकट हैं कि ये एक दूसरे के देशों में विदेशी भाषाएँ नहीं मानी जातीं। नेपाली भारत के संविधान द्वारा स्वीकृत 18 राष्ट्रीय भाषाओं में से एक है तथा हिंदी की सहभाषा के रूप में मानी जाती है। उधर हिंदी भी नेपाल के अधिकांशत: लोगों की प्रथम, द्वितीय तथा संपर्क भाषा है। हिंदी नेपाल के निवासियों के सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा व्यापारिक उद्देश्यों में द्वितीय भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। यही कारण है कि कुछ वर्ष पूर्व इसे द्वितीय राष्ट्रभाषा बनाने के लिए जबरदस्त प्रयास किया गया था।

1960 तक हिंदी नेपाल में शिक्षा का माध्यम थी लेकिन कई कारणों से आज ऐच्छिक भाषा के रूप में भी उसका महत्त्व कम हो गया है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत हिंदी को 9वीं तथा 10वीं कक्षा में ऐच्छिक विषय के रूप में स्थान प्राप्त है। कॉलेजों तथा विश्वविद्यालय में बी. ए. और एम. ए. स्तर पर इसके अध्ययन-अध्यापन की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। लगभग एक दर्जन कॉलेजों में बी. ए. तथा त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू में एम. ए. कक्षाओं में हिंदी के छात्रों की संख्या उल्लेखनीय रहती है। कुछ समय पूर्व तक नेपाली के एम. ए. के पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य को ऐच्छिक प्रश्न-पत्र के रूप में रखा गया था। काठमांडू स्थित 'अंतर्राष्ट्रीय भाषा अध्ययन केंद्र' में, अन्य यूरोपीय तथा एशियाई भाषाओं के साथ-साथ हिंदी भाषा का अध्यापन भी होता है लेकिन वहाँ पढ़ने वाले छात्र प्राय: विदेशी ही होते हैं।

मानविकी तथा तकनीकी विषयों और ज्ञान-विज्ञान की हिंदी की पुस्तकों ने नेपाली छात्रों तथा जिज्ञासुओं को हिंदी भाषा से काफी हद तक जोड़ा है। इसका कारण यह कि नेपाली छात्रों को अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी की पुस्तकें पढ़ना और समझना सरल लगता है तथा नेपाली भांषा में इस प्रकार की पुस्तकों का अभाव भी है। दूसरी बात यह भी है कि नेपाल के शिक्षाविद तथा हितचिंतक नेपाल को अंग्रेजी भाषा तथा अमरीकी संस्कृति से यथा संभव बचाए रखना चाहते हैं। 'अधिकांश नेपाली भाषी भी बाहरी विश्व तथा ज्ञान-विज्ञान से संपर्क बनाए रखने के लिए हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं का सहारा लेना अधिक पसंद करते हैं।

नेपाल में कॉलेज स्तर पर हिंदी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति संतोषजनक है तथा वहाँ का स्तर भी भारतीय विश्वविद्यालयों के बराबर हैं। इसका कारण है कि वहाँ का पाठ्यक्रम भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों के आधार पर बनाया गया है तथा वहाँ प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें भी भारतीय प्रकाशकों की हैं। नेपाली छात्र काफी संख्या में अध्ययन हेतु भारत आते रहते हैं तथा अनेक भारतीय विद्वान भी त्रिभुवन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में विज़िटिंग प्रोफेसर के रूप में जाते रहते हैं।

नेपाल में हिन्दी को समझने और बोलने वालों की संख्या 90% होने के मूल में हिंदी फिल्मों और हिंदी गीतों का बहुत बड़ा हाथ है वहाँ के सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा विभिन्न समारोहों में हिंदी गीतों का प्रचलन है। साथ ही साथ दोनों देशों के बीच का संबंध बहुत अनौपचारिक होने के कारण जनसंपर्क के स्तर पर भाषा भेद लगभग समाप्त सा हो गया है।

इधर शिक्षा के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने से अब हिंदी-नेपाली के तुलनात्मक अध्ययन, नेपाली में उपलब्ध हिंदी साहित्य तथा हिंदी के नेपाली साहित्यकारों से संबंधित विषयों को अध्ययन व शोध का केंद्र बनाया जा रहा है। नेपाल में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन को और विकसित तथा उन्नत करने के लिए भारत सरकार तथा हिंदी की अन्य संस्थाओं को हिंदी की पाठ्य पुस्तकों, कोशों, पत्र-पत्रिकाओं, अनुवाद, विभिन्न प्रकार के शैक्षिक परामर्श व छात्र वृत्तियों आदि की दृष्टि से इस दिशा में प्रयास करना चाहिए।

श्रीलंका

जनसंख्या— 18600000 क्षेत्रफल— 65610 वर्ग कि. मी.

साक्षरता— 90% भाषाएँ— सिंहली, तमिल, अंग्रेजी राजधानी— कोलंबो

श्रीलंका पड़ोसी होने के साथ-साथ भारत से सांस्कृतिक और व्यापारिक दृष्टि से बहुत प्राचीनकाल से जुड़ा हुआ है। शास्त्रों में इसे 'सिंहलद्वीप' तथा 'धर्मद्वीप' भी कहा गया है। श्रीलंका की भाषा, सभ्यता और संस्कृति का विकास भारत से हुआ माना जाता है। वहाँ भी भारत को 'शुद्ध भूमि' के रूप में मानते हैं। सिंहली भाषा में संस्कृत और हिंदी के शब्दों की बहुतायत है। सिंहली लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है तथा सिंहली भाषा भी आर्य परिवार की भाषा मानी जाती है। भारत श्रीलंका का निकटतम पड़ोसी होने के साथ-साथ विश्व से उसे जोड़ने में सेतु का कार्य भी करता है। उपर्युक्त कारणों से वहाँ के लोग हिंदी सीखने की आवश्यकता महसूस करते हैं लेकिन दुर्भाग्यवश वहाँ हिंदी अध्ययन-अध्यापन के साधन अति अल्प हैं।

कोलंबो के आसपास के कुछ स्कूलों में 10 + 2 स्तर तक हिंदी के अध्ययन की सुविधा है लेकिन पुस्तकों तथा अच्छे शिक्षकों के अभाव में स्थिति बहुत दयनीय है। विद्योदय विश्वविद्यालय, जयवर्धनपुर, बैलणी विश्वविद्यालय तथा पेरादेणी विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का प्रबंध है लेकिन प्रकाशनों के अभाव में उत्पन्न कठिनाइयाँ इस दिशा में हतोत्साहित करती हैं। हिंदी पुस्तकों को भारत से आयात करने में भी विभिन्न सरकारी औपचारिकताएँ आड़े आती हैं। सुमित्रा देवी विद्यालंकार, पिरिबेन, जो कि भिक्षुओं की सरकारी संस्था है, में भी संस्कृत और हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त हिंदी प्रचार सभा, कोलंबो और कोलंबो हिंदी समाज नामक संस्थाएँ भी हिंदी के शिक्षण में योगदान देती हैं। यहाँ रेडियो की हिंदी सेवा से संबंधित व्यक्ति तथा हिंदी के अन्य स्थानीय ज्ञाता व्यक्तिगत रूप से हिंदी की कक्षाएँ लेते हैं। किंतु हिंदी कक्षा सप्ताह में मात्र दो घंटे होती है जो सीखने की दृष्टि से अपर्याप्त है। कोलंबो स्थित भारत का उच्चायोग भी हिंदी कक्षाएँ आयोजित करने की औपचारिकता का निर्वाह करता है। किंतु यहाँ का स्तर बहुत नीचा तथा प्रबंध खराब होने के कारण यह योजना कागजों पर अधिक तथा व्यावहारिक रूप में कम सफल है।

हिंदी फिल्मों, हिंदी गीतों तथा शास्त्रीय संगीत द्वारा हिंदी श्रीलंका में अपना स्थान बना रही है। भारत की एक प्रतिष्ठित संगीत संस्था श्रीलंका में अपना केंद्र चलाकर इस दिशा में

अपना योगदान दे रही है। लेकिन हिंदी भाषा व साहित्य के विधिवत अध्ययन और अध्यापन तथा विकास के लिए वहाँ हिंदी की पुस्तकों के प्रकाशन, हिंदी-सिहंली तथा सिंहली-हिंदी शब्द कोशों के निर्माण और विभिन्न प्रकार के अनुवाद कार्यों को बढ़ावा देने की जरूरत है।

भूटान

जनसंख्या— 1700000 क्षेत्रफल— 46500 वर्ग कि. मी.

साक्षरता— 35%, भाषाएँ— डैंजोंखा, नेपाली, गुरुंग, असमिया राजधानी— थिम्फू

भूटान भारत के पर्वतीय प्रदेश के समान है जहाँ से लोगों का भारत में आना-जाना बेरोकटोक होता रहता है। भारत और भूटान के बीच उसी प्रकार के व्यापारिक संबंध हैं जैसे भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच में हैं। इस कार्य में हिंदी ही संपर्क भाषा का कार्य करती है और यही कारण है कि भूटान के अधिकांश नगरों में हिंदी आसानी से बोली व समझी जाती है। भूटान से काफी संख्या में ऊनी कपड़ों के व्यापारी प्रतिवर्ष भारत आते रहते हैं। भूटान में हिंदी फिल्में तथा दूरदर्शन के कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय हैं।

भूटान के स्कूलों में नेपाली भाषा देवनागरी लिपि में ही पढ़ाई जाती है। भूटान में बौद्धधर्म का बहुत ज्यादा प्रभाव है अत: यहाँ कई संस्कृत पाठशालाएँ भी हैं। चूँकि वहाँ भारतीय व्यापारी तथा उद्योगपति काफी संख्या में हैं अत: उन्हीं लोगों के प्रयत्नों से संचालित स्कूलों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। यहाँ उच्च स्तर पर हिंदी अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था नहीं है। हाँ, काफी संख्या में वहाँ के छात्र अध्ययन हेतु भारत आते रहते हैं।

भूटान तथा भारत के संबंध इतने सहज तथा अनौपचारिक हैं कि सरकारी अथवा गैरसरकारी स्तर पर वहाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा शिक्षण की व्यवस्था में कठिनाई नहीं होगी। आवश्यकता इस दिशा में उचित ढंग से प्रयास करने की है।

मालदीव

जनसंख्या— 261000 क्षेत्रफल— 298 वर्ग कि. मी.

साक्षरता— 93% भाषा— दिवेही राजधानी— माले

श्रीलंका से लगभग 700 कि. मी. पश्चिम तथा लक्षद्वीप से लगभग 350 कि. मी. दक्षिण में स्थित यह छोटा-सा देश काफी समय तक अपरिचित सा रहा है। सार्क (दक्षेस) ग्रुप में आने के बाद तथा भारत द्वारा सैनिक सहायता दिए जाने के बाद से मालदीव न केवल प्रकाश में आया है बल्कि भारत से उसके संबंध भी प्रगाढ़ हुए हैं। मालदीव, जिसे स्थानीय स्तर पर 'दिवेही जम्हूरिया' कहा जाता है, की भाषा 'दिवेही' है जो एलू तथा सिंहली भाषाओं के काफी निकट है।

मालदीव में हिंदी से जो थोड़ा-बहुत परिचय है वह अन्य पड़ोसी देशों की तरह हिंदी फिल्मों और हिंदी गीतों के माध्यम से ही है। सच पूछा जाए तो मालदीव में हिंदी के प्रचार-

प्रसार तथा शिक्षण की स्थिति शून्य है। सरकारी स्तर पर हिंदी के शिक्षण की जो व्यवस्था है उसे औपचारिकता का निर्वाह मात्र कहा जा सकता है। इस दिशा में यदि मालदीव में प्रयास करना है तो सबसे पहले इसके लिए उचित पृष्ठ भूमि तैयार करके मालदीववासियों के मन में हिंदी के प्रति रुचि तथा उसके अध्ययन की उपादेयता का भाव जाग्रत करना होगा।

स्रोत सामग्री :

1. विश्व में हिंदी, भाग-2— श्री हरिबाबू कंसल
2. हिंदी शिक्षण अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य— केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
3. हिंदी के विकास में विदेशी विद्वानों का योगदान— डॉ. जोंस आस्टिन
4. हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ— डॉ. भोलानाथ तिवारी
5. विश्व हिंदी सम्मेलन अंक— केंद्रीय हिंदी निदेशालय
6. विश्व हिंदी दर्शन— नागपुर विश्व हिंदी सम्मेलन वर्ष-75
7. रजत जयंती वर्ष-ग्रंथ— केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

एशिया महाद्वीप

दक्षिण–पूर्व एशिया में हिन्दी की स्थिति

ज्योत्स्ना रघुवंशी

विदेशी छात्रों को हिंदी पढ़ाने के विगत पाँच वर्षों के अनुभव से यह बात स्पष्ट रूप से उजागर होती है कि विदेशी छात्र हिंदी भाषा सीखने की ललक के साथ ही भारतीय संस्कृति के प्रति विशेष रूप से आकर्षित रहते हैं। वे भारतीय परिवारों के रहन-सहन, रिश्ते-नाते, त्यौहार-उत्सव और संगीत-नृत्यों को निकट से जानने की अभिलाषा रखते हैं। अतएव दक्षिण पूर्व एशिया के इन्डोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड और सिंगापुर देशों में हिंदी की स्थिति के आकलन से पूर्व इन देशों में भारतीय संस्कृति के स्वरूप-दर्शन पर दृष्टिपात करना आवश्यक है।

इन देशों में भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम कई रूपों में दिखाई देता है। इंडोनेशिया की 'बहासा' (भाषा) के कई शब्द आश्चर्यजनक रूप में हिंदी की जननी संस्कृत से मिलते हैं :

1. संस्कृत	बहासा (इंडोनेशिया में)
समानन्तर	समान्तारा
तत्काल	तात्काला
आगम	आगमा
सूची	सुचि
निश्चय	निश्चाया
तथापि	ततापि
कारण	कारना

इंडोनेशिया के कई शहरों के नाम जाकार्त्ता, (पूर्वनाम जयकर्त्ता संस्कृत का योग्यकर्त्ता है), प्रोवोलिंगो (प्रभालिंग), सुराकर्त्ता (सुरकर्त्ता), वोन्डोबोसो (वन्धवश:), वोनो सोवो (वन सभा) संस्कृत भाषा के शब्दों के ही परिवर्तित रूप हैं। इंडोनेशिया के इतिहास को देखने पर भी यह ज्ञात होता है कि चौदहवीं शती में मजपहित साम्राज्य अपनी उन्नति के शिखर पर था तो मजपहित की संस्कृति अंशत: भारतीय सांस्कृतिक दाय पर आधारित थी। जिसकी वैज्ञानिक भाषाएँ संस्कृत और उसके साथ-साथ प्राचीन जावी थी। उस समय साहित्यिक अभिव्यक्तियों में संस्कृत की प्रमुख भूमिका रही है। इंडोनेशिया आज भी अपनी इस पूर्व परम्परा को अपनाए

हुए है। आज भी इंडोनेसी गणराज्य की नौ सेना का आदर्श वाक्य— 'जलेष्व जयामहे' (अर्थात् महासागर पर हम विजयी हों), स्थल सेना का आदर्श वाक्य— 'जिउभय शक्ति' (अर्थात— तीन शक्तिशाली कर्तव्य), पुलिस दल का आदर्श वाक्य— 'त्रिव्रत' (अर्थात् तीन शपथ) में संस्कृत का प्रभाव साक्षात है।

इंडोनेशिया में भारतीय संस्कृति के प्रभाव को भाषा के अलावा वहाँ के रहन-सहन, खान-पान और गीत-नृत्यों में देखा जा सकता है। इंडोनेशिया के अलावा मलेशिया, थाईलैंड और सिंगापुर देश भारतीय संस्कृति को विविध रूपों में जाने अनजाने अपनाए हुए हैं। इन देशों में भारतीय मूल के लोग काफी संख्या में मिल जाते हैं। इस कारण से भारतीय संस्कृति की गहरी पैठ इन देशों में हो गई है। भारतीय दूरदर्शन पर दिखाए गए धारावाहिक रामायण, महाभारत, दूरदर्शन के विविध चेनलों और आकाशवाणी के हिंदी कार्यक्रम, भारतीय फिल्मों और उनके गीतों ने हिंदी प्रचार-प्रसार का रोचक वातावरण प्रस्तुत किया है। कई बार मेरे सामने बड़ी विचित्र स्थिति बन जाती है जब कोई विदेशी छात्र किसी हिंदी फिल्मी गीत के शब्दों के अर्थ जानने के लिए उपस्थित होता है क्योंकि अपने देश में वापस लौटने पर जब इन गीतों का अर्थ पूछा जाएगा तो वह बता तो सकेगा। भले ही सुधी जन इन फिल्मी गीतों को हिंदी भाषा का प्रतिनिधि न मानते हों लेकिन दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में यह स्थिति बन गई है। इन देशों की लोककलाएँ— नृत्य, गीत और नाट्य रूप भी भारतीय लोककलाओं से आश्चर्यजनक रूप से मिलते जुलते हैं।

1. इंडोनेशिया में हिंदी

इंडोनेशिया का क्षेत्रफल 1904569 (वर्ग कि. मी.) है जिसमें 13,635 द्वीपों का समूह है। यहाँ की जनसंख्या 197.6 (मिलियन) है। इंडोनेशिया में शिक्षा 85% है। इतने अधिक द्वीपों में बँटा यह देश अनेक भाषाओं का भी स्वामी है। इंडोनेशिया की मुख्य भाषा, 'बिहासा' है, इसके अलावा डच, अंग्रेजी और जवानीज मुख्य भाषाएँ हैं। भाषाओं के धनी देश इंडोनेशिया की 'बहासा' राष्ट्रीय भाषा जिसमें संस्कृत शब्दकोश की देन अत्यधिक है। इंडोनेशिया की संस्कृति, इंडोनेशिया का साहित्य सब संस्कृत शब्दों से भरा हुआ है। इस रूप में इंडोनेशिया के लोग भारत से प्राचीन काल से जुड़े हुए हैं और आज भी इंडोनेशिया के भारतीय समाज में हिंदी ही वार्त्तालाप और पत्राचार का माध्यम है। जाकार्त्ता के गांधी मेमोरियल स्कूल में भारतीय मूल के बच्चों के लिए हिंदी शिक्षा की व्यवस्था है। भारतीय मंदिरों व आश्रमों में भी हिंदी का व्यवहार होता है। इंडोनेशिया के लोग हिंदी में विशेष रुचि रखते हैं और हिंदी फिल्मों से सुनकर हिंदी शब्दों को बोलते हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में पिछले तीन वर्षों में हिंदी सीखने चार छात्र आ चुके हैं, एक छात्र तो भारतीय आयुर्वेद सीखने के लिए हिंदी-सीख रहा था। इंडोनेशिया के कई नेता प्रो. कोक राय सुधार्त्ता, स्व. डॉ. आई. गेडे पुडजा, डॉ. आई. वी. ओका पुन्यतमजा, डॉ. आई. मेड. टिटब, डॉ. आई. गुस्टी, पुटु, कालगुनडी और भूतपूर्व राजदूत डॉ. आई. बी. मन्तरा हिंदी भाषा बोलते हैं। श्री ई मादे का धर्म यश के दो कमरे का पुस्तकालय हिंदी और संस्कृत की पुस्तकों से भरा हुआ है।

2. मलेशिया में हिंदी

मलेशिया का क्षेत्रफल 330434 (वर्ग कि. मी.) और जनसंख्या 20.6 मिलियन है। यहाँ की मुख्य भाषाएँ मलय, तमिल, अंग्रेजी और चीनी हैं। मलेशिया में शिक्षा 80% है। मलेशिया में भारतीय मूल के लोग काफी संख्या में हैं किंतु उनमें से लगभग 90% दक्षिण भारत के हैं। उत्तर भारत से सम्बन्धित परिवारों में हिंदी सीखने पढ़ने वाले लोग अधिक नहीं है। इस देश के तीन मन्दिरों में धार्मिक और सांस्कृतिक कृत्य संस्कृत तथा हिंदी में होते हैं। ये तीन मन्दिर पेनांग, इपोह तथा राजधानी क्वालालम्पुर में है। क्वालालम्पुर के लक्ष्मीनारायण मन्दिर में बालकों को हिंदी पढ़ाने का प्रबन्ध है। पढ़ाने वाले शिक्षक सेवा भावी व्यकित हैं। मलेशिया के लोग चाहते हैं कि हिंदी के प्रशिक्षित भारतीय विद्वान हिंदी शिक्षण की तकनीक के बारे में उनका मार्गदर्शन करें। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लक्ष्मीनारायण मन्दिर में हिंदी प्रचार सभा के तत्वावधान में स्कूल चला करता था जहाँ प्राथमिक, मध्यमा आदि परीक्षाओं का आयोजन भी होता था। सन् 1955 में उस क्षेत्र में आग लगने पर वह बंद हो गया। भारतीय सहयोग से इन कक्षाओं और परीक्षाओं को पुनः संचालित करने की आवश्यकता है।

3. थाईलैंड में हिंदी

थाईलैंड का क्षेत्रफल 513·115 (वर्ग कि. मी.) है। यहाँ की जनसंख्या 59.4 मिलियन है। थाईलैंड में शिक्षा 89% है। दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में थाईलैंड में शिक्षित व्यकितयों का प्रतिशत सबसे अधिक है। थाईलैंड की प्रमुख भाषाएँ थाई, चीनी, अंग्रेजी व मलय हैं।

थाईलैंड में अनेक वर्षों से भारतीय लोग अच्छी संख्या में रह रहे हैं। पंजाब तथा सिंध से जो लोग थाईलैंड आए वे अधिकतर व्यापार तथा उद्योग में लगे हैं और सम्पन्न अवस्था में हैं। बैंकाक तथा कुछ अन्य नगरों में भारतीयों की कई धार्मिक संस्थाएँ हैं जहाँ हिंदी का व्यवहार धार्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों में होता है। थाईलैंड से विविध विषयों का अध्ययन करने के लिए अनेक छात्र भारत आते रहे हैं। भारत में पढ़ चुके थाई छात्रों का एक प्रतिष्ठित संगठन है जिसके सदस्य थाईलैंड में उच्च पदों पर आसीन हैं। कुछ थाई विद्वानों ने हिंदी लेखन और अनुवाद में दक्षता प्राप्त की है। थाई स्कूल, सिख विद्यालय तथा थाई भारत कल्चरल लॉज में हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है। शिल्पकॉर्न विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर हिंदी अध्ययन का प्रबंध है। थाईलैंड के कई छात्र भारत के विश्वविद्यालयों और संस्थानों में हिंदी का अध्ययन कर चुके हैं। वर्ष 1983-84 तथा 1987-88 में केंद्रीय हिंदी संस्थान के दिल्ली केन्द्र में चार छात्र और उसके बाद केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा में भी 1992-93 से एक थाई छात्र अध्ययन के लिए आता रहा है। इस वर्ष 1995-96 में एक थाई छात्र हिंदी भाषा सीख रहा हैं और सितार वादन का भी परिश्रम पूर्वक अभ्यास कर रहा है।

4. सिंगापुर में हिंदी

सिंगापुर का क्षेत्रफल 616.3 (वर्ग कि. मी.) है। यहाँ की जनसंख्या 2.9 मिलियन है। सिंगापुर में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाएँ मलय, चीनी, तमिल तथा अंग्रेजी हैं। यहाँ शिक्षित जनता 91% है।

हिंदी सोसायटी, सिंगापुर के स्कूलों में बारहवीं कक्षा तक के बच्चों को द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने का कार्य करती है। इस संस्था की भूमिका सराहनीय है। भारत सरकार ने इस संस्था को शिक्षण-सामग्री, हिंदी पुस्तकें भेंट स्वरूप दी हैं जिससे हिंदी-शिक्षण का कार्य अधिक सक्रिय और सुचारु रूप में हो सके। सिंगापुर से हिंदी अध्ययन के लिए कुछ छात्र केंद्रीय हिंदी संस्थान के दिल्ली केन्द्र में आते रहे हैं। वर्ष 1991-92, 1992-93, 1993-94 के दौरान प्रतिवर्ष सिंगापुर के एक-एक छात्र ने स्ववित्तीय आधार पर संस्थान में हिंदी का अध्ययन किया है। सिंगापुरवासी भारतीय खान-पान, नृत्य-संगीत को भी बहुत पसंद करते हैं। हिंदी फिल्में यहाँ बहुत लोकप्रिय हैं।

रूस में हिन्दी अध्ययन-अध्यापन

गीता शर्मा

रूस में भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था, इतिहास के माध्यम से भारत को जानने के लिए भारतीय अध्ययन की परम्परा 18वीं सदी में शुरू हुई जब पीटर महान ने पूर्वी देशों से सम्बन्धित ऐतिहासिक और सांस्कृतिक और अन्य दुर्लभ सामग्रियों को एकत्र करने और संग्रह करने के आदेश दिए। सन् 1804 में रूसी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में प्राच्य अध्ययनों की शुरुआत हुई।

रूस में हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा विज्ञान के अध्ययन की व्यवस्था कई विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थानों, शोध संस्थानों, विद्यालयों और व्यक्तिगत संस्थाओं में है। हिंदी अध्ययन की व्यवस्था का संक्षेप में विवरण इस प्रकार दिया जा सकता है—

— प्राच्य अध्ययन संस्थान, लेनिनग्राद और मॉस्को,

— भाषा संकाय लेनिनग्राद विश्वविद्यालय, लेनिनग्राद,

— अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध संस्थान, मॉस्को,

— एशियाई और अफ्रीकी देशों का संस्थान, मॉस्को राष्ट्रीय विश्वविद्यालय मॉस्को,

— मानविकीय अध्ययन विश्वविद्यालय, मॉस्को,

— हिंदी विद्यालय, मॉस्को और लेनिनग्राद

— वॉयस ऑफ रसिया-हिंदी प्रसारण सेवा,

— व्यक्तिगत संस्थाएँ,

— जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र, भारतीय दूतावास मॉस्को।

— हिंदी समाचार पत्र।

प्राच्य अध्ययन संस्थान की स्थापना सन् 1930 में लेनिनग्राद में की गई। इस संस्थान का उद्देश्य एशियाई देशों के इतिहास, समाज, दर्शन, साहित्य, भाषा और भाषाविज्ञान का अध्ययन करना है। अत: भाषा के रूप में हिंदी भाषा, भाषा विज्ञान और साहित्य का अध्ययन और शोध कार्य होता है। सन् 1950 में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह संस्था लेनिनग्राद से मॉस्को में स्थापित कर दी गई। अब इसकी एक शाखा ही लेनिनग्राद में है।

प्राच्य अध्ययन संस्थान, मॉस्को में 1950 से एशियाई देशों से सम्बन्धित अध्ययन और शोध कार्य कर रहा है। इसमें एशियाई देशों से सम्बन्धित 18 विभाग हैं, जिनमें इंडियोलॉजी विभाग भी एक है। इस विभाग के अन्तर्गत भारतीय दर्शन, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था, साहित्य, भाषाविज्ञान और संस्कृति से सम्बन्धित शोधकार्य किए जाते हैं। सोवियत संघ के विघटन के पूर्व तक यहाँ केवल शोध कार्य ही किए जाते थे लेकिन अब एम. ए. स्तर तक अध्ययन भी शुरू हो गया है।

शोधकार्य के साथ-साथ यहाँ अनुवाद कार्य भी किया जाता है। अनुवाद के कारण ही हिंदी साहित्य के साहित्यकार जैसे— भीष्म साहनी, कृश्न चंदर, यशपाल, कृष्णा सोबती, जैनेंद्र कुमार आदि रूसी लोगों के लिए परिचित व्यक्तित्व हैं। इस संस्था के डॉ. व्लादीमीर चेरीनस्कोव ने मैला आँचल, बसंती, काला जल जैसे उपन्यासों का अनुवाद किया है। ऐसा नहीं है कि केवल परिचित और प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं का ही अनुवाद होता है वरन् हिंदी के नए लेखक और लेखिकाओं की प्रसिद्ध रचनाओं का भी अनुवाद होता है। डॉ. वानिना ने हिंदी की नई लेखिका कुसुम अंचल के उपन्यास 'पंचवटी' का अनुवाद किया है। आधुनिक साहित्य ही नहीं भकित काल की रचनाओं, लोक कथा और पौराणिक कथाओं की सूची भी अच्छी लम्बी चौड़ी तैयार की जा सकती है । हिंदी साहित्य की अनुवादित प्रतियों की लोकप्रियता इसी से ज्ञात की जा सकती है कि एक संस्करण में 30-50 हजार प्रतियाँ प्रकाशित होती हैं। लोक-कथाओं और पौराणिक कथाओं से संबंधित पुस्तकें इससे भी अधिक संख्या में प्रकाशित होती हैं और जिन्हें सभी आयु वर्ग के लोग अत्यधिक पसंद करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिंदी की लोकप्रियता की वृद्धि में अनुवाद कार्य का विशेष योगदान है। इस संस्थान के प्रो. पूरी रोरिच स्मारक पुस्तकालय में भारतीय वाङमय का अध्ययन किया जा सकता है।

अनुवाद और शोध कार्यों के अतिरिक्त यह संस्थान हिंदी साहित्य, भाषाविज्ञान आदि विषयों पर परियोजनाएँ, सेमिनार, पुस्तक आदान-प्रदान के कार्यक्रम भी आयोजित करता है। हिंदी के क्षेत्र में उच्च स्तर का कार्य करने वाला रूस का यह एक पूर्ण संस्थान है।

लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के भाषा संकाय में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी भाषा साहित्य और भाषा विज्ञान का शिक्षण होता है। शिक्षण के साथ-साथ विद्यार्थी साहित्यिक गतिविधियों का भी आयोजन करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान, मॉस्को में पचास वर्ष से भी अधिक समय से हिंदी अध्ययन-अध्यापन किया जा रहा है। इस संस्थान का संबंध रूस के विदेश मंत्रालय से है। यह भारत के लिए अपने राजनयिकों को प्रशिक्षित करता है। पाँच साल का पाठ्यक्रम है और सप्ताह में बारह घंटे हिंदी की पढ़ाई होती है।

इस संस्थान में हिंदी की सांध्यकालीन कक्षाएँ भी होती हैं। ये कक्षाएँ हफ़्ते में तीन दिन होती हैं। सांध्यकालीन कक्षा में हिंदी पढ़ने वालों की संख्या लगभग सौ तक रखते हैं।

जबकि यहाँ हिंदी सीखने के लिए अधिक लोग इच्छुक हैं लेकिन गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए यहाँ अधिक लोगों को प्रवेश नहीं दिया जाता। यहाँ एक समृद्ध भाषा प्रयोगशाला है जिसमें दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री का अच्छा और विविधतापूर्ण संचयन है। यहाँ से अध्ययन पूरा करने के बाद अधिकांश विद्यार्थी भारत में रूसी विदेश मंत्रालय के विभिन्न शहरों में स्थित कार्यालयों में अधिकारी नियुक्त होते हैं।

मॉस्को राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में एशियाई और अफ्रीकी देशों के भाषा संकाय की स्थापना सन् 1956 में की गई। इस संकाय में एम. ए. स्तर तक हिंदी शिक्षण होता है। प्रथम वर्ष में विद्यार्थी हिंदी भाषा सीखना शुरू करता है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर विद्यार्थी हिंदी भाषा के साथ-साथ भाषाविज्ञान, साहित्य, संस्कृति, दर्शन आदि का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

सन् 1992 में मॉस्को में एक और नए विश्वविद्यालय की स्थापना हुई— मानविकी अध्ययन विश्वविद्यालय। यहाँ पर अभी स्नातक स्तर तक ही हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। हिंदी का पाठ्यक्रम एशियाई-अफ्रीकी देशों के संकाय के पाठ्यक्रम के समान ही है।

रूस में हिंदी शिक्षण विश्वविद्यालयों और संस्थानों तक ही सीमित नहीं है। विद्यालय स्तर पर भी हिंदी भाषा का शिक्षण होता है। मॉस्को और लेनिनग्राद में एक-एक हिंदी विद्यालय हैं। यहाँ प्रारम्भिक स्तर से ही हिंदी सिखाई जाती है। इन दोनों विद्यालयों में हिंदी सिखलाने के लिए भाषा प्रयोगशाला, हिंदी दृश्य-श्रव्य सामग्री, और पुस्तकालय की अच्छी व्यवस्था है। एक दो दूसरे शहरों में भी विद्यालय स्तर पर हिंदी पढ़ाई जाती है।

हिंदी अध्ययन-अध्यापन और शोध कार्यों के अतिरिक्त रूस में हिंदी प्रसारण सेवा भी है। 18 मई 1942 से रेडियो मॉस्को से हिंदी में प्रसारण कार्य हो रहा है। आरंभ में हिंदी और बंगला के लिए तीस मिनट की अवधि निर्धारित की गई थी। 1964 में तमिल भाषा में भी प्रसारण शुरू किए गए और फिर धीरे-धीरे 12 भारतीय भाषाओं में रेडियो प्रसारण शुरू हुए। लेकिन 1 जनवरी 1991 में आठ भारतीय भाषाओं के प्रसारण बंद कर दिए गए। सन् 1994 में रेडियो मास्को का नाम दि वॉयस ऑफ रसिया कर दिया गया। बदली हुई परिस्थितियों में अब केवल हिंदी में ही प्रतिदिन दो घंटे की अवधि के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। बंगाली और उर्दू भाषाओं के कार्यक्रमों का प्रसारण भारत के पड़ोसी देशों की भाषा के रूप में प्रतिदिन एक घंटे के लिए हो रहा है। पिछले वर्ष (1995) से हिंदी प्रसारण सेवा को भी बंद करने की तलवार लटक रही है। यदि स्थिति यथावत् रही तो शायद जून में, दूसरी आवाजों की तरह इस आवाज को भी बंद कर दिया जाएगा।

रूस में आम लोगों के बीच भारत और हिंदी की एक अच्छी छवि है। भारत के प्रति विशेष अनुराग के कारण कई भारतीय मित्रता-क्लब हैं जहाँ रूसी लोग हिंदी फिल्मों और हिंदी गानों से हिंदी सीखते हैं। ये संगठन पूरी तरह से व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करते हैं।

1989 में भारतीय दूतावास में भारत सरकार ने जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी शिक्षण की शुरुआत की। इस समय इसमें लगभग अस्सी रूसी लोग हिंदी सीख रहे हैं। सांस्कृतिक केंद्र में आने वाले ये वे रूसी हैं जो भारत को अपना ही देश मानते हैं। इनमें से अधिकांश ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने स्वयं ही शब्दकोश की सहायता से हिंदी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया है। सिर्फ इसलिए कि हिंदी भाषा इन्हें पसंद है।

मॉस्को के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों मे अध्ययन करने वाले भारतीय छात्रों ने अपने प्रयासों से मई 1995 में 'भारत भूमि' नाम से हिंदी समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया है। अक्तूबर 1995 से दूसरा हिंदी समाचार पत्र 'भारत दर्पण' भी आरंभ हुआ है।

उपर्युक्त अध्ययन से यह तो स्पष्ट ही है कि रूस में हिंदी अध्ययन करने की एक सुदृढ़ और सुव्यवस्थित व्यवस्था आरंभ से ही रही है। लेकिन एशिया और अफ्रीका की दूसरी भाषाओं की तुलना में हिंदी भाषा को पढ़ने के बाद जिस तरह विद्यार्थियों को भटकना पड़ता है उससे हतोत्साहित होकर हिंदी पढ़ने वालों की संख्या में कमी होती जा रही है। 19वीं सदी में शुरू हुई हिंदी की जिस यात्रा पर द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिकाओं का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वही यात्रा आर्थिक उदारीकरण की नीति के प्रभाव से बीसवीं सदी के समाप्त होने से पहले ही कहीं स्वयं ही समाप्त न हो जाए। आज वही भाषा जीवित रहेगी जो आर्थिक मजबूती दे सकेगी। रूस में बढ़ते हुए भारतीय व्यापार में यदि भारतीय भाषा का प्रयोग नहीं किया जाएगा तो निश्चित रूप से 21 वीं सदी में हिंदी के लिए बंद होने वाले द्वार के लिए उत्तरदायी 'भारतीय भाषाई मानसिकता' ही होगी।

प्रस्तुत लेख को पूरा करने में निम्नलिखित रूसी विद्वानों के सहयोग के लिए आभार प्रकट करती हूँ—

— डॉ. ल्यूदमिला विक्टोरोला खख्लोव

एशियाई-अफ्रीकन देशों का संस्थान, मॉस्को राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मास्को

— डॉ. वी. ए. चेर्निशोव

— डॉ. एगेनिआ वानिना,

प्राच्य अध्ययन संस्थान, मॉस्को

— डॉ. आलेग गे. उलत्सिफेरोव,

— डॉ. कलारा,

भारतीय भाषा संकाय

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान, मॉस्को

— सुश्री ल्यूदमिला

वॉयस ऑफ रसिया, हिंदी प्रसारण सेवा, मॉस्को

तुर्की में हिन्दी की स्थिति

श्याम प्रकाश

किसे नहीं मालूम कि हिंदी न केवल देश के भीतर व्यापक संप्रेषण की प्रमुख भाषा है अपितु विश्व में सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में उसका स्थान तीसरा है। यह भी सर्वविदित ही है कि वह भारत के बाहर फिजी, त्रिनिदाद, सूरीनाम, मारीशस, गयाना, नेपाल, भूटान आदि देशों में भारतीय मूल के नागरिकों की न केवल एक सांस्कृतिक कड़ी ही है अपितु वहाँ के निवासियों के लिए हिंदी सामाजिक अस्मिता, ऐतिहासिक पहचान तथा भारत के साथ उनके भावात्मक सम्बन्ध का एक दृढ़ आधार भी है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि हिंदी श्रीलंका, बर्मा, इण्डोनेशिया, मलेशिया, कम्पूचिया, बंगला देश जैसे राष्ट्रों में एक महत्वपूर्ण सामाजिक-संस्कृतिक भूमिका का निर्वाह कर रही है। जब हम विदेशी भाषा के रूप में इसके शैक्षिक महत्व पर दृष्टि डालते हैं तो एक सौ से अधिक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन और कहीं-कहीं उच्चस्तरीय शोध-कार्य निरन्तर चल रहा है। साथ ही कई विदेशी विश्वविद्यालय आज भी हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन से जुड़ते जा रहे हैं, जो हिंदी की प्रसार दिग्विजय-यात्रा के लिए शुभ संकेत है।

यहाँ इस तथ्य पर ध्यान देना नितान्त समीचीन और परम आवश्यक है कि हिंदी का अपना अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, डच, स्पेनिश आदि अन्य विश्व-भाषाओं के अपने सन्दर्भ से भिन्न है; क्योंकि ये भाषाएँ विश्व-भाषा बनने की प्रक्रिया में साम्राज्यवाद का सहारा लेती रही हैं। ये सभी भाषाएँ, साम्राज्य के प्रसार के साथ प्रभुता और शक्ति की रक्त रंजित प्रकृति से सींची गई थीं। ये शासकीय प्रयोजनों की वे विदेशी भाषाएँ हैं, जो बन्दूकों और तलवार की नोक के बल पर फ़ैलीं। इसके विपरीत विश्व-हिंदी भाषा का आधार रहा है— श्रमजीवियों की उसके प्रति अपनी श्रद्धा और अस्मिता। यह भाषा मज़दूरों के पसीनों से सींची गई है और उनके जातीय इतिहास का अंग बनकर उनकी साँसों द्वारा अनुप्राणित होती रही है। अस्तु, हिंदी भारत मूलवासियों के लिए केवल भाषा ही नहीं, अपितु उनकी सांस्कृतिक पहचान की एक 'संचारिणी दीपशिखा' भी है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए, भारत सरकार अपने अनेक सांस्कृतिक सहयोग कार्यक्रमों के अन्तर्गत हिंदी-अध्यापन संबंधी सुविधाएँ बराबर प्रदान कर रही है। अनेक देशों में 'सांस्कृतिक सहयोग अनुबन्ध' के अन्तर्गत भारत से हिंदी के अध्यापक दो-तीन वर्षों के लिए नियुक्त किए जाते हैं तथा हिंदी पुस्तकालयों के विकास के लिए पर्याप्त मात्रा में भाषा, संस्कृति, दर्शन, साहित्य, भाषा विज्ञान आदि विषयों से संबंधित पुस्तकें और हिंदी टाइपराइटर

आदि 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्' द्वारा प्रतिवर्ष या आवश्यकतानुसार भेजे जाते हैं। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्' द्वारा मुझे तुर्की के अंकारा विश्वविद्यालय में संस्कृत हिंदी के विज़िटिंग प्रोफ़ेसर के रूप में नवंबर, 1989 में भेजा गया था।

यद्यपि तुर्की में सर्वप्रथम आधुनिक विश्वविद्यालय के रूप में इस्तानबुल विश्वविद्यालय की स्थापना 1933 में हो चुकी थी, परन्तु तत्पश्चात् कुछ समय बाद, आधुनिक तुर्की के जन्मदाता मुस्तफा केमाल अतातुर्ग के निर्देश पर अंकारा विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम फ़ैकल्टी ऑफ़ लैटर्स की स्थापना 'दिल वे तारीह-जोग्राफ्या, फ़ैकल्तेसी' के नाम से 10 जून, 1935 को की गई। इस फ़ैकल्टी में भारती-विद्या (Indology) विभाग के अन्तर्गत प्रोफेसर डॉ. वाल्टर रूबेन ने संस्कृत का अध्यापन प्रारंभ किया, जिसे द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् पुन: जीवित किया गया। यहाँ डॉ. आबिदीन इतिल और डॉ. केमाल चादाश प्रोफेसर रहे।

भारत-तुर्की सांस्कृतिक अनुबन्ध के निर्माता एक महान मानवतावादी, उदारमना, सांस्कृतिक सहयोग के पोषक एवं मूर्धन्य शिक्षाविद् (स्व.) मौलाना अबुल कलाम आजाद थे, जिन्होंने सर्वप्रथम इस अनुबन्ध पर 1951 में हस्ताक्षर किए थे। तब से ही इस फ़ैकल्टी के भारतीय-विद्या विभाग में भारत से संबंधित विभिन्न विषयों का अध्ययन-अध्यापन प्रारंभ हो गया। इस समय प्रमुख रूप से संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शन, भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषा विज्ञान तथा प्राचीन भारतीय सभ्यता संबंधी जानकारी ही दी जाती थी। संस्कृत भाषा के विधिवत् पठन-पाठन की व्यवस्था न थी।

भारतीय भाषाओं— संस्कृत और हिंदी के प्रति तुर्की सरकार का बढ़ता रुझान एवं भारत सरकार के सतत् प्रयास के फलस्वरूप तुर्की के अंकारा विश्वविद्यालय में फ़ैकल्टी ऑफ़ लैटर्स के भारती-विद्या विभाग के अन्तर्गत सर्वप्रथम नवंबर 1989 में संस्कृत और हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गई। तुर्की में, अकेला अंकारा विश्वविद्यालय ही मात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जहाँ संस्कृत और हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन की सुविधा आज उपलब्ध है। इसी संस्कृत-हिंदी विभाग की स्थापना का दायित्व भारत सरकार ने मुझे सौंपा था। एक इस्लामिक देश में संस्कृत और हिंदी के पठन-पाठन की सुदृढ़ नींव रखना एक गुरुतर दायित्व था।

बाल-बच्चों को छोड़कर, भारत से बाहर जाने की अनिच्छा होते हुए भी चयन होने पर, अपने शुभ-चिन्तकों की सलाह और प्रेरणा तथा स्थानीय परिवेश से त्रस्त होने के कारण 'अनइच्छित आवइ बरि-आईं' मानकर स्वीकार करना पड़ा और तुर्की पहुँच कर पूरी निष्ठा और मनोयोग के साथ एक मिशनरी भावना से प्रेरित हो कर सौंपे गए दायित्वों के निर्वाह में प्राणपन से जुट गया। इतना अधिक परिश्रम और सारस्वत (Academic) कार्य कदाचित् मैंने अपने जीवन में इससे पूर्व नहीं किया था। मुझे प्रसन्नता है कि 'उर प्रेरक रघुवंश विभूषण' की कृपा से मैं अपने मिशन में सफल रहा।

चूँकि तुर्की में, संस्कृत और हिंदी भाषा के लिए भारत से जाने वाला मैं पहला विज़िटिंग प्रोफ़ेसर था, अत: नवंबर 1989 में संस्कृत और हिंदी भाषा के अध्यापन की व्यवस्था

होते ही पचास से अधिक छात्र-छात्राओं ने इन भाषाओं का अध्ययन प्रारंभ कर दिया। वहाँ के विद्यार्थियों में इन भारतीय भाषाओं और भारत के प्रति इतना आकर्षण और जिज्ञासा है कि वे स्नातक स्तर पर एक वैकल्पिक विषय के रूप में अरबी-फारसी-उर्दू को छोड़ कर संस्कृत-हिंदी का चयन करते थे। विद्यार्थियों की विपुल संख्या को देखते हुए अंकारा विश्वविद्यालय के रेक्टर (कुलपति) प्रोफ़ेसर डॉ. नेजदेत सेरीन और फ़ैकल्टी ऑफ़ लैटर्स की डीन प्रोफ़ेसर डॉ. (श्रीमती) रुचान आरिक ने मेरी पत्नी डॉ. (श्रीमती) स्नेहलता प्रकाश से हिंदी भाषा-शिक्षण में सहयोग माँगा। फलत: वे एक वर्ष तक अवैतनिक रूप से और तत्पश्चात् कुछ मानदेय के आधार पर मेरे साथ निरन्तर हिंदी भाषा के अध्यापन में सहयोग देती रहीं। भारती-विद्या विभाग के अन्य अध्यापकों में इस विभाग की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर डॉ. (श्रीमती) इंजि माजून संस्कृत साहित्य, प्रोफ़ेसर डॉ. रसिक गुवन भारतीय दर्शन और डॉ. कोरहन काया भारतीय पौराणिक एवं नीति कथाओं का अध्यापन करते थे।

अल्पावधि में ही, यहाँ के विद्यार्थियों ने सरल व्याकरणिक नियमों का अनुसरण करते हुए संस्कृत और हिंदी के छोटे-छोटे वाक्यों में वार्तालाप करना और संस्कृत के चुने हुए श्लोकों तथा हिंदी की कविताओं का सस्वर पाठ करना प्रारंभ कर दिया। थोड़े ही समय में, देवनागरी लिपि में संस्कृत और हिंदी का लेखन भी करने लगे और यहाँ तक कि अपनी शर्ट या जैकेट के पीछे ॐ (ओउम्) और अपना नाम देवनागरी में पेन्ट करवा लिया। ये सभी छात्र-छात्राएँ संस्कृत और हिंदी भाषाओं के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति, भारतीय धर्म और दर्शन, योग-शिक्षा और भारतीय भाषा विज्ञान के प्रति भी गहरी रुचि रखते थे और इन विषयों को मुझ से समझते रहे। छात्राएँ अधिकांशत: भारतीय परिधान-साड़ी और बिन्दी तथा भारतीय व्यंजनों में भी रुचि रखती थीं और वे प्राय: घर पर, मेरी पत्नी के पास आ कर, साड़ी पहन कर और बिन्दी लगा कर उनके साथ बैठतीं और भारतीय व्यंजनों का आनन्द लेती थीं।

अंकारा विश्वविद्यालय के इन छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त इस्तानबुल विश्वविद्यालय, कोन्या विश्वविद्यालय, मिडिल ईस्ट टेकनिकल विश्वविद्यालय आदि तुर्की के अन्य विश्वविद्यालयों से भी छात्र-छात्राएँ भारतीय धर्म और दर्शन, भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषा विज्ञान आदि विषयों पर शोध-कार्य में सहायता के लिए मेरे पास बराबर आते रहे।

तुर्की में, अपने लगभग तीन वर्षों के प्रवास-काल में, तुर्की भाषा-भाषी यहाँ के इन हिंदी के विद्यार्थियों की दृष्टि से मैंने दो पुस्तकें भी तैयार कीं—

1. प्रयोजनमूलक तुर्की-हिंदी शब्दकोश।

2. तुर्की-हिंदी वार्तालापपरक अभिव्यक्ति पुस्तक।

तुर्की भाषा-भाषी हिंदी के अध्येताओं के लिए एक तुर्की-हिंदी शब्दकोश की नितान्त आवश्यकता का बोध, अंकारा विश्वविद्यालय में छात्रों को हिंदी भाषा के अध्यापनकाल के मध्य हुआ। वस्तुत: किसी भाषा की आधारभूत शब्दावली का ज्ञान सामान्य जीवन के व्यापारों और दैनिक क्रिया-कलापों के सन्दर्भ में विचारों की अभिव्यक्ति के लिए अनिवार्य होता है। यह शब्दावली सीमित, किंतु अभिव्यक्ति की दृष्टि से पूर्ण होती है और भाषा के सामान्य व्यवहार

के लिए इसका ज्ञान अनिवार्य होता है। 'प्रयोजनमूलक तुर्की-हिंदी शब्दकोश' इसी अनिवार्य आवश्यकता का प्रतिफल है। यह शब्दकोश उच्चरित हिंदी के रूपों का अध्ययन करने वाले प्रारंभिक स्तर के छात्रों के लिए परम उपयोगी एवं सहायक सिद्ध होगा। यह तुर्की-हिंदी का प्रथम शब्दकोश ही नहीं है, अपितु परंपरागत शब्दकोशों से भिन्न होने के कारण अभिनव भी है। इसमें तीन सहस्त्र शब्दों का संकलन वर्णानुक्रम से न करके प्रयोजन के आधार पर किया गया है। यह शब्दकोश मुख्यत: दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में शब्दों को विभिन्न व्याकरणिक कोटियों यथा— संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण के अन्तर्गत रखा गया है। शब्दकोश के द्वितीय भाग में तुर्की और हिंदी भाषा में प्रयुक्त समान शब्दों का संकलन है। इस भाग को चार अनुभागों में विभाजित किया गया है— (1) अरबी फारसी से आगत समान शब्दावली, (2) फारसी भाषा से आगत समान शब्दावली, (3) अंग्रेजी भाषा से आगत शब्दावली, (4) हिंदी भाषा में प्रयुक्त तुर्की शब्द।

दूसरी पुस्तक 'तुर्की-हिंदी वार्तालाप-परक अभिव्यकित पुस्तक' का मुख्य उद्देश्य तुर्की भाषा-भाषी हिंदी के अध्येताओं को तुर्की भाषा के माध्यम द्वारा हिंदी भाषा-शिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत एक अतिरिक्त सहायक सामग्री प्रदान करना है। अंकारा विश्वविद्यालय में छात्रों को हिंदी भाषा का अध्यापन करते समय, मैंने यह अनुभव किया कि छात्रों के लिए किसी ऐसी प्रयोजनमूलक सामग्री का निर्माण किया जाए, जो उन्हें समुचित परिस्थितियों में हिंदी भाषा की सम्यक् अभिव्यक्तियों का समुचित ज्ञान दे सके। इसी विचार ने मुझे हिंदी भाषा के अध्येताओं की सामान्य आवश्यकताओं पर आधारित सामग्री-निर्माण के लिए प्रेरणा दी। इस पुस्तक में संग्रहीत सामग्री का क्रम, प्रयोजन की दृष्टि से इस प्रकार का रखा गया है कि अध्येता कम से कम समय में अधिक से अधिक भाषार्जन कर सके। यह पुस्तक उन सभी तुर्की जन-साधारण के लिए भी उपयोगी रहेगी, जो हिंदी भाषा के वार्तालाप-परक उच्चरित रूपों को जानना चाहते हैं। साथ ही वे तुर्की-भाषी पर्यटक भी इससे लाभ उठा सकते हैं जो हिंदी भाषा की सामान्य अभिव्यक्तियों से परिचित होना चाहते हैं। इस पुस्तक का प्रयोग हिंदी भाषा सीखने के लिए बिना किसी सहायक के स्वयं शिक्षक के रूप में किया जा सकता है। पुस्तक में सभी वार्तालाप देवनागरी और रोमन दोनों ही लिपियों में दिए गए हैं। देवनागरी लिपि में दिए गए रूप हिंदी भाषा के लिखित रूपों को अभिव्यक्त करते हैं और रोमन लिपि में दिए गए रूप हिंदी-भाषियों द्वारा उच्चरित रूपों को प्रकट करते हैं।

तुर्की में अपने प्रवास काल के दौरान, मैंने वहाँ के छात्रों को केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली द्वारा संचालित हिंदी के पत्राचार पाठ्यक्रम के लिए भी प्रेरित किया। सितम्बर 1992 में, मैं वहाँ से वापस लौट आया। इसके बाद, डॉ. (श्रीमती) नूरजहाँ बेगम को भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् ने वहाँ का कार्य सौंपा।

कुल मिलाकर समस्त आकलन के पश्चात् यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि तुर्की में हिंदी के विकास की स्थिति बहुत सन्तोषप्रद है और नए आयामों में विकास के अनेक अवसर आज भी बाट जोह रहे हैं।

जापान में हिन्दी अध्ययन-अध्यापन की स्थिति

कात्सुरो कोगा

जापान में हिंदी के अध्यापन का संक्षिप्त इतिहास

आधुनिक जापान में भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन का श्रीगणेश संस्कृत और पालि से हुआ। यूरोप में संस्कृत, पालि आदि प्राचीन भारतीय भाषाओं के माध्यम से बौद्ध धर्म के अध्ययन का विकास होने के फलस्वरूप जापान में भी नये सिरे से, नये दृष्टिकोण से बौद्ध धर्म पर शोधकार्य आरम्भ हो गया था। जापान में 19वीं शती के अंतिम चरण से 20वीं शती के प्रथम चरण में अनेक विद्वान ब्रिटेन, जर्मनी आदि पश्चिमी देशों में बौद्ध धर्म एवं इंडोलोजी के अध्ययनार्थ गए और जापान लौटकर अपना शोधकार्य बढ़ाते गए। उस युग में जापान में प्रकाशित संस्कृत और पालि के अध्ययन-अध्यापन संबंधी पुस्तकें इस प्रकार हैं—

जुं. ताकाकुसु, पालि में बौद्ध साहित्य का अध्ययन (1900)

शुं. ताचिवाना, पालि व्याकरण (1910)

म. बगाइ, पालि स्वयं-शिक्षक (1930)

रयो. साकाकि, संस्कृत भाषा का व्याकरण (1907)

उ. ओगिवारा, संस्कृत प्रवेशिका (1909)

जापानी लोग भारतवर्ष को मुख्यत: भगवान बुद्ध एवं बौद्ध धर्म के संबंध से सद्भावना एवं श्रद्धा की भावना से देखते आ रह थे। एक मायने में यह स्थिति आज भी आंशिक रूप से सही वर्तमान है। (जापान का एशिया के अन्य देशों विशेषकर चीन, कोरिया के साथ अच्छा संबंध नहीं रहा।) फिर भी जापान में आधुनिक भारत संबंधी अध्ययन अथवा शोधकार्य को आरम्भ होने में बहुत विलम्ब हुआ। इसका मुख्य कारण 19वीं शती के उत्तरार्ध से लेकर 20वीं शती के पूर्वार्ध तक जापान का आधुनिकीकरण के मार्ग में विचलित हो जाना था। उपनिवेशवादी पश्चिमी शक्तियों के दबाव और पश्चिमी सहायता की चकाचौंध व अंधानुकरण में जापानी लोग एशियाई लोगों व एशियाई संस्कृतियों की अवहेलना करने लगे थे। दूसरा कारण भारत का अंगरेजी राज में आ जाना था जिससे भारत और जापान के बीच सीधा संबंध या संपर्क स्थापित होने में बाधा पड़ी।

जापान में आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्यापन का आरम्भ 1908 में तोक्यो गाइकोकुगो गक्को (तोक्यो विदेशी भाषा महाविद्यालय-सरकारी) में हुआ था। उसी वर्ष से हिंदुस्तानी (आज की परिभाषा के अनुसार उर्दू) और तमिल दो भाषाएँ पढ़ाई जाने लगीं। दोनों का कोर्स केवल एक वर्ष तक चला। तीन वर्ष में कुल मिलाकर 19 छात्रों ने हिंदुस्तानी पढ़ी और 6 छात्रों ने तमिल पढ़ी। 1911 में तमिल भाषा का कोर्स बंद कर दिया गया। परंतु उसी वर्ष हिंदुस्तानी (उर्दू) का पाठ्यक्रम तीन वर्ष के पाठ्यक्रम में बदल दिया गया। हर दूसरे साल छात्रों को दाखिला मिलता था। यह क्रम 1919 तक जारी रहा। 1920 के पश्चात् हर साल छात्र लिये जाने लगे। 1918 तक भारतीय अथवा गैर जापानी ही हिंदुस्तानी विभाग के अध्यापक के रूप में नियुक्त रहे। 1919 में श्री मिजुगुचि हिंदुस्तानी विभाग के प्रथम जापानी अध्यापक बने। फिर 1921 में ओसाका में ओसाका गाइकोकुगो गक्को (ओसका विदेशी भाषा महाविद्यालय, वर्तमान ओसाका यूनिवर्सिटी ऑफ़ फारिन स्टडीज़) की स्थापना हुई। यह भी शुरू में सरकारी विद्यालय रहा। 1922 से उसमें भी हिंदुस्तानी (उर्दू) का त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम आरम्भ हो गया। शुरू से ही ओसाका में प्रत्येक वर्ष छात्र प्रवेश पाते थे।

द्वितीय महायुद्ध में पराजय के पश्चात् जापान में अनेक आमूल परिवर्तन हुए। 1949 में जापान की शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा परिवर्तन किया गया। उसी वर्ष तोक्यो और ओसाका दोनों गाइकोकुगो गक्को को गाइकोकुगो दाइगाकु (विश्वविद्यालय) में बदल दिया गया और पहले वाले त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम को चार वर्ष का कर दिया गया। इसका मतलब अब छात्र-छात्राएँ 13वीं से 16वीं कक्षा तक अर्थात् बी. ए. तक पढ़ने लगे। (तब तक जापान की उच्च शिक्षा में सहशिक्षा नहीं थी) फिर भी उक्त दोनों विद्यालयों में हिंदुस्तानी (उर्दू) ही पढ़ाई जाती थी। हिंदी के लिए कोई स्थान नहीं था। इसका कारण स्पष्ट है। एक तो भारत के स्वतन्त्र होने के बाद ही हिंदी को सरकारी भाषा का स्थान मिला था। दूसरे उस समय तक जापान में हिंदी पर पूरा अधिकार रखने वाले अध्यापक (जापानी अथवा भारती) नहीं थे। इनके अतिरिक्त हिंदी पढ़ाने के लिए उर्दू के अध्यापकों से अलग हिंदी अध्यापकों का सरकारी प्रबंध नहीं था। 1957 में दोनों संस्थाओं को हिंदी और उर्दू को अलग-अलग पढ़ाने की अनुमति शिक्षा मंत्रालय से मिल तो गई, फिर भी इसके लिए अध्यापकों का प्रबंध न होने के कारण ठीक से हिंदी का अध्यापन नहीं हो पाता था। तोक्यो और ओसाका दोनों जगह 1950 के आस-पास से हिंदी भी उर्दू के साथ-साथ पढ़ाई जाने लगी। तोक्यो गाइकोकुगो दाइगाकु में पहली व दूसरी कक्षाओं में उर्दू सीखते थे फिर तीसरी व चौथी कक्षाओं में या तो हिंदी या उर्दू सीखते थे। ओसाका में पहली कक्षा में हिंदी पढ़ाई जाती थी और दूसरी कक्षा से चौथी कक्षा तक कुछ छात्र हिंदी ही सीखते थे, बाकी उर्दू सीखते थे। 1959 में उर्दू से अलग हिंदी के छात्र-छात्राएँ लिये जाने लगे। फिर भी अध्यापकों के अभाव के कारण अव्यवस्था बहुत दिनों (1965 के आसपास) तक बनी रही।

जापानी अध्यापकों के संबंध में तो इस लेख में अन्यत्र विचार किया जा रहा है, अत: यहाँ पर उन भारतीयों की चर्चा करना अप्रासंगिक नहीं होगा जो जापान में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के शैशवकाल से आज तक जापान में पढ़ाते थे या पढ़ाते आये हैं।

स्वर्गीय प्रो. दोइ ने एक जगह श्रीमती कमला रत्नम, श्रीमती खन्ना, श्री कृपालसिंह आदि भारतीयों के बारे में अपनी मधुर स्मृतियाँ लिखी हैं जिन्होंने 1949 के पश्चात् तोक्यो गाइकोकुगो दाइगाकु में उस जमाने में हिंदी पढ़ाने में बड़ी सहायता दी थी जब हिंदी के अध्यापक के लिए स्थायी व्यवस्था नहीं थी। वे बड़े प्रेम से और त्याग की भावना से हिंदी पढ़ाते थे। उनमें से किसी के पति या किसी के पिता तोक्यो स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारी थे। श्री कृपालसिंह शेखावत जैसे चित्रकार भी थे जो जापानी चित्रकला के अध्ययन के लिए जापान आए हुए थे। 1957 से श्री शांतिलाल मं. झवेरी तोक्यो में हिंदी पढ़ाने लगे और 1970 तक पढ़ाते रहे। डॉ. लक्ष्मीधर मालवीय जो ओसाका गाइकोकुगो दाइगाकु के निमंत्रण पर अप्रैल 66 में जापान आए 70 से तोक्यो में भी पढ़ाने लगे और आज तक पढ़ाते आए हैं। 1978 के बाद तोक्यो में और एक भारतीय अध्यापक का पद बना। तब से आज तक प्रो. श्यामसुंदर जोशी, प्रो. इंदु जैन, डॉ. बुद्धिराजा और डॉ. बद्रीनाथ कपूर दो-दो वर्ष के लिए पढ़ाते आए हैं।

इन पंक्तियों के लेखक को ओसाका गाइकोकुगो दाइगाकु में 1953-57 के बीच श्री संतराम वर्मा (1880-1962) से उर्दू व हिंदी सीखने का अवसर मिला था। वैसे वर्मा जी का अधिकार हिंदी से अधिक उर्दू, फारसी और अरबी पर था। ओसाका में वर्मा जी के निधन के बाद श्री राधेश्याम खेतान (1962-63) और श्री जगदीश दुबे (1963-65) ने हिंदी पढ़ाई। डॉ. मालवीय 1966 से पढ़ाते आए हैं। जापान में हिंदी के प्रति अभिरुचि व प्रेम पैदा करने में और हिंदी के अध्ययन-अध्यापन को बढ़ाने और उत्साहित करने में इन भारतीय अध्यापकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उक्त संस्थाओं से अलग दूसरे विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा संस्थानों से संबंधित होकर हिंदी की सेवा करने वालों में डॉ. रमेश माथुर और डॉ. नरेश मंत्री हैं।

नवीनतम जानकारी के अनुसार जापान में हिंदी का अध्यापन इस प्रकार हो रहा है। बी. ए. और एम. ए. (छः वर्षों के कोर्स) की पढ़ाई उपर्युक्त दो विश्वविद्यालयों में होती है। तोक्यों स्थित एक विद्यापीठ में पूरे दो वर्ष का कोर्स है। इन तीन संस्थाओं में डेढ़ सौ से अधिक छात्र-छात्राएँ हिंदी को मुख्य विषय के रूप में पढ़ रहे हैं। अन्य यूनिवर्सिटियों, कालोजों एवं शिक्षा-संस्थानों में हिंदी वैकल्पिक विषय अर्थात् द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। भाषा-विज्ञान, भारत के दर्शन, धर्म, विचार, इतिहास, संस्कृति आदि विविध विषयों का अध्ययन करने वाले अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार हिंदी का अध्ययन करते हैं। इसलिए उनमें से कुछ लोग हिंदी के अलावा बंगला, पंजाबी, मराठी, तमिल, मलयालम आदि भारतीय भाषाएँ भी सीखते हैं। इस प्रकार 10 से अधिक विश्वविद्यालयों, कालेजों में और 5 से अधिक निजी शिक्षा-संस्थानों में हिंदी सीखने वालों की संख्या हर साल ढाई सौ से भी अधिक है।

कुछ ऐसे लोग भी हैं जो थोड़े समय के लिए जापान में हिंदी सीखकर या बिना सीखे सीधे भारत में हिंदी सीखने जाते हैं। जापान में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन शुरू हुए तीस-पैंतीस साल हो गए हैं। अब जापानी लोगों के लिए हिंदी सीखने के लिए पहले जैसी कठिनाइयाँ

नहीं हैं। काफी सुविधाएँ मिलने लगी हैं। वे बहुत कम समय में अधिक प्रामाणिक हिंदी सीख सकते हैं। फिर भी ये सुविधाएँ यहाँ पर हर जगह सुलभ नहीं। इस स्थिति में और भी सुधार अपेक्षित है।

पाठ्यपुस्तकें

जब जापान में हिंदी का अध्यापन आरंभ हुआ था उस समय स्वर्गीय प्रो. सावा की केवल तीन पुस्तकें जापानी छात्रों को उपलब्ध थीं। जापान में हिंदी अथवा नागरी लिपियों में पहली पुस्तक 1947 में ओसाका से प्रकाशित हुई। 1950 तक प्रो. सावा ने इस पुस्तक के सिवा और दो पुस्तकें प्रकाशित कराई थीं। तीन पुस्तकों के नाम इस प्रकार थे, ''जापानी हिंदुस्तानी बोल-चाल'' (पहला भाग : शब्द), ''जापानी हिंदुस्तानी बोल-चाल'' (दूसरा भाग : बातचीत), और ''हिंदी भाषा का सरल व्याकरण''। ओसाका गाइकोकुगो दाइगाकु में 1950-55 के बीच निम्नलिखित पुस्तकें, जो बड़ी कठिनाई से उपलब्ध हुई थीं, पहली या दूसरी कक्षा में इस्तेमाल की जाती थीं।

पं. वामदेव (सं.), हिंदी बाल-शिक्षा, इलाहाबाद, 1930

पं. अवध उपाध्याय (सं.) बाल-प्रभाकर, इलाहाबाद, 1949

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा (सं.), गद्य-पाठ-माला, इलाहाबाद, 1924

रमाशंकर शुक्ल ''रसाल'', ग्राम्य बाल-विकास, इलाहाबाद, 1950

1955 के बाद तो H. C. Scholberg की पुस्तक (Concise grammar of the Hindi language और S. N. Sharma की पुस्तक (Hindi Grammar & Translation) भी पाठ्य पुस्तकों के रूप में इस्तेमाल होने लगीं। भार्गव वाला कोश (R. C. Pathak, The Standard Dictionary of the Hindi Language, 1947) भी मिलने लगा था। वह उस जमाने में जापान में मिलने वाला हिंदी का एकमात्र शब्दकोश था।

कहने का तात्पर्य यह है कि जापान में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन के लिए अनुकूल वातावरण 1960 के बाद उपस्थित होने लगा था। उस समय तक द्वितीय महायुद्ध में हार जाने के कारण जापान की आर्थिक दशा बहुत ही बिगड़ी हुई थी और शिक्षा जगत की भी वैसी ही स्थिति रही। 1960 के आसपास तक हिंदी की पुस्तकें पुस्तक-विक्रेताओं के जरिये भारत से मँगाना असम्भव-सा था। लगभग 1960 के बाद जापान की आर्थिक दशा में सुधार व विकास होने लगा था। उसका अच्छा परिणाम शिक्षा जगत में भी होने लगा। हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का स्तर भी धीरे-धीरे उठने लगा और जापानियों के द्वारा हिंदी की अधिक प्रामाणिक पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। भारत में भी हिंदी अध्यापन के लिए उपयुक्त पुस्तकें तैयार होने लगीं। उनका प्रयोग भी जापान में होने लगा था।

1985 में जापान के 11 मुख्य संस्थानों में हिंदी की निम्नलिखित पुस्तकें एवं शब्दकोश प्रारंभिक कक्षाओं में इस्तेमाल हो रहे हैं।

शिक्षा संस्थान	पाठ्यपुस्तकें एवं शब्दकोश
1.	Central Hindi Directorate, Hindi Lingua-records. H. Bahri, Learners' Hindi-English Dictionary
2, 3	कयूया दोइ (सं.), हिंदी प्रवेशिका (हिंदी-जापानी में) कयूया दोइ (सं.) संक्षिप्त हिंदी कोश (हिंदी-जापानी कोश) M. Chaturvedi : B. Tiwari, A practical Hindi English Dictionary
4, 5, 6, 7	तोशिओ तानाका : काजुहिको माचिदा (सं.), हिंदी भाषा का परिचयात्मक व्याकरण (जापानी माध्यम) Brajmohan : B. Kapoor, Meenakshi Hindi-English Dictionary
8	रामेश्वरदास गुप्त, सरल भाषा (भाग 1-4) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गहन हिन्दी शिक्षण
9	तेज़ी साकाता, सरल हिंदी भाषा (जापानी माध्यम) H. Bahri, `Learners' Hindi-English Dictionary Brajmohan : B. Kapoor, Meenakshi Hindi-English Dictionary.
10	तेजी साकाता, सरल हिंदी भाषा कयूया दोइ, संक्षिप्त हिंदी-जापानी कोश H. Bahri, `Learners' Hindi English Dictionary Brajmohan : B. Kapoor, Meenakshi Hindi-English Dictionary,
11.	T. Mizokami, Hindi Mac Gregor, Outline of Hindi Grammar Central Hindi Directorate, Hindi Lingua-records केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हिन्दी पाठमाला कात्सुरो कोगा, हिंदी पाठ्यपुस्तक (1) शि. कि. वर्मा : रमानाथ सहाय, ऑक्सफर्ड प्रोग्रेसिव अंग्रेजी-हिंदी कोश कामिल बुल्के, अंग्रेजी-हिंदी कोश H. Bahri, `Learners' Hindi-English Dictionary M. Chaturvedi : B. Tiwari, A Practical Hindi-English Dictionary.

जापान में हिंदी का अध्ययन

जैसे ऊपर लिखा जा चुका है द्वितीय महायुद्ध के बाद भी कोई ऐसा जापानी अध्यापक नहीं था जो अधिकारपूर्वक विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ा सके। स्व. प्रो. सावा ने 1950 के आसपास हिंदी की तीन पाठ्यपुस्तकें तैयार करके प्रकाशित कराई थीं, पर उनका अधिकार उर्दू व फारसी पर अधिक था। भारत के विश्वविद्यालय में सुव्यवस्थित ढंग से हिंदी का अध्ययन करने वाले पहले जापानी (स्वर्गीय) प्रो. दोइ निकले। उन्होंने 1953 से 1955 तक प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था। भारत जाने से पहले वे तोक्यो गाइकोकुगो दाइगाकु में उर्दू के अध्यापक रहे और जापान लौटने के कुछ समय बाद भी। 1955 में जापान लौटने के पश्चात प्रो. दोइ ने हिंदी पढ़ाने और नई पीढ़ी को हिंदी के अध्ययन की ओर प्रेरित और उत्साहित करने का काम संभाला था। वे इस काम के साथ-साथ हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य पर शोध का काम करते रहे। इस काल में उनको और छात्रों को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। इसके बारे में तो ऊपर लिखा जा चुका है। यहाँ पर एक बात जोड़ देना अनुचित नहीं होगा। वह जापान का ऐसा ज़माना था कि आज उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। विदेश जाने के लिए सरकार एक व्यक्ति को केवल दो सौ डालर ले जाने की अनुमति देती थी। फिर विश्वविद्यालय के अध्यापकों को भी विदेशों से पुस्तकें मंगाने के लिए विशेष अनुमति सरकार से लेनी पड़ती थी। 1960 के लगभग जब जापान का फिर से उत्थान होने लगा तो भारत और जापान के बीच आना-जाना भी कुछ सरल होने लगा। इस समय जापान के विभिन्न शिक्षा संस्थानों में जो अध्यापक हिंदी पढ़ाते हैं और जिनकी आयु 50 से 40 के बीच में है वे अधिकतर 1960 से 1970 के बीच में हिंदी सीखने भारत जा सके। उनमें भी अधिक आयु वाले अध्यापकों ने छात्र-जीवन में हिंदी और उर्दू दोनों भाषाएँ सीखीं, बाकी ने हिंदी ही सीखी।

1970 के बाद तो जापान में हिंदी सीखने वालों को अधिक सुविधाएँ सरलता से मिलने लगीं। अनेक छात्र-छात्राएँ हिंदी सीखने भारत जाने लगे। कुछ भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर गए और कुछ लोग अपने खर्चे पर। कुछ छात्र जापान में ही बी. ए. हिंदी की पढ़ाई पूरी करके भारत में एम. ए. हिंदी की पढ़ाई करने लगे। कुछ लोग तो सीधे भारत जाने के बाद की पढ़ाई शुरू करने लगे। इस प्रकार इस अवधि में हिंदी के अध्ययन करने वाले जापानियों की संख्या में भारी वृद्धि हुई और जापान में हिंदी के अध्ययन का स्तर भी उठने लगा। फिर जापान की आर्थिक कठिनाई दूर होने के परिणामस्वरूप जापान में हिंदी की बहुत-सी पुस्तकें आने लगीं। शिक्षा संस्थाओं के और व्यक्तियों के पुस्तकालयों में हिंदी की पुस्तकें भरने लगीं। अब हिंदी के अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण उपस्थित होने लगा।

पिछले दस-पंद्रह वर्षों में जापान से विदेशों की यात्रा पर जाने वालों की संख्या में अद्भुत वृद्धि हुई है। जापानी लोगों में भिन्न संस्कृतियों के प्रति जिज्ञासा दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। भारतीय संस्कृति के प्रति भी लोगों की जिज्ञासा बढ़ रही है। भाषा प्रत्येक संस्कृति का

अभिन्न अंग है। अत: जापान में भारतीय संस्कृति को जानने-समझने के लिए हिंदी आदि आधुनिक भारतीय भाषाएँ सीखने और उन पर शोधकार्य करने वाले बढ़ते जा रहे हैं। आम लोगों का भारत संबंधी ज्ञान भी काफी बढ़ा है। वैसे इस समय जापान के विभिन्न प्रकार के शिक्षा संस्थानों में हिंदी के अतिरिक्त बंगला, पंजाबी, मराठी, तमिल, कन्नड़, मलयालम आदि भारतीय भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं। पर उनमें हिंदी का अध्ययन-अध्यापन करने वाले सबसे अधिक हैं।

जापान में आज तक हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य पर जापानियों द्वारा जो अध्ययन अथवा शोधकार्य हुआ है उसकी सूची अत्यंत विस्तृत है। पिछले तीस-पैंतीस वर्षों में अध्ययन का स्तर काफ़ी ऊँचा हो गया है। कुछ विद्वान जापान के बाहर भी श्रेष्ठ काम करते आए हैं। पर हमें यह मानना पड़ेगा कि जापान में हिंदी का अध्ययन अभी विकसित नहीं हुआ है। परंतु हमारा यह भी विश्वास है कि आने वाली पीढ़ी इस स्थिति को सुधारने का पूरा प्रयत्न करेगी और उसमें सफल होगी।

गत तीस-पैंतीस वर्षों में जापानियों द्वारा रचित व्याकरण ग्रन्थों और पाठ्यपुस्तकों का स्तर काफ़ी ऊँचा हो गया है और सुधार हो रहा है।

शब्दकोश के क्षेत्र में तो प्रो. दोइ का काम प्रशंसनीय है। वैसे उनके ''संक्षिप्त हिंदी कोश'' में हिंदी-अंग्रेजी कोशों की अपेक्षा शब्दों की संख्या कम है और शब्दार्थ की व्याख्या भी पूरी नहीं है, फिर भी प्रारंभिक कक्षाओं के छात्रों को उससे काफ़ी सहायता मिलती है।

ध्वनि विज्ञान संबंधी शोधकार्यों में डॉ. नोरिहिको उचिदा का नाम सर्वप्रथम है। उनका अधिकांश काम जापान के बाहर होता आया है। वैसे उनका कार्यक्षेत्र भारतीय आर्य भाषाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि तमिल, कन्नड़ आदि द्राविड़ भाषाओं तक फैला हुआ है।

हिंदी भाषा के ऐतिहासिक अध्ययन के क्षेत्र में अभी अधिक काम नहीं हुआ है। अवहट्ठ भाषा पर डॉ. नारा का काम अवश्य उल्लेखनीय है।

रूपात्मक अध्ययन के क्षेत्र में तो अनेक काम हुए हैं। क्रिया पर, विशेषकर संयुक्त क्रियाओं के प्रकार्य पर कई लोग अच्छा काम करते आए हैं। शैलीगत अध्ययन में अभी ठोस काम नहीं हुआ है।

समाज भाषा विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. मिजोकामि, जो हिंदी के अलावा बंगला और पंजाबी पर भी समान अधिकार रखते हैं, अग्रणी हैं।

प्राचीन व मध्यकालीन हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अभी तक अधिक काम नहीं हुआ है। इस क्षेत्र के अध्ययन के लिए ब्रजभाषा, अवधी आदि बोलियों अथवा पुरानी साहित्यिक भाषाओं का गहरा ज्ञान तो चाहिए ही, इसके साथ ही साथ साहित्यिक रचना को ठीक से समझने

के लिए युग विशेष की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान रखना भी परमावश्यक है। इधर प्रो. साकाता इस क्षेत्र में श्रेष्ठ काम कर रहे हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य पर काफ़ी काम हो चुका है। प्रो. तो. तानाका ने अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, उग्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राहुल सांकृत्यायन आदि साहित्यकारों पर मौलिक रूप से गहन और विस्तृत शोध किया है।

लोक-साहित्य के क्षेत्र में प्रो. साकाता ने सबसे अधिक प्रामाणिक काम किया है। उन्होंने गाँव में रहकर लोक-कथाओं का संकलन किया और उसका सम्पादन करके प्रकाशित कराया। वैसे उनका कार्यक्षेत्र बड़ा विस्तृत है। हिंदी भाषा एवं साहित्य दोनों क्षेत्रों के अध्ययन-अध्यापन में उनका योगदान बहुत बड़ा है।

यूरोप महाद्वीप

ग्रेट ब्रिटेन में हिन्दी

रविप्रकाश श्रीवास्तव

हिंदी भाषा का प्रयोग विश्व में कहीं-न-कहीं न्यूनाधिक रूप में हो रहा है। इसी संदर्भ में यूनाइटेड किंग्डम में हिंदी की दशा तथा उसका योगदान— एक समाज शास्त्रीय अध्ययन से जुड़ा है। यू. के. में हिंदी की दशा पर तथा उस देश के विद्वानों का योगदान यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है—

भारतीय संविधान में उल्लिखित राजभाषा हिंदी को सामासिक संस्कृति की वाहिका कहा गया है। इस दृष्टि से हिंदी भाषा में कई शैलियों का अभ्युदय आवश्यकता तथा परिस्थिति-वश हो जाता है। भारत में हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी के प्रयोग और उसकी विलक्षणता तथा कुछ खास स्थलों पर बहु भाषा भाषियों के संगम स्थल पर पिजिन हिंदी की बानगी से इस बात के प्रमाण की संपुष्टि हो जाती है। इसी प्रकार ब्रिटेन में हिंदी के प्रयोग में भाषागत विलक्षणता का दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक है। इस प्रयुक्त विलक्षणता में भाषाई अस्मिता तथा निज संस्कृति का संरक्षण समाहित है। ऐसी जटिल भाषाई परिवेश की दशा में कोशीय चयन में सीधे संस्कृत शब्दावली से आगत शब्दों का अभाव और निज भाषा की प्रकृति में विद्यमान शब्दों से भाषा-व्यवहार की नैसर्गिकता का होना हिंदी की अद्‌भुत शक्ति का परिचायक है। इस प्रकार की बानगी का गहन विश्लेषण समाज भाषा विज्ञान तथा मनोविज्ञान की दृष्टि से भाषाई प्रवृत्ति को उजागर करना भाषा चिंतन की दिशा में एक नया आयाम उभर सकेगा। डॉ. मलिक मोहम्मद के शब्दों में ''वस्तुत: विदेशों में हिंदी की यही धारा सर्वशक्तिमान और प्रवहमान है। वैसे ब्रिटेन, थाईलैण्ड आदि देशों में प्रवासी भारतीयों की बड़ी संख्या होने के कारण हिंदी की धारा किसी न किसी रूप में विद्यमान है।''[1]

निम्नलिखित अनुच्छेदों में उपर्युक्त उपसंदर्भों की विशद व्याख्या की जा रही है—

(क) यू. के. में भारतीय— जिन्होंने ब्रिटिश नागरिकता ग्रहण कर ली है— उनमें से दो प्रकार के वर्ग नृविज्ञान की दृष्टि से किए जा सकते हैं—

(i) वे भारतीय जो सीधे यू. के. में बस गए। उसके कई सामाजिक कारण हो सकते हैं— वहाँ सरकारी नौकरी, व्यापार आदि में कार्यरत हैं। इन बसे हुए भारतीयों में हिंदी, पंजाबी सिंधी, ओड़िया तथा अन्य द्रविड़ भाषा भाषी हो सकते हैं। ये परस्पर परिस्थिति के कारण— पड़ोसी होने से, सहज मित्रता या मित्र-मंडली के वार्तालाप में, वैवाहिक संबंध के कारण, मूलत: भारतीय होने के कारण अपनी अस्मिता के संरक्षण हेतु हिंदी भाषा का प्रयोग

करते हैं। यह एक समाज भाषा वैज्ञानिक पक्ष उभरकर आया है। इस प्रकार के परिवेश में हिंदी का शैक्षिक भाषा शिक्षण पक्ष नहीं है।

यदि इस परिवेश को भारत के हिंदी भाषी राज्यों की हिंदी बानगी लेकर व्यतिरेकात्मक सूक्ष्म विश्लेषण किया जाए, तो प्रत्येक राज्य में विशेषकर ग्रामीण परिवेश में तथा बहुधा शहरी परिवेश में भी मातृ बोलियों का वर्चस्व है। फिर भी औपचारिकतावश प्लेट फार्म पर, रेडियो, दूरदर्शन, संसद, विधान सभा आदि में सहयोजित भाषा हिंदी का बोलबाला है। यू. के. में इसी मानक हिंदी के समीप की हिंदी का प्रयोग होता है तथा स्वभाषा या मातृबोलियों का नगण्य प्रयोग है। यहाँ की हिंदी में संस्कृत गर्भित हिंदी या फारसी शब्दावली से बोझिल हिंदी का प्रयोग नहीं पाया जाता है। नए संप्रत्ययों के लिए अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मिसाइल, आफिस बुकिंग, रिजर्वेशन आदि शब्द ज्यों के त्यों प्रयोग में आते हैं। हिंदी का वाक्य साँचा अति सरल है। जटिल वाक्यों का प्रयोग नहीं के बराबर है। इसके अलावा अन्य भारतीय जो भारतीय होते हुए ब्रिटेश नागरिकता लेकर अफ्रीकी देशों में बसे थे और यू. के. में आ बसे हैं। उनकी हिंदी में और सीधे यू. के. में बसने वाले भारतीय ब्रिटिश नागरिकों की हिंदी में एक विभेदक रेखा है। यह बड़ी ही सूक्ष्म है किंतु भौगोलिक परिवर्तन के कारण यह एक ज्वलंत समाज भाषा परक पक्ष है।

(ii) शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, अभियांत्रिकी तथा आनुषंगिक कार्यों में रत जैसे होटलिंग व्यापार, ड्राइवर, सफाई कर्मचारी आदि प्रवासी भारतीयों के घरेलू वातावरण में तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में, जैसे— सत्य नारायण पूजन में, किसी अवधी परिवार द्वारा प्रसाद वितरण के समय पंजीरी, चन्नामृत, संख बजाना आदि का प्रयोग आ सकता है किंतु अन्य बोली भाषियों के साथ सहयोजित भाषा हिंदी का प्रयोग पाया जाता है। देवी जागरण पाठ में तो बोलियों के कोशीय शब्दों का एकाधिपत्य रहता ही है।

अंग्रेजी का अति साधारण ज्ञान रखने वाले विभिन्न भाषा भाषी (द्रविड/आर्य भाषा भाषी) भारतीयों के बीच अन्य छोटे मोटे काम करने वालों के मध्य सहयोजित भाषा हिंदी का प्रयोग पाया जाता है। आपस में मनोविनोद की यही भाषा है।

(iii) रॉयल ब्रिटिश आर्मी गोरखा रेजीमेण्ट में रविवार को मनोरंजन के लिए कभी-कभी हिंदी फिल्मों का प्रदर्शन— हिंदी भाषा संप्रेषण का तथा मनोविनोद का साधन है। इसमें कुछ आर्यभाषा भाषी तथा अन्य द्रविड भाषा भाषी भी यदा-कदा सम्मिलित हो जाते हैं। इस प्रकार हिंदी के संवाद की स्थिति ब्रिटिश धरातल पर गोचर होती है।

(ख) यू. के. में साथ रह रहे भारत से लगे पड़ोसी देश-वासियों में परस्पर संपर्क की भाषा हिंदी है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं कि एक भारतीय पाकिस्तानी से, भारतीय मालद्वीपी से, भारतीय नेपाली से, भारतीय भूटानी से, भारतीय वर्मा देशवासी से मिलता है तो परस्पर व्यवहार की भाषा सरल हिंदी ही है। बंगला देशी होटलों में हिंदी भाषा का प्रयोग

देखा जा सकता है। उच्च स्तर का वार्तालाप, विज्ञान पक्ष की चर्चा परिचर्चा, अभियांत्रिक, चिकित्सा पक्ष का विचार-विनिमय तो अंग्रेजी में ही होता है।

(ग) भारत में स्वन्त्रता प्राप्ति से पूर्व तथा बाद में अद्यावधि तक ब्रिटिश विद्वानों द्वारा उल्लेखनीय सेवाएँ हिंदी के संदर्भ में सराहनीय रही हैं। इतिहास की ओर दृष्टि डालें तो पता चलेगा कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना 31 दिसम्बर 1599 को हुई। इस कंपनी के एजेण्टों ने सूरत में सन् 1612 ई. मे एक फैक्टरी खोली। इसमें अंग्रेज व्यापारी भी थे। हिन्दुस्तानी भाषा का व्यवहार होता था। 1800 ई. में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना से हिन्दुस्तानी के उभयरूपों की शैलियाँ हिन्दी और उर्दू विकसित हुईं। छापेखाने खोले जाने से हिंदी गद्य के विकास में सहयोग मिला। विदेशी पादरियों ने बाइबिल के प्रचार के लिए हिंदी गद्य का सहारा लिया। परिणामस्वरूप हिंदी गद्य का विकास स्वत: अग्रसर होने लगा। विदेशी अध्येताओं के लिए हिंदी शिक्षण का श्री गणेश् गिलकाइस्ट की पुस्तक 'हिंदी मैनुअल' सन् 1802 ई. में प्रकाशित हुई। इसके बाद प्राइस आदि विद्वानों ने इस परम्परा का सफल निर्वाह किया। पिन्काट द्वारा रचित 'हिंदी मैन्नुअल'— सिविल सर्विस में आने वाले प्रत्येक अधिकारी के लिए अनिवार्य था। इस पुस्तक का प्रकाशन 1882-83 ई. में हुआ। गिलक्राइस्ट द्वारा प्रतिपादित शुभांरभ की परिणति पिन्काट के "हिंदी मैनुअल" में हुई। यह एक ऐतिहासिक कदम था। फोर्ट विलियम कालेज के प्राचार्य डॉ. जान गिलक्राइस्ट ने निम्नलिखित ग्रन्थ लिखवाए—

लल्लू लाल-प्रेम सागर सन् 1803 ई.

सदल मिश्र-नासिकेतोपाख्यान

जान शेक्सपिअर का 'ए ग्रामर ऑफ द हिन्दुस्तानी लैंग्वेज' सन् 1813 ई. में लंदन से प्रकाशित हुआ। 'द इंगलिश एण्ड हिन्दुस्तानी डिकशनरी विद द ग्रामर प्रिफिक्स्ड' सन् 1811 ई. में कलकत्ता से प्रकाशित हुई। इसी विकास क्रम में 'ए डिकशनरी आफ हिन्दुस्तानी एण्ड इंगलिश' 1817 ई. में लंदन से प्रकाशित हुई। 'एन इंट्रोडकसन टु द हिन्दुस्तानी लैंग्वेज' 1845 ई. में लंदन से छपी।

डॉ. जान गिलक्राइस्ट का हिन्दुस्तानी व्याकरण 1790 ई. में प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त डॉ. जॉन गिलक्राइस्ट द्वारा रचित 'द स्टोरी टेलर'.....द्रष्टव्य है। बीम्स ने 1872-75-79 में 'भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन' प्रस्तुत किया। श्री फोरब्स का हिन्दुस्तानी व्याकरण सन् 1846 ई. में, जॉन प्लाट्स का व्याकरण सन् 1874 ई. में, एच. एच. केलॉग का हिन्दी व्याकरण 1875 ई. में लंदन से प्रकाशित और ग्रीब्स का आधुनिक हिंदी व्याकरण 1896 ई. में प्रकाशित हुआ। डॉ ग्रियर्सन द्वारा रचित तुलसीदास पर लेख 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड एथिक्स' सन् 1921 द्रष्टव्य है। तुलसी जैसे महाकवि के व्यक्तित्व को उजागर करने वाले डॉ. ग्रियर्सन की सेवाएँ उल्लेखनीय हैं। ग्रियर्सन द्वारा सन् 1882 ई. में 'एन इंट्रोडक्शन टू द मैथिली लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर'— रॉयल एशियाटिक सोसायटी में द्रष्टव्य है। हिंदी भाषा की खड़ी बोली, ब्रज, अवधी, भोजपुरी तथा बिहारी बोलियाँ— मगही आदि

भौगोलिक अध्ययन, भाषायी विवरण-ध्वनियाँ, रूप-रचना, वाक्य विन्यास, भाषायी बानगी आदि का विशद एवं वैज्ञानिक अध्ययन का श्रेय डॉ. जार्ज ग्रियर्सन को है जिन्होंने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' में हिंदी भाषा के अध्ययन तथा सूक्ष्म विवेचन का श्री गणेश किया। इसी क्रम में रुडोल्फ हार्नले का 'ए कम्पेरेटिव ग्रामर ऑफ द गौडियन लैंग्वेज' लंदन तथा केलाग का 'ए ग्रामर ऑफ द हिंदी लैंग्वेज' 1875 ई. लंदन— हिंदी व्याकरण जगत में मील के पत्थर हैं। डॉ. जार्ज ग्रियर्सन का इतिहास 'द माडर्न वर्नाक्यूलर ऑफ़ हिन्दुस्तान' 1888 ई. हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास है। श्री जे. एन. कारपेण्टर को, 'थियोलाजी ऑफ़ तुलसीदास' पर डाक्टरेट की उपाधि, लंदन विश्वविद्यालय के मोइनुद्दीन कादरी को 'हिन्दुस्तानी ध्वनि विज्ञान' पर लंदन विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधियाँ मिली। इन विद्वानों के अलावा अन्य उल्लेखनीय महानुभावों में श्री लक्ष्मीधरन ने जायसी की भाषा अवधी पर पी-एच. डी. डिग्री का शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। ए. एच. हॉर्ले का 'ग्रामीण हिन्दुस्तानी' लंदन से प्रकाशित हुआ।

इसी शृंखला में डॉ. यमुना काचरू का 'हिन्दी क्रिया का अन्तरणात्मक अध्ययन' सन् 1965 ई. तथा डॉ. आर. एस. मैकग्रेगर का लंदन विश्वविद्यालय से 'ए स्टडी ऑफ अरली ब्रज भाषा' पी-एच. डी. उपाधियों के लिए स्वीकृत हुई। डॉ. मैकग्रेगर का 'एन आउटलाइन ऑफ हिन्दी ग्रामर' एक उच्च स्तरीय कृति है।

आधुनिक हिंदी गद्य-विकास में अंग्रेजों की ही प्रेरणा रही। सन् 1883 ई. में प्रकाशित 'प्रभु यीशु की कथा', 'यीशु विवरण', 1802 ई. में 'न्यू टेस्टामेण्ट' का हिंदी भाषान्तर, 1821 ई. में सेण्ट मैथ्यू तथा सेण्ट जॉन का हिंदी अनुवाद, सन् 1854 ई. में नार्थ इण्डिया टेक्स्ट एण्ड बुक सोसाइटी की ओर से 'हिस्ट्री ऑफ़ द बाइबिल' का अनुवाद 'धर्म पुस्तक का इतिहास' विचारणीय है।

(घ) श्रव्य उपकरणों में बी. बी. सी. द्वारा उद्घोषित विश्व समाचार, समीक्षा, अन्य आनुषंगिक कार्यक्रम विश्व के घटनावृत्त, स्वास्थ्य रक्षा, विज्ञापन आदि हैं। इसके अधिकतर उद्घोषक हिंदी भाषी हैं। अतः हिंदी के प्रचार तथा प्रसार में श्रव्य उपकरण द्वारा हिंदी का स्वाभाविक परिवेश बी. बी. सी. की एक अहम् भूमिका कही जा सकती है। ये कार्यक्रम हिंदी भाषी क्षेत्रों के अलावा विश्व में सर्वत्र सुने और सराहे जाते हैं।

(ङ) सन् 1883 ई. में 'हिन्दोस्थान' समाचार पत्र का प्रकाशन कालाकांकर के राजा ने संपादित कराया। विश्व में पहली बार भारत से बाहर हिंदी-समाचार पत्र का प्रकाशन एक क्रांतिकारी कदम था। इसके प्रकाशन से हिंदी की निज अस्मिता का जन्म हुआ। हिंदी प्रचार परिषद ब्रिटिश नागरिकों तथा प्रवासी भारती नागरिकों में हिंदी के कार्य में अहर्निश प्रयत्न कर रही है। इसी संस्था के सहयोग से 'प्रवासिनी' पत्रिका का त्रैमासिक प्रकाशन हो रहा है। इस पत्रिका में विविध विषयों का चिन्तन परिलक्षित होता रहता है।

(च) यू. के. विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा शिक्षण, साहित्य शिक्षण तथा शोध परक योजनाएँ वेग से चल रही हैं। सन 1968 ई. में लीड्स विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा के अध्ययन

की परंपरा शुरू हुई। लंदन स्कूल में बी. ए. तक हिंदी भाषा के अध्ययन की सुविधा है तथा शब्द-कोश और अधुनातन पद्धति पर आधारित व्याकरण को विश्लेषित करने की सुविधा है।

एफ. ए. आल्विन की कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्रकाशित 'विनय-पत्रिका' और 'कवितावली' सराहनीय है। लंदन के विद्वान बर्टनपेज का 'हिंदी क्रिया आपरेटर' लेख विचारोत्तेजक है। यू. के. शिक्षा विभाग सचेष्ट है कि बच्चों को मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाए।[2] कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिंदी अध्ययन की व्यवस्था है। यहाँ त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम बी. एड. के स्तर का चल रहा है।[3] उच्चारण के लिए टेपांकित सामग्री, व्याकरण तथा भाषा का मौखिक रूप भी रखा जाता है। साहित्य में प्रेमचंद, उपेन्द्रनाथ अश्क और अज्ञेय की कृतियों की बानगी है। एम. ए. स्तर पर शोध प्रबंध लिखना अनिवार्य है। यार्क विश्वविद्यालय के हिंदी शिक्षण में आधुनिकता तथा नयापन है।[4] प्रो. एस. के. वर्मा की संरचनात्मक पद्धति, हिंदी भाषा का भारतीय/ईरानी शाखा से विकसित इतिहास, हिंदी की विशेषताएँ, वैदिक काल की विशिष्टताएँ, हिंदी की आर्थी संरचना तथा हिंदी का तार्किक आर्थी विज्ञान उल्लेखनीय कार्य हैं।

इनके अतिरिक्त अन्य बहुमूल्य हिंदी पुस्तकों की दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ ब्रिटिश म्यूजियम, तथा इण्डिया लाइब्रेरी में उपलब्ध हैं। लंदन में हिंदी प्रसार परिषद् द्वारा हिंदी की कक्षाएँ भी चलाई जाती है।[5]

(छ) योरप में हिंदी का सबसे बड़ा शिक्षण संस्थान लंदन विश्वविद्यालय का स्कूल आफ ओरियण्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज़ है। सन् 1921 में इस संस्था का नाम इंस्टीट्यूट ऑफ़ ओरियण्टल स्टडीज़ था और सन् 1938 में लंदन स्कूल ऑफ ओरियण्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज़ हो गया।[6] यहाँ हिंदी शिक्षण, डिपार्टमेण्ट ऑफ द लैंग्वेज एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया, पाकिस्तान एण्ड सीलोन के तत्वावधान में होता है। इसके साथ लंदन के काउण्टी स्कूल में हिंदी का शिक्षण ऐच्छिक विषय के रूप में होता है।

(ज) यू. के. में यातायात के मुख्य हवाई अड्डे जैसे हीथ्रो पर हिंदी में सूचना प्राप्त करने की अनुमति तथा ब्रिटिश एयरवेज़ की उड़ानों में भारत से हीथ्रो की यात्रा में हवाई जहाज में हिंदी की उद्घोषणा इस बात का प्रमाण है कि हिंदी की व्यावहारिकता अब इन स्थलों पर अपरिहार्य हो चली है।

(झ) दूर हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत पत्राचार माध्यम से केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा हिंदी शिक्षण से बहुतेरे ब्रिटिश अध्येता लाभान्वित हो रहे हैं तथा उनकी सेवाएँ यू. के. के सरकारी कामकाज में ली जा रही हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से पता चलता है कि यू. के. में हिंदी एक समाज भाषा वैज्ञानिक पक्ष है तथा भाषाई अनुरक्षण निजी संस्कृति के लिए अपरिहार्य हो गया है। भारत में प्रयुक्त मानक हिंदी का प्रचार और प्रसार यू. के. में तीव्र करने की व्यापक संभावनाएँ उभरकर आ रही हैं।

संदर्भिका

1. मोहम्मद मलिक डॉ.	:	ऑस्टिन जोंस कृत 'हिंदी के विकास में विदेशी विद्वानों का योगदान' "भूमिका", नई दिल्ली, 1985
2. भाटिया, कैलाश चन्द्र डॉ.	:	'हिंदी शिक्षण-अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य' में "भारत तथा विदेशों से हिंदी सीखने वाले विदेशियों के लिए उपलब्ध पाठ्यसामग्री की समीक्षा" आगरा, कें. हिं. सं. 1988 पृ. 250
3. सिंह, बच्चू प्रसाद	:	"हिंदी का अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य", विश्व हिंदी, 1988 पृ. 291
4. मोहम्मद मलिक डॉ.	:	राजभाषा हिंदी, दिल्ली 1982, पृ. 203
5. वर्मा, ब्रजेश्वर डॉ.	:	विश्व हिंदी दर्शन, नागपुर, 1975, पृ. ....
6. मोहम्मद मलिक डॉ.	:	राजभाषा हिंदी, दिल्ली, 1982, पृ. 203

इटली में हिन्दी की स्थिति

अश्वनी कुमार श्रीवास्तव

हिंदी विश्व के कई देशों में पढ़ाई जाती है और जिनमें एक प्रमुख देश इटली भी है। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के अंतर्गत भारत-इटली सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत मुझे वेनिस विश्वविद्यालय, इटली में हिंदी पढ़ाने का अवसर मिला।

इटली में रोम, नेपल्स, तोरिनो, मिलान, वेनिस आदि शहरों में हिंदी पढ़ाई जाती है। रोम में, तोरीनो में एवं मिलान में नगर पालिका द्वारा चलाई जा रही संस्थाओं में हिंदी की दो वर्ष की पढ़ाई होती है और उन्हें डिप्लोमा दिया जाता है। मुख्य रूप से हिंदी की पढ़ाई **नेपल्स विश्वविद्यालय** एवं **वेनिस विश्वविद्यालय** में होती है। 1992 से मिलान विश्वविद्यालय में हिंदी का छोटा-सा विभाग खोला गया है, दो व्यक्तियों के साथ जिसमें भारत के श्री गोपाल वशिष्ठ भी सहयोग कर रहे हैं।

रोम विश्वविद्यालय में भी इस तरह का प्रयास किया गया था, जिसमें डॉ. गार्गी गुप्त ने सहयोग दिया था लेकिन जहाँ तक मेरी जानकारी है अब विश्वविद्यालय में हिंदी का विभाग नहीं है। नगर पालिका द्वारा चलाए गए संस्थान, जिन्हें इसमेयो— ISMEO कहा जाता है, में हिंदी की पढ़ाई होती है जहाँ प्रो. श्याम मनोहर पांडेय भी अपना योगदान देते हैं। रोम में भारतीय दूतावास है और राजदूत एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी रोम-विश्वविद्यालय में हिंदी का एक अच्छा विभाग खोलने के लिए प्रयासरत हैं।

तोरिनी में, जो कार बनाने वाले शहर के नाम से जाना जाता है, हिंदी के अध्ययन-अध्यापन एवं उसकी प्रगति के लिए पूरी निष्ठा से डॉ. महेन्द्र संधु कार्यरत हैं।

मिलान में नगर पालिका द्वारा चलाए जा रहे संस्थान में हिंदी के अध्यापन से डॉ. मरिल्या अलबनेज़ी जुड़ी हुई हैं जिनका सहयोग श्री गोपाल वशिष्ठ एवं श्रीमती सुषमा सहाय करती हैं। मरिल्या अलबनेज़ी ने बहुत सारी पुस्तकों का अनुवाद किया है और वे भारतीय संस्कृति बड़ी लगन से पढ़ाती हैं। डॉ. मरिल्या एवं भारत के कौंसिल जनरल श्री एल. केवम के आपसी सहयोग से केंद्रीय निदेशालय के पत्राचार पाठ्यक्रम के अंतर्गत मिलान एवं इटली के बहुत-से विद्यार्थी हिंदी सीख रहे हैं। मिलान विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग प्रारंभ हो गया है। इस समय कौन-कौन लोग कार्य कर रहे हैं, इसकी जानकारी मुझे नहीं है।

नेपल्स विश्वविद्यालय में प्रो. श्याम मनोहर पांडेय के नेतृत्व में हिंदी, संस्कृत एवं भारतीय दर्शन की पढ़ाई अच्छे ढंग से हो रही है। मैंने विभाग को देखा है, विद्यार्थियों से बातचीत हुई है, उनके हिंदी जानने की उत्कंठा से आश्चर्य होता है। भारत के प्रति उनका लगाव बहुत गहरा है। विद्यार्थी भारत जाने के लिए लालायित रहते हैं, भारतीयों से हिंदी में बात करने का सपना मन में सँजोए रहते हैं। कुछ इसी तरह के विचार (स्व.) प्रो. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव ने अपने एक माह के नेपल्स प्रवास (विजिटिंग प्रोफेसर) के समय मुझे बताए थे। उन्हें नेपल्स के विद्यार्थियों को पढ़ाने में बहुत आनंद मिला था।

अतिशयोक्ति नहीं होगी यदि मैं कहूँ कि वेनिस विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई इटली में सबसे अच्छी है। यहाँ तक कि यूरोप के विद्यार्थी भी हिंदी विभाग में मिलेंगे जिसका कारण विभाग से सम्बद्ध व्यक्तियों की कर्तव्यनिष्ठा और भारत के प्रति अपार प्रेम एवं श्रद्धा है।

हिंदी विभाग दिपार्तिमेन्तो दी स्तूदी यूरोसियातिची, (Dipartimento Di Studi Eurociatichi) जिसका अर्थ यूरोप एवं एशिया की प्रमुख भाषाओं का अध्ययन केंद्र है, के अंतर्गत आता है। चीनी, जापानी भाषा के बाद अरबी एवं हिंदी भाषा में लगभग समान संख्या में 25-30 विद्यार्थी होते हैं। हिंदी विभाग से सम्बद्ध व्यक्ति निम्नलिखित हैं—

1. प्रो. बोकाली, प्रोफेसर,	भारतीय एवं चायनीज़ दर्शन तथा संस्कृत
2. जे. जु. फिलिप्पी, एसोसिएट प्रोफेसर	भारतीय एवं चीनी कला
3. मरिओला अफ्रेदी, ,, ,,	हिंदी व्याकरण, पाठ्य पुस्तक शिक्षण एवं अनुवाद
4. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव, असिस्टेंट-प्रोफेसर	दृश्य-श्रव्य सामग्री निर्माण, भाषा व्यवहार एवं परिमार्जन, शोधकार्य में सहयोग
5. चिचिलिया कौस्यो पोलानो, शोध अधिकारी	अनुवाद कार्य एवं कक्षा अध्यापन
6. घनश्याम शर्मा, लेक्चरर-कांट्रैक्ट	कक्षा अध्यापन

प्रो. बोकाली के विषय में इतना ही कहना पर्याप्त है कि वे अपने विषय के दिग्गज हैं एवं संस्कृत अध्ययन-अध्यापन के लिए समर्पित व्यक्ति हैं।

डॉ. फिलिप्पि भारतीय कला की बारीकियों से परिचित हैं। उनके पास भारत आकर स्वयं के बनाए इतने स्लाइड्स हैं जिसकी कल्पना अन्य के पास नहीं की जा सकती है। उनके कलास के समय पूरा हाल खचाखच भरा रहता था। केवल विद्यार्थी ही नहीं अन्य विषयों के अध्यापक वर्ग, जन सामान्य आदि भी शामिल होते थे, जो सिद्ध करते हैं कि लोगों में भारतीय संस्कृति एवं कला के प्रति कितना प्रेम है।

डॉ. मरिओला अफ्रैदी की कर्तव्य निष्ठा एवं भारत के प्रति प्रेम को इस बात से ही समझा जा सकता है कि वे प्रतिवर्ष 1973 से अब तक दिसम्बर-जनवरी में भारत आती हैं। अपनी हिंदी को सुधारने के लिए, कवियों, साहित्यकारों से विचार-विमर्श के लिए और दिल्ली में रहने पर हिंदी नाटक देखने के लिए। मरिओला ने जगदलपुर (मध्य प्रदेश), बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि सुदूर गाँवों में रहकर काम किया। गुरू गोरखनाथ पर तथा कैफ़ी आजमी (मशहूर शायर) पर काम कर रही हैं। बहुत सारे साहित्यकारों की कृतियों (प्रेमचंद से लेकर अज्ञेय तक) का इतालवी में अनुवाद किया है। मरिओला के शुद्ध लेखन और विशुद्ध उच्चारण से आश्चर्य होता है। मुझसे कहती थीं कि भारत में मुझे कहीं भी भाषा को लेकर परेशानी नहीं हुई बल्कि मेरा काम आसान हो जाता है। वास्तव में हिंदी के लिए समर्पित महिला हैं। डॉ. मरिओला ने प्रेमचन्द के 'गोदान' तथा कुँवर नारायण की काव्य कृति 'आत्मजयी' का इतालवी में अनुवाद किया है।

डॉ. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव की लोकप्रियता इस बात से थी कि वे केवल एक वर्ष के लिए गए थे लेकिन डॉ. मरिओला के भारत सरकार से विशेष अनुरोध पर पाँच वर्ष (1987-92) तक रहे जिसका कारण था उनकी कर्तव्य निष्ठा, लगन एवं प्रभावशाली हिंदी अध्यापन कार्य; विद्यार्थियों के अनुरूप दृश्य-श्रव्य सामग्री का निर्माण एवं भाषा प्रयोगशाला द्वारा कक्षा अध्यापन कार्य; बिना किसी पारिश्रमिक के विद्यार्थियों के शोध कार्य में सहयोग।

डॉ. चिचिलिया कौस्यो पोलानो ने अमृतलाल नागर पर विशेष कार्य किया है बहुत-से अनुवाद कार्य किये हैं एवं वर्तमान में भारतीय सिनेमा के विभिन्न पहलुओं पर कार्य कर रही हैं। प्रमुख अनुवाद कार्य फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' का इतालवी अनुवाद है।

डॉ. घनश्याम शर्मा मेधावी, परिश्रमी एवं शोध कार्य में रुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। अनेक देशों में सेमीनार, गोष्ठी में भाग लेते रहे हैं एवं 'सिमियाटिक्स' के क्षेत्र में एक चर्चित नाम बनेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। बोलोन्या, इटली में प्रो. एम्बर्तो एक्को, जो सिमियाटिक्स के विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ हैं, के साथ कार्य कर रहे हैं। डॉ. शर्मा के. हि. सं. आगरा में शोध सहायक के रूप में कार्य कर चुके हैं।

अब वेनिस विश्वविद्यालय में हिंदी की स्थिति के बारे में विस्तार से चर्चा करूँगा।

हिंदी विभाग में विद्यार्थी को हिंदी चार वर्ष (प्रथम से चतुर्थ वर्ष) तक पढ़नी होती है। विद्यार्थी के लिए हिंदी एक मुख्य विषय होगा लेकिन इसके साथ ही उसे सामाजिक विज्ञान (इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र) में से एक विषय लेना होता है। भाषा वर्ग में उसे **अरबी, उर्दू, संस्कृत** में से एक विषय लेना होता है। भारतीय एवं चायनीज़ दर्शन तथा भारतीय एवं चायनीज़ कला का विषय लेना होता है। इस प्रकार हिंदी के अतिरिक्त इन विषयों पर उसे दो-दो परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना होता है। उसके बाद एक विषय भारतीय कला, साहित्य, संस्कृत, दर्शन, साहित्यिक अनुवाद आदि पर एक शोध प्रबंध (थीसिस) लिखना होता है। शोध प्रबंध

के लिए गठित कमेटी (13 व्यक्तियों की, 130 अंक की) द्वारा मौखिकी (Viva-voce) के बाद हिंदी में लाउरिया (Laurea) अर्थात् डॉक्टरेट की उपाधि दी जाती है। इस डिग्री के बाद ये विद्यार्थी डॉक्टर शब्द का प्रयोग कर सकते हैं।

विद्यार्थियों को प्रथम वर्ष में हिंदी व्याकरण का ज्ञान डॉ. मरिओला अफ्रेदी देती हैं। साथ ही साथ पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्यपुस्तक भी पढ़ाती हैं। अनुवाद के बारे में जानकारी देती हैं तथा द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ वर्ष में हिंदी-इतालवी, इतालवी-हिंदी अनुवाद कार्य डॉ. मरिओला एवं डॉ. चिचिलिया कक्षा में कराती हैं। एक बात मुझे सदैव खटकती रही कि प्रथम वर्ष के बाद विधिवत व्याकरण की पढ़ाई नहीं होती जिसके कारण विद्यार्थियों को बाद में कठिनाई का अनुभव होता है। प्रथम वर्ष और द्वितीय वर्ष में ही लिखित परीक्षा होती है, वह भी अनुवाद कार्य की— हिंदी से इतालवी में तथा इतालवी से हिंदी में। अन्य सभी हिंदी एवं अन्य विषयों की परीक्षाएँ मौखिक होती हैं। परीक्षाएँ तीस 30 अंक की होती हैं और 15 से कम अंक पाने वाले विद्यार्थियों को दुबारा परीक्षा देनी होती है। किसी विद्यार्थी को 25-28 अंक मिलते हैं तो उससे पूछा जाता है कि आपको यह अंक दिया जा रहा है, आप सहमत हैं? यदि विद्यार्थी और अधिक अच्छा करना चाहता है तो वह कहता है कि मैं अगली बार परीक्षा में बैठूँगा, मुझे कम से कम तीस (त्रेंता— Trenta) या विशेषता के साथ तीस अंक (त्रेंता ए लोदे— Trenta e lode) चाहिए। इटली में परीक्षाएँ जनवरी-फरवरी; जून-जुलाई; सितम्बर-अक्टूबर में संबंधित प्रोफेसर द्वारा नोटिस बोर्ड पर नोटिस चिपका देने भर से ही हो जाती हैं। हाँ, इसकी सूचना विभाग के कार्यालय में भी रहती है। फोन से प्रोफेसर कार्यालय सचिव को फोन कर देंगे/देंगी और कार्यालय सचिव नोटिस लगा देंगे— विद्यार्थियों को फोन भी किया जा सकता है और निश्चित तारीख पर परीक्षाएँ सम्पन्न हो जाती हैं और अंक सूची विश्वविद्यालय को भेज दी जाती हैं। भारत में होने वाली परीक्षा पद्धति से बिल्कुल भिन्न। विद्यार्थी शोध प्रबंध जमा करने से पहले या बाद तक (अनुत्तीर्ण प्रश्न पत्रों या विषयों में) परीक्षाएँ देते रहते हैं।

शोध प्रबंध एवं उपाधि

जब तक सभी परीक्षाएँ सम्पन्न नहीं हो जातीं और शोध प्रबंध तथा फीस विश्वविद्यालय में जमा नहीं हो जाती तब तक मौखिक परीक्षा (Viva-Voce) के लिए समिति का गठन नहीं होता। एक और दिलचस्प बात होती है कि तेरह लोगों की समिति में भाषा विभागों (चायनीज़, जापानीज़, अरबी, हिंदी, उर्दू) के सदस्य, उपकुलपति द्वारा नामित सदस्य (अध्यक्ष), शोध कराने वाले अध्यापक एवं अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं। एक ही साथ हिंदी, जापानी, चीनी, अरबी, कला एवं दर्शन से संबंधित विषयों पर लाउरिया-डॉक्टरेट पाने वाले शोध कर्त्ता भाग लेते हैं। शोध कर्त्ता एवं उसके मार्ग दर्शक के मध्य विषय विशेष पर उसी भाषा में प्रश्नोत्तर होते हैं। हिंदी शोध कर्त्ता को हिंदी में 15-20 पृष्ठ तक थीसिस का सार लिखना होता है। बाद में प्रश्नोत्तर का माध्यम समिति के सदस्यों एवं शोधकर्त्ता के मध्य इतालवी हो जाता है। कोई भी सदस्य प्रश्न पूछ सकता है। तत्पश्चात् अध्यक्ष उपस्थित व्यक्तियों से भी प्रश्न आमंत्रित कर सकते हैं जिनका उत्तर शोध कर्त्ता को देना होता है। अंत में शोध कर्त्ता एवं

उपस्थित व्यक्ति कक्ष से बाहर चले जाते हैं और समिति के सदस्य आपस में विचार-विमर्श करके अंक प्रदान करते हैं। 130 अंक में 125 से 129 अंक तक की उपलब्धि ठीक मानी जाती है। 130 अंक या (Cento Trenta e lode = 130 e lode) विशेष टिप्पणी के साथ 130 अंक प्राप्त कर्त्ता विशिष्ट कोटि में आते हैं जिसकी तुलना यदि भारत से करें तो स्वर्ण पदक प्राप्त कर्त्ता कह सकते हैं। इस विशिष्ट कोटि का महत्व उसके उज्ज्वल भविष्य से होता है। सर्वप्रथम शोध कर्त्ता को अध्यक्ष बधाई देता है, उसके बाद उसका मार्गदर्शक, फिर अन्य लोग। कमरे से बाहर आने पर माता-पिता तथा अन्य मित्रगण द्वारा शोध कर्त्ता को पत्तियों से बना गोल घेरे का मुकुट (सांकेतिक रूप— ईसामसीह के सर पर काँटों का ताज) पहनाया जाता है जिसका अर्थ होता है कि तुमने काँटो का ताज पहनकर सक्रिय जीवन में प्रवेश किया है, अपनी बुद्धिमानी से काँटों को हटाकर अपने जीवन को सुखमय बनाओ।

ऐसे अवसरों पर एक बात जो मैंने महसूस की कि सम्पूर्ण वातावरण भावना प्रधान हो जाता है और विश्व में मनुष्य के सुख-दुख की संवेदनाएँ एक जैसी ही हैं। मुझे कम से कम 5-6 ऐसे अवसरों पर सम्मिलित होने का निमंत्रण मिला था।

1. हिंदी विभाग के तीन विद्यार्थियों की उपलब्धि के बारे में अवश्य बताना चाहूँगा— श्रीमती योलान्दा रोजिनी (इतालवी) जिन्होंने इक्यासी (81) वर्ष की उम्र में हिंदी में लाउरिया (डाक्टरेट) की उपाधि प्राप्त की। इटली में दूरदर्शन, रेडियो, पत्र-पत्रिकाओं में फोटो सहित योलान्दा का ही उल्लेख था। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में इनका नाम इसलिए सम्मिलित नही हो सका क्योंकि भाषा वर्ग में फ्रांस के 82 वर्ष से ऊपर के एक व्यक्ति ने लाउरिया की उपाधि प्राप्त की है। योलान्दा ने प्रो. फिलिप्पी के मार्गदर्शन में अपना शोध कार्य पूरा किया था।

2. कु. फ्रेंचेस्का ओर्सिनी (इतालवी) ने राजेन्द्र यादव की बहुत-सी कहामियों का अनुवाद किया और शोध कार्य भी राजेन्द्र यादव की कहानियों पर किया। इन्हें Cento Trenta e lode विशेषता के साथ एक सौ तीस अंक अर्थात लाउरिया (डाक्टरेट) की उपाधि में स्वर्ण पदक के समकक्ष सम्मान प्राप्त हुआ। कु. फ्रेंचेस्का ने के. हि. सं. दिल्ली केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिंदी की शिक्षा प्राप्त की। लंदन के अफ्रीकी एवं एशियन अध्ययन केन्द्र (S. O. A. S.) के हिंदी विभाग में छात्रवृत्ति पर शोध कार्य करने (निराला पर) एवं कुछ घंटे पढ़ाने का भी कार्य किया। हिंदी व्याकरण पर प्राथमिक पुस्तक लिखने वाले इंग्लैंड के विद्वान डॉ. मैक ग्रेगर के स्थान पर कु. फ्रेंचेस्का की कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में नियुक्ति हुई है जिस पर वेनिस के हिंदी विभाग को गर्व महसूस होगा, साथ ही साथ मेरी प्रिय छात्रा के कारण मैं भी गौरवान्वित हूँ। कु. फ्रेंचेस्का के हिंदी प्रेम और हिंदी में कार्य करने की क्षमता को देखकर मैं आश्चर्यचकित रहता था। कु. फ्रेंचेस्का के हिंदी में शून्य से वर्तमान प्रगति के मध्य मैं सहायक कड़ी के रूप में अवश्य जुड़ा रहा और अपने इस सार्थक प्रयास पर मुझे खुशी है।

3. श्री थॉमस डैनहार्ट (जर्मन) ने हिंदी एवं सहयोगी परीक्षाएँ अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। थॉमस ने हिंदी व्याकरण का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और अच्छे वाक्य शुद्ध उच्चारण के साथ बोलते थे। थॉमस की विशेषता थी कि इन्होंने भाषा वर्ग में उर्दू लिया और दोनों परीक्षाओं में तीस में से तीस अंक विशेष टिप्पणी के साथ प्राप्त किया। प्रो. फिलिप्पी के मार्गदर्शन में पाकिस्तान के मशहूर सूफी शायर के कलामों का इतालवी में अनुवाद किया और सूफी शायरों पर शोध कार्य कर विशेषता के साथ लाउरिया (डाक्टरेट) की उपाधि प्राप्त की। श्री थॉमस कई बार भारत एवं पाकिस्तान की यात्रा कर चुके हैं। आजकल (S. O. A. S. London) लंदन के अफ्रीकी एवं एशियन अध्ययन केन्द्र में छात्रवृत्ति पर शोध कार्य कर रहे हैं। इनकी इच्छा जर्मन दूतावास में काम करने की है, वहाँ से भारत आने की है। भारत से विशेष लगाव है और होटलों की अपेक्षा परिवार के साथ रहना पसंद करते हैं जहाँ हिंदी का वातावरण हो। वेनिस में मेरे साथ रहते थे और आगरा में सदैव मेरे परिवार के साथ।

इस प्रकार इन तीनों विद्यार्थियों ने हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन में विशेष प्रगति की जिसका श्रेय वेनिस विश्वविद्यालय, इटली के हिंदी विभाग के प्रबुद्ध सदस्यों को जाता है क्योंकि इस प्रकार के क्षमतावान हिंदी विद्यार्थी इटली के अन्य केन्द्रों से नहीं निकले। वेनिस विश्वविद्यालय में हिंदी की स्थिति सुदृढ़ है।

हिन्दी रोमानिया में

सूरजभान सिंह

रोम एयरपोर्ट की भीड़ और चकाचौंध के बाद जब आपका विमान दो घंटे की उड़ान के बाद बुख़ारेस्त के शांत और संयत एयरपोर्ट पर पहुँचता है तो आप अपने को अचानक भाषाहीनता की स्थिति में पाते हैं। आप रोमानियन नहीं जानते तो अंग्रेजी भी आपका साथ नहीं देती। एयरपोर्ट की औपचारिकता को निभाते हुए आप अपनी बात कहने के लिए अंग्रेजी जानने वाले किसी कर्मचारी की इधर-उधर खोज करने लग जाते हैं। तभी आपके भारतीय पासपोर्ट को देखकर एअरपोर्ट का एक रोमानियन कर्मचारी हिंदी में आपसे पूछ लेता है— "आप इंडिया से हैं? आइए, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?" थोड़ी हिंदी सीखे इस रोमानियन कर्मचारी ने बुख़ारेस्त आने वाले कई भारतीयों को सुखद आश्चर्य में डाल दिया है। आप अचानक अनुभव करते हैं किसी ने आप ही की भाषा से पहली भी बार में आपको जीत लिया। आप पहली बार भाषा की इस नई शक्ति को पहचानते हैं।

हिंदी भाषा और भारत के प्रति इस अनुराग के प्रमाण रोमानिया में रहने वाले हर भारतीय को कदम-कदम पर मिलते ही रहते हैं। हिंदी भाषा के प्रति उनका अनुराग संस्कृत और प्राचीन भारतीय दर्शन के आकर्षण से शुरू होता है। भारत उनके लिए एक रहस्यमय देश है। बस में बगल के व्यक्ति को पता चले कि आप भारतीय हैं तो वह यह बताना नहीं भूलेगा कि राजकपूर की फिल्म "आवारा" उसने चार बार देखी है; उसने गाँधी, नेहरू और टैगोर का नाम सुना है। उसे भारतीय संगीत बहुत पसंद है। कई जिज्ञासु आपके सामने ऐसे प्रश्नों की झड़ी लगा देंगे जिनमें से कइयों के उत्तर शायद आपके पास स्वयं न हों— आपके देश में कौन-सा धर्म है? आपके इतने अधिक भगवान क्यों हैं? आप गाय का माँस क्यों नहीं खाते? क्या आपके यहाँ गाएँ सड़कों पर लेटी रहती हैं? क्या वे दुकानों में घुसकर खाना माँगती हैं? आपकी महिलाएँ माथे पर बिंदी क्यों लगाती हैं? साड़ी की सिलाई कैसे की जाती है। आप लोग छुआछूत क्यों बरतते हैं? वेद कब लिखे गए? क्या आप योगा जानते हैं? नहीं तो क्यों नहीं।

यह मात्र बौद्धिक जिज्ञासा नहीं— इसके पीछे उस पूर्व को समझने की एक भूख छिपी है जो उनके जीवन से धीरे-धीरे दूर होता जा रहा है। जो चीज़ भूगोल और इतिहास से जितनी दूर होती है वह उतना ही रहस्यमयी होती है। भारत भी उनमें से कइयों के लिए एक रहस्य है। भारत उनके लिए पूर्व का सबसे बड़ा प्रतिनिधि देश है, सबसे बड़ी प्रतिनिधि संस्कृति है। भारत के बारे में अधिक न जानने वाला रोमानियन भी इतना तो अवश्य जानता है कि भारत की प्राचीन संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है, जिसके सामने पश्चिम की महान् यूनानी

और रोमन संस्कृति भी शिशु है। वह यह भी जानता है कि वेद-पुराण आदि भारतीय ग्रन्थ मानव सभ्यता की प्राचीनतम कृतियाँ हैं।

रोमानियन मानस की पश्चिमी परत के नीचे एक पूर्व भी छिपा है जो उसके अतीत और उसकी प्राचीन परम्परा से जुड़ा है। पूर्व की इस परत पर पश्चिम की जितनी मोटी परत जमती जाती है उतना ही पूर्व के धीरे-धीरे दृष्टि से ओझल होने की पीड़ा बढ़ती जाती है। इस पीड़ा की पूरी तीव्रता और गहराई का एहसास मुझे उस दिन हुआ जब सड़क पर चलती हुई एक अनजान अबोध तेरह-चौदह वर्षीय लड़की ने, जो बहुत देर से मेरी पत्नी के पीछे-पीछे चलती आ रही थी, मेरी पत्नी से अनुरोध किया, ''क्या मैं आपके हाथों को छू सकती हूँ?''

भारतीय हाथों को बड़ी उत्कंठा से स्पर्श कर लेने के बाद आत्मविभोर होकर उसने जो वाक्य कहे और भी अधिक मर्मस्पर्शी थे— मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं एक भारतीय को स्पर्श कर रही हूँ। मैंने भारत के बारे में इतना सुना है और फिल्मों में भारतीयों को देखा है, लेकिन उन्हें अपने निकट प्रत्यक्ष देखने और छूने की मेरी अभिलाषा आज पूरी हुई। सचमुच, रोमानिया मानस में कहाँ पूर्व खत्म होता है और कहाँ पश्चिम शुरू, यह बताना कठिन है।

भारतीय मानस और रोमानिया

रोमानिया में हिंदी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के अध्ययन की परंपरा पूर्व की इसी रहस्यमयता से शुरू होती है। संस्कृत इस रहस्यमयता का द्वार है। अत: रोमानिया ही नहीं, बल्कि समस्त यूरोप में भारतीय भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन संस्कृत अध्ययन से ही शुरू होता है।

भारत के प्राचीन ज्ञान भंडार को भारत की चारदीवारी से निकालकर पश्चिमी जगत् के सामने रखने का श्रेय पश्चिमी विद्वानों को ही है। प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान विलियम जोन्स (1746-1796) ने संस्कृत का अध्ययन किया और संस्कृत ग्रन्थों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। उन्होंने सन् 1776 ई. में बंगाल में ''रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ इंडिया'' की स्थापना की जिसका एक उद्देश्य प्राचीन भारतीय ग्रंथों पर खोज-कार्य कर विश्व में उसका प्रचार करना था।

उधर जर्मनी में फ्रेडरिख़ वान श्लेगल (1772-1829), उनके भाई अडोल्फ डब्ल्यू श्लेगल (1767-1845), विल्हेम फॉन हाम्बोल्ट (1767-1835) आदि कुछ विद्वानों ने न केवल संस्कृत का अध्ययन किया बल्कि संस्कृत साहित्य में छिपी हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता और संस्कृति को विश्व रंगमंच पर लाकर खड़ा कर दिया। इन सबसे महत्वपूर्ण योगदान था फ्रेडरिख़ मैक्समूलर (1823-1900) का उन्होंने **पूरब की पवित्र पुस्तकें** नाम से एक पुस्तकमाला शुरू की जिसके अंतर्गत उन्होने संस्कृत की 50 पुस्तकों का अनुवाद प्रकाशित किया।

इसी प्रकार की लहर अमेरिका और फ्रांस में भी उठी। अमेरिका के विलियम डी. व्हिटनी (1827-1894) ने सन् 1879 ई. में संस्कृत का व्याकरण लिखकर अपने देश में संस्कृत को पूर्णत: प्रतिष्ठित कर दिया। वैसे इससे पहले येल विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर वुडवर्ड एल्ब्रिज

सेलिस्बरी वहाँ संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन का श्रीगणेश कर चुके थे। उधर फ्रांस में भी प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ सिलवें लेवी, लुई रनु और जी. फ़िल्योजा के प्रयासों से संस्कृत का अध्ययन शुरू हो चुका था। लगभग 1863 में हालैंड में एक संस्कृत अध्ययन केन्द्र खुला। सन् 1938 में स्वीडन के प्राचीनतम विश्वविद्यालय उपसाला में संस्कृत अध्ययन की व्यवस्था शुरू हुई।

कोई आश्चर्य नहीं कि भारत-विद्या और संस्कृत की लहर रोमानिया के तटों तक भी पहुँच गई। इसका प्रमाण वह रोमानियन कवि सौ साल पहले ही दे चुका था जिसकी पंक्तियाँ हर रोमानियन के लिए आज ब्रह्म वाक्य हैं और जिन्हें एयरपोर्ट के पोर्टर से लेकर बड़े से बड़ा राजनीतिज्ञ भी इस तरह दनदनाते हुए उगल जाता है जैसे भारत में परीक्षा से पहले छात्र उद्धरण देने के लिए कविताओं की पंक्तियाँ रट लेते हैं। इस महान् कवि मिहाई एमिनेस्कु (1850-1889) ने वियाना और बर्लिन में संस्कृत का अध्ययन किया जहाँ पहली बार उनका साक्षात्कार ऋग्वेद, उपनिषद व बौद्ध ग्रंथों से हुआ। फलत: उनकी कविताओं में जगह-जगह भारतीय चिंतन और रहस्यमयता के दर्शन होते हैं। कौन कह सकता है कि ये पंक्तियाँ रवीन्द्रनाथ टैगोर या जयशंकर प्रसाद की नहीं, एमिनेस्कु की हैं :

> तेरा समस्त जीवन लगता बस एक क्षण
> एक मधुर क्षण लगता अनंत काल।
>
> ....
>
> अब अव्यक्त था तब असत् था
> यद्यपि प्रत्येक सत् इसमें निहित था
> जब तम से तम लिपटा हुआ था
> क्या वह गह्वर था, गुफा थी
> जल का अनंत विस्तार था?
>
> ....
>
> समस्त जगत् एक स्थगित क्षण,
> काल आए काल उड़ जाए।
>
> ....
>
> प्रिये, काल-लहरी से ऊपर उठती तुम,
> उठते लंबे केश तुम्हारे,
> संगमरमरी मृदु बाहें तुम्हारी।

एमिनस्कु रोमानिया के राष्ट्रकवि हैं, और पूरी तरह लोगों के दिल और दिमाग पर छाए हुए हैं। बंगला जगत् में जो स्थान रवीन्द्रनाथ टैगोर का है और अंग्रेजी में शेक्सपियर का,

रोमानिया में वही स्थान मिहाई एमिनेस्कु का है। ऐमिनेस्कु ने 40 वर्ष के अपने संक्षिप्त जीवनकाल में संस्कृत-रोमानियन शब्दकोश और संस्कृत व्याकरण पर रोमानियन में पुस्तक भी लिखने का प्रयास किया जो अधूरा ही रहा। बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय की बंगला और संस्कृत की प्राध्यापिका डॉ. अमिता बोस ने इस अधूरे कार्य को एक निश्चित स्वरूप देकर प्रकाशित करवाया है।

भारतीय चिंतन की छाया एमिनेस्कु के बाद के कई रोमानियन कवियों, लेखकों और विचारकों में भी मिलती है। एमिनेस्कु के ही काल के एक अन्य कवि लुच्यान ब्लागा की कुछ पंक्तियाँ देखिए :

मैंने पलकों की छाँव किसी चेहरे पर पानी चाही है,
मैंने यह छाँव पूरब पश्चिम
दोनों के परी-लोकों के भूगोल में ढूँढ़ी है,
पर मुझे यह छाँव कभी नहीं मिली
कभी नहीं मिली।

सुप्रसिद्ध रोमानियन महाकवि कोश्बुक (1866-1918) ने अभिज्ञान शाकुंतलम्, ऋग्वेद और महाभारत के कुछ खंडों का रोमानियन में अनुवाद किया। प्रसिद्ध रोमानियन भाषा-वैज्ञानिक ब. प. हश्देउ (1838-1907) ने संस्कृत भाषा के संदर्भ में रोमानियन आदि भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। बीसवीं सदी के कई रोमानियन कवि, लेखक और दार्शनिक भी भारतीय चिंतन से बहुत प्रभावित हुए, जिनमें प्रमुख हैं कवि लुच्यात ब्लागा और इयोन पिलात, चिंतक तथा विद्वान मिर्च्या एलियादे-उपन्यासकार लिविउ रेव्यार्नु आदि।

सन् 1926 में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के बाद गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर रोमानिया की यात्रा पर आए जिसे रोमानिया के लोग आज भी बड़े स्नेह से याद करते हैं। इसके बाद रोमानिया और भारत के बीच साहित्यक और सांस्कृतिक संबंध और घनिष्ट हो गए।

भारत-विद्या के प्रेमियों में आज का सबसे बड़ा नाम सर्ज्यु-अल जार्जे का है जिन्होंने भारतीय दर्शन और चिंतन पर कई किताबें लिखी हैं। वे रोमानिया के पहले ऐसे संस्कृतज्ञ थे जिन्होंने भगवद्गीता का अनुवाद सीधे संस्कृत के माध्यम से किया, अंग्रेज़ी अनुवाद के माध्यम से नहीं। वे पाणिनि के अनन्य भक्त थे। उन्होंने कई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी यह स्थापित करने की कोशिश की कि भारतीय चिंतन परंपरा कई मामलों में यूनानी चिंतन परंपरा से आगे है।

डॉ. जार्जे से बुख़ारेस्त में कई बार मिलने का मौका मिला। उनके अध्ययन-कक्ष को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि यह किसी भारतीय का मकान नहीं है— चारों ओर भारतीय या भारत पर लिखी पुस्तकें, भारतीय मूर्तियाँ, भारतीय वस्त्र, भारतीय उपहार और इनसे

जुड़े भारत के अनगिनत संस्मरण और स्मृतियाँ। सचमुच भारत के प्रति उनका अनुराग और मोह अविश्वसनीय-सा था। उनकी अंतिम अभिलाषा एक बार फिर भारत जाने की थी जो कई बाधाओं के बावजूद अंततः सफल हुई और वे विश्व संस्कृत सम्मेलन में भाग लेने के लिए सन् 1982 ई. में भारत आए। संयोग कहिए या दुर्भाग्य, भारत लौटने के पाँचवें दिन ही उन्होंने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया, मानों चिरमनोकामना पूरी होने के बाद अब शरीर की भूमिका समाप्त हो गई हो। उनकी मृत्यु के बाद उनके विशाल पुस्तक-संग्रह को खरीदने के लिए रोमनिया के भारत प्रेमियों में होड़-सी लग गई। उनकी विधवा पत्नी ने पुस्तकें बेचने से इंकार कर दिया। उनकी मृत्यु से कुछ माह पूर्व ही भारतीय चिंतन और दर्शन पर रोमानियन भाषा में उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी।

हिंदी अध्ययन की परंपरा

यूरोप में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया अपेक्षाकृत अधिक देर से प्रारंभ हुई। गिलक्राइस्ट तथा कैलाग (1875) के हिंदुस्तानी तथा हिंदी व्याकरणों के प्रकाशित होने के बाद कुछ यूरोपीय देशों में फुटकर रूप से हिंदी का अध्ययन-अध्यापन शुरू हुआ, जैसे, फ्रांस में 1828 के आसपास, रूस में 1918 में, जर्मनी में 1921-25 के आसपास, चेकोस्लोवाकिया में 1925 से तथा स्वीडन में 1938 से किसी न किसी रूप में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था शुरू हो चुकी थी। सन् 1801 में सर्वप्रथम रूस में हिंदी व्याकरण के छपने का उल्लेख मिलता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जब यूरोप के कई देशों के सैनिकों को दक्षिण एशिया आना पड़ा तो हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने की व्यावहारिक आवश्यकता का उन्हें अनुभव हुआ। फलस्वरूप हिंदी अध्ययन के प्रति यूरोपीय देशों में कुछ रुचि दिखाई दी, लेकिन वस्तुतः भारत की स्वतंत्रता (1947) तथा 1950 में भारतीय संविधान में हिंदी के संघीय राजभाषा घोषित होने के बाद ही अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर हिंदी के व्यक्तित्व को स्वरूप तथा आकार प्राप्त हुआ और अनेक यूरोपीय देशों में विश्वविद्यालय स्तर पर धीरे-धीरे इसके अध्ययन-अध्यापन की नियमित व्यवस्था शुरू होने लगी।

सन् 1958 में "नाटो" देशों की सिफारिश पर एशिया तथा अफ्रीकी भाषाओं के लिए 26 सदस्यों का एक अध्ययन दल बना जिसने 1959 में अपनी रिपोर्ट में कहा कि यूरोपीय तथा अमेरिकी देशों में एशियाई भाषाओं के अध्ययन के लिए बड़े पैमाने पर आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। रिपोर्ट में 33 भाषाओं का उल्लेख है जिनमें से भारत की 12 भाषाएँ हैं: हिंदी, उर्दू, बंगला, उड़िया, पंजाबी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और नेपाली। साथ ही संस्कृत और पाली को भी इसमें शामिल कर लिया गया।

इस शताब्दी के छठे दशक में यूरोप में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन कार्य अपनी

चरमावस्था में रहा क्योंकि इस समय भारत में हिंदी की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक निश्चित तथा सुदृढ़ थी और लगता था हिंदी को धीरे-धीरे राजभाषा के रूप में यथोचित प्रतिष्ठित स्थान मिल जायेगा और भविष्य में भारत आने वाला हर विदेशी हिंदी का ज्ञान आवश्यक समझने लगेगा। रूस में बड़े पैमाने पर हिंदी के अनुवादक तथा दुभाषिए तैयार करने की योजना बनी। सन् 1971 में रोमानिया में हिंदी को अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी, रूसी आदि अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं के समकक्ष स्थान देते हुए बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय में मुख्य विदेशी भाषा के रूप में इसका अध्यापन शुरू हुआ। अमेरिका, पश्चिमी जर्मनी तथा जापान आदि के विभिन्न विश्वविद्यालयों में बड़े पैमाने पर हिंदी अध्यापन का विस्तार हुआ।

गत एक-दो दशक के दौरान जब से हिंदी की स्थिति स्वयं अपने देश में अनिश्चित तथा उपेक्षित होनी शुरू हो गई और अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ़ता गया, विदेशों में मोहभंग की स्थिति शुरू हो गई। बंगला भाषा पढ़ने वाले विदेशी छात्रों को बंगलादेश के दूतावास में नौकरी मिलती है, जापानी जानने वाले विदेशी छात्र को जापानी दूतावास में, लेकिन शायद ही किसी भारतीय दूतावास में हिंदी ज्ञान के कारण किसी विदेशी को नौकरी मिली होगी। फिर क्यों कोई विदेशी हिंदी पढ़े?

हिंदी के विदेशी छात्र जब भारत आते हैं या भारतीय शिष्टमंडल आदि के सदस्य जब विदेश जाते हैं तो विदेशी छात्र उत्सुकतावश हिंदी में बोलने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन भारतीय उनसे अंग्रेजी में ही बात करते हैं। जब हिंदी का विद्यार्थी, बड़े उत्साह से हिंदी बोलते हुए भारतीय राजदूतावास पहुँचता है तो वहाँ का लगभग हर व्यक्ति उसके उत्साह पर अंग्रेज़ी का ठंडा पानी छिड़कता चला जाता है। यहीं से उसका मोहभंग शुरू हो जाता है।

विदेशों की सरकारें यह अब भलीभाँति समझ चुकी हैं कि भारत के साथ किसी भी प्रकार का संपर्क स्थापित करने या पत्र-व्यवहार करने के लिए हिंदी नही अंग्रेज़ी का प्रयोग वांछित है, अत: वे क्यों धन और समय बर्बाद कर विश्वविद्यालयों में हिंदी को पोषती रहें?

विश्वव्यापी मुद्रास्फीति के कारण यूरोप के संपन्न-से-संपन्न देशों को भी अपने खर्चों में कमी करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है और विदेशी भाषाओं में हिंदी पर यह कुठाराघात सबसे पहले पड़ता है। पश्चिमी जर्मनी में जहाँ 13 विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्यापन होता था, अब चर्चा है कि केवल एक विश्वविद्यालय में ही भारतीय भाषाओं का अध्ययन केंद्रित कर दिया जाएगा। यूरोप के कुछ देशों में जहाँ हिंदी प्राध्यायपकों के पद रिक्त हो गए हैं, वे भरे नहीं जा रहे हैं, हिंदी पुस्तकों की संख्या में वृद्धि रोक दी गई है और जहाँ भारत के साथ सांस्कृतिक समझौतों की अवधि पूरी हो गई वहाँ उन्हें नवीकृत नहीं किया जा रहा है। अत: आश्चर्य नहीं कि आज विदेशों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन अपने निम्नतम बिंदु पर है। यह कटु सत्य है जिसका निदान भावनात्मक स्तर पर नहीं यथार्थ के स्तर पर ही किया जाना चाहिए।

रोमानिया में हिंदी

रोमानियन लेटिन भाषा से निकली एक रोमांस भाषा है जो पूर्व यूरोप स्थित रोमानिया के 6 करोड़ 26 लाख लोगों की मातृभाषा है। रोमांस भाषा-परिवार के अन्य सदस्य हैं : फ्रांसीसी, स्पैनिश, इतालवी और पुर्तगाली। हिंदी का जो संबंध संस्कृत से है, लगभग वही संबंध इसका लैटिन से है। व्याकरणिक संरचना और शब्द भंडार भी इसे लैटिन से ही विरासत में मिला है। मध्यकाल में रोमानियन शब्दों पर रूसी आदि स्लाविक भाषाओं का भी प्रभाव पड़ा, लेकिन उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में रोमानियन भाषा से विदेशी शब्दों और रूपों को हटा दिया गया।

इतिहास के किसी कालखंड में रोमानिया प्रदेश और भारत के बीच भाषाई अथवा जातीय संपर्क के कुछ स्पष्ट अवशेष हमें मिलते हैं। यह मात्र संयोग नहीं कि हिंदी के कुछ शब्द थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ रोमानियन भाषा में मौजूद हैं। इन शब्दों का संबंध या तो संस्कृत से है या फिर अरबी, फ़ारसी, तुर्की, या पुर्तगाली आदि भाषाओं से, जो हिंदी में भी प्रयुक्त होते हैं। कुछ शब्दों के नमूने देखिए :

हिंदी	रोमानियन	
कमीज़	कमाश:	(camașa)
कमरा	कामेरा	(camera)
मुसाफिर	मुसाफ़िर	(mnsafir)
दुश्मन	दुश्मान	(dușman)
किराया	किरिए	(chirie)
पायजामा	पिजामा	(pijama)
दांत	दिन्ते	(dinte)
आज	आज़	(azi)
तू	तु	(tu)
पत्थर	पियात्रा	(piatra)
जुराब	चियोराप	(ciorap)
अस्ति	एस्ते	(este)

ऐसा हो सकता है कि हम जीवनभर अपनी भाषा का व्यवहार करते रहें, लेकिन यह न जान पाएँ कि इसकी अपनी ऐसी कौन-सी खूबी या पहचान है जो इसे और भाषाओं से अलग करती है। यह खूबी दूसरी भाषा बोलने वाले अधिक आसानी से पकड़ सकते हैं। रोमानियन भाषा और उसके बोलने वालों को नज़दीक से देखने के बाद कई ऐसी बातें भी दिखाई दीं जो रोमानियन भाषा को हमारी भाषाओं से अलग करती हैं। उदाहरण के लिए आप पाएँगे कि

इस भाषा में शिष्टाचार के शब्दों और मुहावरों की भरमार है, वैसे तो हिंदी, उर्दू, तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं में शिष्टाचार आदि की कमी नहीं, लेकिन हमारे यहाँ इस्तेमाल में अकसर कंजूसी बरती जाती है। रोमानिया में सामाजिक जीवन के हर छोटे-बड़े अवसर के लिए हर प्रकार के शिष्टाचार को व्यक्त करने के लिए शब्द और वाक्य भरे पड़े हैं। इससे भी खास बात यह है कि रोमानियन लोग इनका दिल खोलकर इस्तेमाल करते हैं। इनका इस्तेमाल केवल शिष्टाचार मात्र दिखाने के लिए खास प्रकार के लोगों के साथ ही नहीं किया जाता, बल्कि ये उनके सामान्य दैनिक जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं जो बार-बार स्वत: उनके मुख से निकलते हैं। कुछ खास मौकों के लिए प्रयुक्त शिष्टाचार सूचक वाक्यों के कुछ नमूने देखिए :

1. खाना खाने से पहले अगर रोमानियन किसी से मिलता है या विदा लेता है, (व्यक्तिगत रूप से या फोन पर) तो वह कहेगा :
   — पोफ़्त, बुन: (आपको अच्छी भूख लगे)

2. सोने से पहले कही जाने वाली शुभकामना :
   — सोम्न उशोर (अच्छी नींद आए)

3. बीमार व्यक्ति से या वैसे भी किसी से विदा लेते समय की शुभकामना : (व्यक्तिगत रूप से फोन पर)
   — संन: ताते (स्वास्थ्य की कामना)

4. किसी के छींक आने पर :
   — नीरोक (शुभ हो)

5. महिलाओं के लिए अत्यंत आदर का शब्द :
   — सर: मीना (मैं आपका हाथ चूमता हूँ)

इसी प्रकार आम भारतीय जब अपनी भाषा बोलता है, तो वह जाने-अनजाने बहुत से अंग्रेज़ी शब्दों का इस्तेमाल करता है, यहाँ तक कि आधा हिस्सा हिंदी और आधा हिस्सा अंग्रेज़ी होता है, जैसे "ट्राइ करना", "रिफ्यूज करना", "यूज करना", "नरवस होना" आदि। एक आम रोमानियन के लिए यह बड़ी विचित्र और नई चीज़ है। हिंदी के छात्र बार-बार पूछते हैं— "ऐसा आप लोग क्यों करते हैं? क्या आप केवल हिंदी में नहीं बोल सकते?" एक बार कुछ छात्र वीडियो पर एक हिंदी फिल्म देख रहे थे। मैंने सुना एक रोमानियन छात्रा दूसरे से कह रही थी— "देखो, देखो यह लड़का कितने मजे से हिंदी में अंग्रेजी शब्द मिला रहा है। अजीब बात है।" चूँकि उनकी भाषा में इस तरह की मिलावट कहीं होती ही नहीं, वे इस तरह की भाषा के अभ्यस्त नहीं हैं। इसलिए कई लोगों को भाषा का यह मिश्रण एक कौतूहल-सा लगता है। भाषा के प्रति उनके सोचने का यह शुद्धवादी तरीका उनकी परंपरा की देन है, इसलिए नहीं कि सरकार ने ऐसी कोई नीति बनाई है। हर जगह अपनी मातृभाषा का प्रयोग करना उनके लिए उतना ही सहज है जितना अपने देश से प्रेम करना।

हिंदी का अध्ययन-अध्यापन रोमानिया के बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम 1965 में एक ऐच्छिक विषय के रूप में शुरू हुआ। विश्वविद्यालय के प्राच्य तथा क्लासिकी भाषा विभाग के अंतर्गत संचालित इस द्विवर्षीय ऐच्छिक पाठ्यक्रमों में विश्वविद्यालय के नियमित छात्र तथा अन्य इच्छुक दोनों हिंदी पढ़ते थे।

सन् 1971 में इस पाठ्यक्रम के अलावा एक नियमित चार वर्षीय हिंदी पाठ्यक्रम और शुरू किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के स्नातक छात्रों को एक मुख्य विदेशी भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन करना होता था। प्रथम दो वर्षों में भाषा कौशल तथा संस्कृति की तथा अंतिम दो वर्षों में साहित्य की शिक्षा दी जाती थी। बुखारेस्त में हिंदी अध्ययन का यह स्वर्णिम युग था। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हर दूसरे साल होता था, अत: आगे के वर्षों में भी यह चारवर्षीय पाठ्यक्रम चलता तो रहा लेकिन हिंदी मुख्य भाषा के बजाय गौण भाषा के स्थान पर आ गई। बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय के विदेशी भाषा संकाय के हर स्नातक को एक विदेशी भाषा "मुख्य विशेषज्ञता" के रूप में तथा दूसरी "गौण विशेषज्ञता" के रूप में पढ़नी होती है। इनके अलावा यदि कोई विद्यार्थी चाहे तो ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में तीसरी विदेशी भाषा भी सीख सकता है जिसका उल्लेख प्रमाण-पत्र में कर दिया जाता है।

इस बीच हिंदी स्नातकों तथा विशेषज्ञों के चार-पाँच बैच निकले, लेकिन सरकार ने पाया कि हिंदी ज्ञान के आधार पर उन्हें कोई नौकरी देना संभव नहीं, क्योंकि न भारतीय राजदूतावास में, न वाणिज्यिक संस्थानों में और न रोमानियन मंत्रालयों में भारत से संबद्ध पदों पर हिंदी का ज्ञान अनिवार्य या वांछित था। भारत अपना पत्र व्यवहार या वार्ता केवल अंग्रेजी के माध्यम से ही करता था। रोमानिया में हर नागरिक को उसकी शिक्षा के आधार पर नौकरी उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी सरकार की है, इसलिए जब हाल में विदेशी मुद्रा संकट तथा आर्थिक तंगी के कारण सरकार ने विश्वविद्यालयों के भाषा संकायों के बजट में लगभग 50 प्रतिशत की कटौती की तो हिंदी भी उसका शिकार हो गई। फलत: 1981-82 में हिंदी का चारवर्षीय पाठ्यक्रम शुरू नहीं किया गया और हिंदी अब केवल ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में ही बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय में पढ़ाई जा रही है।

हिंदी पाठ्यक्रम की सरकारी कतर-ब्यौंत के बावजूद हिंदी तथा संस्कृत रोमानिया में अत्यंत लोकप्रिय भाषाएँ रही हैं और अब भी हैं, इस तथ्य को विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी भी स्वीकार करते हैं। विश्वविद्यालय के नियमानुसार चारवर्षीय हिंदी पाठ्यक्रमों में सीटों की संख्या पहले 12-13 तथा बाद में 7-8 रखी गई थी लेकिन ऐच्छिक पाठ्यक्रमों में, जिनमें प्रवेश संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं होता, प्रति वर्ष 30-40 नए छात्रों का प्रवेश साधारण बात है।

1965 में हुए भारत-रोमानिया सांस्कृतिक समझौते के अंतर्गत भारत सरकार बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय में हिंदी अध्यापन के लिए एक भारतीय प्रोफेसर प्रतिनियुक्ति करती है। नवंबर 1965 से 1967 तक डॉ. इन्दु प्रकाश पांडेय, सितंबर 1968 से जून 1972 तक उस्मानिया

विश्वविद्यालय के डॉ. विद्यासागर दयाल, मार्च 1973 से मई 1974 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी, 1975 से दिसंबर 1978 तक पुन: डॉ. विद्यासागर दयाल, अप्रैल 1979 से 1983 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान के डॉ. सूरजभान सिंह और 1984 तक जबलपुर विश्वविद्यालय के डॉ. महावीर सरन जैन भारत सरकार की ओर से बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय में हिंदी प्रोफेसर प्रतिनियुक्त होकर गए। इस दौरान समय समय पर बुख़ारेस्त विश्वविद्यालय की बंगला प्राध्यापिका डॉ. अमिता बोस तथा रोमानियन हिंदी विशेषज्ञ श्रीयुत् निकोलाय जबेर्या, लोरेत्सुउ थेब्रान, इओन पेतेरेस्कु और मारिया लीला पोपेस्कु ने विश्वविद्यालय में हिंदी अध्यापन में योग दिया।

डॉ. इंदु प्रकाश पांडेय ने रोमानिया में पहली हिंदी पाठ्य-पुस्तक (1967) में लिखी। डॉ. विद्यासागर दयाल ने "हिंदी भाषा कोर्स" तथा, सहलेखक इयोन पेतेरेस्कु के सहयोग से, "हिंदी–रोमानियन शब्दकोश" तथा "रोमानियन- हिंदी शब्दकोश" (1978) लिखे। डॉ. सूरजभान सिंह ने नवीन भाषा वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर दो खंडों में "हिंदी भाषा की पाठ्य-पुस्तक" (1980-81) में लिखी।

रोमानिया में हिंदी पुस्तकों का अनुवाद संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। प्रेमचंद्र के "गोदान" तथा फ़णीश्वरनाथ रेणु के "मैला आँचल" का रोमानियन अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। एक हिंदी प्रेमी दनिल इंका ने प्रेमचंद की 22 कहानियों का सीधे हिंदी से रोमानियन में अनुवाद किया है जो इस समय प्रकाशनाधीन है तथा एक-दो कहानियाँ (जैसे "विमाता") रोमानियन पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हो चुकी हैं। स्तरियान कोर्नेल और डॉ. सूरजभान सिंह ने जयन्त विष्णु नर्लिकर की दो वैज्ञानिक कहानियों ("धूमकेतु" और "अक्ष") का रोमानियन अनुवाद किया है। अज्ञेय, अनंत गोपाल शेवड़े, महादेवी वर्मा, श्रीकांत वर्मा आदि की भी कुछ रचनाओं के अनुवाद पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

जहाँ तक संस्कृत के अनुवादों का प्रश्न है, रोमानिया में भारतविद्या के संस्थापक कांस्टेंटीन ज्यार्जियन ने पहली बार महाभारत (मिमियो 1877-79) के कुछ अंशों का अनुवाद किया था, लेकिन सबसे पहले प्रकाशित अनुवाद सुप्रसिद्ध रोमानियन महाकवि कोश्बुक (1877-1918) का **अभिज्ञान शाकुंतलम** (1891) है। उन्होंने ऋग्वेद और **महाभारत** के कुछ खंडों का भी अनुवाद किया। प्रसिद्ध रोमानियन भाषा वैज्ञानिक ब. प. हश्देउ (1838-1907) ने संस्कृत भाषा के संदर्भ में रोमानियन आदि भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। बीसवीं सदी के कई रोमानियन कवि, लेखक और दार्शनिक भी भारतीय चितंन से बहुत प्रभावित हुए जिनमें प्रमुख हैं कवि लुच्यान ब्लागा और इयोत विलात, चिंतक तथा विद्वान मिर्च्या एलियादे और उपन्यासकार लिविउ रेब्र्यानु आदि। सन् 1926 में गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर की रोमानिया यात्रा के बाद भारतीय अध्ययन के प्रति यहाँ के लोगों में असाधारण रुचि बढ़ी। टैगोर आज भी यहाँ के सबसे अधिक अनूदित कवि हैं। भारतविद्या और संस्कृत के क्षेत्र में आज का सबसे बड़ा नाम सर्ज्यु-एल जार्ज (मृत्यु 1982) है जिन्होंने पहली बार भगवद्गीता का अनुवाद सीधे संस्कृत के माध्यम से किया, अंग्रेज़ी अनुवाद के माध्यम से नहीं।

हंगरी में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की स्थिति

मारिया नेज्यैशी

मुझसे एक सवाल अक्सर पूछा जाता है—कभी भारत में और कभी भारत से बाहर—हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों या सम्मेलनों में या उन विश्वविद्यालयों में जहाँ हिंदी पढ़ाई जाती है; सवाल बहुत साधारण और सामान्य है, वह यह कि मैंने हिंदी कहाँ सीखी? इस सवाल का जवाब सरल नहीं। क्योंकि भारत से दूर मध्य यूरोप के एक देश में हिंदी पठन-पाठन कितना कठिन हो सकता है, इसकी कल्पना वे ही लोग कर सकते हैं जिन्होंने ऐसा अनुभव किया है। इस सवाल का जवाब ही मुझे हंगेरी में हिंदी भाषा और साहित्य के पठन-पाठन के इतिहास की ओर ले जाता है।

हिंदी और भारत में मेरी रुचि दस-ग्यारह साल की उम्र में उस समय पैदा हुई जब मुझे हंगेरियन भाषा में भारतीय पौराणिक कथाओं के बारे में एक पुस्तक पढ़ने को मिली। पुस्तक का प्रभाव मेरे ऊपर जादू के समान हुआ। लेकिन पुस्तक पढ़कर यह सोचा भी नहीं था कि मेरे सपनों का देश कभी मेरा कार्यक्षेत्र भी हो सकता है।

भारत में यह तथ्य कम लोगों को पता है कि सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक कारणों से हंगरीवासी भारत के संबंध में बहुत आत्मीय तथा भावुक हैं। वे भारतीय संस्कृति को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए माध्यमिक स्कूल में पढ़ते समय मुझे भारत के संबंध में कुछ न कुछ पढ़ने का अवसर बराबर मिलता रहा। इसके कारण भारत तथा भारतीय संस्कृति में मेरी रुचि लगातार विकसित होती रही।

यह सन् 1970 की बात है। मैंने माध्यमिक स्कूल पूरा कर लिया था। मैंने विश्वविद्यालय में लैटिन और रूसी भाषाएँ पढ़ने के लिए प्रवेश लिया था। यहीं आकर मुझे यह जानकारी मिली कि विश्वविद्यालय में भारोपीय अध्ययन विभाग भी है जहाँ संस्कृत और हिंदी पढ़ाई जाती है। उस समय मेरी रुचि प्राचीन भाषाओं में थी इस कारण तीसरी भाषा के रूप में मैंने संस्कृत ले ली। बाद में रूसी छोड़कर प्राचीन यूनानी भाषा पढ़ने लगी।

हंगेरी में संस्कृत की पढ़ाई औपचारिक रूप से पिछले एक सौ बीस साल से हो रही है। अनौपचारिक रूप से संस्कृत पठन-पाठन का इतिहास और अधिक पुराना है। सत्रहवीं और अठारहवी शताब्दी में संस्कृत ग्रंथों के प्रारंभिक हंगेरियन अनुवाद तुर्की तथा लैटिन भाषाओं के

माध्यम से हुए थे जैसे पंचतंत्र की कथाओं के कई अनुवाद आदि। पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सीधे संस्कृत से हंगेरियन में अनुवाद प्रारंभ हुए। फिओक कारोय (Fiok Karoly) ने रामायण महाभारत, कालिदास के मेघदूतं और अभिज्ञानशाकुंतलम् के कुछ अंशों का अनुवाद किया जो प्रकाशित भी हुए। उस समय के विख्यात हंगेरियन कवि अरन्य यानोश (Arany Janos) पर भी कालिदास की रचनाओं का गहरा प्रभाव पड़ा था। उन्होंने भी अंग्रेजी माध्यम से अभिज्ञानशाकुंतलं के एक अंश का हंगेरियन में अनुवाद किया था। उसके बाद संस्कृत से हंगेरियन में अनुवाद करने का यह क्रम लगातार चलता रहा।

पिछले शताब्दी में महान हंगेरियन भारतविद एलेक्संदर चोमा दै कोरोश (Alexander Csoma de Körös) (1784-1842) ने इन प्रयासों को चरम-उत्कर्ष तक पहुँचाया। उनके योगदान की चर्चा करना बहुत अनिवार्य है। हंगेरी के एक क्षेत्र ट्रांसिल्वानिया के एक मध्यवर्गीय परिवार में जन्मे चोमा दै कोरोश की पूर्व में रुचि का कारण बहुत महत्वपूर्ण है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि हंगेरियन लोग दसवीं शताब्दी के आसपास पूर्व से मध्य यूरोप के वर्तमान भूखण्ड जिसमें हंगेरी के अतिरिक्त आसपास के देशों के इलाके भी शामिल हैं, में आकर बस गये थे। लेकिन कुछ हंगेरियन समुदाय पूर्व में ही रुक गये थे। तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि कुछ हंगेरियन वोलगा नदी के किनारे मौजूद थे। मंगोल आक्रमण के बाद इस हंगेरियन आबादी का कुछ पता नहीं चला। चोमा दै कोरोश दरअसल पूर्व में खोए हुए हंगेरियन लोगों तथा एशिया से अपने प्राचीनतम संबंधों की खोज करने ही गये थे। चोमा धुन के इतने पक्के व्यक्ति थे कि पैसे के अभाव में वे पैदल ही पूर्व की ओर रवाना हो गये थे। 1822 में भारत पहुंचकर वे वहाँ से लद्दाख गये और तिब्बत में सात-आठ साल रहकर उन्होंने न केवल तिब्बती भाषा का पहला व्याकरण लिखा बल्कि तिब्बती-अंग्रेजी शब्दकोश भी तैयार किया। वे पहले यूरोपियन थे जिन्होंने तिब्बती भाषा के ग्रंथों का अध्ययन किया तथा उसके माध्यम से संस्कृत के उन दुर्लभ ग्रंथों का पता लगाया जो आज संस्कृत में उपलब्ध नहीं हैं, केवल तिब्बती अनुवाद में ही प्राप्य हैं। एलेक्संदर चोमा दै कोरोश का देहान्त भारत में ही हुआ उनकी कब्र दार्जिलिंग में है।

चोमा ने दरअसल भारतीय अध्ययन को एक वैज्ञानिक स्वरूप और सकारात्मक दिशा दी है। उनका प्रभाव आजतक हंगेरियन भारतविदों पर है। यही कारण है कि ओत्वोश लोरान्द विश्वविद्यालय के भारोपीय अध्ययन विभाग में संस्कृत पर विशेष ध्यान दिया जाता है। शिमदत योजैफ़ (Schmidt József) (1868-1933) हमारे विभाग के भूतपूर्व प्रोफेसर चोमा की परंपरा की एक कड़ी थे। उन्होंने भारतीय दर्शन, इतिहास तथा संस्कृत साहित्य के संबंध में महत्वपूर्ण और उपयोगी काम किया है। इनकी पुस्तकें ''संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास'' तथा ''भारत के दर्शन'' आदि उच्च स्तर पर हंगेरियन पाठकों का भारतीय संस्कृति से परिचय कराती हैं। उनके संस्कृत से हंगेरियन में किये अनुवादों में कालिदास का ''मालविकाग्निमित्र'', शूद्रक का ''मृच्छकटिक'' और समग्र पंचतंत्र के अलावा ऋग्वेद की कुछ ऋचाएँ उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान शताब्दी के विश्वविख्यात भारतविदों में हंगेरियन भारतविद सर औरेल श्तैइन (Sir Aurel Stein) (1862-1943) का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने सर्वप्रथम कलहण की "राजतरंगिणी" का आलोचनात्मक संपादन किया था। तीन बार मध्य एशिया और तुर्किस्तान की खोज यात्राएँ आयोजित करके उन्होंने महत्वपूर्ण शोधकार्य किया था। इन खोजयात्राओं के दौरान उन्होंने मूल्यवान और दुर्लभ सामग्री खोज निकाली थी। दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में सर श्तैइन द्वारा खोजी और एकत्रित वस्तुओं के लिए एक विशेष विभाग स्थापित किया गया है। इसी विभाग में उनका स्मृति चिह्न भी लगा हुआ है।

हंगेरियन भारतविदों में बक्तइ ऐरविन (Baktay Ervin) (1890-1963) अपने ढंग के निराले विद्वान थे। उनका महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने भारतीय स्थानों, पात्रों, स्थितियों और विचारों को अपनी पुस्तकों में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने भारत के इतिहास, समाज, हिन्दू धर्म और परम्पराओं से लेकर योग, ज्योतिष तथा कामसूत्र तक बड़े विशाल फलक पर लेख, शोधनिबन्ध, यात्रा-संस्करण आदि लिखे थे। उनकी सबसे मूल्यवान पुस्तक "भारत की कला" है। इस तरह बक्तइ ने भारत के प्रति साधारण हंगेरियन पाठकों को आकर्षित करने का महत्वपूर्ण काम किया था।

भारतीय पौराणिक कथाओं की वह पुस्तक जो मैंने दस-ग्यारह साल की उम्र में पढ़ी थी वह बक्तइ ऐरविन की ही लिखी हुई थी।

जब मैं छात्रा थी तब भी भारोपीय अध्ययन विभाग में प्रोफेसर तोत्तोशि चाबा (Töttössy Csaba) संस्कृत पढ़ाते थे। डॉ. तोत्तोशि दरअसल हंगेरी में औपचारिक संस्कृत पाठन के पितामह कहे जा सकते हैं। उन्होंने पहली बार संस्कृत के विधिवत अध्ययन की रूपरेखा बनायी थी। उनके प्रयासों के कारण ही 1953 से भारतीय अध्ययन में एम. ए. तक की शिक्षा प्रारम्भ हुई। डॉ. तोत्तोशि बहुभाषीय विद्वान होने के साथ-साथ संस्कृत व्याकरण और तुलनात्मक भाषाविज्ञान के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने लैटिन तथा प्राचीन यूनानी भाषाविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण और उच्चकोटि का काम किया है। उन्होंने संस्कृत से हंगेरियन में "शुकसप्तति" का पहला अनुवाद किया था।

मेरे हिंदी के पहले अध्यापक डॉ. दैबरैत्सैनी आर्पाद (Debreczeni Àrpàd) (1911-1984) थे। डॉ. दैबरैत्सैनी भारतीय दूतावास में काम करते थे। इसके अतिरिक्त वे हिंदी की कक्षाएँ भी लेते थे। दूतावास में काम करने के दौरान ही हिंदी में उनकी रुचि उत्पन्न हुई थी और उन्होंने लगभग स्वत: हिंदी सीखी थी।

भारोपीय अध्ययन में एम. ए. करने के बाद जब मैं अकादमी ऑफ साइन्सेज़ के प्रकाशन गृह में काम करती थी तब मुझे एक दिन अचानक प्रो. तोत्तोशि का संदेश मिला कि वे मुझसे मिलना चाहते हैं। मैं उनके पास गयी तो उन्होंने बताया कि डॉ. दैबरैत्सैनी के पेंशन पर जाने के बाद अब विभाग में हिंदी पढ़ानेवाला कोई नहीं है। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं हिंदी की कक्षाएँ लेना शुरू करूँ।

मेरे सामने सब से बड़ी दिक्कत यह थी कि हिंदी पढ़ाने के लिए न तो कोई पाठ्यपुस्तक थी न अन्य सामग्री। क्योंकि स्वर्गीय दैबरैत्सैनी अपने ढंग से हिंदी पढ़ाते थे। उनके पास अपने नोट्स थे जिनका वे प्रयोग करते थे। पाठ्य-पुस्तकें हंगेरियन में थीं भी नहीं। मुझे रूसी तथा अंग्रेजी माध्यम से हिंदी पढ़ाने की पाठ्यपुस्तकों को छानने के बाद ही मुझे हिंदी का एक पाठ्यक्रम निर्धारित करने का मौका मिला। यह एक मुश्किल काम था क्योंकि हर कक्षा के लिए हर सप्ताह एक पाठ तैयार करना होता था।

उस समय यानी 1980 के आसपास बुदापैश्त में हिंदी भाषी लोग लगभग नहीं के बराबर थे और हिंदी बोलने के अवसर दुर्लभ थे। हिंदी की पुस्तकें भी दो ही चार थीं, जबकि आज भारतीय राजदूतावास के सहयोग से विभाग में हिंदी की लगभग तीन हजार पुस्तकें हैं। आज हमारे छात्रों को वह दिक्कत नहीं महसूस होती है जो उन दिनों थी।

आजकल जो विद्यार्थी हिंदी पढ़ते हैं उन्हें प्रथम वर्ष में विवरणात्मक व्याकरण और हिंदी संबंधी बुनियादी जानकारी दी जाती है। दूसरे साल में इनकी हिंदी भाषा को विकसित कराने तथा शब्दभण्डार बढ़ाने का काम किया जाता है तथा हिंदी की शैलियों का परिचय दिया जाता है। बोलचाल की हिंदी से लेकर कार्यालय और आलोचना तक की हिंदी की जानकारी दी जाती है। तीसरे वर्ष में आधुनिक हिंदी साहित्य-विशेष रूप से गद्य पढ़ाया जाता है। चौथे वर्ष में आधुनिक तथा मध्यकालीन हिन्दी-कविता पढ़ाई जाती है। पाँचवें साल छात्रों के लिए एक शोध-प्रबंध लिखना अनिवार्य है।

भारोपीय अध्ययन में रुचि लेने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या कम नहीं है। प्रथम वर्ष में बहुत से छात्र प्रवेश लेते हैं। लेकिन अंततः कम ही लोग बचते हैं। दरअसल भारतीय भाषाओं में वही लोग आते हैं जो भारत से प्यार करते हैं और भारतीय भाषाएँ पढ़ना चाहते हैं। कबीर के शब्दों में कहें तो यह "घर फूंक कर साथ चलने वाली" स्थिति है, क्योंकि भारतीय भाषाएँ पढ़ने के बाद छात्रों को प्रायः नौकरियाँ नहीं मिलतीं। फिर भी ये बहुत ज्यादा मेहनत करने के लिए तैयार रहते हैं। कुछ प्रतिभाशाली तथा मेहनती छात्र और छात्राएँ आम तौर से ऐसी नौकरियाँ पा लेते हैं जिनमें उनका संस्कृत तथा हिंदी ज्ञान उपयोगी सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए मेरी एक भूतपूर्व छात्रा रैन्नैर जुजान्ना (Renner Zsuzsanna) प्राचीन भारतीय कला की विशेषज्ञ हैं और आजकल वे पूर्वी एशिया की कलाओं के संग्रहालय में काम कर रही हैं। एक अन्य छात्र कोर्तवेयैशी तिबोर (Körtvélyesi Tibor) हाल में ही खुले "बौद्ध हाई स्कूल" में संस्कृत पढ़ा रहे हैं।

उल्लेखनीय तथ्य यह है कि अब हिंदी रचनाओं का सीधा अनुवाद हंगेरियन में हो रहा है जबकि पहले प्रायः अंग्रेजी के माध्यम से ही हिंदी रचनाओं का हंगेरियन अनुवाद हुआ करता था। इस संबंध में विशेष रूप से बंगा इमरै (Bangha Imre) का नाम लेना आवश्यक है जिन्होंने मीराबाई के पदों का सर्वप्रथम हंगेरियन में अनुवाद किया है। यह अनुवाद जल्दी

ही पुस्तकाकार प्रकाशित होने वाला है। आजकल बंगा इमरै शान्तिनिकेतन में मध्यकालीन हिंदी कविता पर शोध कर रहे हैं।

पिछले दस वर्षों से हंगेरी में भारतीय संस्कृति तथा भाषाओं के प्रति लोगों की रुचि बढ़ रही है। विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अब भारतीय दूतावास में हिंदी की नियमित कक्षाएँ होती हैं जिनमें बड़ी संख्या में लोग आते हैं। प्रत्येक सप्ताह शाम पाँच बजे से लेकर छः बजे तक माध्यमिक स्तर की तथा सात बजे से लेकर आठ बजे तक प्रारंभिक स्तर की हिंदी कक्षाओं में छात्र-छात्राएँ भाग लेते हैं। दोनों कक्षाओं में प्रति सप्ताह नये पाठ पढ़ाये जाते हैं तथा साथ-साथ व्याकरण की पढ़ाई भी होती है। माध्यमिक स्तर की कक्षा के छात्र-छात्राओं को बोलचाल की हिंदी का अभ्यास कराया जाता है तथा कुछ ऐसे पाठ तैयार किये गये हैं जो विशेष रूप से बोलचाल की हिंदी सीखने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। प्रत्येक छात्र हर सप्ताह पढ़ाये गये पाठ पर आधारित अभ्यास करके लाता है। माध्यमिक स्तर के छात्र बोलचाल की काम चलाऊ हिंदी भली भाँति बोल और समझ सकते हैं तथा सरल सुबोध पाठ भी पढ़ लेते हैं। उन्हें लिखने का भी पर्याप्त अभ्यास कराया जाता है तथा वे हिंदी में संक्षिप्त पत्र आदि लिख लेते हैं।

'प्रारंभिक स्तर की कक्षा में वर्णमाला की पूरी जानकारी दिये जाने के बाद हिंदी व्याकरण की बुनियादी रूपरेखा स्पष्ट की जाती है तथा उसका अभ्यास कराया जाता है। प्रारंभिक स्तर के छात्र भी छोटे सरल पाठ पढ़ लेते हैं। इन कक्षाओं में छात्रों की संख्या प्रायः चालीस के आसपास होती है।'

हिंदी पढ़नेवाले छात्र प्रतिवर्ष ''हिंदी दिवस'' मनाते हैं। इस वर्ष छात्रों ने ''हिंदी दिवस'' बड़े स्तर पर मनाया था। हंगेरियन कविताओं के हिंदी अनुवादों का पाठ किया गया था तथा हिंदी का एक लघुनाटक भी मंचित किया गया था।

हिंदी कक्षाओं के अतिरिक्त दूतावास में भारतीय संस्कृति पर आधारित व्याख्यानमाला का आयोजन भी किया जाता है जिसमें हंगेरियन तथा भारतीय भारतविद् दर्शन, इतिहास, समाज, कला, आदि विषयों पर व्याख्यान देते हैं।

दूतावास में हिंदी पढ़ने तथा संस्कृति पर व्याख्यानमाला में सम्मिलित होने वाले छात्र 6 जनवरी को एक सांस्कृतिक शैक्षणिक यात्रा पर तीन हफ्ते के लिए भारत आ रहे हैं। उनका उद्देश्य भारतीय संस्कृति तथा हिंदी भाषा से जीवंत संपर्क स्थापित करना है।

हंगेरी में हिंदी भाषा तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भारत सरकार तथा बुदापैश्त में स्थित भारतीय राजदूतावास के प्रयास महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय कहे जाएँगे।

प्रसन्नता की बात है कि आई. सी. सी. आर. (भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद) के माध्यम से डा. असगर वजाहत भारोपीय भाषाविज्ञान विभाग में हिंदी-उर्दू पढ़ाने आये हैं जो स्वयं हिंदी के एक जाने माने लेखक हैं। उनके सहयोग से हमने हंगेरियन रचनाओं के हिंदी

अनुवाद करने की व्यापक योजना शुरू की है जिसके अंतर्गत कुछ कहानियों का अनुवाद किया जा रहा है। इनमें से एक अनुवाद "आजकल" के जनवरी 1995 अंक में प्रकाशित हो चुका था। डॉ. वजाहत के साथ मिलकर हमने हंगेरियन माध्यम से हिंदी पढ़ाने की एक पाठ्यपुस्तक भी तैयार की है जो पैसे के अभाव के कारण अभी तक छप नहीं पायी है।

सबसे अंत में, हिंदी प्रेमियों, मैं आपका ध्यान एक कटु सत्य की ओर आकर्षित कराना चाहती हूँ। आप जानते ही हैं कि पिछली लगभग आधी शताब्दी के दौरान हंगेरी तथा अन्य मध्य यूरोपीय देशों ने भारतीय भाषाओं और संस्कृति के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। लेकिन अब राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। इन बदली हुई स्थितियों में कम से कम हंगेरियन हिंदी प्रेमी तथा भारत में रुचि रखनेवाले लोग यह अनुभव करते हैं कि आज उन्हें भारत से अधिक अपेक्षाएँ हैं। कहने का मतलब यह है कि पहले की तुलना में अब हमें भारतीय भाषाओं और संस्कृति के अध्ययन-अध्यापन में भारत से अधिक सहायता और सहयोग चाहिए।

मुझे पूरा विश्वास है कि हमें भारतीय हिंदी प्रेमियों का सहयोग विश्वास और स्नेह सदा प्राप्त होता रहेगा तथा हंगेरी में हिदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन लगातार आगे बढ़ता रहेगा।

अमेरिका महाद्वीप

अमरीका महाद्वीप के देशों में हिन्दी

चन्द्रप्रभा

पृष्ठभूमि

हिंदी के अखिल भारतीय संदर्भ के साथ-साथ इसका अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ भी है। विश्व के अनेक देशों में इसका अध्ययन-अध्यापन कार्य हो रहा है। अमरीका महाद्वीप के दोनों खंडों— उत्तरी अमरीका व दक्षिणी अमरीका में हिंदी समझने और सीखने वालों की संख्या- करोड़ों में है। उत्तरी अमरीका के चार देशों— संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, मैक्सिको, क्यूबा तथा दक्षिण अमरीका के 8 देशों— सूरीनाम, गयाना, त्रिनिडाड-टैबेगो अर्जेन्टाइना, ब्राजील, वेनाजूला, कोलम्बिया, चिली में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के सामान्य स्तर से उच्च स्तर, स्कूल से लेकर विश्वविद्यालयी, शोध स्तर (पी-एच. डी.) तक के कार्यक्रम चल रहे हैं। इन देशों में हिंदी अध्येता दो प्रकार के हैं। पहले वर्ग में आप्रवासी भारतीय हैं तथा दूसरे वर्ग में विदेशी लोग आते हैं। आप्रवासी भारतीयों के भी दो उपवर्ग हैं। एक तो वे हैं जिनके वंशज 100-150 वर्ष पहले भारत से गए हैं जैसे, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिडाड-टोबेगो में रहने वाले भारतीय, दूसरे वे हैं जो कुछ दशक पूर्व ही विदेशों में जाकर बसे हैं। भारत के विभिन्न राज्यों से तथा भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य देशों से गए लोगों की संपर्क भाषा हिंदी या उर्दू है। संस्कृति से परिचय होने के कारण पहले वर्ग के लोगों के लिए हिंदी सीखना अन्य भाषा सीखने के समान है जबकि सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण विदेशियों के लिए यह विदेशी भाषा है। इन लोगों के हिंदी सीखने के विभिन्न प्रयोजन हैं। इस दृष्टि से विभिन्न पाठ्यक्रम, शिक्षण सामग्री, शिक्षण विधि की आवश्यकता है। संयुक्त राज्य अमरीका इन सब की दृष्टि से अग्रणी है। इस देश के 25 विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है। आधुनिकतम भाषा विश्लेषण के सिद्धान्तों के आधार पर हिंदी का सबसे अधिक विश्लेषण कार्य संयुक्त राज्य अमरीका में हुआ है। इस विश्लेषण के आधार पर विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री— पाठ्यपुस्तकें, प्रवेशिकाएँ, कोश तथा अन्य सहायक सामग्री (भाषा प्रयोगशाला के लिए आडियो कैसेट, कंप्यूटर पर आधारित शिक्षण सामग्री) का निर्माण करने वाला सर्वप्रथम देश है। इन देशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में पुस्तकालयों, पत्र-पत्रिकाओं, हिंदी फिल्मों, चलचित्र, वीडियो फिल्म, आकाशवाणी, दूरदर्शन के कार्यक्रमों के अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक, धार्मिक तथा अन्य संस्थाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

1. अमरीका

1.0 संयुक्त राज्य अमरीका में भाषाई परिवेश

संयुक्त राज्य अमरीका (आगे लेख में केवल अमरीका का प्रयोग किया है) बहुजातीय, बहुभाषीय राष्ट्र है। यहाँ विविध संस्कृतियाँ, विविध जातियाँ आकर बसीं जिनमें भारतीय उपमहाद्वीप के लोग सबसे अधिक हैं। अल्पसंख्यक होने के कारण अन्य जातियों की संस्कृति एवं भाषा विलुप्त प्राय: हो चुकी है। यहाँ की मुख्य भाषा अंग्रेजी है। कुछ भागों में स्पेनिश भी बोली जाती है। अमरीका में भारत उपमहाद्वीप से पहुँचे लाखों लोगों की कहानी अधिक पुरानी नहीं है। ये लोग मुख्यत: भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, नेपाल एवं श्रीलंका से आकर बसे हैं। इन लोगों की सम्प्रेषण भाषा हिंदी अथवा उर्दू (हिंदी की एक शैली) है। आप्रवासी भारतीय भी लाखों की संख्या में हैं। उनके यहाँ आने का कारण उच्च शिक्षा, अच्छी नौकरियाँ एवं व्यापार है। ये लोग वैसे तो देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में बसे हुए हैं किन्तु न्यूयार्क, कैलिफोर्निया ऐसी जगह हैं जो विशुद्ध भारतीय लगती हैं। भारतीय घनता वाले क्षेत्रों में सरकार ने किसी न किसी रूप में हिंदी को मान्यता प्रदान कर दी है। इन क्षेत्रों में डाकखानों, अन्य सार्वजनिक स्थानों, बाजारों में हिंदी में लिखे बोर्ड भी दिखाई दे जाते हैं। न्यूयार्क के 'लिटल इंडिया' को देखकर एवं हिंदी सुनकर ऐसा लगेगा जैसे भारत में ही हो। यहाँ के जीवन, वेशभूषा, खानपान पर यहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन का प्रभाव पड़ा है तो स्थानीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन भी भारतीय लोगों के रहन-सहन, खानपान, रीतिरिवाजों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है। किसान लोग भारतीय सब्जियाँ लौकी (घिया), भिंडी, करेला, पुदीना आदि सब्जियाँ पैदा करते हैं और बेचते हैं। ये भारतीय सब्जियों के नाम से ही बिकती हैं।

भारतीय लोग जहाँ-जहाँ भी बसे हैं वे अपनी संस्कृति, पारम्परिक ज़ीवन, अपनी भाषा को संजोए हुए हैं। विभिन्न भाषा-भाषी लोगों की संपर्क भाषा हिंदी है। यदि सौ या उससे भी कम भारतीय परिवार एक साथ रहते हैं तो वे दिवाली, होली, अन्य तीज-त्यौहार ऐसे मिलकर मनाते हैं कि अनेकता में एकता और अखंडता की भावना का सुन्दर नजारा होता है। ऐसे दृश्य विदेशी लोग कौतूहलवश देखते रह जाते हैं। अपनी मिट्टी से दूर रहने के कारण जिस प्रकार स्वजनों की याद सताती है उसी प्रकार अपनी संस्कृति, अपनी भाषा के प्रति जो सहज लगाव है वह अपने कर्त्तव्य बोध, अपने सांस्कृतिक मूल्यों एवं अपनी भाषा की याद दिलाता रहता है जिनके संरक्षण एवं संवर्धन में ये सतत प्रयत्नशील रहते हैं। आज यदि भारत में देखें तो भारत में रहने वाली नई पीढ़ी आयातित संस्कृति का भार ढो रही है। उसे पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के साँचे में ढाला जा रहा है। उन्हें अंग्रेजीं पढ़ाने के लिए जगह-जगह नर्सरी और कान्वेंट स्कूलों के जाल बिछ गए हैं। अंग्रेजी बोलना एक सामाजिक प्रतिष्ठा समझी जा रही है। वे अंग्रेजी सीख सके या नहीं लेकिन उपभोक्ता संस्कृति से उपजी विकृत मानसिकता अर्थ को ही परमार्थ रूप में स्वीकार कर रही है। अंग्रेजी के नाम पर अंग्रेजियत पनप रही है जिससे नई पीढ़ी दिग्भ्रमित

है उसका विसंस्कृतीकरण हो रहा है। अमरीका के आप्रवासी भारतीयों की मानसिकता ठीक इसके विपरीत है। नई पीढ़ी का मोह स्थानीय भाषा एवं संस्कृति से मुक्त नहीं है। माता-पिता अपने बच्चों को प्रोफेशनल अवश्य बनाना चाहते हैं लेकिन सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से वे अपनी भाषा से जुड़े हैं। दैनिक जीवन में वे भारतीय वस्तुओं का प्रयोग करने में गर्व का अनुभव करते हैं। उसका भारतीयकरण हो रहा है। पश्चिमी सभ्यता, संस्कृति समाज की तुलना में वे अपनी सभ्यता, संस्कृति को श्रेष्ठ समझते हैं। अपनी संस्कृति में ही अपने बच्चों को पल्लवित एवं पुष्पित करने के लिए प्रयत्नशील हैं। भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भजन से लेकर गज़ल तक यहाँ तक कि पूरे कार्यक्रम हिंदी में सम्पन्न होते हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कवि सम्मेलनों का भी आयोजन होता है।

1.1 अमरीका में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन

संयुक्त राज्य अमरीका में विभिन्न स्तरों पर हिंदी सीखने के 100 से अधिक केंद्र हैं। इनमें से 25 विश्वविद्यालय या उच्च शोध संस्थान हैं जहाँ शोध स्तर तक हिंदी का अध्ययन अध्यापन होता है। अमरीका में हिंदी सीखने की शुरुआत विश्व महायुद्ध के दौरान विदेशी भाषाओं के व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकताओं को देखते हुए की गई थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हेनरी होनिंग्सवाल्ड ने अपनी पुस्तक 'स्पोकन हिंदुस्तानी' में समकालीन बोलचाल की हिंदी की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की थी। भारत के स्वन्त्रता संग्राम में भी अमरीका स्थित भारतवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गदर आंदोलन का इतिहास प्रकारांतर से अमरीकी भारतीयों का इतिहास है। इसी से अमरीका में हिंदी की कहानी प्रारम्भ होती है। 'गदर की गूँज' नामक पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में प्रथम सृजनात्मक प्रयास था। तब से हिंदी एक लम्बी यात्रा कर चुकी है।

हिंदी का विधिवत् अध्ययन तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शुरू हुआ। भारत और अमरीका के बीच नए आर्थिक सम्बन्धों का सूत्रपात हुआ। इस संदर्भ में विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि के विद्वानों ने अपनी दृष्टि भारत की समकालीन समस्याओं पर विचार करने के लिए डाली। अमरीकी सरकार से अनुदान प्राप्त केन्द्रों— कैलिफोर्निया, शिकागो, पैन्सिलवेनिया विस्कांसन, टेक्सास, वाशिंगटन, मिनिस्सोटा, वर्जिनिया में हिंदी तथा भारत संबंधी अध्ययन के व्यापक कार्यक्रम शुरू किए गए। सन् 1958 में 'नाटो' देशों की सिफारिश पर एशियाई तथा अफ्रीकी भाषाओं के लिए 26 सदस्यों के अध्ययन दल ने अपनी रिपोर्ट में यूरोपीय तथा अमरीकी देशों में एशियाई भाषाओं के अध्ययन के लिए आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराने की सिफारिश की। रिपोर्ट में 33 भाषाओं का उल्लेख है जिनमें से 12 भारत की भाषाएँ हैं। इनमें उर्दू सहित संस्कृत और पालि को भी सम्मिलित किया गया है। विश्वविद्यालयी स्तर पर हिंदी पाँच दशकों से भी ऊपर का समय बिता चुकी है। इन पाँच दशकों में हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र में काफी परिवर्तन हुए हैं। अमरीकी

विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन भाषा विज्ञान विभाग के कार्यक्रमों के अन्तर्गत, 'दक्षिण-एशिया केंद्र', भारत संबंधी अध्ययन, एशिया-अफ्रीका अध्ययन, प्राच्य विद्या केंद्र अथवा विदेशी भाषा विभाग के अन्तर्गत चल रहा है।

इन पाठ्यक्रमों में आरम्भ में बोलचाल की हिंदी पर बल दिया गया लेकिन कालान्तर से भाषा और साहित्य के प्रति रुचि बढ़ी है। चार वर्षों के शिक्षण कार्यक्रम तैयार किए गए हैं जिनमें पहले दो वर्षों में व्याकरण, सही उच्चारण, बातचीत, लेखन अनिवार्य है। हिंदी सीखने में भाषा शिक्षण के चार चरणों— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना यह क्रम रखा जाता है। इन अनिवार्य विषयों के बाद साहित्य का अध्ययन शुरू होता है। आरम्भ में यह प्रेमचन्द या कुछ अन्य लेखकों की कहानियों तक सीमित था लेकिन अब बीसवीं सदी की कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, एकांकी भी पढ़ाए जाते हैं। हिंदी कहानी पर आलोचनात्मक एवं अनूदित कार्य हो रहे हैं। चौथे वर्ष में आदिकालीन, मध्यकालीन साहित्य के बारे में पढ़ाया जाता है। एम. ए. के लिए 30 स्नातकोत्तर यूनिट पूरे करने पड़ते हैं। अमरीकी कांग्रेस के कानून पी. एल. 480 के अन्तर्गत एम. ए. एवं पी-एच. डी. छात्रों को छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। शोधकार्यों में हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा झलकती है। छठे दशक में जो कार्य हुए वे भाषा से सम्बन्धित थे। साहित्य में रुचि बढ़ने के साथ-साथ शोध कार्य की दिशा भी बदली। पिछले दो दशकों में मध्यकालीन भक्ति काव्य तुलसी, सूर, मीरा, कबीर, विद्यापति, जायसी पर आलोचनात्मक शोध कार्य एवं अनूदित कार्य हुए। हिंदी साहित्य की विविधता और प्रचुरता के कारण उसका महत्व बढ़ता गया। विदेशियों को यह तथ्य भी स्पष्ट हुआ कि साहित्य की आलोचना समाज, इतिहास, संस्कृति-सभ्यता के तत्वों की जानकारी हुए बिना सम्भव नहीं है। शोध की दिशाओं में भी विस्तार हुआ। तुलनात्मक धर्मशास्त्र से लेकर मानवशास्त्र, लोककथा, लोकसाहित्य, लोकगीत, इतिहास, साहित्यालोचना, काव्यशास्त्र, हिंदी साहित्य के इतिहास के साथ-साथ भारतीय कला, संगीत, धर्म, राजनीति, इतिहास, भूगोल, संस्कृति पर भी शोध कार्य एवं अनूदित कार्य हुए। भारतीय समाज के किसी भी पक्ष पर शोध कार्य करने के लिए हिंदी का ज्ञान आवश्यक था। अत: विदेशी लोग हिंदी को प्रधान या गौण विषय के रूप में पढ़ते थे। वर्तमान स्थिति यह है कि पिछले दशक से मानक हिंदी पर ही काम नहीं हो रहा है बल्कि लोक साहित्य, आंचलिक साहित्य तथा क्षेत्रीय बोलियों— भोजपुरी, राजस्थानी, गढ़वाली, कुमायुंनी, दकिखनी हिंदी पर भी काम हो रहा है। ये सब शोध कार्य एवं अध्ययन अंग्रेजी भाषा में होता है।

1.1.1 शिक्षण सामग्री

पिछले 30 वर्षों में हिंदी पढ़ाने के लिए पाठ्य पुस्तकें, प्रवेशिकाएँ, कोश आदि तैयार किए गये हैं। इन कार्यों में अधिकतर श्रवण-उच्चारण पद्धति का प्रभाव परिलक्षित होता है।

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि अमरीका में हिंदी भाषा विज्ञान का अध्ययन दूसरी आधुनिक भारतीय भाषाओं की तुलना में अधिक विकसित है। पाँचवें दशक में संरचनात्मक भाषा विज्ञान के आधार पर हिंदी का भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण हुआ। छठे दशक से नॉम चॉम्स्की

द्वारा प्रतिपादित रूपान्तरण व्याकरण के सिद्धान्तों के आधार पर अनेक शोध निबंध, पुस्तकें एवं लेख लिखे गए। कारक व्याकरण के आधार पर भी कई व्याकरण लिखे गए। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में अर्थ की महत्ता स्वीकार होते ही उस पर आधारित डॉ. कालीचरण बहल का व्याकरण निकला। ये कार्य मुख्यत: वाक्य की संरचना के विश्लेषण पर आधारित थे। वाक्य स्तर पर सभी घटकों का अध्ययन विश्लेषण नहीं हुआ है। आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धान्तों के आधार पर स्वन, रूप, अर्थ, ऐतिहासिक भाषा विज्ञान तथा संकेत प्रयोग विज्ञान के क्षेत्र में विस्तृत अध्ययन नहीं हुआ है। समाज भाषा विज्ञान की दृष्टि से कई काम हुए जिसमें कोड-मिश्रण पर भी काम हैं। इस क्षेत्र में हुई शोधों से स्पष्ट होता है कि हिंदी भाषी समाज में किस तरह भाषा व्यवहार किया जाता है। सातवें दशक में भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भाषा प्ररूपविज्ञान एवं सार्वभौम भाषा नियम के विश्लेषण पर कई शोध कार्य हुए। इन शोध कार्यों में 'कर्त्ता-कर्म-क्रिया (sov) प्रकृति की आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिंदी को ही लिया है। इन अध्ययनों का शिक्षण सामग्री तैयार करने एवं शिक्षण पद्धति पर पर्याप्त प्रभाव परिलक्षित होता है।

इस सामग्री के अतिरिक्त कुछ स्वैच्छिक संस्थाओं, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली तथा दक्षिण हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की अहिंदी भाषियों को हिंदी सिखाने की पाठ्य सामग्री का प्रयोग भी हो रहा है। सभी विश्वविद्यालयों में शोध कार्य के लिए हिंदी के अच्छे पुस्तकालय, शोध के लिए अन्य आवश्यक सामग्री, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं।

1.1.2 सहायक शिक्षण सामग्री

कहीं-कहीं हिंदी के अध्ययन-अध्यापन के लिए भाषा प्रयोगशाला से संबंधित सामग्री, ओडियो कैसेट सामग्री तैयार की गई है। सातवें दशक में इलिनॉय विश्वविद्यालय में प्लेटो iv (प्रोग्राम्ड लॉजिक फॉर ऑटोमेटिक टीचिंग आपरेशन) का संप्रति इलिनॉय विश्वविद्यालय हिंदी शिक्षण में उपयोग किया जा रहा है। कंप्यूटर पर आधारित हिंदी शिक्षण योजना के मुख्य उद्देश्य हैं :

1. हिंदी और संस्कृत भाषा पाठ्यक्रम के संभावित क्षेत्रों की पहचान करना जिससे कंप्यूटर पर आधारित शिक्षण सामग्री पारम्परिक शिक्षण पद्धति की अनुपूरक बन सके।

2. प्रारम्भिक स्तर पर वैयक्तिक निर्देश प्रदान करना जिससे कक्षा कार्य को अधिक सक्षम बनाया जा सके।

3. व्याकरणिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, शब्द भंडार तथा अन्य विषयों पर अतिरिक्त पाठ देकर हिंदी शिक्षण को अनुपूरित करना।

4. उच्चस्तरीय विद्यार्थियों के लिए आधारभूत सामग्री का तत्काल पुनरावलोकन प्रदान करना।

कंप्यूटर पर हिंदी ध्वनि विज्ञान, व्याकरण, वार्तालाप, शब्द भंडार से संबंधित कई अन्य पाठ भी हैं। देवनागरी लिपि का निर्माण एवं शिक्षण पर भी कार्य हुआ है। इस पद्धित

से प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति के अनुरूप एवं सुविधानुसार सीख सकता है तथा विद्यार्थियों के उत्तर का मूल्यांकन भी सम्भव है। यद्यपि यह प्रोग्राम विकासावस्था में है लेकिन यह सहायक सामग्री के रूप में ही प्रयुक्त हो सकता है, मानव शिक्षक का स्थानापन्न नहीं बन सकता।

कंप्यूटर में भारतीय भाषाओं के उपयोग की दिशा में कई प्रयोग हुए हैं। जैसे, लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में भारतीय भाषाओं में लिखित पुस्तकों की सूची तैयार की गई है। कंप्यूटर में पुस्तक का शीर्षक, लेखक का नाम, प्रकाशन का नाम मूल लिपि में संगृहीत करने के लिए कोड निर्धारिण करने और कुंजी पटल बनाने की दिशा में काफी काम हुआ है। डॉ. के. पी. एस. मेनन ने देवनागरी के कुंजीपटल, डिजाइन और डाटामैट्रिक्स प्रिंटर ने इन लिपियों में छपाई के सफल प्रयोग किए हैं। पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय, अमरीका के आर. एन जोशी ने भारतीय लिपियों के मानक रोमन कोड इस्तेमाल किए हैं। अमरीका के जान-एस हाले एवं कनाडा के श्री ब्राइट ने देवनागरी में लिखे सूरसागर की प्राचीनतम हस्तलिपियों को लेकर कंप्यूटर द्वारा सम्पादित करने का प्रयास किया है। मेसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी में प्रो. विलियम श्राइवर ने भारतीय लिपियों के कम्प्यूटरों से मुद्रण की दिशा में सराहनीय कार्य किया है। इलिनॉय में डॉ. तेज भाटिया ने भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक विश्लेषण का कार्य किया। मिशिगन में प्रो. टी. आर. विश्वनाथन् भारतीय लिपियों में कंप्यूटर प्रोसेसिंग के लिए आवश्यक सामग्री को एल. एस. आई. चिप में संगृहीत करने का कार्य कर रहे हैं। विस्कॉसिन में भी कंप्यूटर सामग्री तैयार की ज़ा रही है।

1.1.3 विभिन्न संस्थाएँ

जिस प्रकार भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार में स्वैच्छिक संस्थाओं का योगदान रहा है, उसी प्रकार विदेशों में भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में इस प्रकार की संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनमें प्रमुख की चर्चा नीचे की जा रही हैं :

(क) अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी समिति : 18 अक्तूबर 1980 को वर्जिनिया में भारत के प्रसिद्ध हिंदी सेवी कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह की प्रेरणा से अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी समिति गठित हुई। इसका प्रधान कार्यालय वाशिंगटन डी. सी. में है। शाखाएँ एटलांटा, क्लीव लैंड, सैन फ्रांसिस्को, डेट्रायट, विनिपेग, कनाडा, मान्ट्रियल में हैं। टाउसन विश्वविद्यालय के आधुनिक भाषा विभाग के अन्तर्गत समिति ने हिंदी प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी प्रारंभ किया है। समिति का उद्देश्य प्रवासी भारतीयों में अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति रुचि बनाए रखना, भारतीय भाषाओं में निहित जीवन मूल्यों का प्रसार करना, व्यक्तिगत या सामूहिक स्तर पर विचार विनिमय को प्रोत्साहित करना, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं कवि सम्मेलनों का आयोजन करके युवा लेखकों को मंच प्रदान कर सृजनात्मकता को बढ़ावा देना तथा भारतीय मूल के समाजशास्त्रियों एवं वैज्ञानिकों को तकनीकी विषयों पर भारतीय भाषाओं में अनुवाद और मूल लेखन के लिए प्रेरित करना है।

(ख) हिंदी साहित्य सभा : इसकी स्थापना 1984 में इलिनॉय में हुई। सभा 'भारतीय' पत्रिका का प्रकाशन करती है। बच्चों में अपनी भाषा के प्रति अनुराग पैदा करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं पिकनिक के कार्यक्रमों का आयोजन करती है।

(ग) हिंदी साहित्य संघ : कैलिफोर्निया में स्थानीय हिंदी प्रेमियों के सद्प्रयत्नों से हिंदी साहित्य संघ की स्थापना हुई। संघ स्थानीय बुद्धिजीवियों की गोष्ठी करता रहता है।

(घ) प्रवासी भारतीयों में हिंदी प्रचार-प्रसार का कार्य **राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग** आदि हिंदी संस्थाओं ने भी किया है। इनकी परीक्षाओं में हजारों की संख्या में परीक्षार्थी बैठते हैं। कहीं-कहीं दैनिक या साप्ताहिक कक्षाएँ भी चलाई जाती हैं।

(ङ) धार्मिक संस्थाएँ : जिस प्रकार भारत में समय-समय पर भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने एवं भाषाओं के प्रचार-प्रसार करने में धर्म एवं साधु संतों, प्रचारकों एवं नेताओं का विशेष योगदान रहा है उसी प्रकार अमरीका में भी धर्म एवं संत समाज भारतीय संस्कृति, भाषा, विशेषकर हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में पीछे नहीं रहा। अमरीका के हर बड़े शहर में हिंदू धर्म का कोई न कोई मंदिर व धार्मिक स्थल अवश्य दिखाई दे जाएगा। इन स्थानों, मंदिरों आदि में धार्मिक पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का संग्रह रहता है। कुछ मंदिरों में प्रवचन हिंदी में ही होते हैं। 'हरे राम हरे कृष्ण' मंदिर में हिंदी भजनों के प्रतिदिन सस्वर पाठ होते हैं। जहाँ 100-50 भारतीय परिवार रहते हैं उन्होंने एक संस्था सी बना ली है जिसका वातावरण भारतीय रहता है। बच्चों को रामायण, महाभारत, पंचतंत्र की कहानियाँ भारतीय संस्कृति एवं भारतीय जीवन मूल्यों से संबंधित कहानियाँ सुनाई जाती हैं।

भारतीय जनता वाले क्षेत्रों में सरकारी क्रिया कलाप में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसे स्थानों पर व्यापारी-संघ आदि भी कार्यरत रहते हैं। न्यूयार्क की डाऊन-टाऊन फिलरांग डेवलपमेंट कारपोरेशन ने खरीददारी के लिए अंग्रेजी, स्पेनी, चीनी, कोरियाई एवं हिंदी भाषा का एक कोश तैयार किया है।

1.1.4 ज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन में पुस्तकालय, दूरदर्शन, आकाशवाणी, चलचित्र आदि आधुनिक उपकरणों का पर्याप्त योगदान रहा है। विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनकी एक-एक करके चर्चा नीचे की गई है।

(क) पुस्तकालय :

(i) **सार्वजनिक पुस्तकालय :** हिंदी के प्रचार-प्रसार में पुस्तकालयों का भी योगदान रहा है। अमरीका के हर शहर में सार्वजनिक पुस्तकालयों की अत्यन्त समृद्ध एवं प्रभावी शृंखला रही है। इन पुस्तकालयों के विदेशी भाषाओं के विभाग में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से संबंधित पुस्तकें भी हैं। जिन-जिन नगरों में भारतीयों की संख्या अधिक है वहाँ हिंदी पुस्तकों का हिंदी एवं अंग्रेजी में विशाल संग्रह मिलता है।

(ii) **विश्वविद्यालयी पुस्तकालय :** अमरीका में जिन विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है। इन विश्वविद्यालयों में हिंदी खंड की व्यवस्था या तो विभागीय रूप में है अथवा सामान्य पुस्तकालय के भाषा विभाग के अन्तर्गत है।

(iii) **दूतावास पुस्तकालय :** वाशिंगटन डी. सी. स्थित भारतीय दूतावास का अपना पुस्तकालय है जिसमें हिंदी पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। इसके अतिरिक्त न्यूयार्क, शिकागो, लास एंजेल्स में भारत के काउंसुलेट के पुस्तकालयों में हिंदी पुस्तकों का अच्छा संग्रह है।

(iv) **लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस :** वाशिंगटन डी. सी. में स्थित विश्व प्रसिद्ध पुस्तकालय लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस का हिंदी प्रभाग सबसे समृद्ध है। इस पुस्तकालय में हिंदी पर सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें संग्रहीत हैं।

(v) **अन्य पुस्तकालय :** देश के कुछ संस्थानों जैसे, वॉयस ऑफ अमरीका, भारतीय विद्या भवन, न्यूयार्क एवं धार्मिक संस्थानों में हिंदी पुस्तकों का संग्रह रहता है।

इन पुस्तकालयों में सबसे अधिक पुस्तकें उपन्यास, कहानी, यात्रा, संस्मरण आदि की होती हैं। दूसरे स्थान पर हिंदी भाषा एवं साहित्य की समीक्षा एवं आलोचना से संबंधित होती हैं। अन्य विषयों से संबंधित पुस्तकें कम हैं। पाठकों में अधिकांश अधेड़ आप्रवासी भारतीयों की बहुलता रहती है। इन पुस्तकालयों में प्राय: विभिन्न स्रोतों से पुस्तकें प्राप्त की जाती हैं। पुस्तकालय अपने बजट से, अमरीकी सरकार के कानून पी. एल 480 की धनराशि से, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पुस्तकें तथा लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस, वाशिंगटन द्वारा पुस्तकें प्राप्त होती हैं।

1.1.5 हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ

विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं ने भी युवा लेखकों को प्रोत्साहित कर मार्गदर्शन का कार्य किया है। अमरीका में हिंदी की दो पत्रिकाएँ निकलती हैं :

(क) भारती : यह द्विमासिक है जिसका प्रकाशन शिकागो में जनवरी 1984 से शुरू हुआ। इसमें कविता, लघु कहानी, शिक्षाप्रद निबंध बच्चों की हिंदी शिक्षण सामग्री प्रकाशित होती है। यह पत्रिका नवोदित क्षेत्रीय हिंदी लेखकों को मंच प्रदान करती है।

(ख) भारत समाचार : सप्ताहिक हिंदी पत्रिका है जिसका प्रकाशन 26 जनवरी 1985 से विश्व सेवा आश्रम, न्यूयार्क द्वारा होता है। इसमें भारत से संबंधित समाचार, निबंध, कहानी, कविता इत्यादि का समावेश है।

भारतीय अंग्रेजी के पत्र-पत्रिकाओं में भी कभी-कभी विज्ञापनों में देवनागरी या रोमन लिपि में हिंदी दिखाई दे जाती है।

1.1.6 सिनेमा, चलचित्र, वीडियो फिल्म

हिंदी प्रचार-प्रसार का जितना कार्य हिंदी चलचित्रों एवं हिंदी फिल्मी गीतों ने किया है शायद ही उतना अन्य माध्यमों ने किया हो। भारतीय दूतावास तथा अन्य संस्थाओं द्वारा हिंदी

की पुरस्कृत व लोकप्रिय फिल्मों का प्रदर्शन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त भारत से आए कलाकारों के संगीत, नृत्य के कार्यक्रमों, अन्य सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजनों से हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को ही नहीं भारतीय संस्कृति के संवर्धन को भी बहुत बल मिला है। हिंदी भाषी एवं अहिंदी भाषी आप्रवासी भारतीयों के घरों में हिंदी गीतों की गूँज सुनाई पड़ जाएगी। वीडियो फिल्में तो हर घर में, भारतीय दुकानों में भरी पड़ी हैं। ये नई पीढ़ी को हिंदी सुनने, समझने का अवसर प्रदान करती हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान के विदेशी पाठ्यक्रम में हर वर्ष ऐसे विदेशी छात्र हिंदी पढ़ने आते हैं जिनकी हिंदी फिल्में देख कर भारतीय संस्कृति, संगीत, नृत्य एवं हिंदी भाषा सीखने में रुचि जागृत हुई।

1.1.7 आकाशवाणी, दूरदर्शन

भारतीय संस्कृति एवं हिंदी के प्रचार प्रसार में दृश्य-श्रव्य सामग्री के रूप में आकाशवाणी और दूरदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत से दूर देशों में आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर हिंदी के प्रोग्राम सुनकर व देखकर आप्रवासी भारतीयों को अपनापन का अनुभव होता है। इस तरह के कार्यक्रमों से बच्चों के गानों में भी हिंदी के स्वर सुनाई पड़ते रहते हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर हिंदी एवं यदाकदा अन्य भारतीय भाषाओं में चलचित्र संगीत, अमरीका एवं भारतीय संस्थाओं से संबंधित अंग्रेजी व हिंदी में समाचार, विज्ञापनों की उद्घोषणा (हिंदी एवं अंग्रेजी में) आदि कार्यक्रमों का प्रसारण होता रहता है। कुल मिलाकर 50% से ज्यादा कार्यक्रम हिंदी में ही होते हैं। आप्रवासी भारतीयों की घनी आबादी वाले शहरों में निम्न कार्यक्रमों का प्रसारण होता है :

गीतांजलि (वैस्टहार्टफोर्ट), मधुधुन, विविध भारती (बाल्टीमोर), नवरंग रागमालिका, गीतांजलि (बोस्टन), विश्वभारती (वोर सैस्टर), गीतमाला (ब्लूमफील्ड), विश्वगीतमाला (ट्रांटन), रंग महल (सायराक्यूस), मनोरंजक संगीत (पट्सबर्ग), मनचाहे गीत (कैलिफोर्निया, पेन्सिलवेनिया), भारत की झंकार, गुंजन, भारतवाणी (न्यूयार्क)। ये कार्यक्रम कैलिफोर्निया, न्यूयार्क, शिकागो में रोज दो-दो घंटे व सप्ताहांत में प्रसारित किए जाते हैं। 'वायस ऑफ अमेरिका' भी रोज हिंदी कार्यक्रमों का प्रसारण करता है लेकिन यह भारत में सुना जाता है। दूरदर्शन पर एक चैनल ऐसा है जिसमें दो से चार घंटे तक हिंदी के कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। अभी TV एशिया एक नया चैनल शुरू हुआ है जिस पर पूरा दिन हिंदी के कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। भारत के भी कुछ कार्यक्रम अमरीका में देखे जा सकते हैं।

2. कनाडा

2.0 कनाडा में भाषाई स्थिति

कनाडा का समाज भी बहुजातीय एवं बहुभाषी समाज है। यहाँ की भाषाएँ अंग्रेजी एवं फ्रेंच हैं लेकिन अन्य यूरोपीय भाषाओं के बोलने वाले लोग भी हैं। भारतीय महाद्वीप से गए लाखों लोग भी हैं जिनमें भारतीयों की संख्या सबसे अधिक है। इन लोगों के व्यावहारिक

सम्प्रेषण की भाषा हिंदी है। भारत के विभिन्न राज्यों से गए लोगों की आपसी संपर्क भाषा भी हिंदी है।

2.1 कनाडा में हिंदी शिक्षण

कनाडा में हिंदी पढ़ाने के 8 केंद्र हैं। प्राय: सभी मुख्य शहरों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। ये केंद्र निम्न हैं: बैंकूवर, टोरन्टो, विंडसर, मांट्रियल, रंजीना विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है। ये ऑटवा और टोरन्टो शिक्षा विभागों से मान्यता प्राप्त हैं। हिंदी भाषा के हाईस्कूल स्तर पर ग्रेड 10, 11 और 13 (OAC-Ontario Academic Credit) के क्रेडिट भी शिक्षा विभाग द्वारा मान्य हैं। टोरन्टो में कुछ चुने हुए हाइस्कूलों में अन्य विषयों व भाषाओं के साथ ही हिंदी भाषा की कक्षाएँ भी लगती हैं। ऑटवा में 'मुकुल हिंदी स्कूल' में सभी कक्षाओं में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन किया जा रहा है। मुकुल हिंदी स्कूल की स्थापना सन् 1971 में हुई थी। इसकी पूर्वी, पश्चिमी एवं मध्य क्षेत्रों में तीन शाखाएँ हैं। स्कूल में 4 से 17 वर्ष की आयु के बच्चे हैं। हिंदी भाषा की शिक्षा देने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति का ज्ञान भी कराया जाता है। यहाँ एक कक्षा वयस्कों के लिए भी लगती है। स्कूल का पूरा खर्चा शिक्षा विभाग उठाता है। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय समाज द्वारा दिए गए आर्थिक सहयोग पर निर्भर करता है। यहाँ की प्रान्तीय सरकार हैरिटेज लैंग्वेजेज के अन्तर्गत सप्ताह में दो घंटे हिंदी की कक्षाएँ नि:शुल्क चला रही है। इसके अतिरिक्त प्रौढ़ों के लिए सांध्यकालीन कक्षाएँ भी चल रही हैं।

2.1.1 शिक्षण सामग्री

स्कूलों में दो प्रकार के बच्चे हिंदी सीखते हैं। जिन घरों में हिंदी का वातावरण है उनके बच्चे सहजता से हिंदी सीख लेते हैं। जिन घरों में हिंदी का वातावरण नहीं है वहाँ बच्चों को हिंदी बोलना, पढ़ना, लिखना सीखने में अधिक कठिनाई होती है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालयों, विभिन्न कारणों से हिंदी भाषा एवं संस्कृति में रुचि रखने वाले विदेशी लोग भी हिंदी सीखते हैं। इन सबके लिए अलग-अलग शिक्षण सामग्री की आवश्यकता है। कई पाठ्यपुस्तकें भी तैयार हुई हैं। भारत से प्राप्त पुस्तकों द्वारा भी हिंदी सिखाई जा रही है।

2.1.2 विभिन्न संस्थाएँ

कनाडा में हिंदी प्रेमी विभिन्न संघ एवं संस्थाओं की स्थापना करके हिंदी प्रचार-प्रसार और शिक्षण कार्य में लगे हैं। आप्रवासी भारतीय अपने घरों में हिंदी में या अपनी भाषा में बातचीत करते हैं। मंदिर, पूजागृह में पूजा हिंदी में ही सम्पन्न की जाती है। शादी, विवाह, मुंडन आदि संस्कारों के अवसर पर हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है। वैंकूवर, मॉंट्रियल, ऑटवा और टोरन्टो में **हिंदी परिषद्, क्यूबेक हिंदी संघ, हिंदी लिटरेरी सोसाइटी, इंटरनेशल लिटरेरी सोसाइटी ऑफ गल्फ, हिंदी विद्यापीठ** आदि अनेक संस्थाएँ हैं जो हिंदी भाषा के उन्नयन में संलग्न हैं। इन संस्थाओं द्वारा समय-समय पर कवि सम्मेलनों एवं गोष्ठियों का आयोजन होता

रहता है। **इन्डो-कैनिडियन एसोसियेशन, हिंदी सोसाइटी** आदि अनेक एसोसियेशन हिंदी नाटक, नृत्य आदि के कार्यक्रम आयोजित करके भारतीय संस्कृति और रीतिरिवाजों को जीवित रखने का कार्य कर रही हैं। धार्मिक स्थानों जैसे, प्रार्थना मंदिर एवं हरे कृष्ण मंदिर में समय-समय पर भजन, कीर्तन आदि का कार्यक्रम भी चलता रहता है। विविध धार्मिक समारोहों का आयोजन किया जाता है। विश्व हिंदू परिषद और हिंदू स्वयंसेवक संघ आदि भी अपने मासिक कार्यक्रमों में हिंदी पर बल देते हैं।

2.1.3 पुस्तकालय

संयुक्त राज्य अमेरिका की भाँति कनाडा में भी सभी विश्वविद्यालयों, धार्मिक स्थानों, संस्थानों, भारतीय दूतावास के पुस्तकालयों में हिंदी पुस्तकों की संख्या काफी है।

2.1.4 पत्र-पत्रिकाएँ

हिंदी पाक्षिक पत्रिका 'विश्व-भारती' राष्ट्र भाषा हिंदी एवं भारतीय संस्कृति की संवाहिका के रूप में विख्यात है। इसके माध्यम से पाठकों को अपने मूल देश के तीज-त्यौहारों, पर्वों और धार्मिक महत्व की सूचनाएँ पहुँचती रहती है। साथ ही उन्हें अच्छी साहित्यिक सामग्री भी मिलती है। इसमें हिंदी सिखाने के लिए भी एक स्तम्भ है। इसमें विज्ञापन हिंदी में छपते हैं। निमंत्रण पत्र आदि भी हिंदी में छपवाए जाते हैं। टोरन्टो में पिछले कई वर्षों से 'संमम' नाम का पाक्षिक पत्र निकल रहा है। नवम्बर 1982 से 'जीवन-ज्योति' पत्रिका प्रकाशित हो रही है।

2.1.5 आकाशवाणी, दूरदर्शन

आकाशवाणी पर भजनमाला आदि अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। दूरदर्शन पर विविध हिंदी प्रोगामों को दिखाया जा रहा है।

2.1.6 हिंदी फिल्में, चलचित्र, वीडियो फिल्म

हिंदी चलचित्र, वीडियो फिल्मों ने भी हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में पर्याप्त योगदान दिया है। भारतीय तथा विदेशी लोगों को जहाँ भारतीय संस्कृति देखने का अवसर मिलता है. वहाँ हिंदी भी उनके कानों में पड़ती है।

3. मैक्सिको

मैक्सिको में स्पेनिश भाषा बोली जाती है। वहाँ प्रारम्भिक स्तर पर हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था है। स्थानीय भारतीय एवं विदेशी नागरिकों के आग्रह पर भारतीय दूतावास ने हिंदी तथा संस्कृत की कक्षाओं की व्यवस्था की है। ये कक्षाएँ सप्ताह में एक बार होती हैं। इन कक्षाओं के लिए हिंदी पुस्तकें भारत से भेजी गई हैं।

4. क्यूबा

उत्तरी अमरीका के देश क्यूबा में भी हिंदी अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। इस देश में हिंदी की स्थिति पर इसी पुस्तक में डॉ. ठाकुरदास के लेख में विस्तृत चर्चा की गयी है।

5. दक्षिणी अमरीका में हिंदी की स्थिति

दक्षिणी अमरीका के जिन देशों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन का कार्य हो रहा है वे निम्नलिखित हैं :

5.1 अर्जेन्टाइना

अर्जेन्टाइना में स्पेनिश भाषा बोली जाती है। यहाँ इण्टरडिसिप्लनरी इंस्टीट्यूट ऑफ अफ्रीको-एशियन स्टडीज (Interdisciplinary Institute of Africo-Asian Studies) मैमोनिडेस विश्वविद्यालयों ने अपने यहाँ भारत विद्या संकाय की स्थापना की है जहाँ हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य आदि से सम्बन्धित पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं। इसमें हिंदी को भी स्थान दिया गया है। आधुनिक भारत के अध्ययन से सम्बन्धित केंद्र 'आनंद भवन' में प्रति सप्ताह एक घंटे हिंदी की कक्षाएँ लगती हैं। भारत सरकार ने आनन्द भवन को हिंदी पुस्तकें तथा टाइपराइटर प्रदान किया है।

5.2 वेनाज़ूला, कोलम्बिया, ब्राजील

दक्षिणी अमरीका के वेनाज़ूला, कोलम्बिया में स्पेनिश बोली जाती है। ब्राजील की भाषा पुर्तगीज़ है। इन तीनों देशों में रहने वाले विदेशी एवं भारतीय लोगों ने हिंदी पढ़ने में रुचि प्रकट की है। भारत सरकार ने दूतावास के माध्यम से हिंदी पुस्तकें भेजी हैं।

5.3 चिली

चिली के सान्तियोगो के 'रिपब्लिक ऑफ इंडिया स्कूल' में हिंदी का सामान्य पाठ्यक्रम है। यहाँ भारतीय संस्कृति तथा भारत के संबंध में भी जानकारी दी जाती है। छात्र सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। भारत सरकार ने पढ़ने के लिए हिंदी की पुस्तकें भेजी हैं।

संदर्भिका

(क) संदर्भ ग्रंथ : विश्व में हिंदी, खंड 1, 2, सं. डॉ. हरिबाबू कंसल, सुधांशु बन्धु, नई दिल्ली— 57

(ख) पत्रिकाएँ : 1. स्मारिका, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन।

2. गगनाञ्चल, आई. सी. सी. आर. नई दिल्ली।

(ग) लेख : 'संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी : स्वरूप एवं संभावनाएँ'— डॉ. चन्द्रप्रभा जैन, संगोष्ठी, अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी : स्वरूप और संभावनाएँ' 4-6 जनवरी 1990, केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र।

क्यूबा में हिन्दी शिक्षण : कुछ अनुभव

ठाकुरदास

संयुक्त राज्य अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य के दक्षिण में, मैक्सिको के पूर्व में, छोटे-बड़े द्वीपों का समूह **क्यूबा** आज विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। यह विशिष्टता अमेरिका महाद्वीप में सर्वप्रथम स्वतंत्र तथा समाजवादी राष्ट्र की स्थापना या अन्तर्राष्ट्रीय खेल जगत में अपनी गौरवशाली उपलब्धियों या निर्गुट आंदोलन के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर होने, औपनिवेश शोषण से मुक्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय मानववाद के अग्रदूत होने आदि विभिन्न कारणों से है।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कुछ भारतीय मजदूर त्रिनिदाद से जमाइका होते हुए क्यूबा पहुँचे थे। उन दिनों क्यूबा की संपन्नता की कहानियाँ उन्हें वहाँ खींच लायी थीं। वे क्यूबा के दक्षिणी भाग 'ओरियंते' प्रांत में बस गये। बहुत कम संख्या में होने के कारण वे अपनी भाषा तथा संस्कृति को सुरक्षित न रख सके। मुझे केवल एक व्यक्ति (श्री अजीत सिंह) हवाना में मिले। वे कूबाई रेडियो-टेलिविजन संस्थान में काम करते हैं। वे हिंदी बोल लेते हैं लेकिन उनके परिवार के सभी सदस्य स्पेनिश का ही व्यवहार करते हैं। इस प्रकार क्यूबा में हिंदी भाषा का कोई व्यवहार नहीं मिलता।

क्यूबा में हिंदी शिक्षण

विश्व मानचित्र पर भारत के शांति, सहअस्तित्व एवं निर्गुट आंदोलन के संस्थापक एवं संरक्षक तथा विश्व में सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में अभ्युदय के फलस्वरूप विदेशों में भारतीय राजनीति, सभ्यता, संस्कृति और राजभाषा हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ना स्वाभाविक ही है। इन्हीं कारणों से हिंदी आज संपूर्ण विश्व में न्यूनाधिक रूप से पढ़ी व जानी जाती है।

सन् 1978 में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देने तथा 1979 में छठे निर्गुट सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में क्यूबा के चुने जाने और भारत के साथ सांस्कृतिक राजनैतिक संबंधों को दृढ़ करने के उद्देश्य से संभवत: क्यूबा सरकार ने अपने यहाँ हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था कराने का अनुरोध भारतीय दूतावास के माध्यम से भारत सरकार से किया। भारत सरकार की विदेशों में हिंदी प्रचार तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजना के अंतर्गत **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्** के तत्वावधान में अगस्त 1979 में पहली बार यहाँ हिंदी का अध्ययन शुरू हुआ। इस कार्य के लिए हवाना

विश्वविद्यालय, क्यूबा में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के रीडर और इन पंक्तियों के लेखक को नियुक्त किया गया।

क्यूबा में विदेशी भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था का निश्चय सरकार अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं और आवश्यकता के अनुसार तय करती थी। अध्ययन पूरा करने पर विभिन्न सरकारी प्रतिष्ठानों, प्रेसालातीना (संवाद-समिति), विदेशी भाषा अनुवाद संस्थान आदि संस्थाओं में नियुक्त किये जाते थे। क्यूबा में आए दिन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन होते रहते थे जिनमें विदेशी भाषाओं के अनुवादकों तथा अनुवाचकों की आवश्यकता पड़ती रहती थी। साथ ही क्यूबा में प्रदर्शित सभी विदेशी फिल्मों की सब-टाइटलिंग स्पेनिश में अवश्य की जाती थी। यह कार्य क्यूबा का रेडियो टेलिविजन संस्थान विदेशी भाषा के अनुवादकों की सहायता से करता था। इसके अतिरिक्त क्यूबा में कई हजार विदेशी तकनीशियनों (मुख्यतया इंजीनियर) के साथ काम करने के लिए अनुवादकों एवं अनुवाचकों की सेवाएँ ली जाती थीं। विश्व की लगभग सभी राज भाषाओं के अनुवादक, अनुवाचक क्यूबा में उपलब्ध थे। समय-समय पर होने वाले विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की कार्यवाही का तात्कालिक अनुवाद संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्वीकृत भाषाओं में किया जाता था। और यही स्थिति अब भी वहाँ चल रही होगी।

पाठयोजना

क्यूबा में प्रोग्राम-I तथा प्रोग्राम-4 बनाने की एक परंपरा चली आ रही थी। यह परंपरा समाजवादी भाषा शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख अंग के रूप में मुझे बतायी गई। मुझे भी प्रथम वर्ष के दो सत्रों के लिए दुभाषिए (अनुवाचक) की सहायता से उक्त कार्यक्रम बनाने पड़े। प्रारंभ में तो यह काफी श्रमसाध्य, निरर्थक तथा अरुचिपूर्ण लगा लेकिन बाद में चलकर मैं भी उस व्यवस्था का कायल हो गया। प्रोग्राम-I में प्रत्येक सत्र में 19 सप्ताह के लिए शिक्षण तथा परीक्षण सामग्री को मोटे तौर पर क्रमबद्ध किया जाता था तथा प्रोग्राम-4 में प्रत्येक अंतर (19 सप्ताह X 18 अंतर प्रति सप्ताह) में कौन सा पाठ पढ़ाया जाएगा, उसमें क्या पढ़ाया जाएगा, कैसे पढ़ाया जाएगा, किन-किन दृश्य/श्रव्य उपकरणों की आवश्यकता होगी या श्यामपट्ट का प्रयोग किया जाएगा सभी अच्छे साधनों को सविस्तार वर्णन किया जाता था।

इससे अध्यापक प्रत्येक सत्र के लगभग 342 अंतरों में सामग्री को बाँटकर अपनी अध्यापन गति को विद्यार्थी की भाषा अध्ययन गति के साथ तालमेल बैठाते हुए अध्यापन कार्य कर सकता था। इन कार्यक्रमों को तैयार करने तथा एक बार स्वीकृत कर लेने के बाद इसमें फेरबद्‌ल करना संभव नहीं था। ये सरकारी दस्तावेज की तरह माने जाते थे। इस प्रकार कार्यक्रम में उपलब्ध समयावधि का अध्यापक तथा छात्र दोनों को पूरा लाभ मिल सकता था। तथाकथित विकसित राष्ट्रों में छात्रों के स्तर पर दर्शनीय उच्छृंखलता या अध्यापकों के मनमाने तौर पर अध्यापन करने के अवसर लगभग नहीं दिखाई दिए।

पाठ्‌यक्रम योजना

क्यूबा में हिंदी का अध्ययन विश्वविद्यालयीय चतुर्वर्षीय स्नातक पाठ्‌यक्रम के रूप में प्रारंभ हुआ। पाठ्‌यक्रम के पहले दो वर्ष हिंदी भाषा की संरचना के गहन अध्ययन के लिए

रखे गए। सप्ताह के कुल तीस अंतरों की पढ़ाई में से 18 से 20 अंतर हिंदी संरचना के लिए निश्चित किए गए। प्रारंभ में विभिन्न सांस्कृतिक-सामाजिक संदर्भों में हिंदी भाषा के मौखिक पक्ष पर बल देते हुए शिक्षण सामग्री तैयार की गयी।

प्रत्यक्ष विधि के आधार पर अध्यापन कार्य किया गया। अन्य विदेशी भाषाओं के चतुर्वर्षीय पाठ्यक्रमों के अनुरूप हिंदी का भी पाठ्यक्रम क्यूबा सरकार द्वारा स्वीकृत पद्धति के अनुसार प्रारंभ किया गया जिसमें विषयों के चुनाव तथा अध्ययन कार्य में फेरबदल करने का कोई भी अधिकार अध्यापक या पाठ्यक्रम निर्माता को नहीं था। यहाँ क्यूबा में चलाए गए हिंदी पाठ्यक्रम का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे उसकी उपलब्धियों और सीमाओं का रूप खुद-ब-खुद उभकर सामने आ जाएगा।

पहले सत्र में माइक्रोवेव पद्धति के आधार पर निर्मित विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में हिंदी भाषा के मौखिक पक्ष पर बनाए गए छोटे-छोटे वार्तालाप पाठ रखे गये जिनके आधार पर छात्रों के भाषा ज्ञान एवं कौशल को क्रमबद्ध रूप से विकसित किया गया। साथ ही हिंदी लिपि चिह्नों की आकार मानता के विश्लेषण पर आधारित देवनागरी लिपि के लिए तैयार सामग्री के द्वारा एक सुनियोजित पाठ्यक्रम तैयार किया गया। इस प्रकार की पाठ्य सामग्री का सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि छात्र केवल दो महीनों (कुल तीस अंतरों) में ही देवनागरी लिपि में लिखना-पढ़ना सीख गए। विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितियों में हिंदी का प्रयोग करने लगे। उच्चारण पक्ष पर बल देने के लिए स्पेनिश-हिंदी उच्चारण व्यवस्था के व्यतिरेकी विश्लेषण के आधार पर उच्चारण पाठ तैयार किये और इनके आधार पर भाषा प्रयोगशाला में टेपबद्ध सामग्री के द्वारा गहन अभ्यास कराया गया।

पाठ्यक्रम के पहले सत्र में औपचारिक कक्षागत अध्यापन के अतिरिक्त अनौपचारिक रूप से भी विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में भाषा व्यवहार पर बल दिया गया। विद्यार्थी अध्यापक के घर पर आते जाते थे— कई औपचारिक अवसरों पर अध्यापक के निर्देशन में मित्रवत रूप से भाषा व्यवहार और भाषा शोधन के अवसर भी विद्यार्थियों को प्राप्त हुए। तत्कालीन राजदूत महोदय की पत्नी तथा प्रथम सचिव की पत्नी ने इस कार्य में काफ़ी सहयोग प्रदान किया। इसके साथ-साथ दृश्य उपकरणों का भी प्रयोग किया गया। स्थानीय पर्यटक स्थानों, महत्वपूर्ण भवनों, दुकानों में सजे सामानों आदि के स्लाईड तैयार किए गए और उनके माध्यम से कक्षा में भाषाई परिवेश का सृजनकर भाषा शिक्षण में भरपूर सहयोग किया गया। भाषा की पाठ सामग्री में नाटकीयता का पुट देते हुए उसे भाषा व्यवहार की सामग्री ही माना गया। प्रत्येक पाठ की सामग्री मानो भाषा व्यवहार की वास्तविक स्थिति की 'स्क्रिप्ट' ही हो जिस पर कक्षा रिहर्सल कर रही हो।

दूसरे सत्र में भाषा के लिखित रूप पर बल दिया गया। उच्चारण में होने वाली अशुद्धयों को सुधारने के लिए सुधारात्मक सामग्री के आधार पर कार्य किया गया। भारतीय परिवार व्यवस्था, रिश्ते-नाते की शब्दावली, विभिन्न मैत्री-परक एवं पारिवारिक संदर्भों वाली

सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित शिक्षण सामग्री का निर्माण किया गया तथा पाठ्यक्रम को अपने सुनिश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ाया गया।

दूसरे तथा तीसरे वर्ष में हिंदी की विभिन्न सामाजिक शैलियों तथा प्रयुक्तियों पर आधारित पाठों का निर्माण किया गया। इनमें भारतीय संस्कृति की झाँकी प्रस्तुत करने वाली सामग्री विभिन्न क्रांतिकारियों की जीवनियाँ, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी जैसे राष्ट्रीय नेताओं के भाषण, भारत की सामाजिक, आर्थिक तथा ऐतिहासिक विशेषताओं को दर्शाने वाली साम्रग्री, हिंदी साहित्य की कुछ प्रतिनिधि रचनाएँ, हिंदी फिल्मी गीत, तथा ध्वनि संयोजन आदि सम्मिलित किये गये। इस प्रकार अध्यापन में दृश्य एवं श्रव्य सामग्री जैसे— टेपरिकार्डर, स्लाइड प्रोजेक्टर, भाषा प्रयोगशाला आदि उपकरणों का यथावश्यक उपयोग किया गया। उक्त पाठ्यक्रम में दृश्य श्रव्य सामग्री के उपयोग के परिणाम काफ़ी उत्साहवर्धक रहे।

तीसरे वर्ष में हिंदी संरचना के अध्यापन कार्य के साथ-साथ हिंदी ध्वनि विज्ञान, हिंदी कोश तथा अर्थविज्ञान, हिंदी व्याकरण, हिंदी साहित्य, शैली-विज्ञान आदि विषयों का अध्यापन कार्य भी किया गया। इन विषयों पर भारतीय लेखकों की अत्यंत संस्कृतनिष्ठ शैली में लिखी गयी पुस्तकें छात्रों के लिए दुरूह पायी गयीं। इसीलिए पाठ्यक्रम की आधारभूत सामग्री के लिए 'अध्यापक नोट्स' ही एक मात्र सहारा थे।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त तीसरे तथा चौथे वर्ष में क्रमश: स्पेनिश से हिंदी तथा हिंदी से स्पेनिश के अनुवाद का भी प्रशिक्षण दिया गया। इस संबंध में संरचनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया। पदबंध, वाक्य तथा प्रोक्ति स्तर पर पाठ विश्लेषण के आधार पर अनुवाद के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुवाद क्षमता का विकास किया गया। इसके संबंध में भी काफ़ी रोचक परिणाम सामने आये। अब विद्यार्थी हिंदी समाचार पत्रों, छोटी-छोटी कहानियों, भाषणों आदि की सामग्री का स्पेनिश में अनुवाद कार्य करने लगे। स्पेनिश से हिंदी के अनुवाद में उसे अवश्य कठिनाई महसूस होती थी। इसके लिए और अधिक अभ्यास एवं हिंदी भाषा के उच्च स्तरीय ज्ञान की आवश्यकता थी। सबसे बड़ी आवश्यकता रही— शब्दकोश की। स्पेनिश-हिंदी या हिंदी-स्पेनिश कोश, (मेरी जानकारी में) तब तक प्रकाशित नहीं हुआ था। विद्यार्थियों को अनुवाद्य सामग्री के विश्लेषण के आधार पर सहायक शब्दावली के रूप में हिंदी या स्पेनिश शब्दों, अभिव्यक्तियों के अनुवाद पर्याय देते हुए अनुवाद पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाया गया।

परीक्षण/मूल्यांकन

प्रत्येक सत्र में तीन परीक्षणों का आयोजन होता था जिनसे छात्रों तथा अध्यापक को स्वमूल्यांकन का अवसर मिल सके। इन परीक्षाओं में "पूर्ण पारदर्शिता" के दर्शन मुझे हुए। मूल्यांकन में व्यक्ति निष्ठता के स्थान पर वस्तुनिष्ठता पर अधिक बल दिया जाता था। किसी भी छात्र को अपने ग्रेड के संबंध में सीधे अध्यापक से या छात्र संघ के माध्यम से पूछने का अधिकार प्राप्त था।

दूसरी तरफ प्रत्येक सत्र में लगभग तीन निरीक्षण किए जाते थे। एक निरीक्षण संकल्प के स्तर पर 'क्लासे आबिएर्ता' (खुली कक्षा) के रूप में होता था जिसमें संकाय के अन्य भाषाओं के अध्यापक (सात-आठ) की अंतर की अवधि तक कक्षा का निरीक्षण करते थे और अपने नोट्स के आधार पर निरीक्षण रिपोर्ट देते थे; दूसरा निरीक्षण शिक्षा मंत्रालय के विशेषज्ञों द्वारा किया जाता था और तीसरा निरीक्षण राष्ट्रपति का शैक्षिक स्कंध करता था। इन निरीक्षणों के आधार पर प्रत्येक अध्यापक की निरीक्षण रिपोर्ट के आधार पर मूल्यांकन किया जाता था— यह भी पूर्ण पारदर्शिता के साथ होता था। जिन अध्यापकों को सभी निरीक्षणों में उच्चतम ग्रेड मिलते थे। उन्हें 'शिक्षक दिवस', पर सिंडीकेट द्वारा सम्मानित किया जाता था। इस प्रकार अध्यापकों में भी अपने कार्य को 'उत्तम' बनाने की होड़ लगी रहती थी।

समस्याएँ

कार्याधिक्य के कारण क्यूबा की सरकार ने दूसरे अध्यापक के लिए माँग सन् 1980 के उत्तरार्ध में दे दी थी, लेकिन किन्हीं कारणों से दूसरा अध्यापक उपलब्ध न हो सका, जिसके परिणामस्वरूप 'हिंदी साहित्य', 'भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक-राजनैतिक अध्ययन' तथा 'भारतीय इतिहास' जैसे विषयों का अध्यापन कार्य क्यूबा (हवाना) के अन्य संस्थानों/हवाना विश्वविद्यालय के साहित्य/इतिहास विभाग के अध्यापकों के द्वारा 'स्पेनिश' में ही कराया गया। हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रम में रामायण, महाभारत, वेद, कालिदास तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर का अध्यापन कराया गया। इस प्रकार की सामग्री सार्वजनिक भारतीय साहित्य का प्रतिनिधित्व भले ही करे, हिंदी साहित्य की सामग्री नहीं मानी जा सकती थी। अधिकारियों को स्थिति स्पष्ट कर दी गयी लेकिन इस व्यवस्था को अपनाने के सिवा और कोई चारा नहीं था क्योंकि दूसरे अध्यापक का प्रबंध नहीं हो पाया था।

परिवेश का अभाव

क्यूबा में रूसी, बल्गारियन, रूमानियन, चेक, पोलिश, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, जापानी आदि विदेशी भाषाओं की फिल्में, सिनेमागृहों में तथा दूरदर्शन पर प्रदर्शित की जाती हैं। इस प्रकार उन भाषाओं के विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर भाषा का कुछ न कुछ परिवेश मिल जाता है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, क्यूबा में कक्षा से बाहर हिंदी भाषा प्रयोग के अवसर बिलकुल नहीं थे। ऐसी स्थिति में मात्र दूतावास के अधिकारी ही अवसर उपलब्ध करा सकते थे। ऐसी हालत में तत्कालीन राजदूत महोदय से अनुरोध किया गया कि दूतावास के द्वारा हिंदी लघु चित्रों या वृत्त चित्रों के प्रदर्शन के अवसर पर हिंदी विद्यार्थियों को भी बुलाया जाए या दूतावास के द्वारा अन्य स्थानों पर सीमित प्रदर्शन के लिए फ़िल्में दी जाएँ। दूतावास से बाहर फ़िल्में ले जाने की बात तो स्वीकार नहीं हुई, लेकिन दूतावास में फ़िल्म प्रदर्शन के अवसर पर विद्यार्थियों को बुलाने की बात सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर ली गयी। इस व्यवस्था के अंतर्गत दूतावास द्वारा कभी-कभार कुछ विद्यार्थियों को फ़िल्म प्रदर्शन के अवसर पर बुलाया

भी गया। हिंदी के विद्यार्थियों को भारतीय गणतंत्र-दिवस के अवसर पर राजदूत महोदय के घर पर प्रीति-भोज में अवश्य सम्मिलित किया जाता था, किंतु भाषाई परिवेश उपलब्ध कराने में ये अवसर मात्र 'नमस्ते' तथा 'धन्यवाद' तक ही सीमित रहते थे।

यह भी देखा गया कि जब विद्यार्थी हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के लिए दूतावास के पुस्तकालय में जाते तो उनसे दूतावास के भारतीय कर्मचारी अक्सर स्पेनिश में ही बातचीत करते, जबकि विद्यार्थी इनका जवाब हिंदी में ही देते थे। यहाँ भी उन्हें हिंदी प्रयोग के अवसर नहीं मिल पाते थे। इस स्थिति की शिकायत वे मुझसे बार-बार करते रहते थे।

क्यूबा में राजदूतों के परिचय-पत्र प्रस्तुत करने, विशिष्ट नेताओं के क्यूबा आगमन पर उनका सम्मान किये जाने आदि के कार्यक्रमों का दूरदर्शन पर सीधा प्रसारण होता था। ऐसे अवसरों पर सभी देशों के राजनयिक प्रतिनिधि अपने देश की ही भाषा में बोलते थे। विभिन्न सामाजिक-राजनैतिक कार्यक्रम के अवसर पर भारतीय राजदूत महोदय या दूतावास के अन्य उच्च अधिकारी सामान्यता अंग्रेजी का ही प्रयोग करते थे और उनके भाषण का स्पेनिश अनुवाद दूतावास की कोई स्थानीय सहायिका किया करती थीं। बाद में नये राजदूत महोदय आये। उन्होंने अपने कार्यकाल के पहले ही कुछ महीनों में अपने औपचारिक अवसरों पर दिये जाने वाले भाषण स्पेनिश में ही देने प्रारंभ कर दिये। श्रोता उनके स्पेनिश प्रेम एवं ज्ञान की प्रशंसा करते नहीं थकते थे। एक बार ऐसे ही किसी अवसर पर एक प्रश्न पूछा गया। "अन्य सभी देशों के राजदूत अपने देश की ही भाषा में बोलते हैं। क्या आप लोगों की अपनी कोई राजभाषा नहीं?" मैं उत्तर देने के लिए शब्दों को व्यवस्थित कर ही रहा था कि उन्होंने स्वयं ही कहा— **अच्छा! भारत लगभग दो-तीन सौ वर्षों तक इंग्लैंड का उपनिवेश रहा है इसलिए अंग्रेजी ही आप लोगों की राजभाषा है।** भले ही यह कथन कटु हो लेकिन सत्य है। आज भी हम औपनिवेशिक दासता की मानसिकता से कहीं अधिक अभिभूत हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू अकसर कहा करते थे कि हमारे राजनयिक प्रतिनिधियों को औपचारिक अवसरों पर देश की राजभाषा का ही प्रयोग करना चाहिए। विदेश मंत्रालय द्वारा भी यही व्यवस्था स्वीकृत है। हिंदी हमारी संविधान सम्मत राजभाषा है, अंग्रेजी तो सह-राजभाषा है लेकिन हमारा नौकरशाही वर्ग इसे मानें तब न!

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

हिंदी पाठ्यक्रम के तीसरे वर्ष में हवाना में एक बहुत बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। उसमें भारत से भी कई प्रतिनिधि आने वाले थे। वहाँ की सरकार ने दो हिंदी विद्यार्थियों की सेवाएँ अनुवाद-अनुवाचन के लिए माँगीं। कक्षा दो के विद्यार्थियों को इस संबंध में आवश्यक तैयारी करा दी गयी। विद्यार्थियों में एक का नाम मारित्सा था। मारित्सा ने जी-जान से तैयारी की थी। निश्चित समय वह तथा अंग्रेजी अनुवादक-अनुवाचक हवाई अड्डे पर मौजूद थे। हवाई जहाज में नीचे आते ही मारित्सा ने अपने लिए निर्धारित प्रतिनिधि महोदय का अभिवादन करते हुए जैसे ही नमस्ते कहा, प्रतिनिधि महोदय अत्यंत आश्चर्य मिश्रित स्वर में बोले **ओ, यू स्पीक**

हिंदी! मारित्सा अंग्रेजी नहीं जानती थी। उसने अनुमान से उत्तर दिया, ''जी हाँ। मेरा नाम मारित्सा है। अब हम लोग यहाँ से होटल चलेंगे।'' ''यू स्पीक वैरी गुड हिंदी, वेयर डिड यू लर्न इट?'' प्रतिनिधि महोदय ने बीच में ही काटते हुए कहा, मारित्सा कोई उत्तर न दे सकी। तब उन्होंने वहीं उपस्थित प्रोटोकोल अधिकारी से कहा, ''शी शुड नॉट बादर, लाइक अदर्स, आइ केन मैनेज विद इंगलिस इंटरप्रेटर।'' खैर मारित्सा दूसरे दिन कक्षा में मौजूद थीं।

इस घटना का प्रभाव मारित्सा पर ही नहीं बल्कि सभी विद्यार्थियों पर हुआ। उन्हें हिंदी सीखने की उपयोगिता पर शंका होने लगी। उन्होंने कई स्तरों पर यह प्रश्न भी उठाया कि भारतीय तो हिंदी में बोलते ही नहीं तब वे हिंदी सीखकर क्या करेंगे? तब से छात्रों का भाषा अध्ययन में पहले जैसा उत्साह न रहा। उन्हें अपना भविष्य धूमिल दिखायी देने लगा। कुछ विद्यार्थी तो हिंदी छोड़कर अंग्रेज़ी सीखने की योजना बनाने लगे। इस घटना से उन्हें इतना तो भान हो गया कि उन्हें हिंदी प्रयोग के अवसर नहीं मिल पायेंगे और उनके हित अंग्रेजी अनुवादों-अनुवाचकों से टकराते रहेंगे।

क्यूबा में भारत तथा भारतीय संस्कृति के प्रति विशेष अनुराग है। वे भारतवासियों को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, रवींद्रनाथ ठाकुर, इंदिरा गांधी के बारे में काफी जानते हैं तथा और अधिक जानने की इच्छा रखते हैं।

पाठ्यक्रम की सीमाएँ

क्यूबा में हिंदी पाठ्यक्रम की सबसे बड़ी सीमा रही— विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर भाषा-अभ्यास के अवसर का न मिल पाना। भाषा व्यवहार से पुष्ट होती है, व्यवहार में न आने के कारण भाषा-ज्ञान क्षीण होने लगता है। उनके भाषा-ज्ञान को बनाए रखना और विषम परिस्थितियों में आगे बढ़ाना पाठ्यक्रम की मुख्य चुनौती रही, जिसे पूरा करने की भरसक कोशिश की गयी।

दूसरा सबसे बड़ा अभाव खटकता था— विशेषकर अनुवादक-अनुवाचक पाठ्यक्रम के लिए स्पेनिश-हिंदी तथा हिंदी-स्पेनिश शब्दकोश का अभाव। इस दिशा में स्पेनिश सीखने के बाद कार्य प्रारंभ किया गया। 1982-83 में स्पेनिश-हिंदी शब्दकोश के तीन हजार शब्दों को अंतिम रूप दिया गया। यह शब्दकोश लगभग 25,000 शब्दों को लेकर बनाया जा रहा था और इसकी सामग्री वहाँ के समाचार पत्रों/पत्रिकाओं से संकलित की गयी थी। शब्द संकलन का कार्य भी काफी बढ़ चुका थां। माननीय भारतीय राजदूत महोदय ने इस योजना में काफी उत्साह दिखाया। लेकिन दूतावास से टंकण सहयोग न मिलने के कारण यह कार्य वहीं रोकना पड़ा। अब इसे व्यक्तिगत परियोजना के रूप में पूरा कर लिया गया है, लेकिन अभी तक यह प्रकाशित नहीं हो पाया है।

स्पेनिश भाषियों को हिंदी पढ़ाने के संबंध में शिक्षण सामग्री का अभाव विशेष रूप से खटकता है। दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का अभाव तो है ही। चूँकि विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की जो सामग्री उपलब्ध है वह अंग्रेजी व्याख्या के साथ उपलब्ध है। इसलिए

वह स्पैनिश भाषियों के उपयोग में नहीं आ सकती। शिक्षण सामग्री की कमी के बारे में मुझे क्यूबा विदेशी भाषा संस्थान के 'रेक्टर' से हुई पहली भेंट का स्मरण आता है जब उन्होंने मुझसे पूछा था कि भारत से हिंदी पढ़ाने के लिए शिक्षण सामग्री का कोई 'किट' साथ लाए हैं? उनका आशय था स्लाइड, फिल्म, चित्र, टेप आदि दृश्य-श्रव्य सामग्री से। इस प्रकार की सामग्री विदेशों में भाषा शिक्षण के लिए नितांत आवश्यक है। इससे विद्यार्थियों को भाषा का सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष समझने में काफी सहायता मिलती है। केंद्रीय हिंदी संस्थान इसमें अवश्य योगदान कर सकता है।

अपने क्यूबा प्रवास के अनुभवों के आधार पर यह कहना चाहूँगा कि वहाँ अनुवादक-अनुवाचक विशेषज्ञता वाले पाठ्यक्रम के लिए स्थितियाँ अनुकूल नहीं। अच्छा यह होगा कि क्यूबा में प्रौढ़ शिक्षा के रूप में पढ़ाई जाने वाली अन्य विदेशी भाषाओं की तरह हिंदी का एक-वर्षीय या दो-वर्षीय पाठ्यक्रम चलाया जाए। ऐसे पाठ्यक्रमों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के अंत में अन्य विदेशी छात्रों की तरह भारत में **केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा** में भेजा जा सकता है। ऐसे दो-तीन पाठ्यक्रम चलाने के बाद वहीं के विद्यार्थी भारत में उच्च प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद स्वयं अध्यापक बन जाएँगे। ऐसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से अपनी इच्छा तथा रुचि से सीखने वाले छात्रों की संख्या भी पर्याप्त होगी। तभी हिंदी पढ़ाने पर किए जाने वाले खर्च को सार्थक ठहराया जा सकेगा।

भारत में भी जहाँ-जहाँ स्पेनिश भाषा की पढ़ाई होती है— वहाँ अंग्रेजी स्पेनिश तथा स्पेनिश-अंग्रेजी के अनुवाद का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार का प्रशिक्षण हिंदी के माध्यम से स्पेनिश-हिंदी तथा हिंदी-स्पेनिश के अनुवाद-अनुवाचन की योग्यता विकसित नहीं करता। विदेशों में विशेषकर स्पेनिश-हिंदी तथा हिंदी-स्पेनिश के पाठ्यक्रमों की आवश्यकता है। वे भारत से हिंदी के माध्यम से जुड़ना चाहते हैं, लेकिन आज भी आधारित सुविधाओं का अभाव है। स्थिति इतने वर्षों बाद भी लगभग वही है।

आज आवश्यकता है आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए विदेशियों को हिंदी पढ़ाने के लिए वीडियो पर आधारित शिक्षण सामग्री का विकास किया जाए। अब तो 'मल्टी-मीडिया' के आधार पर अत्यंत आधुनिक शिक्षण सामग्री का विकास किया जा सकता है। इसके लिए भारत सरकार द्वारा स्थापित भाषा संस्थान अवश्य सहायता कर सकते हैं। ऐसे कार्य एक निश्चित समय सीमा में और विशेष प्रयास द्वारा ही संभव हो सकते हैं।

विविधा

जन संचार माध्यम और विश्व हिन्दी का स्वरूप

वशिनी शर्मा

1.0 बीसवीं सदी में इलैक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों ने सारे विश्व को एक सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया है, जिसमें अपनी व्यापकता के कारण टेलीविजन प्रमुख माध्यम है। टेलीविजन के अंतर्राष्ट्रीय प्रसार एवं प्रचार के कारण आज विश्व एक 'ग्लोबल विलेज' बन गया है। कोई भी सूचना या संदेश विश्व भर में प्रसारित हो जाती है और तुरंत उसकी प्रतिक्रिया भी शुरू हो जाती है। वैसे भी दृश्य एवं श्रव्य माध्यम होने के कारण इसमें आम आदमी को प्रभावित करने की क्षमता भी सर्वाधिक है। अभिजात्य वर्ग के मनोविनोद का साधन तो यह है ही, आम आदमी के लिए भी सूचना एवं मनोरंजन प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। अतः यह हमारे घर परिवार का ऐसा हिस्सा बन गया है जिसे वहाँ से हटाना नितांत असंभव है।

टेलीविजन के बाद वीडियो, केबल टीवी और उपग्रह टीवी। यह दौड़ लगातार जारी है और यह संजाल मकड़जाल की तरह छा गया है। भारत में केबल टीवी नवें दशक के मध्य में महानगरीय होटलों से प्रारंभ हुआ और कुछ ही समय में इसके माया जाल में संपूर्ण देश आ गया। हमारे यहाँ केबल टीवी, वी. सी. आर. के विकल्प के रूप में सामने आया क्योंकि प्रतिमाह कुछ निश्चित राशि देकर प्रतिदिन अनेक मनोरंजक कार्यक्रम कई घंटों तक घर बैठे देखे जा सकते हैं। उस पर दिखाये जाने वाले कार्यक्रम मुख्यतः विदेशी तथा स्वदेशी कार्यक्रमों पर आधारित हैं। जनता की केबल के प्रति बढ़ती रुचि देखकर अन्य देशों ने भी भारत में इस क्षेत्र में पदार्पण किया। उद्योगपति घरानों और इकाइयों ने भी मास्टरप्लान बनाये जिनमें मोदी, हिंदूजा, बिरला, गोयनका, अंबानी, जैन, जी टीवी, सोनी आदि प्रमुख हैं।

तीसरी दुनिया के प्रतिनिधि नेटवर्क की जहाँ तक बात है भारत इसका सिरमौर है और भारतीय नेटवर्क पश्चिम के किसी भी नेटवर्क का मुकाबला करने को तत्पर है। भारतीय टीवी एक नये युग में प्रवेश कर चुका है और इसके सेटलाइट चैनल बी बी सी, सी एन एन, स्टार टीवी और अन्य चैनलों के समानांतर अपने कार्यक्रम दे रहा है। (देखिए परिशिष्ट 1)। स्टार मूवीज, जी सिनेमा, जी टीवी, वी चैनल, स्टार प्लस आदि की डिजिटिल तकनीक के सामने सिनेमा हाल में दिखाई जाने वाली फिल्म भी फीकी नजर आती है। उपग्रहों के माध्यम से इन चैनलों ने दक्षिण पूर्व एशिया से खाड़ी के देशों तक हिंदी और भारतीय भाषाओं के चैनलों एवं कार्यक्रमों का अन्तर्राष्ट्रीय संजाल बिछा दिया है। हमारे इस प्रपत्र का लक्ष्य है इन चैनलों के

माध्यम से जो हिंदी इन देशों तक पहुँच रही है, उस विश्वव्यापी हिंदी की प्रकृति पर प्रकाश डाला जाए। इन देशों के देशी-विदेशी, आप्रवासी भारतीय और थोड़ी बहुत हिंदी जानने वालों के सामने जिस तरह की संप्रेषणीय और विविध शैलियों वाली हिंदी परोसी जा रही है, उससे न सिर्फ हिंदी को विश्व भाषा बनने में सहायता मिलेगी, बल्कि हिंदी को नया रूप और नई ताजगी मिलेगी जैसे कि अंग्रेजी को मिल रही है। हमने अपने अध्ययन में सिर्फ उन चैनलों के हिंदी कार्यक्रमों पर ध्यान दिया है जो भारत से बाहर पचासों देशों में भी देखे जाते हैं, जैसे— चैनल वी, जी टीवी, एल टीवी, सोनी, एम टीवी, बीबीसी, जैन टीवी आदि।

2.0 हिंदी का विश्वव्यापी संदर्भ

हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली, समझी और पढ़ी लिखी जाने वाली भाषा मानी जाती है। पिछली जनगणना के अनुसार भारत में हिंदी भाषियों की कुल संख्या 46 करोड़ थी जिसमें लगभग 19 करोड़ वे लोग थे जिनकी मातृभाषा हिंदी न होते हुए भी उसे व्यवहार में लाने की क्षमता रखते हैं। विश्व के 132 देशों में एक करोड़ 20 लाख भारतीय मूल के लोग बिखरे हुए हैं जिनमें आधे से अधिक हिंदी बोलते और समझते हैं। भाषा विशेषज्ञों का मानना है कि कुल मिलाकर हिंदी ही विश्व की सर्वाधिक समझी और पढ़ी जाने वाली भाषा है।

सच तो यह है कि हिंदी सारे विश्व में नई दिशा दृष्टि से आगे बढ़ रही है। विश्व में नये अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों में हिंदी जानने वालों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। एक वे देश जहाँ हिंदी भाषा भाषी क्षेत्र के भारतीय श्रमिक दासों के रूप में डेढ़ सौ वर्ष पहले गये थे और आज वहाँ के प्रमुख नागरिकों के रूप में जिनकी गणना होती है— फीजी, मारीशस, गियाना, सूरीनाम, त्रिनीदाद आदि। ये भोजपुरी, अवधी मिश्रित हिंदी बोलते हैं और इनकी संख्या भी अच्छी खासी है।

दूसरे ब्रिटेन, कनाडा, अमरीका, स्वीडन, डेनमार्क, जर्मनी, नार्वे के आप्रवासी भारतीय हैं। इनमें दक्षिण-पूर्व एशिया के म्यांमार, थाइलैंड, सिंगापुर, मलयेशिया तथा दक्षिण अफ्रीका, केन्या आदि देशों में बसे आप्रवासियों को भी शामिल किया जा सकता है। नेपाल की आधी से अधिक जनसंख्या हिंदी से परिचित है। थाइलैंड में हिंदी जानने वालों की संख्या लगभग दस लाख है। विदेशों में बसे भारतवंशीय इन लोगों ने अपने घर की भाषा भोजपुरी, अवधी आदि से अपनी अस्मिता को जोड़े रखा है। फीजी में हिंदी शिक्षण का कार्य एक धार्मिक अनुष्ठान की तरह चल रहा है। मारीशस में हिंदी को विशेष महत्व प्राप्त है। वहाँ हिंदी की अनेक संस्थाएँ हिंदी को नये दृष्टिबोध से आगे बढ़ा रही हैं। यहाँ के हिंदी विद्वानों ने अंग्रेजी और फ्रांसिसी के प्रबल प्रभाव के बीच हिंदी के वर्चस्व को बनाये रखने में ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया। त्रिनीदाद की कुल आबादी के आधे लोग भारतवंशीय हैं और उनके बीच हिंदी सम्मानित भाषा है। सूरीनाम में 'सरनामी हिंदी' चल रही है जो रोमन लिपि में लिखी जाती है। न्यूजीलैंड में भारतीय मूल के लोगों ने हिंदी कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए अपना दूरदर्शन और आकाशवाणी केंद्र स्थापित किया है। इंडोनेशिया में तो 'भासा इंडोनेशिया' ही प्रचलित है जिसमें 18 प्रतिशत

शब्द संस्कृत अथवा हिंदी के हैं। इंडोनेशिया भी मारीशस की भाँति हिंदीमय है। तभी तो हमारी भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी ने तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन में कहा था कि "हिंदी हमारी राजभाषा और विश्व भाषा है।......एक बाहरी भाषा अंतर्राष्ट्रीय कड़ी के रूप में चाहिए.....इससे राष्ट्र की एकता को बल मिलेगा, अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री बढ़ेगी और संसार से ज्ञान लेने और देने के दरवाजे खुले रहेंगे।" एवं अन्य विद्वान श्री मैगेनी चैलिशोव ने भी इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा— "हमें इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि समसामयिक विश्व में बढ़ती संख्यात्मक भूमिका अदा कर रहे महान एशियाई देश की एक सर्वाधिक विकसित और सर्वाधिक प्रचलित भाषा हिंदी विश्वभाषा बननी चाहिए।"

3.0 टीवी की हिंदी का स्वरूप

टीवी के माध्यम से एक नई भाषा का आविष्कार हो चुका है, जो न हिंदी न अंग्रेजी, न बंबइया है न भोजपुरी। यह है हिंग्लिश। अटपटी हिंदी-अंग्रेजी मिली भाषा पहले-पहले दर्शकों को बहुत चौंकाती थी पर अब नहीं चौंकाती। इस खिचड़ी भाषा के सैकड़ों नमूने रोज सोनी, जी टीवी और अन्य प्रसारणों में देखने को मिल रहे हैं। विभिन्न चैनलों के कई कार्यक्रम इस भाषा के हर रोज नये-नये और अद्‌भुत प्रयोग करके इसका विश्व भर में प्रचार-प्रसार करने में लगे हुए हैं।

हिंग्लिश का प्रयोग हिंदी फिल्मों में होता रहा है और इसकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर इसी भाषा में कई कार्यक्रम बन चुके हैं। भारतीय दूरदर्शन पर इस तरह की भाषा सुबह के प्रसारण से हुई थी जब दीपक वोहरा, 'सुप्रभात' कार्यक्रम पेश करते थे। उस वक्त भी इस तरह की भाषा को लेकर बावेला मचा था लेकिन अब यह भाषा न सिर्फ चल रही है, वरन फिल्मी गानों पर आधारित सभी कार्यक्रम इसी भाषा में प्रस्तुत किये जाने लगे हैं।

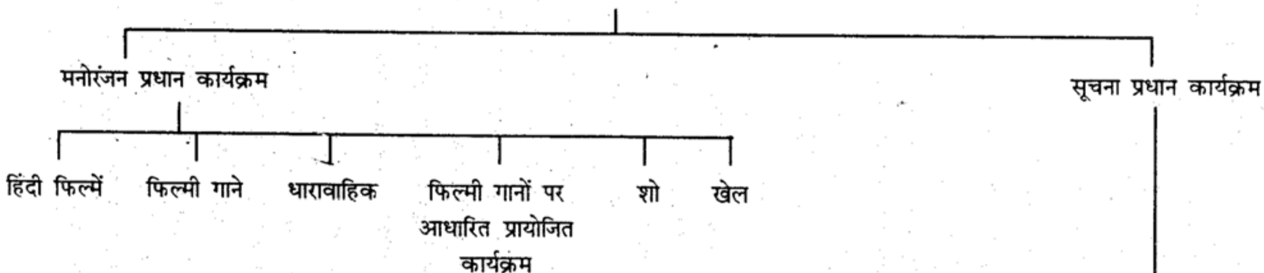
अगले शीर्षकों में हमने फिल्मी हिंदी और धारावाहिकों की हिंदी और प्रायोजित कार्यक्रमों की हिंदी पर विस्तार से चिंतन किया है। इन कार्यक्रमों का वर्गीकरण इनकी विधाओं/माध्यमों को ध्यान में रख कर किया गया है। देखिए (सारणी— 1)। यह वर्गीकरण इस बात को ध्यान में रखकर किया गया है कि कार्यक्रम का उद्देश्य क्या है? ये कार्यक्रम दो प्रकार के हैं— (1) मनोरंजन प्रधान कार्यक्रम, और (2) सूचना प्रधान कार्यक्रम

(अ) मनोरंजन प्रधान कार्यक्रम

मनोरंजन प्रधान कार्यक्रम का उद्देश्य मन बहलाना, मनोरंजन देना मुख्य है और कोई सूचना या ज्ञान देना गौण। इस तरह के कार्यक्रमों में इसलिए हमें फिल्में, फिल्मी गीत, फिल्मी गीतों पर आधारित कार्यक्रम ही ज्यादातर दिखाई देते हैं। देखा जाए तो टीवी के सभी चैनल इसी बैसाखी के सहारे चल रहे हैं। हिंदी फिल्में, हिंदी फिल्मी गाने न होते तो इन चैनलों से क्या प्रसारित होता इसकी कल्पना भी दूभर है (देखिए सारणी— 2)।

1. फिल्में— हिंदी फिल्में/बंबइया फिल्में, संख्यात्मक दृष्टि से अधिकतम बनती हैं और विश्व में द्वितीय स्थान पर हैं। भारत में ही नहीं सारे खाड़ी के देशों में, आप्रवासी भारतीयों

सारणी—1. विभिन्न चैनलों से प्रसारित हिंदी कार्यक्रमों का वर्गीकरण



सारणी— 2. मनोरंजन प्रधान कार्यक्रम

- *हिंदी फिल्में
- *फिल्मी गाने
- *धारावाहिक
- फिल्मी गानों पर आधारित प्रायोजित कार्यक्रम
  - फिल्मी गानों के कार्यक्रम
    1. BPL Oye
    2. फिलिप्स टापटेन
    3. पब्लिक डिमांड
    4. माँगता है
    5. यादों के रंग
    6. वीडियोकोन फ्लैशबैक
    7. तुम्हारे लिए
    8. विमल नये तराने
    9. एक का तीन
    10. ऊ ल ल ला
  - फिल्मी गानों की प्रतियोगिता
    1. अंत्याक्षरी
    2. सारेगामा
    3. आवाज नई अंदाज वही
    4. मेरी आवाज सुनो
    5. स्टार यार कलाकार
  - क्विज़
    1. फिल्म दीवाने
    2. द मूव उषा उत्थुप शो
  - साक्षात्कार
    - GIM शो
    - It's my show
  - सूचनात्मक
    1.
    2. फिल्म बाजार
    3. Galaxzee
    4. कल भी आज भी
    5. हिट थी हिट है
    6. चलो सिनेमा
- शो
  - पाप शो/गाने वीडियो अलबम
    - एशिया टापटेन
    - इंडिया टापटेन
    - वीडियो अलबम
  - टाक/चैट
    - पुरुष क्षेत्र
    - शकित
    - मानसी
    - अस्मिता
  - फैशन/सौंदर्य
    - खूब सूरत
    - एललुक
  - गेम
    - एक दूजे के लिए
    - तीन दो पाँच
    - एक मिनट
    - अभिमन्यु
- खेल/मैच
  - क्रिकेट
  - फुटबाल
  - हाकी
  - एडवांस बुकिंगटेनिस

*इनकी संख्या बहुत अधिक है।

और यूरोप-अमरीका के भारतीय मूल के लोगों में भी इनकी लोकप्रियता काफी है। इनमें भारतीय बंबइया नायक-नायिका, गायक-गायिकाएँ, संगीतकार आदि के प्रति दीवानगी की हद तक प्रेम देखा जा सकता है। इसका उदाहरण है भारतीय फिल्मी कलाकारों की इन देशों में लोकप्रियता।

जहाँ तक कथ्य का संबंध है उस पर न जाकर हम इतना ही कह सकते हैं कि इन फिल्मों में भाषा की व्यापक शैलियाँ सामने आती हैं—

(1) मानक हिंदी/उत्तर प्रदेश की हिंदी

(2) उत्तर प्रदेश की बोलियाँ, ब्रज, अवधी, भोजपुरी।

(3) प्रादेशिक रंग में रंगी हिन्दी के रूप, यथा—बंबइया हिन्दी/गोअन हिन्दी, कलकतिया हिन्दी, मद्रासी हिन्दी, पंजाबी हिन्दी, हरियाणवी हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी, बिहारी हिन्दी, आदि-आदि।

(4) पहाड़ी हिंदी— नेपाली, कश्मीरी।

(5) पारसियन हिन्दी।

(6) हिंग्लिश— हिंदी और इंग्लिश का मिश्रित रूप।

(7) एंग्लोइंडियन हिंदी।

फिल्मों में पात्र या चरित्र की पृष्ठभूमि व्यवसाय आदि को ध्यान में रखते हुए इनमें से किसी एक भाषा शैली का प्रयोग होता है। गाँव और शहर के भेद को भी बोली और मानक हिंदी/हिंग्लिश के प्रयोग से स्पष्ट किया जाता है। विदेश पलट नायक की भाषा भी मानक हिंदी नहीं होगी वह बंबइया हिंदी के निकट होगी या हिंग्लिश होगी। एक और शैली है आयाओं वाली। जिसमें अंग्रेजी के शब्द ग्रहीत होते हैं, पर वह एक अलग शैली है।

पात्र किस प्रांत का है देश के किस हिस्से का है इस पर भी भाषा शैली बदलेगी और बोलने का लहजा भी। इनके कुछ उदाहरण देखिए—

(1) उत्तर प्रदेशी/मानक— आपके दर्शन से मैं धन्य हुआ।

(2) ब्रज— हम राधिया हैं। तोरे यां चाकरी मिल जाए तो.....

(3) बंबइया— तुम हमारा पैसा कायकु नई देता मैन! अक्खा लोग अपुन कु देखता

(4) दक्खिनी— मैं सलामां मार राऊँ तुम कबूलते इच नई मियाँ।

(5) कलकतिया हिंदी— रोमेश हामार दादा। कोलकत्ता से आता

(6) मद्रासी— अय्यो। अम अबी जाके आता जी

(7) पहाड़ी हिंदी— शाब! हम ये फिल्लम दश बार देखा

(8) हिंग्लिश— सर, प्लीज, ऐसा न कीजिए। ये मेरे Life and death का मामला है।

(9) ऐंग्लोइंडियन हिंदी— जाओ मैन, बेबी सोता

भाषा शैली के कई आयाम हो सकते हैं जिनके अनुसार वह अपने रूप बदलती जाती है। इन्हें मोटे तौर पर इस तरह वर्गीकृत किया जा सकता है—

(1) कथ्य— धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक, वैज्ञानिक

(2) परिवेश— औपचारिक, अनौपचारिक, सामान्य

(3) काल— वर्तमान, भविष्य, भूत

(4) आर्थिक— राजसी, उच्च, उच्च-मध्य, नवधनाढ्य, मध्य, निम्न मध्य, निम्न, निम्नतम

(5) निवास— शहरी, ग्रामीण, विदेशी, आप्रवासी, पहाड़ी, आदिवासी

(6) व्यवसाय— छात्र, अध्यापक, वकील, डॉक्टर, व्यापारी, बनिया, मजदूर, दूधवाला, नौकर, नौकरानी, नेता

(7) संबंध/रिश्ते— पारिवारिक, सामाजिक, कार्यालयी, व्यावसायिक, राजनैतिक

(8) शिक्षा— शिक्षित, अशिक्षित, अर्धशिक्षित

(9) चरित्र— विनम्र, सहनशील, उद्दंड, अनुशासित, अनुशासनहीन, व्यावहारिक, अव्यावहारिक, भोला, धूर्त

(10) धर्म— हिंदू, मुस्लिम, इसाई, सिख, यहूदी, पारसी

(11) भाव— क्रोध, स्नेह, आश्चर्य, दुःख, प्रेम

(12) रस— श्रृंगार, वात्सल्य, वीर, रौद्र, क्रोध आदि।

ऐसे कितने ही बिंदु हो सकते हैं जिनके आधार पर चरित्र-चित्रण होता है और हर एक के लिए भाषा-शैली निश्चित की जाती है। इनके मिश्रित रूप से भाषा को भी बदलना पड़ता है।

पौराणिक प्रसंगों की भाषा का एक उदाहरण देखिए फिल्म ''महाभारत'' से—

(सुयोधन कृष्ण से)

सु— मैं इसी क्षण माताजी के पास जा रहा हूँ।

कृ— कोई सम्मति लेने?

सु— नहीं। न जाने उन्होंने क्यों मुझे बुलाया था, बिना वस्त्र।

कृ— बिना वस्त्र! और तुम जाओगे। ये तो नीति और मर्यादा के विरुद्ध है सुयोधन।

अब हम चर्चा करते हैं हिंदी में एक नई प्रवृत्ति की जिसमें अन्य भाषाओं से फिल्में डब की जा रही हैं। प्रवृत्ति दो तरह की है—

(1) डब की हुई फिल्में/धारावाहिक

(1) अंग्रेजी से हिंदी, उदाहरण—जुरेसिक पार्क, टूलाइज, स्पीड, डिज्नी अवर, चार्लीज एंजेल्स

(2) दक्षिण भाषाओं से हिंदी— रोजा, हमसे है मुकाबला, जेंटलमैन

(2) हिंदी में उपशीर्षकों के साथ

(1) अंग्रेजी से हिंदी— बी बी सी, स्टार मूवीज से प्रसारित फिल्में

(2) भारतीय भाषाओं से हिंदी— रविवार को प्रसारित प्रादेशिक फिल्में

उपरोक्त फिल्मों के प्रसारण में हिंदी का जो स्वरूप सामने आ रहा है वह स्रोत भाषा से प्रभावित है और अनूदित लगता है। संवाद से ज्यादा गानों पर इसका असर देखा जा सकता है। इसकी चर्चा आगे की जाएगी।

2. फिल्मी गाने— दुनिया भर में फिल्मी गीतों/गानों की हिंदी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका रही है। भारतीय हिंदी गायिकाओं को लोकप्रियता देशकाल की सीमा लाँघ चुकी है और लता के हिंदी गानों को गाना, हुबहू नकल करना लाखों सिनेमा संगीत प्रेमियों का शगल रहा है। जैसे चंद्रकांता संतति पढ़ने के लिए कभी लाखों लोगों ने हिंदी सीखी थी वैसे ही हिंदी गानों के लिए लोगों ने देश-विदेश में हिंदी सीखी।

गीतों/गानों में हिंदी की मानक खड़ी बोली का रूप शैलेंद्र, नीरज, प्रदीप, भरत व्यास के गीतों से चलकर गुलजार, जावेद एवं समीर तक की अनवरत यात्रा कर चुका है।

मुस्लिम सामाजिक फ़िल्मी गानों या नज्मों में अलग धारा सी बहती प्रतीत होती है जैसे— उमरावजान की गजलें। इस धारा को आप सायास ही अलग कर पाते हैं, पर आम हिंदी फिल्मी गीतों और गानों में हिंदी-उर्दू का ताना बाना बड़ी नफासत से बुना जाता रहा है जिसे अलग करना कठिन है। इनसे हटकर एक धारा अलग भी बहती रही मिश्रित शैली की, जो कैबरे के गानों/बाल रूम डांस के गानों में जानबूझकर प्रयुक्त की जाती रही या चरित्र के विदेशीपन को उजागर करने के लिए सामने आती रही। इसमें अंग्रेजी का या कुछ शब्दों का विचित्र प्रयोग काफी स्वीकृत हुआ।

हिंदी गीतों में अंग्रेजी शब्दों या पदबंधों का प्रयोग कोई नई बात नहीं रही (अ) पर नई प्रवृत्ति के कारण काफी विचित्र शब्द प्रयोग भी देखने को मिलते हैं, जैसे— (ब)

(अ) (1) ईलू का मतलब आई लव यू

(2) लवेरिया हुआ

(3) उर्वशी-उर्वशी टेक इट इजी पालिसी

(4) अपुन को ये मालूम नहीं क्या राइट है कि रांग

(ब) (1) इना मीना डीगा, डाय डम नीका
माका नाका चीका पीका रोला
रिका रम पम पोश रम पम पोश

(2) डम डम डीगा डीगा,

इन दिनों एक समानांतर धारा बह रही है, वह है दक्षिण भारतीय फिल्मों से डब की हुई फिल्मों के गीत जिनमें शब्दों और संगीत को अपनाने की सफल कोशिश काफी लोकप्रिय हो रही है।

छोटी सी आशा, मस्ती भरे मन की

भोली सी आशा (फिल्म— रोजा)

(गीतकार— मिश्रा)

कुची-कुची रकमा पास आओ ना

एक प्यारी-प्यारी गुड़िया दे दो ना (बंबई)

(गीतकार— मिश्रा)

इन मौलिक धुनों पर हिंदी के गीत लिखना काफी कठिन काम हो गया है। वैसे आजकल पंजाबी पुट वाले गानों की भी भरमार है और कुडी, शाबा, मुंडा जैसे शब्द धड़ल्ले से चल रहे हैं। कभी-कभी तो एक लाइन पूरी की पूरी पंजाबी में होती है—

(1) शाबा, काला शाबा
गोरियनु दफा करो।

(2) तेरा मुंडा बिगड़ा जाए

(3) ओ पपियाँ झंपियाँ पाले हम

लोकगीतों या धुनों पर फिल्मी गाने खूब चले, कुछ उदाहरण देखिए—

सजनवा बैरी हो गए हमार

चिठिया हो तो हर कोई बाँचे

भाग न बाँचे कोई (शैलेन्द्र) (तीसरी कसम, गीतकार— शैलेन्द्र)

इस संस्थान में आए हुए विदेशी छात्रों से यह जानकारी मिली कि हिंदी फिल्मी गानों की लोकप्रियता ने हिंदी सीखने में काफी मदद की है। कल्पना कीजिए सुदूर विदेश में जहाँ केवल फिल्मी गाने ही हिंदी माहौल बनाते हों और उसे गाने के लिए लोग चाव से हिंदी सीखते हों। विश्वभाषा का यह कैसा अनोखा उदाहरण है। यहाँ तक कि सूरीनाम में फिल्मी धुनों पर पैरोडी बनाकर गाई जाती हैं।

राजकपूर की "मेरा जूता है जापानी" की लोकप्रियता से चलती हुई हिंदी फिल्मी गीत आजकल अन्तर्राष्ट्रीय धुनों पर लिखे जाने की ओर अग्रसर हैं। जिसमें पाकिस्तानी धुन पर "मेरा पिया घर आया", "दमादम मस्त कलंदर" जैसे गीत हैं।

रिचर्ड मार्क्स की गीतों की शैली पर भारतीय फिल्मों में कई गीत लिखे गये जैसे—"दीज ब्लैक ब्लैक आइज" की धुन पर "ये काली-काली आँखें" (बाजीगर)

इस अन्तर्राष्ट्रीयकरण के कारण हिंदी फिल्मी गानों से हिंदी का स्वरूप तो निखरा ही है। इस तरह की लोकप्रियता गीत-संगीत ट्रांसक्रियेशन में मील का पत्थर साबित हुई।

3. धारावाहिक— एक फिल्म के प्रसारण और एक धारावाहिक के प्रसारण में वही अंतर है जो एक कहानी और एक धारावाहिक उपन्यास में है। कहानी एक बार में समाप्त कर ली जाती है, पर धारावाहिक में हर बार एक अंश ही दिखाया जाता है। पहले धारावाहिक 13 या 21 या 51 एपिसोड तक ही होते थे, परन्तु अब तो 500 से भी अधिक एपीसोड के होने लगे हैं। रामायण, महाभारत, भारत एक खोज, टीपू सुल्तान, बुनियाद, हम लोग सभी साल-साल भर चले थे, पर आजकल के कैंपस, तारा, जुनून, स्वाभिमान आदि धारावाहिक दो-दो साल से चल रहे हैं।

इनका दर्शकों पर प्रभाव कहानी या घटनाक्रम में रोचक मोड़, प्रभावशाली चरित्र-चित्रण एवं बेहतर संवादों के माध्यम से ही पड़ता है। धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक धारावाहिक तो अपने कथ्य और विशेष भाषा-शैली के कारण पकड़ बनाये रखते हैं पर कठिनाई आती है सामाजिक धारावाहिकों में जिसमें लेखक की सारी सर्जनात्मकता दाँव पर लग जाती है। कुछ संवाद लेखक दोनों ही तरह के लेखन में सक्षम हैं जैसे स्वर्गीय राही मासूम रजा।

एक धारावाहिक "ओ मारिया" (Sony चैनल) की भाषा देखिए—

— मुझे एयरपोर्ट जाना है **किसी गेस्ट को** लेने।

— मुझे अपने बाल **सेट करने** हैं।

— ओ जिम्मी! You are great!

— तुम अकेला पहुँच गया एल्बर्ट के घर।

उक्त संवाद अपने लक्षणों के आधार पर एक शिक्षित, मध्यवर्गीय ऐंग्लोइंडियन परिवार की झाँकी प्रस्तुत करता है जो मिश्रित हिंदी का नमूना है।

कभी-कभी एक पात्र जो दक्षिण भारतीय भी हो और पढ़ा लिखा भी तो धारावाहिकों में वह अंग्रेजी ज्यादा बोलेगा। हिंदी बोलेगा भी तो खिचड़ी हिंदी। इन दिनों डब किये हुए धारावाहिक (अंग्रेजी से हिंदी में) कई हैं— सेलेस, हिमगिरि का वीर, जंगल की कहानी, डिज्नी अवर। इनमें संवादों के लेखन में श्रम करना पड़ता है।

एक धारावाहिक का उदाहरण देखिए (जंगल की कहानी) जिसमें पात्र जानवर होने के कारण उर्दू का या सरल हिंदी का प्रयोग करते हैं, पर अंग्रेजी का नहीं—

अजगर— लगता है, आदमी का बच्चा है।

भालू— कितना प्यारा बच्चा है।

अजगर— सभी प्राणी बचपन में प्यारे लगते हैं। बड़ा होकर यह जंगल के लिए खतरा हो सकता है।

अजगर— कैसे हो वघेरा।

एक हास्य प्रधान धारावाहिक (Sorry Meri Lorry) में एक व्यक्ति 'शोले' फिल्म देखने के बाद चर्चा कर रहा है, ब्रज मिश्रित हिंदी में।

— तोको मालूम है सनीमा है, हमका मालूम है सनीमा है घोड़ा को का मालूम सनीमा है।

— शोले कें अंदर गाना बड़ा मस्त है।

— वो जूता के नीचे किलिया फिट किए रहा

— हमने दोऊ लाफा मारा

धार्मिक/पौराणिक धारावाहिकों की भाषा संस्कृतनिष्ठ होगी (माँ)—

— मैं अपने आराध्य देव के सम्मुख ही नृत्य करती हूँ।

— किंतु क्या नटराज तुम्हारे नृत्य को स्वीकृति देंगे।

— आपके दर्शन से मेरा जीवन सफल हुआ।

धारावाहिक रामायण, महाभारत और चाणक्य की भाषा शैली ने एक नयी भाषा से पूरे विश्व को परिचित कराया था और इसके संवाद उस संस्कृत निष्ठ हिंदी का स्वरूप विश्व के सामने प्रस्तुत कर सके जो केवल पुस्तकीय मानी जाती रही। इसके संबोधन तात श्री, मामा श्री और वत्स आदि जनप्रिय हो गए थे। उल्लेखनीय है कि ये सभी धारावाहिक विश्व के कई देशों में उनके टेलीविजन से प्रसारित हुए और अब भी हो रहे हैं। इसके विपरीत टीपू सुल्तान मिर्जा गालिब, अकबर द ग्रेट ने उर्दू प्रधान क्लिष्ट भाषा प्रस्तुत की।

एक उल्लेखनीय बात यह है कि धारावाहिकों के नाम अधिकतर हिंदी में हैं। अंग्रेजी में कम ही हैं। यह एक स्वस्थ परंपरा है। (देखिए परिशिष्ट-3) पर अन्य भाषाओं या अंग्रेजी से डब किए हुए धारावाहिकों के नाम यथावत् होते हैं।

4. फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रम

टेलीविजन से प्रसारित होने वाले अधिकांश कार्यक्रम फिल्म और फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रम की बैसाखी पर चलते हैं और कंपनियों द्वारा प्रायोजित होने के कारण इनका एक नया रजिस्टर भी बन गया है जो पहले खटकता था पर अब नहीं।

सूची देखिए— **वीडियोकोन** फ्लैश बैक	**टी वी एस** सारेगामा
सिंगर तुम्हारे लिए	**क्लोजअप** अंत्याक्षरी
विमल नये तराने	**पार कोल** सुपर हिट हंगामा
द मूव उषा उत्थुप शो	**रिन** एक दो तीन
फिलिप्स टाप टेन	**बी. पी. एल.** ओये

कुछ कार्यक्रम तो केवल गानों की सामयिक लोकप्रियता के आधार पर ही बनते हैं जिन्हें Count Down कहते हैं। इनमें 10 से 1 तक लोकप्रियता के शिखर की ओर बढ़ा जाता है। बीच-बीच में कोई घटना गूंथ दी जाती है या प्रस्तुतकर्त्ता गीतों को कोई घटना या प्रशंसकों की माँग/पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करता है। जैसे फिलिप्स टाप टेन, BPL Oye। इस तरह के कार्यक्रमों को हम मोटे तौर पर पाँच तरह के वर्गों में बाँट सकते हैं (देखिए-सारणी-3)

1. फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रम
2. „ „ „ प्रतियोगिता
3. „ „ „ क्विज
4. „ „ „ साक्षात्कार
5. „ „ „ सूचना

4.1 फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रम

प्रथम प्रकार के कार्यक्रमों में प्रस्तुतकर्त्ता या उद्घोषक जिसे VJ कहते हैं, की काफी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसकी भाषा, संवाद, संवाद अदायगी की शैली के आधार पर कार्यक्रम की लोकप्रियता घटती बढ़ती है। इस समय अच्छे VJs की काफी माँग है और यह कोई फिल्मी कलाकार या फैशन मॉडल भी हो सकता है। इनकी सूची परिशिष्ट-(2) में दी गई है।

इनमें सबसे लोकप्रिय है जावेद जाफरी की अदाकारी, जो Timex Time Pass नामक कार्यक्रम में कई चरित्रों की माँग के अनुसार भाषा और अदाकारी के जौहर दिखाता है। हमने हिंदी की जितनी शैलियों की चर्चा की उसके सभी रंग इस कार्यक्रम में हैं एक दो उदाहरण देखिए—

(अ) कवीनी सिंह का चरित्र जो कि दिल्ली की हेयर ड्रेसर हैं और पंजाबी-अंग्रेजी मिश्रित हिंदी बोलती हैं—

— कट्टी-कट्टी— डंकी मंकी एलीफेन्ट काउ, सिंटिंग इन बाथरूम एंड इटिंग पुलाउ।

— तुसी सुनील शेट्टी नूँ जानदे......डेढ़ किलो मनहूसियत टपक रही है।

(ब) शेरपा सुल्तानपुरी जो नेपाली है और मनीषा कोइराला का दीवाना है—

— हमारा मनीषा कोइराला का फिल्म है। दश बार क्या बार-बार दिखायेगा।

(स) अनेलिसेस आनंदन— मद्रासी चरित्र जिसके दो व्यक्तित्व हैं—

— अय्यो! ये ग़ाना कई तोबी सुने जैसा है।

और स्वंय जावेद जाफरी जो सक्सैना है पर उसे सब 'सक्सी भाई' कहते हैं। 'सक्सेना से सक्सी' वाह! क्या कहने।

एक और कार्यक्रम Videocon Flashback में जावेद की भाषा देखिए—

ये Grammatically थोड़ा wrong था dramatically सही था और हमसे ज्यादा ड्रामे बाज कौन है?

— इसमें नौ गाने थे Six were Composed by Madan Mohanji and rest by others।

अन्य लोकप्रिय कार्यक्रम हैं BPL Oye! और 'एक का तीन'। कलाकार हैं रूबी भाटिया। इसकी भाषा हिंदी-अंग्रेजी का मिश्रित रूप है जिसकी चर्चा हम हिंग्लिश के रूप में कर चुके हैं पर प्रांतीय हिंदी अंग्रेजी का पुट एवं अदायगी भी कमाल की है।

रूबी— White shoes नहीं पहनते आप?

मद्रासी— White shoes नहीं डालेगा हम।

तमिल+अंग्रेजी = Pinne Kanna means see you later।

— जाने को माँगता और आने को माँगता, ब्रेक के बाद।

बंबइया हिंदी— तेरे पास इतना बड़ा नोट कहाँ से आया?

— बोला था न तेरे को काम की चीज है।

— आई लव यू (चिट्ठी पढ़ते हुए) अपुन से प्यार नई करने का BPL से प्यार करने का! क्यों बीडू?

''पब्लिक डिमांड'' में सड़क, कालेज, शहर घूम-घूम कर जनता की राय पूछी जाती है। वाद-विवाद, बहस-मुबाहसा। हर बार नया मुद्दा। बीच-बीच में फिल्मी गाने। प्रश्नकर्ता

अंग्रेजी का काफी प्रयोग करते हैं पर हिंदी में भी अंतरण करते जाते हैं। कभी-कभी प्रश्न हिंदी में पूछे जाते हैं तो कलाकार उत्तर अंग्रेजी में देते हैं।

"हिट थी हिट है" कार्यक्रम में नये-पुराने हिट या लोकप्रिय गीत प्रस्तुत किये जाते हैं इसकी भाषा देखिए—

कहानी कुछ यूँ थी— शीतल एक sophisticated lady तो बन जाती है। usual misunderstanding and complications के बाद शीतल, ब्रह्मचारी are united.

1968 शम्मी कूपर का last good year था।

असली जिंदगी में rights and wrongs, have and have nots के बारे में।

इस तरह की भाषा हिंदी-अंग्रेजी का एक मिश्रित रूप है जिसमें क्रिया या वाक्य संरचना हिंदी की होती है पर सारी सूचना अंग्रेजी में। पर उदाहरण एक में 'are united' भी अंग्रेजी का ही प्रयोग है। विश्व भाषा के रूप में इस शैली को काफी प्रयुक्त किया जा रहा है और सभी अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम इस "हिंग्लिश" का धड़ल्ले से प्रयोग कर रहे हैं।

4.2 फिल्मी गानों पर आधारित प्रतियोगिताएँ— इस तरह के कार्यक्रम में प्रायोजक संस्थाएँ पुरस्कार देती हैं और प्रतियोगी को अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करनी होती है। निर्णायक भी होते हैं। प्रस्तुतकर्ता और निर्णायक दोनों ही फिल्मी जगत से जुड़े हुए होते हैं। इनमें VJs की भाषा अन्य कार्यक्रमों के मुकाबले कम इस्तेमाल होती है क्योंकि इन्हें प्रतियोगिता के नियम बताते हुए कार्यक्रम का मात्र संचालन करना होता है। भाषा में संप्रेषणीयता है पर सृजनात्मकता की गुंजाइश बहुत कम है, क्योकि गानों पर ही सारा ध्यान केंद्रित होता है।

फिर भी एक दो उदाहरण देखे जा सकते हैं (सारेगामा)—

— Correct beat में Correct सुर में गाना पड़ेगा।

— Welcome to the second round of SAREGAMA.

— Rhythm को on the spot adjust करना जरा कठिन है।

कोड अंतरण और कोड मिश्रण के इन उदाहरणों में वार्तालाप की संप्रेषणीयता और दर्शकों से सहज अंतरंगता ही प्रमुख कारण प्रतीत होता है।

एक अन्य कार्यक्रम है 'अंत्याक्षरी'। अन्नू कपूर इसके प्रस्तुतकर्ता हैं। यह कार्यक्रम शारजाह में भी चलाया गया। देखिए उनकी भाषा जिसमें कोड मिश्रण और कोड अंतरण दोनों ही के उदाहरण हैं।

— आपने सही गाया तो plus five, गलत गाया तो minus five.

— Ready for next.

— Before we continue this semifinal let us have a break.

— ब्रेक के बाद एक बार फिर अन्नू कपूर और रेणुका शहाणे फिर हाजिर होते हैं Children special के final round में।

शब्दों के प्रयोग में सादृश्य निर्माण के उदाहरण देखिए— अफसाना-*अफसानी परवाना *परवानी, दीवाना-दीवानी, मस्ताना-मस्तानी। तारांकित शब्द निर्मित हैं; सहज नहीं।

4.3 फिल्मी गानों पर आधारित क्विज़

एक आधुनिक गीतों का कार्यक्रम उषा उत्थुप शो द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसकी मिश्रित भाषा देखिए—

— इस फिल्म के Music Director कौन हैं?

— इस फिल्म का एक female solo गाना गाइए।

— इस फिल्म के lead actor, actress कौन हैं ?

— Give her a big hand.

क्विज़ में फिल्मी गीतों के बारे में प्रश्न पूछे जाते हैं और सही उत्तर देने वालों या गाना गाने वालों को अच्छे खासे इनाम प्रायोजकों की ओर से मिलते हैं। "फिल्म दीवाने" भी इसी तरह का एक कार्यक्रम है।

4.4 फिल्मी गानों पर आधारित साक्षात्कार

इस तरह के कार्यक्रमों में फिल्मी जगत के बारे में देश के जाने माने लोगों से साक्षात्कार लिया जाता है। इसमें एक छोटे से बच्चे तेजन का भी शो है जो इंटरव्यू लेता है— कौन सी फिल्म अच्छी लगती है, कौन से गाने अच्छे लगते हैं आदि-आदि।

एक कार्यक्रम का तो पूरा का पूरा नाम ही कोड मिश्रण का उदाहरण है, जैसे—

Great Indian Manovaigyanik show जिसे GIM show भी कहते हैं।

4.5 फिल्मी गानों पर आधारित सूचना

इस तरह के कार्यक्रमों में फिल्मों और फिल्मी गानों की आर्थिक समीक्षा, पार्टियाँ, शूटिंग आदि की जानकारी होती है। कौन सी फिल्म हिट हो रही हैं, कौन सी फ्लाप। किस कैसेट का बाजार गरम है और किसका नरम। भाषाई झलक देखिए— जिसमें हिंदी, अंग्रेजी का सम्मिश्रण मिलता है।

— India के all time great star। unfortunately उनकी इस साल कोई भी फिल्म बॉक्स आफिस पर नहीं चली।

— Hopefully poroducers films के rate को इतना नहीं बढ़ायेंगे कि.....

— Same story, same starcast. Light hearted और Entertaining। स्टोरी को और भी interesting बनाया जा सकता है। कहीं उठती है कहीं गिरती है। वह flow की consistency नहीं है।

— बेकाबू की जो story है वह वक्त से inspired है। (फ़िल्म बाजार)

5. शो

शो कार्यक्रम कई प्रकार के होते हैं, जैसे,

- शो
  - पाप (वीडियो अलबम)
  - टाक/चैट
  - फैशन/सौन्दर्य
  - खेल/गेम

5.1 पाप शो

इस दौरान संगीत का एक अंतर्राष्ट्रीय माहौल सामूहिक स्तर पर बहुत उन्मादी ढंग से सामने आ रहा है। अगर यह कहा जाए कि संगीत के पीछे-पीछे इन दिनों बाजार चल रहा है तो ज्यादा बेहतर होगा। संगीत के जितने भी गैर फिल्मी अलबम बन रहे हैं उन सभी में आमतौर पर डमी धुनों पर गीत लिखे जाने का सिलसिला अब पहले से भी अधिक लोकप्रिय बन गया है। यह इसलिए और भी रोमांचक है क्योंकि अधिकतर संगीत कंपोजर अंतर्राष्ट्रीय शैली की कंपोजिशन पर ध्यान दे रहे हैं।

भारत ने भारतीय संगीत के बाद अब विश्व को बिद्दू और ए. आर. रहमान जैसे संगीतकार दिए हैं। गायकों में अपाचे इंडियन, इला अरुण, बाबा सहगल, अलिशा चिनाए, बाली सागू आदि पाप/रैप/रागा आदि के झंडे गाड़ रहे हैं। जिनमें भाँगड़ा और राजस्थानी का पुट मिलता है। पुराने गानों की remixing भी बड़े अच्छे तरीके से हो रही है। जिसमें आशा भोंसले जैसी स्थापित गायिका भी शामिल हैं।

एशिया टॉप टेन' में अलिशा का 'मेड इन इंडिया' काफी लोकप्रिय हुआ है। इस तरह के गानों ने हिंदी को एक नया रूप, एक नई शक्ति दी है। युवा पीढ़ी इन गानों की दीवानी है। और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इन अलबमों की काफी बिक्री हुई है। हिंदी का यह नया रूप देखिए जिसे तैयार धुनों के हिसाब से लिखा जाता है और अंग्रेजी के शब्दों का बेझिझक प्रयोग होता है।

Made in India.

Made in India.

दिल चाहे बस Made in India. (अलिशा चिनाय)

अंग्रेजी धुन के कारण हिंदी का नया प्रयोग देखिए—

मन डोले उआ उआ
तन डोले उआ उआ
हुआ रे मुझे कुछ हुआ
क्या हुआ, क्यों हुआ (अनाइदा)

2. बूम-बूम, मेरे सीने की धड़कन को सुन
दिल बोले बूम-बूम (नाजिया हसन)

5.2 चैट/टाक शो

इस तरह के कार्यक्रमों में पैनल चर्चा या साक्षात्कार लिए जाते हैं और उस पर चर्चा की जाती है जो किसी न किसी ज्वलंत समस्या या क्षेत्र से सम्बन्धित हो सकती है जैसे पुरुषों की समस्याओं से संब्रंधित (पुरुष क्षेत्र) जिसमें उनकी हिचक, जीवन दर्शन, भावनाएँ, द्वंद्व आदि पर खुलकर चर्चा की जाती है। प्रश्नकर्ता तरह-तरह से प्रश्न करके मूल समस्या तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। एक ही प्रश्न हिंदी में और दूसरी बार अंग्रेजी में पूछा जाता है। इस तरह की साक्षात्कार की भाषा पुनर्कथन, प्रति प्रश्न आदि के माध्यम से काफी चुटीली और धारदार हो जाती है। इसमें हिंदी से अंग्रेजी में और अंग्रेजी से हिंदी में कोड अंतरण और कोड मिश्रण काफी मात्रा में मिलता है। खासकर कोड अंतरण। इस पर साक्षात्कार शीर्षक में भी चर्चा की गई है।

'शक्ति' महिलाओं की समस्या से संबंधित कार्यक्रम है। अत: उसकी भाषा में समस्या की तह तक पहुँचने की ललक है और मध्यवर्गीय महिलाओं का शो होने से अंग्रेजी की वैसी घुसपैठ नहीं है जैसे 'पुरुष क्षेत्र' में। नये कार्यक्रमों की शुरुआत महिलाओं के बहस मंच के रूप में सामने आयी है। (शक्ति/मानसी) इसमें हर वर्ग की महिला हर विषय पर खुलकर बोलती है और बहस करती है। 'मानसी' महिला पत्रिका जितने बड़े शहरों में देखी जाती है कहीं और नहीं। इन महिला पत्रिकाओं में जीवन संघर्षरत महिलाओं के इन्टरव्यू के अलावा अन्य विषयों पर जैसे रोजगार प्रशिक्षण, व्यक्तित्व विकास आदि पर गंभीर चर्चा होती है।

युवाओं के लिए एक कार्यक्रम है यंगबज (Young Buzz) जिसमें बहस मंच की सभी बातें हैं। एंकर पर्सन का सवाल पैनल से, दर्शकों से (दोनों से) होता है। इसकी भाषा काफी धारदार होती है। देखिए, एक नमूना—

प्रश्न— क्या आप शादी शुदा हैं?

उत्तर— He is too young to be married.

प्रश्न— वो अपने options खुले छोड़ते हैं।

— जो आपका attraction है लड़कियों की तरफ, truly physical है।

— Beauty lies in the eyes of the beholder.

5.3 सौंदर्य/फैशन शो

इन दिनों समाज में फैशन ही नहीं व्यक्तित्व और सुन्दरता के प्रति भी काफी जागरूकता है। सौन्दर्य प्रसाधनों के सहज उपलब्ध होने पर इनका प्रयोग किस तरह किया जाए, अपने शरीर की प्रकृति को ध्यान में रखकर कैसे सुन्दर बनाया जाए आदि की चर्चा इस तरह के कार्यक्रमों में होती है। (खूबसूरत)

फैशन शो का दूसरा पहलू है वस्त्र परिधानों की नई से नई बहार। यहाँ तक कि रंग और वस्त्र का अच्छा-से-अच्छा मेल जो कि भारतीयता और आधुनिकता दोनों का निर्वाह करे भारतीय फैशन भारतीय विश्व सुन्दरी और ब्रह्मांड सुन्दरी के कारण और भी स्वीकृति पा चुका है। आजकल विश्व के अनेक बड़े होटलों में भारतीय फैशन शो आयोजित हो रहे हैं और कमेन्टरी और संगीत के साथ इनका टी. वी. पर प्रसारण प्रायः आम बात हो चुकी है। इसमें भी भाषा का रोचक रूप है।

— फैशन को लेकर लोगों में awareness बढ़ी है। fashion designing को एक carrier की तरह अपना लेना भी खुद एक फैशन है।

5.4 गेम शो

कुछ कार्यक्रम खेल और प्रतियोगिता के रूप में आयोजित होते हैं। इनमें निर्धारित समय में किसी एक खेल को पूरा करना होता है या प्रस्तुतकर्ता के आदेश-निर्देशानुसार कार्य करना होता है। (एक मिनट, अभिमन्यु) प्रोत्साहन स्वरूप इनाम भी मिलते हैं। इसकी भाषा में निर्देशात्मक वाक्य ही ज्यादा होते हैं। प्रतियोगिता होने के कारण किसको कितने अंक मिले, कौन जीता, कौन हारा यही मुख्य विषय होता है। राजनैतिक विषय को लेकर भी प्रतियोगिता आयोजित होती है जिसमें टीमें होती हैं, अंक मिलते हैं, पर इसकी भाषा प्रतियोगिता वाली होने पर भी राजनैतिक पुट होता है (किस्सा कुर्सी का) और संस्कृत निष्ठ भाषा भी।

— तीसरी टीम के माननीय संसद सदस्य हैं शिवसेना के सांसद श्री.....

6. खेल/मैच कार्यक्रम

खेलों का, खासकर क्रिकेट और फुटबाल का, प्रसारण दीवानगी की हद तक लोकप्रिय है। टेनिस के भी कम दीवाने नहीं है। इन कार्यक्रमों का आँखों देखा हाल बहुत लोकप्रिय है और हिंदी और अंग्रेजी में लगातार लगभग सभी चैनलों से सुना जाता है। इसकी भाषा भी एक अलग ही तरह की है। जिसमें अधूरे वाक्य काफी हैं—

— बहुत सतर्क गेंदबाज
— एक खिलाड़ी के आउट होने के बाद

— Backfoot में extra cover

— ऐसे आक्रामक Strokes आपको अक्सर देखने को मिलेंगे।

(क्रिकेट विश्वकप, 1996)
स्टार चैनल

(ब) सूचना प्रधान कार्यक्रम

इन कार्यक्रमों में सूचना और ज्ञान प्रधान क्रायक्रमों को शामिल किया जाता है। इसका वर्गीकरण देखिए नीचे की सारणी—

सारणी— 3. सूचना प्रधान कार्यक्रम

- सूचनात्मक
  - समाचार
    - दैनिक समाचार
    - साप्ताहिक समाचार
  - सामाजिक
  - राजनैतिक
  - आर्थिक
  - स्वास्थ्य
  - शैक्षिक
- विविध
- अन्य
  - भकित
  - पाक
  - कला
  - डाक

(अ) सूचनात्मक

1. समाचार

इनमें दो तरह के कार्यक्रम हैं। दैनिक समाचार और साप्ताहिक समीक्षात्मक, जिसे वीडियो पत्रिका कहते हैं।

जी. टी. वी. समाचारों में सबसे ज्यादा हिंग्लिश सुनने को मिलती है। पूरा का पूरा वाक्य अंग्रेजी में। केवल कारक और क्रियाएँ हिंदी में। समाचार-वाचिका के समाचार पढ़ने के ढंग से लगता है कि उसे इस बात का एहसास है कि यह समाचार अन्य देशों में सुने जा रहे हैं और उन देशों में लोग यह नहीं जानते कि तमिलनाडु कहाँ है उत्तर में या दक्षिण में। बीच-बीच में पूरा का पूरा अंग्रेजी में कोड अंतरण है। जैसे—

— and let us have quick look around the happenings of the world.

— यहाँ land पर settle होने के बाद ही claim किया जा सकता है।

— Pulse Polio immunization के second phase में 7 करोड़ polio drops दीं।

— माइकेल जैक्सन की wife ने divorce file की।

— Order का voilation करके लोगों को hostage बनाया था।

— Indian Foreign Nationals में Indian infiltration को रोका था।

— Former Indian Prime minister ने कहा—

— Troubled Indian state जम्मू कश्मीर में.......

— South Indian state तमिलनाडु के fisherman.......(The news)

पर इन दिनों यह शैली बदल गई है।

दैनिक समाचारों के अलावा साप्ताहिक वीडियो न्यूज पत्रिकाएँ भी खूब प्रचलित हैं। इनमें समाचारों की समीक्षा होती है।

वीडियो पत्रिका 'घूमता आइना' में समाचारों की अपेक्षा अंग्रेजीनुमा हिंदी कम है हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा का ज्यादा जोर है पर यह कथ्य के हिसाब से बदल भी सकता है।

— जादू टोने और झाड़फूँक में यकीन पीढ़ी दर पीढ़ी चला आता रहा है।

— जादू टोने की बिना पर हत्याएँ होती हैं।

— जादू टोने को मदद देने और उसे बढ़ावा देने के खिलाफ कानून तो है।

— इन दूरदराज के गाँवों में तालीम और नौकरी मुहय्या कर सकें तो इन्हें इस अंधविश्वास से छुटकारा दिला सकेंगे।

2. सामाजिक चेतना

सामाजिक समस्याओं, मुद्दों और परिस्थितियों का आकलन और उन पर खुली बहस इस तरह के टी. वी. कार्यक्रमों की विशेषता है। इनमें, सलाह, सुझाव, आलोचनात्मक चर्चा, परिचर्चा होती है। व्यवसाय चयन एवं उससे जुड़े मुद्दों का कार्यक्रम (हम होंगे कामयाब), भवन निर्माण (आशियाना), पर्यावरण (हम जमीन), देश भ्रमण (नमस्ते इंडिया) जैसे कार्यक्रम हैं। पुरुषों की समस्याएँ (पुरुष क्षेत्र) और महिलाओं की समस्याओं (शक्ति, मानसी) पर भी बहस मंच के अच्छे कार्यक्रम हैं। इन कार्यक्रमों की विषयवस्तु के अनुसार ही भाषा गंभीर और संप्रेषणपरक होती है। एंकर पर्सन अर्थात् कार्यक्रम प्रस्तोता विषय की गंभीरता और प्रकृति के अनुसार भाषा प्रयोग करती या करता है। यहाँ कोड मिश्रण से अधिक कोड अंतरण के उदाहरण मिलते हैं—

— आपकी जो expectations थी उनसे क्या वो pressurise होते हैं।

इसमें पुर्नप्रश्न के द्वारा अपनी बात पर बल दिया जा रहा है। जबकि इस उदाहरण में पुनर्कथन है ऊपर वाली बात का—

— आप बताएँ कि किसी भी successful और famous आदमी का बेटा pressurise क्यों होता है?

— अब क्या होता है slowly when you are out of college, your own indentity is lost.

शब्दक्रम में भिन्नता और कोड मिश्रण का उदाहरण भी देखिए—

— आपको ये लगा कि challenge है, at any age?

कुल जमा इस तरह के कार्यक्रम विचारोत्तेजक होते हैं और कुछ सोचने और समझने को प्रेरित करते हैं। प्रस्तोता अगर काफी आधुनिक और शिक्षित ही नहीं अंग्रेजीदाँ भी है (किरण खेर) तो उसकी भाषा में और सामान्य घरेलू दर्शक महिला की भाषा में काफी भिन्नता पाई जाती है।

पैनल में चर्चा के लिए जो लोग आमंत्रित किये जाते हैं उनमें युवा वर्ग, लोकप्रिय कलाकार, लेखक, गृहिणी कोई भीं हो सकता है।

एक युवा की भाषा देखिए—

— ऐसा कोई नहीं है जो कभी भी कहीं भी एक बार sex में indulge न हुआ हो।

(पुरुष क्षेत्र)

3. राजनैतिक

दूसरी ओर राजनैतिक कार्यक्रम में वीडियो पत्रिकाएँ (हाले-वतन, जन गण मन, जनमत, आवाज़) आदि हैं जो समीक्षात्मक टिप्पणी और साक्षात्कार दोनों को लेकर चलती हैं कभी (किस्सा कुर्सी का) तेज तर्रार नेता के सामने निरीह साक्षात्कारकर्ता। इसमें हिंदी का एक और तीखा व्यंग्यात्मक रूप उभर कर आता है जिसमें अंग्रेजी कम है नेता किस पृष्ठभूमि का है यह ज्यादा मायने रखता है।

— आप चाहें कि हम आपके सामने सर झुका लें यह नहीं होगा।

— आन बान को चोट पहुँचेगी तो.....

— मगर वह देश में बढ़ती हुई फिरकापरस्ती से चिंतित जरूर है। (आवाज)

अगर नेता भाजपा या विहिप का है तो उसकी भाषा कुछ होगी और जनता दल का है तो कुछ और। एक कार्यक्रम में विभिन्न दलों के तीन सांसदों ने भाग लिया था और उनकी भाषा-शैली एक दूसरे से नितांत भिन्न थी। जिसका उदाहरण ऊपर दिया जा चुका है। इन सबसे हटकर प्रस्तुतकर्ता की भाषा होती है जो बीच-बचाव की हो सकती है या सारांश प्रस्तुत करने जैसी—

प्रस्तुतकर्ता— जब उम्मीदवार दरवाजे पर वोट माँगने आये तो एक बात जरूर कहियेगा कि हम तो आपको संसद में भेजने को तैयार हैं। लेकिन आप संसद में मौजूद रहने के लिए तैयार हैं ?

साफ सुथरी मानक हिंदी भी सुनने को मिलेगी (जन गण मन)

प्रश्न— सरकारी तौर पर हम राष्ट्रगान किसको मानें? और जनमानस किसको राष्ट्रगान मानता है।

प्रश्न— उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनते ही मुलायम ने किस अध्यादेश को वापिस लिया था।

उत्तर— नकल विरोधी अध्यादेश

उत्तर— दल बदल विरोधी अध्यादेश (किस्सा कुर्सी का;

पर पर्दे पर प्रश्न अंग्रेजी में आ रहे हैं और वाह वाही भी।

4. आर्थिक

इस तरह के कार्यक्रमों में प्रतियोगियों को कम्पनी द्वारा प्रायोजित वस्तुओं का सही दाम बताने के लिए प्रेरित किया जाता है। जो इस तरह की प्रतियोगिता में जीत जाता है उसे भारी भरकम इनाम मिलते हैं। (तोल मोल के बोल) इस तरह के कार्यक्रमों में वस्तुओं के विज्ञापन की मानसिकता के साथ जिज्ञासा का भी रंग होता है।

इन कार्यक्रमों की भाषा में अधिकतर वस्तुओं के दाम, नाम अंग्रेजी में होते हैं और हिंदी अंग्रेजी कोड मिश्रण एवं कोड अन्तरण भी पाया जाता है। देखिए—

— इसके दाम one six four nine.

— इस कॉफी मेकर की Capacity है six cups.

— मैं वेलकम करना चाहता हूँ एक ऐसे Celebrity का who has been celebrating since years.

— Dó you write your show या क्या?

दूरदर्शन के विज्ञापनों की भाषा पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है। (शर्मा, वशिनी 1986; 1994) जो सूचना तो देती है पर अपने प्रयोग करने की प्रवृत्ति के कारण कुछ-न-कुछ नया पन लाती है। इससे भाषा प्रभावशाली तो होती ही है उसमें नये-नये रंग भी आते हैं और भाषा की विकास प्रक्रिया भी चलती रहती है। वैसे भी आर्थिक उदारीकरण ने विश्व को एक बाजार बना दिया है और अपने उत्पाद बेचने में कम्पनियाँ भाषा-भाव, माध्यम सभी के साथ नये-नये प्रयोग कर रही हैं। (एशिया स्काई शाप) इस क्षेत्र ने हिंदी को अनूठे प्रयोग दिये हैं जिससे उसकी अभिव्यंजना शकित बढ़ी है। जैसे—

— तूफानी ठंडा (थम्स अप)

— चमकदार सफेदी (रिन)

— जवान बूढ़े या बूढ़े जवान (च्यवनप्राश)

— सनसनाती ताजगी (लिरिल)

5. स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के प्रति लोगों में टी. वी. ने जागरूकता जगायी है। अनेक कार्यक्रम योग, एयरोबिक्स आदि पर बन चुके हैं। इन कार्यक्रमों में स्वास्थ्य सम्बन्धी मान्यताओं पर चर्चा की जाती है। किसी एक हस्ती से उसके स्वास्थ्य का राज पूछा जाता है (पोजेटिव हेल्थ शो)। इसमें अतिथि कलाकार काफ़ी अंग्रेजी या हिंग्लिश ही बोलते हैं क्योंकि इनकी पृष्ठभूमि उच्चवर्गीय या उच्च मध्यवर्गीय होती है। पर बीच-बीच में प्रश्नकर्ता हिंदी में भी प्रश्न पूछता रहता है।

— Geography के हिसाब से हमारी health habits बनी हुई हैं।

— भगवान ने अच्छा shape दिया है तो उसे maintain करना है

— Walking is a Very good exercise.

अत: हिंदी से अंग्रेजी में कोड मिश्रण और कोड अन्तरण दोनों संभव है। यही अन्तरण पुन: अँग्रेजी से हिंदी में भी हो जाता है।

6. शैक्षिक

शैक्षिक कार्यक्रमों में आजकल कंप्यूटर और कंप्यूटर से संबद्ध कई पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में कक्षा अध्यापन के दौरान कंप्यूटर पर जो क्रिया हो रही है वह दिखायी भी जाती है।

इस तरह के कार्यक्रमों की भाषा नितांत तकनीकी है और कभी-कभी केवल क्रियाएँ ही हिंदी में होती हैं। पर यह भाषा है बहुत रोचक और सम्प्रेषणीय भी। देखिए—

— Standard Functions कौन से हैं?

Cut, Paste Copy......

— Default first cell पर आया है।

— आपने कोई data keyin किया था हमने एक Particular file खोली।

कोड अंतरण में सहज हिंदी के और शुद्ध अंग्रेजी के भी कुछ वाक्य हैं—

— काट कूट आसानी से हो जाती है कोई निशान नहीं रहता—

— This is pointer. This is marker. What you can do is you can go direct or else press page up/page down.

(ब) विविध— इस वीडियो पत्रिका द्वारा समाचार, स्वास्थ्य, भविष्यफल, साक्षात्कार, मौसम का हाल सभी कुछ पेश किया जाता है (गुडमार्निंग इंडिया)

(स) अन्य कार्यक्रम

1. भक्ति

भक्ति का मानव जीवन में अपना स्थान है और मानसिक और अध्यात्मिक शांति के लिए यह अनिवार्य भी है। इस सदी में कई ऐसे विचारक, सन्त एवं दार्शनिक हुए हैं जिन्होंने

मानव-चेतना को जागृत किया है और आधुनिक चिंतन एवं दर्शन भी जनता के सन्मुख रखा है। इनमें प्रमुख हैं श्री रजनीश, आसाराम, महेश योगी, जी कृष्णमूर्ति आदि।

टी. वी. की सुबह सभी चैनलों की सभा भक्ति संगीत से प्रारम्भ होती है। कभी-कभी गीता, गुरु बानी आदि भी सुनवायी जाती है। महान संतों और दार्शनिकों के विचार भी सुनाये जाते हैं (मुरारी बाबू, संत आसाराम)। इसकी भाषा शुद्ध खड़ी बोली है।

2. पाक कला (कुकरी)

इस तरह के कार्यक्रमों में व्यंजन बनाने की विधि, उसमें प्रयुक्त होने वाली सामग्री की चर्चा की जाती है। भारतीय व्यंजनों के प्रति यूरोप, अमरिका, इंग्लैण्ड एवं खाड़ी के देशों में भी रुचि दिखायी जा रही है। मांसाहारी एवं शाकाहारी व्यंजनों को बनाने की इन विधियों को प्रस्तुत करने वाला कोई न कोई लोकप्रिय कलाकार या सम्मानित अतिथि होता है तो कभी-कभी नामी होटलों के प्रशिक्षित विशेषज्ञ भी। इन कार्यक्रमों (खाना खजाना) की भाषा की बानगी देखिए—

ये बादाना, बूँदी का बड़ा भाई बादाना। लगता तो यह बूँदी की तरह, पर बनता है ये मूँग की दाल से। मंदिरों में प्रसाद चढ़ता है।

व्यंजनों के नये-नये कार्यक्रम अब महिलाओं के ही नहीं पूरे परिवार के कार्यक्रम हो गये हैं। ए. टी. एन. चैनल पर फिल्मी सितारे आकर व्यंजन विधि सिखाते हैं (फिल्मी दावत) तो सोनी में कोई लोकप्रिय कलाकार। 'खाना-खजाना' पूरे परिवार का लोकप्रिय कार्यक्रम है। व्यंजनों की विधि बताने एवं सामग्री की चर्चा में अंग्रेजी का खूब प्रयोग होता है। यहाँ तक कि सामान्य नमक-मिर्च आदि के बारे में भी अंग्रेजी में ही बताया जाता है। संभवतः अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों के कारण।

3. डाक/पत्राचार

टी. वी. के विभिन्न चैनल अपने कार्यक्रमों के बारे में अपने प्रशंसकों, दर्शकों से प्रतिक्रिया स्वरूप पत्रों की आशा करते हैं। इस तरह के पत्रों के आधार पर कार्यक्रमों की लोकप्रियता तो जाँची ही जाती है, साथ ही इसमें प्राप्त सुझाव, परिवर्तनों पर भी ध्यान दिया जाता है। (डाकघर)

कभी-कभी कोई कार्यक्रम पुनः दिखाने का अर्थात् फरमाइशी होता है। अच्छे-अच्छे पत्रों को सुनाया भी जाता है, उन्हें पुरस्कृत भी किया जाता है। कुछ कार्यक्रम पत्रों के आधार पर फिल्मी गीतों की फरमाइश पर आधारित होते हैं (तुम्हारे लिए)। इन कार्यक्रमों की भाषा सीधी-सादी और सरल होती है।

— आपने हमे पत्र लिखा, इसलिए धन्यवाद।

— अपने सुझाव हमें भेजते रहिए।

— आपको यह प्रोग्राम कैसा लगा, लिखिए।

— यह पत्र आया है.......से।

सारांशत: कहा जा सकता है कि टेलीविजन के विभिन्न चैनलों से प्रसारित होने वाली हिंदी के अनेक रंग हैं, इन्द्रधनुषी छटा है जो विश्व के क्षितिज पर अपनी अनोखी आभा बिखेर रही है। भारत, भारतीय संस्कृति, भाषा सभी की वाहिका के रूप में हिंदी विश्व भाषा बनने की प्रक्रिया में है और एक सेतु की तरह काम कर रही है। वह दिन दूर नहीं है जब अंग्रेजी की तरह हिंदी भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व भाषा के रूप में स्थापित हो जाएगी।

संदर्भिका

कंसल, हरिबाबू — विश्व में हिंदी, खंड-1

चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद — जनसंचार में हिंदी

तिवारी, भोलानाथ — हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ, पांडुलिपि प्रकाशन 1987

गांधी, इन्दिरा — हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ पृ. 29, उद्घाटन भाषण से, तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन

चैलीशेव, मेगेनी — विश्व भाषा के रूप में हिंदी, राजभाषा भारती, मार्च, 1984

शर्मा, वशिनी — दूरदर्शन में हिंदी और सामासिकता 1986, अप्रकाशित शोध पत्र, के. हि. सं.

शर्मा, वशिनी — Mass Media language Communication **Psycholingua,** 1994

चतुर्वेदी, जगदीश्वर — टेलीविजन यथार्थवाद साहित्य, जनवरी-मार्च 1993

मासूम, पुनीत — नया संगीतिक माहौल एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रसारण राष्ट्रीय सहारा, 23 जुलाई 1995

शुक्ल, भगवती प्रसाद — हिंदी नये राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ, हिंदी सम्मेलन पत्रिका, भाग-80 संख्या-I

— टी. वी. की अटपटी भाषा हिंग्लिश, युग श्री, 18 फरवरी, 1994

नन्दवाना, लक्ष्मीनारायण — यह काली आँधी है या सुगंधित पवन, मधुमती, मार्च-मई 1994

परिशिष्ट— 1. उपग्रह एवं टीवी चैनल

Asia set 2	Shiva-1
Transponders	Transponders
—24 C-Band	—10 C-Band
—2 ku-Band	—2 ku-Band
Launch	Launch
—June 1995	—April 1995
Players	Players
—Star plus	—ATN Movie
—Prime Sports	—ATN entertainment
—Chanel V	—ATN Current affairs
—BBC	
—Zee TV	
—EL TV/Movie	
—ZED (Zee Education Channel)	

Source : India Today, February, 28, 1995

परिशिष्ट— 2. हिंदी कार्यक्रम प्रस्तोता (VJs) की सूची

अन्नू कपूर, जावेद जाफरी, रूबी भाटिया, फाल्गुनी पारिख, शेखर सुमन, निशा सिंह, ऋतु सिंह, तुषार दलवी, नीना गुप्ता, मोहन कपूर, सतीश शाह, रजत शर्मा, अर्चना पूरन सिंह, रेणुका शहाणे, तनीशा (टिच), अनुराधा पटेल, कँवलजीत, किरण खेर, संगीता बिजलानी, शिवानी वजीर, अपर्णा शर्मा, देवेन्द्र भोजवाणी, सोनू निगम, नीलम कोठारी, तेजन, उमंगकुमार दुर्गा जसराज, अदिति साहनी, कुणाल कोहनी, सोनल डबराल, अभिनव चतुर्वेदी, रागेश्वरी।

परिशिष्ट— 3. धारावाहिकों के नाम

परम्परा, बनेगी अपनी बात, कर्ज, दास्तान, कुरुक्षेत्र, दरार, यह हुई न बात, मानो या न मानो, हसरतें, तारा, माँ, कारावास, जमीर, हम पाँच, आहा!, शतरंज, दुनिया, सैलाब, फिल्मी चक्कर, अमर प्रेम, घरौंदा, अंदाज, बुनियाद, महाभारत, कृष्णा, अकबर बीरबल, अघोरी इत्यादि।

दूरस्थ हिन्दी शिक्षण : देश-विदेश में

पुष्पा बूलचन्दानी

पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व भारत में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के शिक्षण की औपचारिक शुरुआत सन् 1918 में मद्रास में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना से मानी जा सकती है। इस सभा की स्थापना के पीछे महात्मा गांधी जैसे राष्ट्रीय नेताओं का हाथ रहा। इसके बाद हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में अहिंदी भाषी राज्यों में अन्य कई स्वैच्छिक संस्थाएँ भी उभरीं। वस्तुत: स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देश में हिंदी के प्रचार प्रसार का दायित्व ये स्वैच्छिक संस्थाएँ ही निभा रही थीं।

देश की स्वतंत्रता के बाद संघ की राजभाषा हिंदी घोषित की गई। इसके साथ ही संवैधानिक दायित्वों के कारण केंद्रीय सरकार ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्यक्रमों में विस्तार लाने के लिए कई कदम उठाए। इस समय हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में कई नए आयाम जुड़ गए। हिंदी का प्रयोग कई विशिष्ट व्यवहार क्षेत्रों में भी होना शुरू हुआ। जहाँ इससे पहले हिंदी का प्रयोग नहीं होता था, जैसे प्रशासन, बैंक, शिक्षा, विज्ञान, टैक्नॉलाजी आदि। अत: हिंदी शिक्षण का अब दोहरा उद्देश्य हो गया—

(क) हिंदी न जानने वालों को हिंदी पढ़ाना, और

(ख) विशिष्ट भाषा-रूपों या प्रयुक्तियों का प्रशिक्षण देना।

स्वतंत्र भारत में नई शिक्षा नीति का सूत्रपात हुआ। लगभग इसी समय भारत में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं शोध में रत शिक्षकों और भाषाविदों का ध्यान पश्चिम में भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण के क्षेत्रों में हुए नए शोध कार्यों की ओर आकृष्ट हुआ। भारतीय परिवेश में इन नई विकसित तकनीकों का प्रयोग करते हुए हिंदी के लिए नई पाठ्य-पुस्तकें, शिक्षण सामग्री आदि का निर्माण आरंभ हुआ और साथ ही भाषा अध्यापन के लिए नई शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग भी किया जाने लगा। भारत सरकार ने केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, भारतीय भाषा संस्थान, केंद्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, तरक्की उर्दू बोर्ड जैसी भाषा शिक्षण एवं अनुसंधानपरक संस्थाओं की स्थापना की। इन सबके परिणामस्वरूप भाषा शिक्षण की तकनीक तथा पद्धतियों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई।

देश में

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना विशेष रूप से हिंदी भाषा के विकास और प्रसार के लिए की गई थी। निदेशालय में पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से हिंदी शिक्षण का कार्य आरंभ हुआ। सन् 1968 में आरंभ दूरस्थ हिंदी शिक्षण की यह योजना देश तथा विदेश के ऐसे शिक्षार्थियों के लिए आरंभ की गई, जिनके पास हिंदी सीखने का कोई अन्य साधन उपलब्ध नहीं था। सर्वप्रथम पत्राचार के माध्यम से 'हिंदी प्रवेश' पाठ्यक्रम अंग्रेजी माध्यम से 1968 में आरंभ किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य पत्राचार द्वारा हिंदी शिक्षण की सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करना तथा विदेशियों को भारतीय जन-जीवन एवं संस्कृति की विशिष्टताओं से परिचित कराना था।

इस पाठ्यक्रम के आरंभिक वर्ष में ही 1009 छात्रों ने पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। पत्राचार पाठ्यक्रम की यह योजना इतनी लोकप्रिय हुई कि देश के विभिन्न भागों से इस पाठ्यक्रम में प्रवेश की मांग तीव्रता से बढ़ी। 1973 में 'हिंदी प्रवेश' पाठ्यक्रम की श्रृंखला में उच्चतर पाठ्यक्रम 'हिंदी परिचय' जोड़ा गया। बाद में 'हिंदी प्रवेश' एवं 'हिंदी परिचय' पाठ्यक्रमों को अधिक सघन रूप देकर वर्ष 1986 एवं 1987 में क्रमशः 'हिंदी प्रमाणपत्र' पाठ्यक्रम एवं 'हिंदी डिप्लोमा' पाठ्यक्रम के नाम से चलाया जाने लगा।

हिंदी सीखने के इच्छुक उन अहिंदी भाषी भारतीय छात्रों एवं विदेशों में प्रवासी भारतीयों के लिए, जो अंग्रेजी का ज्ञान न होने अथवा अंग्रेजी में स्वयं को अभिव्यक्त न कर सकने के कारण अंग्रेजी माध्यम से संचालित इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश नहीं ले पाते थे, कुछ क्षेत्रीय भाषाओं को भी माध्यम के रूप में अपनाया गया ताकि वे अपनी मातृभाषा के माध्यम से हिंदी भाषा सीख सकें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए तमिल, मलयालम और बंगला माध्यमों से 'प्रवेश' एवं 'परिचय' पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए। 'प्रवेश' तमिल माध्यम 1976, 'प्रवेश' मलयालम माध्यम व 'परिचय' तमिल माध्यम 1978, 'प्रवेश' बंगला माध्यम 1979, 'परिचय' मलयालम माध्यम 1980 तथा 'परिचय' बंगला माध्यम पाठ्यक्रम 1984 में प्रारंभ किए गए।

इन पाठ्यक्रमों की शिक्षण सामग्री में हिंदी शिक्षण की नई दृष्टि प्रतिबिंबित होती है। इनमें हिंदी की संरचना के साथ-साथ हिंदी के व्यवहार को भी ध्यान में रखते हुए छात्रों को बोलचाल की हिंदी के साथ-साथ साहित्य में प्रयुक्त भाषा का भी ज्ञान दिया जाता है। साथ ही सहायक सामग्री के रूप में लिंग्वा कैसेट्स भी तैयार किए गए हैं। चूँकि पत्राचार के माध्यम से हिंदी सीखने वाले छात्र कक्षा-शिक्षण एवं शिक्षक के साथ सीधे संपर्क से वंचित रहते हैं, अतः भाषा बोलने और सुनने का अभ्यास उन्हें नहीं हो पाता। इस अभाव की पूर्ति हेतु हिंदी के इन पाठ्यक्रमों से संबद्ध श्रव्य-सामग्री का भी निर्माण करवाया गया है ताकि इन कैसेट्स के माध्यम से छात्र हिंदी के मानक उच्चारण से परिचित हो सकें और साथ ही हिंदी बोलने का अभ्यास भी कर सकें। ये कैसेट्स अंग्रेजी, तमिल, कन्नड़, तेलगु, मलयालम, उड़िया,

असमिया, बंगला भाषाओं की कमेंट्री के साथ उपलब्ध हैं। कोंकणी के माध्यम से भी इन कैसेट्स की सामग्री के निर्माण का आधारभूत कार्य सम्पन्न हो चुका है और इनकी वाचन पुस्तिका (Reading Script) वर्तमानत: प्रेस में है।

पत्राचार के माध्यम से हिंदी सीखने वाले इन छात्रों के लिए सम्पर्क कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। इन कार्यक्रमों में निदेशालय के विशेषज्ञ शिक्षक छात्रों की हिंदी भाषा के उच्चारण, व्याकरण, वाचन, लेखन आदि से जुड़ी समस्याओं का निराकरण करते हैं एवं अंतिम परीक्षा की तैयारी में भी छात्रों की मदद करते हैं।

विदेश में

देश के अहिंदी-भाषी प्रांतों के साथ-साथ विदेशों में भी पत्राचार के माध्यम से हिंदी शिक्षण के इन दोनों पाठ्यक्रमों— प्रमाणपत्र एवं डिप्लोमा— के छात्रों की काफी संख्या रहती है। विदेशी छात्रों में कुछ ऐसे छात्र भी हैं जो मूलत: भारतीय हैं लेकिन कई वर्षों से विदेशों में बसे हुए हैं। वे भी अपनी मूल संस्कृति से जुड़ाव महसूस करने के लिए हिंदी के इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेते हैं। अत: ये आप्रवासी भारतीय अपनी मातृभाषा मलयालम, तमिल, बंगला आदि के माध्यम से भी हिंदी सीखते हैं। किन्तु विदेशी छात्रों में अधिकांश संख्या विदेशी मूल के छात्रों की है जिनमें भारतीय समाज, संस्कृति, सभ्यता आदि के बारे में जानने की उत्सुकता है और वे यह ज्ञान हिंदी के माध्यम से अर्जित करते हैं। काफ़ी विदेशी छात्र भारत भ्रमण के प्रयोजन से भी हिंदी सीखते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले विदेशी छात्रों की संख्या निम्न तालिकाओं में अंकित हैं—

वर्षवार हिंदी प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के विदेशी छात्रों की कुल संख्या

वर्ष \ माध्यम	अंग्रेजी	तमिल	मलयालम	बंगला
1989-90	46	—	1	—
1990-91	34	—	—	—
1991-92	47	1	1	—
1992-93	85	3	2	—
1993-94	48	1	2	1
1994-95	77	—	1	—
1995-96	40	1	4	—
1996-97	55	—	—	—
1997-98	8	—	—	—

वर्षवार हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम के विदेशी छात्रों की संख्या

वर्ष \ माध्यम	अंग्रेजी	तमिल	मलयालम	बंगला
1989-90	5	—	—	—
1990-91	9	—	—	—
1991-92	22	3	—	—
1992-93	11	—	—	—
1993-94	9	—	—	—
1994-95	87	—	—	—
1995-96	284	—	—	—
1996-97	219	—	—	—
1997-98	219	—	—	—

अनेक देशों के छात्र इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेते हैं, जैसे यू. एस. ए., फ़िजी, त्रिनिदाद, ऑस्टेलिया, कनाडा, अर्जेंटीना, अफ्रीकी देशों— दक्षिण अफ्रीका, जाम्बिया, मिस्र, नाइज़ीरिया, ब्राज़ील, केन्या आदि के छात्र, अरब देशों— कुवैत, ओमन, दोहा कतार, दुबई आदि के छात्र, आयरलैंड, गयाना, युगोस्लाविया, इंटली, जर्मनी, यू. के., नीदरलैंड, फ्रांस, सिंगापुर, रोमानिया, पेरु, तुर्की, रोम, हालैंड, जापान, उज़बेकिस्तान, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों के छात्र इन पाठ्यक्रमों से लाभान्वित होते हैं।

कुछ कारणों से इन पाठ्यक्रमों के बारे में विस्तृत प्रचार के अभाव में इनमें प्रवेश लेने वाले विदेशी छात्रों की संख्या सीमित है। यदि विभिन्न देशों में स्थित भारतीय दूतावासों एवं भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से इन पाठ्यक्रमों का प्रचार सम्बद्ध देशों में किया जाए तो छात्रों की संख्या में आशातीत वृद्धि हो सकती है। ऐसा ही एक प्रयास फ़िजी में पिछले चार वर्षों से किया जा रहा है। फ़िजी के एक हिंदी विद्वान, जो कि वहाँ के शिक्षा मंत्रालय में वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी के पद पर कार्य रहे हैं एवं फ़िजी-भारतीय राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिषद के सदस्य भी हैं, के प्रयासों से न केवल फ़िजी में इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या ही बढ़ी है, बल्कि निदेशालय के हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम को फ़िजी में सरकारी स्तर पर मान्यता दिलवाने के प्रयास भी जारी हैं। फ़िजी, दक्षिण कोरिया, त्रिनिदाद, रूस, यू. एस. ए., पोलैंड, चीन आदि कई देशों में विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा एवं भारत के इतिहास, संस्कृति, अर्थशास्त्र आदि की शिक्षा दी जाती है। कई देशों में परस्पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों में भी हिंदी शिक्षण को स्थान दिया जाता है। फ़िजी में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों के अंतर्गत गए भारतीय छात्रों को फ़िजी की भाषा एवं फ़िजी छात्रों को हिंदी पढ़ाई जाती है। फ़िजी में हिंदी विद्यालयों में भी पढ़ाई जाती है। इसकी पढ़ाई छठी कक्षा से आरंभ की जाती है और बाह्य परीक्षाओं (छठी, आठवीं, बारहवीं कक्षाओं) में हिंदी का एक स्वतंत्र प्रश्न पत्र

होता है। पिछले दो वर्षों से निदेशालय के पत्राचार पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए फ़िजी में जो प्रोत्साहन दिया जा रहा है, उसका मुख्य उद्देश्य है, वहाँ माध्यमिक स्तर पर हिंदी पढ़ाने के लिए अच्छे शिक्षक तैयार करवाना। इस प्रयोजन की सिद्धि हेतु निदेशालय के डिप्लोमा पाठ्यक्रम को वहाँ के हिंदी अध्यापकों के लिए एक उच्च पाठ्यक्रम के रूप में सरकार द्वारा मान्यता प्रदान करवाने के लिए भी वहाँ के पूर्व उल्लिखित हिंदी विद्वान कार्यरत हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप वर्ष 1994-95 एवं 1995-96 में डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने वाले फ़िजी विद्यार्थियों की संख्या अचानक काफी बढ़ी है। वर्ष 1994-95 में 61 फ़िजी विद्यार्थियों ने हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया और वर्ष 1995-96 में तो यह संख्या बढ़कर 276 तक पहुँच गई। वर्ष 1996-97 में डिप्लोमा पाठ्यक्रम में फ़िजी छात्रों की संख्या 177 रही और वर्तमान शैक्षिक वर्ष 1997-98 में भी अब तक 208 छात्र इस पाठ्यक्रम में प्रवेश ले चुके हैं।

इसी प्रकार यदि निदेशालय के इन पाठ्यक्रमों के प्रचार का कार्य सरकारी एवं गैर सरकारी स्तरों पर किया जाता रहे तो विदेशों में हिंदी का प्रसार बढ़ सकता है एवं इन पाठ्यक्रमों को विदेशों में भी उच्च स्तर पर मान्यता प्राप्त हो सकती है। निदेशालय में समय-समय पर इन पाठ्यक्रमों में संशोधन एवं संवर्धन हेतु विशेषज्ञ समितियाँ भी बनी हुई हैं, जो भाषा एवं भाषा शिक्षण के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए इन पाठ्यक्रमों में भी संशोधन करती हैं।

निदेशालय में इन दो पत्राचार पाठ्यक्रमों के अलावा विदेशियों के लिए एक हिंदी प्राइमर भी लिखी गई है। इस प्राइमर को चार खंडों में विभाजित किया गया है। इन चार खंडों में एक विशेष शिक्षण-क्रम दृष्टिगोचर होता है। प्रथम एवं द्वितीय खंडों में बोलचाल की भाषा एवं वार्तालाप पद्धति का उपयोग किया गया है। इसमें भारत भ्रमण के लिए आने वाले विदेशियों के लिए विभिन्न संदर्भों एवं व्यवहार क्षेत्रों में वार्तालाप करने के लिए हिंदी की संरचनाओं का शिक्षण प्रमुख हैं। इसके अंतर्गत भारतीय परिवेश से जुड़ी हुई सामान्य ज्ञान की बातें भी समाहित हैं। लेकिन यह आवश्यक नहीं कि सभी विदेशी छात्र भारत आने के लिए ही हिंदी सीखें। अनेक छात्र भारत की संस्कृति, सभ्यता, साहित्य, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि के बारे में पढ़ने के लिए भी हिंदी सीखते हैं। अतः प्राइमर में ऐसे छात्रों को भी ध्यान में रखा गया है और तृतीय एवं चतुर्थ खंड में हिंदी के साहित्य और साहित्यकारों के बारे में जानकारी दी गई है, ताकि छात्रों का हिंदी साहित्य एवं साहित्यिक भाषा से भी परिचय हो सके और हिंदी साहित्य के प्रति उनकी अभिरुचि बढ़े। इन खंडों में हिंदी के गण्यमान्य लेखकों की चुनी हुई कविताएँ, कहानियाँ, निबंध आदि भी शामिल हैं। प्राइमर के अंत में हिंदी के शब्दों का विस्तृत कोश भी दिया गया है। हिंदी प्राइमर हिंदी स्वयं-शिक्षक का कार्य करती है। लेकिन यह पुस्तक काफी वर्ष पहले तैयार की गई थी, अतः पिछले कुछ वर्षों में द्वितीय या विदेशी भाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण की पद्धतियों एवं तकनीकों में आए परिवर्तनों के अनुरूप प्राइमर में भी संशोधन की आवश्यकता का अनुभव किया गया। आजकल इस दिशा में कार्य प्रगति पर है एवं शीघ्र ही यह पुस्तक संशोधित एवं परिवर्धित रूप में प्रकाशित होगी।

हिन्दी : भारत सरकार की भाषा-नीति के परिप्रेक्ष्य में

वीना माथुर

भारतीय जनचेतना की आवाज और भारतीय अस्मिता की पहचान हिंदी स्वतंत्र भारत की राजभाषा है। यही राजभाषा हिंदी एक मजबूत संवैधानिक स्थिति और वृहद सरकारी नीतियों के तहत संस्कारित और पल्लवित होती हुई और विश्वपटल पर छा जाने के स्वप्न को संवारती हुई अपने ही घर में समुचित स्थान को गौरवान्वित करते और संपूर्ण जनमानस की स्वीकार्यता की आकांक्षी है, जबकि केंद्रीय सरकार का भी राजभाषा के उन्नयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न योजनाओं की क्रियान्विति के साथ सकारात्मक एवं सहयोगात्मक रुख है। इस सरकारी नीतियों के क्रियान्वयन के लिए किये गये प्रयासों के आकलन से पूर्व यहाँ राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति एवं व्यवस्था पर दृष्टिपात करना भी अपेक्षित है।

संविधान निर्माताओं द्वारा संविधान के अनुच्छेद 343 खंड (1) में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है और अनुच्छेद 344 में संघ के सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के बारे में और संघ के राजकीय प्रयोजनों में से सब या किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर रोक लगाये जाने के बारे में सुझाव प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रपति द्वारा 30 संसद सदस्यों के आयोग के गठन की व्यवस्था करने की अनुशंसा की गयी है। अनुच्छेद 351 में सरकार की भाषा संबंधी नीति निर्देशित की गयी है। इसमें कहा गया है— ''हिंदी भाषा की प्रसार वृद्धि करना, उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके तथा उसकी आत्मीयता में हस्तक्षेप किये बिना हिंदुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए तथा जहाँ आवश्यकता हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से तथा गौणत: उक्त उल्लिखित भाषाओं से शब्द-ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।''

अनुच्छेद 344 में की गयी अनुशंसा के अनुसार एक राजभाषा आयोग बालगंगाधर खेर की अध्यक्षता में 7 जून, 1955 को गठित हुआ, जिसने संघ के विभिन्न सरकारी, गैरसरकारी और सार्वजनिक हित के प्रयोजनों हेतु हिंदी भाषा के प्रयोग को प्रमुखता देने के संबंध में अपने सुझाव राष्ट्रपति को जुलाई, 1956 को प्रस्तुत किये। इन सुझावों पर पुनर्विचार के लिए श्री गोविंद बल्लभ पंत की अध्यक्षता में एक भाषा समिति गठित की गयी, जिसने 8 फरवरी, 1959 को

राष्ट्रपति को प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में हिंदी के अधिक से अधिक विकास हेतु योजनाएँ बनाने की संघ सरकार से सिफारिश की और संघ के सभी प्रयोजनों के लिए हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी के प्रयोग को यथावत् चलते रहने पर बल दिया। यही सिफारिशें 1963 के राजभाषा अधिनियम का आधार बनीं, जिनके अनुसार अंग्रेजी को हिंदी के साथ-साथ सहभाषा के रूप में मान्यता दी गयी। 1967 में राजभाषा अधिनियम में कुछ संशोधन किया गया, जिसके अनुसार अधिनियम की धारा (3) 5 के रूप में यह उपबंध किया गया है कि राजभाषा अधिनियम (1963) में दिये विभिन्न कार्यों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने संबंधी व्यवस्था तब तक जारी रहेगी, जब तक हिंदी को राजभाषा के रूप में न अपनाने वाले सभी राज्यों की विधानसभाएँ अंग्रेजी का प्रयोग खत्म करने के लिए आवश्यक संकल्प पारित न करें और इन संकल्पों पर विचार करने के बाद संसद का प्रत्येक सदन भी इसी आशय का संकल्प पारित न कर दे।

केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों पर राजभाषा नीति के क्रियान्वयन की ज़िम्मेदारी है। इस नीति के समन्वय के कार्य को संपन्न करने के लिए एक पृथक स्वतंत्र राजभाषा विभाग की स्थापना 26 जून, 1975 को की गयी। इस विभाग के बन जाने से हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग में बड़ी तेजी आयी है।

हिंदी के विकास एवं प्रसार हेतु सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1976 में राजभाषा विभाग की देखरेख में राजभाषा नियम बनाये गये, जो कि सरकार का एक सराहनीय कदम था और इसके क्रियान्वयन से हिंदी के प्रयोग को काफ़ी सहायता मिली है। इन नियमों में केंद्र सरकार के कार्यालयों और राज्य सरकारों के मध्य पत्र-व्यवहार में प्रयुक्त भाषा संबंधी व्यवस्थाएँ की गयी हैं— 'क' क्षेत्र (सभी हिंदी भाषी राज्य) से हिंदी में और खास मामलों में हिंदी के साथ अंग्रेज़ी में, 'ख' क्षेत्र (पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात एवं केंद्र शासित चंडीगढ़ और अंडमान-निकोबार) से हिंदी और अंग्रेजी दोनों में और 'ग' (शेष सभी राज्य) से अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार किया जाएगा। केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों या विभागों के मध्य परस्पर हिंदी या अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार किया जा सकता है। केंद्रीय सरकार के सभी कर्मचारियों को हिंदी या अंग्रेजी में टिप्पणी या मसौदे लिखने की छूट है, परंतु केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित मैनुअल, संहिताओं, फार्मों और रजिस्टर के शीर्ष, नामपट, स्टेशनरी आदि में दोनों भाषाओं का प्रयोग समान रूप से किया जाएगा।

हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने और उसकी जाँच करने के लिए सरकार ने विभिन्न स्तरों पर कई समितियाँ बनायी हैं। ये समितियाँ हिंदी के प्रचार और विकास में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देती हैं। इन्हीं सुझावों के आधार पर सरकार राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की नीति निर्धारित करती है। ये समितियाँ हैं—

---

* अष्टम अनुसूची में उल्लिखित भाषाएँ : 1. असमी, 2. बंगाली, 3. गुजराती, 4. हिंदी, 5. कन्नड़, 6. कश्मीरी, 7. मलयालम, 8. मराठी, 9. ओड़िया, 10. पंजाबी, 11. संस्कृत, 12. सिंधी, 13. तमिल, 14. तेलुगु, 15. उर्दू, 16. मणिपुरी, 17. नेपाली, 18. कोंकणी।

केंद्रीय हिंदी समिति— इसका उद्देश्य हिंदी के विकास और प्रसार तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में किये जा रहे विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों का समन्वय करना और नीति-संबंधी दिशा-निर्देश देना है। इस समिति के अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं और 11 कैबिनेट एवं राज्यमंत्री, 8 मुख्यमंत्री, 7 संसद सदस्य तथा 10 हिंदी के विशिष्ट विद्वान सदस्य होते हैं और राजभाषा विभाग के सचिव एवं भारत सरकार के हिंदी सलाहकार सदस्य सचिव होते हैं।

इस समिति के निर्णयों के क्रियान्वयन पर नज़र रखने तथा महत्वपूर्ण विषयों पर सुझाव देने के लिए गृहमंत्री/गृहराज्यमंत्री की अध्यक्षता में इसकी एक उपसमिति भी बनायी गयी है।

हिंदी सलाहकार समितियाँ— केंद्रीय हिंदी समिति द्वारा निश्चित की गयी नीति के क्रियान्वयन को देखने और इस विषय में सलाह देने के उद्देश्य से मंत्रालय और विभागों में हिंदी सलाहकार समितियाँ बनायी गयी हैं। इन समितियों के अध्यक्ष उस मंत्रालय या विभाग के मंत्री होते हैं।

इस संवैधानिक व्यवस्था की ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि के परिप्रेक्ष्य में केंद्रीय सरकार द्वारा अनुच्छेद 351 के तहत सम्पन्न हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न योजनाओं की कई सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर की गयी क्रियान्विति की वस्तुस्थिति का यहाँ आकलन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

राष्ट्रीय स्तर पर क्रियान्वित विभिन्न योजनाएँ एवं कार्यक्रम—

केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों का हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण— प्रशासनिक कार्य हिंदी में दक्षतापूर्वक करने के लिए केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों और अधिकारियों को हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाता है और प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ की परीक्षाएँ भी ली जाती हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के दिल्ली केंद्र में भी विभिन्न श्रेणी के अधिकारियों के लिए एक माह का, दो माह का और तीन माह के तीन अलग-अलग पाठ्यक्रम चलाये जाते थे। इन पाठ्यक्रमों में थोड़ी ही अवधि में भाषा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर वे दैनिक कार्यों को हिंदी में करने में सक्षम हो जाते थे। केंद्रीय हिंदी निदेशालय में भी पत्राचार द्वार हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय अकादमी, मसूरी में प्रशासनिक अधिकारियों का प्रशासनिक प्रशिक्षण के साथ-साथ प्रशासनिक हिंदी का भी प्रशिक्षण दिया जाता है और समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन द्वारा भी 30 दिनों में उन्हें कार्यालयीन हिंदी का अच्छा ज्ञान करा दिया जाता है।

हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम— अहिंदी भाषी क्षेत्रों के स्कूलों में हिंदी अध्यापन की व्यवस्था कराने के लिए सरकार ऐसे स्कूलों में हिंदी शिक्षकों की नियुक्ति के लिए शत प्रतिशत आधार पर वित्तीय सहायता देती है। इस योजनान्तर्गत कई हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय चल रहे हैं।

छात्रवृत्ति योजना— अहिंदी भाषी क्षेत्र के छात्रों की रुचि हिंदी के प्रति जाग्रत करने के उद्देश्य से मैट्रिक के आगे हिंदी का अध्ययन करने के लिए लगभग 3500 छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं।

आकाशवाणी— अहिंदी भाषी क्षेत्रों के आकाशवाणी केंद्रों से हिंदी पाठों का समय-समय पर प्रसारण किया जाता है।

संवैधानिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग और केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना की गयी।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय— हिंदी को जन-जन तक पहुँचाने के लिए और हिंदी की शब्द सम्पदा समृद्ध कर उसे प्रशासनिक कार्य संपन्न करने हेतु सक्षम बनाने और हिंदी के प्रचार-प्रसार, विकास एवं संवर्द्धनार्थ राष्ट्रपति के अप्रैल, 1960 के एक आदेश के अनुसार केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना की गयी। निदेशालय की स्थापना के साथ ही पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गयी, जिसने विभिन्न विषयों से संबंधित परिभाषा कोश, विज्ञान, मानविकी, कृषि, इंजीनियरी, पर्यटन, प्रशासनिक एवं अन्य अनेक विषयों से संबंधित शब्दावलियाँ, कई देशी (तमिल, मलयालम, बंगला, एवं अन्य) और विदेशी (अंग्रेज़ी, फ्रेंच, इटैलियन, चैक, जर्मन, जापानी एवं अन्य) भाषाओं के द्विभाषिक या त्रिभाषिक कोशों का निर्माण, द्विभाषी प्राइमर, सरल व्याकरण, टूरिस्ट गाइड आदि उपयोगी साहित्य का निर्माण एवं प्रकाशन किया है। इसके अतिरिक्त कुछ स्वैच्छिक संस्थाओं के सहयोग से हिंदी विश्वकोश तैयार कर प्रकाशित किये हैं। हिंदी एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर के साहित्य के निर्माण एवं प्रकाशन करने के लिए ग्रंथ अकादमियों का गठन भारत सरकार ने वित्तीय सहायता प्रदान कर किया है। इस योजना के तहत अब तक 1000 से अधिक हिंदी पुस्तकों का और 3000 से अधिक सभी भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

जनमानस में हिंदी का प्रसार करने तथा लोगों की रुचि हिंदी के प्रति जाग्रत करने के उद्देश्य से निदेशालय द्वारा कई योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही हैं—

अहिंदी भाषी भारतीय एवं विदेशियों के लिए पत्राचार माध्यम से हिंदी भाषा का शिक्षण सन् 1960 से किया जा रहा है। **हिंदी प्रवेश/प्रमाण** पत्र और **हिंदी परिचय/डिप्लोमा** नाम से दो-दो वर्ष के दो पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं। इनका माध्यम अंग्रेज़ी, हिंदी एवं कई भारतीय भाषाएँ हैं। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से वर्ष 89-90 से 97-98 तक 1326 भारतीय एवं विदेशी हिंदी सीख चुके हैं।

अहिंदी भाषी लेखकों को हिंदी लेखन में प्रशिक्षण देने के लिए प्रतिवर्ष दो शिविरों का आयोजन किया जाता है।

विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिंदी विद्वानों को दूसरे विश्वविद्यालयों में भाषण देने के अवसर प्रदान किये जाते हैं। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हिंदी क्षेत्र के विद्वान अहिंदी क्षेत्र में और अहिंदी क्षेत्र के विद्वान हिंदी क्षेत्र में भेजे जाते हैं।

हिंदी के शुद्ध उच्चारण को जानने और हिंदी क्षेत्र की विशेषताओं को जानने के उद्देश्य से अहिंदी भाषी छात्रों को हिंदी क्षेत्रों की अध्ययन यात्रा पर ले जाया जाता है।

अहिंदी भाषी साहित्यकारों को हिंदी में साहित्य सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उन्हें पुरस्कृत किया जाता है।

हिंदी की अनेक स्वैच्छिक संस्थाओं को वित्तीय सहायता देकर हिंदी की पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं का निःशुल्क वितरण कर प्रोत्साहित किया जाता है।

समस्त भारतीय भाषाओं की विशेषताओं को आत्मसात करते हुए हिंदी को समृद्ध करने के उद्देश्य से **भाषा** नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है और देशभर में हुई हिंदी की प्रगति की जानकारी देने के लिए 'हिंदी वार्षिकी' का भी प्रकाशन किया जाता है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान— हिंदी के अखिल भारतीय स्वरूप का निर्धारण करने तथा सम्पूर्ण राष्ट्र में इसका प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए केंद्रीय सरकार ने 'अखिल भारतीय हिंदी महाविद्यालय, आगरा' के संचालन का दायित्व एक स्वायत्तशासी संस्था 'केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा' को 19 मार्च, 1960 को सौंपा। 21 अक्टूबर, 1963 को सम्पन्न शासी परिषद की बैठक में इस महाविद्यालय का नाम बदलकर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' रखा गया। तब से यह संस्थान मुख्यालय आगरा और पाँच केंद्रों— दिल्ली, गुवाहटी, हैदराबाद, शिलांग और मैसूर के सहयोग से निरंतर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता हुआ विकासमान है।

यह न केवल राष्ट्रीय वरन् अंतर्राष्ट्रीय स्तर हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का एक उच्च अध्ययन एवं शोध केंद्र है। इसके कार्यक्षेत्र एवं प्रकार्य हैं— हिंदी भाषा शिक्षण, हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण, हिंदी भाषापरक शोध, भाषाविज्ञान तथा तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्रों से संबंधित वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य आदि।

हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के स्तर में समुन्नयन और उसमें एकरूपता लाने के उद्देश्य से केंद्रीय सरकार के निर्देश पर कई राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों ने अपने-अपने क्षेत्रों के हिंदी शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों/संस्थानों को संस्थान से संबद्ध किया। इनमें संस्थान के ही पाठ्यक्रम चलते हैं और संस्थान ही इनकी परीक्षाएँ संचालित करता है।

वृहद अनुसंधानपरक योजनाओं के अतिरिक्त संस्थान का प्रमुख कार्य क्षेत्र है— हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कुशल तथा सक्षम हिंदी शिक्षक तैयार करना है। इसके अन्तर्गत विभिन्न अहिंदी-भाषी क्षेत्र की राज्य सरकारें अपने अप्रशिक्षित हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए संस्थान में प्रतिनियुक्त करती हैं। उन्हें द्वितीय भाषा शिक्षण प्रणाली विज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन की विविध पद्धतियों में प्रशिक्षण देने के साथ-साथ तद्विषयक शोधकार्य भी संपन्न कराये जाते हैं। इसमें विश्वविद्यालय और स्कूली स्तर के शिक्षकों के लिए निम्नलिखित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं—

1. हिंदी शिक्षण निष्णात (एम. एड. स्तरीय)
2. हिंदी शिक्षण पारंगत (बी. एड. स्तरीय)
3. हिंदी शिक्षण पारंगत (बी. एड. स्तरीय पत्राचार सह-संपर्क पाठ्यक्रम)
4. हिंदी शिक्षण प्रवीण (डिप्लोमा पाठ्यक्रम)
5. चतुर्वर्षीय हिंदी शिक्षण डिप्लोमा पाठ्यक्रम (नागालैंड)
6. विशेष गहन हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण (पूर्वांचल के शिक्षकों के लिए) पाठ्यक्रम

इन पाठ्यक्रमों में अब तक लगभग 7000 हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

भारत सरकार की 'विदेशों में हिंदी का प्रचार' योजना के अन्तर्गत संस्थान में विदेशी छात्रों के लिए हिंदी भाषा शिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। इस योजना के तहत चयनित विदेशी छात्रों को मुख्यालय में संचालित निम्नलिखित पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया जाता है—

1. हिंदी भाषा दक्षता प्रमाणपत्र
2. हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा
3. हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा
4. हिंदी भाषिक अनुप्रयोग दक्षता डिप्लोमा
5. समन्वित हिंदी पाठ्यक्रम

यही पाठ्यक्रम 'स्वपोषित' योजना के अन्तर्गत दिल्ली केंद्र पर भी संचालित होते हैं।

इनके अतिरिक्त कुछ पोस्ट एम. ए. डिप्लोमा और उच्च डिप्लोमा पाठ्यक्रम, अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान और अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार आदि भी दिल्ली केंद्र पर संचालित होते हैं।

संस्थान का दूसरा प्रमुख कार्यक्रम है— प्रसारसेवा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत देश के सभी भागों में सेवारत हिंदी अध्यापकों को हिंदी परिवेश में रखकर द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण का अधुनातन प्रशिक्षण देने के साथ-साथ भाषाविज्ञान और हिंदी साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तियों से परिचय कराया जाता है। प्रतिवर्ष 40 से 50 तक नवीकरण और उच्च नवीकरण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

इन शैक्षिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त कुछ अन्य उच्चस्तरीय अनुसंधान एवं सामग्री निर्माण से संबंधित कई योजनाएँ चल रही हैं। देश के विभिन्न अंचलों के जनजाति-भाषियों के लिए जनजातीय भाषाओं और हिंदी में पाठ्य-पुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, अध्यापक निर्देशिकाएँ, अध्येता कोश आदि का निर्माण किया जाता है और इन क्षेत्रों के तथा अध्यापकों के लिए नवीकरण पाठ्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। वर्तमान में मध्यप्रदेश और उत्तर-पूर्वी राज्यों की जनजातीय भाषाओं के लिए उक्त सामग्री का निर्माण और संशोधन कार्य किया जा रहा है।

हिंदी के अखिल भारतीय स्वरूप के निर्धारण के लिए हिंदी के विशेष संदर्भ में समाज भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण किये गये हैं। ये सर्वेक्षण विभिन्न प्रांतों के ऐसे औद्योगिक प्रतिष्ठानों के किये गये हैं, जो अपनी बहुभाषिकता के कारण भारत का भाषायी प्रतिनिधित्व करते हैं। इन सर्वेक्षणों से प्राप्त सामग्री के आधार पर तालिकाएँ तैयार कर उन पर रिपोर्ट लिखी गयी है और बहुभाषिक स्थिति में विभिन्न संदर्भों में हिंदी के प्रयोग के अवसरों को निर्धारित किया गया है। इसके साथ ही विशिष्ट भाषायी अभिलक्षणों का निर्धारण कार्य भी किया जा रहा है।

देशी और विदेशी छात्रों के लिए हिन्दी शिक्षण से संबंधित विभिन्न पाठ्य सामग्री और हिंदी पाठ्य पुस्तकों का निर्माण एवं संशोधन किया जाता है। राज्यों की माँग के आधार पर उनके स्कूलों और विश्वविद्यालयों के लिए भी पाठ्य पुस्तक निर्माण एवं संशोधन किया जाता है। इसके अन्तर्गत गोवा राज्य के लिए हिंदी पाठ्य पुस्तक निर्माण, 'नबार्ड' जैसी बैंक के कर्मचारियों के लिए हिंदी भाषा शिक्षण से संबंधित पाठ्यपुस्तक का निर्माण और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के स्नातक स्तरीय 'प्रयोज़न मूलक हिंदी पाठ्यक्रम' के लिए पाठ्यपुस्तक निर्माण आदि कुछ विशिष्ट योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही हैं।

भाषा प्रौद्योगिकी एवं दृश्य-श्रव्य एकक के अन्तर्गत अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। अहिंदी-भाषी भारतीय एवं विदेशियों की दृष्टि से उच्चारण पाठ तैयार करना और भाषा प्रयोगशाला में उनका अभ्यास करवाना। सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की दृष्टि से वीडियो फिल्म का निर्माण आदि कार्य करना।

विदेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा का कंप्यूटर साधित अध्ययन-शिक्षण योजना के अन्तर्गत कई कार्य किये जा रहे हैं— लिपि लेखन और उसके नियम, शब्द-कोश, परसर्ग, अलंकार, रस, मुहावरा, लोकोक्ति, व्याकरणिक अन्विति आदि से संबंधित कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार किये गये हैं।

दिल्ली केंद्र पर संचालित एक अन्य अनुसंधान परक योजना के अन्तर्गत कार्य चल रहा है। यह है लद्दाखी भाषा का समाज भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वितीय भाषा हिंदी के विशेष संदर्भ में। इस योजना के अन्तर्गत सर्वेक्षण कार्य पूर्ण हो चुका है। विश्लेषण कार्य प्रगति पर है।

संस्थान प्रतिवर्ष हिंदी लेखन और भाषण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अहिंदी-भाषियों के लिए हिंदी निबंध और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। यह अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिताएँ हैं।

स्वैच्छिक संस्थाएँ— 28 ऐसी हिंदी की स्वैच्छिक संस्थाएँ हैं जो सरकारी अनुदान के प्रश्रय में पोषित एवं पल्लवित होती हुई हिंदी के प्रति समर्पित भाव के साथ कार्यरत हैं। यह देश-विदेश के सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचकर हिंदी ज्ञान ज्योति को ज्योतित करने में निरंतर संलग्न हैं। सरकार वित्तीय सहायता प्रदान कर इन्हें प्रोत्साहित करती है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा मुख्य रूप से अग्रणी स्वैच्छिक संस्थाएँ हैं, जो हिंदी साहित्य की विविध परीक्षाएँ आयोजित कर सभी के लिए हिंदी शिक्षा सहज सुलभ कराती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय— अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से केंद्रीय सरकार ने सरकारी वित्तीय सहायता प्रदान कर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा को अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के रूप में 1993 में स्वीकृति प्रदान कर दी है। यह हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त सामग्री निर्माण एवं उच्च शोध योजनाओं की क्रियान्विति भी करेगा।

राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रयोग में वृद्धि करने में लिए विभिन्न अधिनियम (1963) और नियम (1976) तो बनाये गये हैं, परंतु इनके अनुपालन की वास्तविक स्थिति क्या है। इसका अन्दाजा राजभाषा विभाग द्वारा 1995-96 के लिए निर्धारित लक्ष्य के आधार पर लगाया जा सकता है—

सरकारी कार्यालयों और व्यक्तियों के साथ पत्राचार में हिंदी के प्रयोग का लक्ष्य 'क' क्षेत्र से 'क' और 'ख' क्षेत्रों के साथ 100% है, जबकि 'ग' क्षेत्र के साथ मात्र 50% ही है। 'ख' क्षेत्र से 'क' और 'ख' के साथ 85% है, जबकि 'ग' क्षेत्र के साथ 50% ही है। 'ग' क्षेत्र से 'क', 'ख' और 'ग' के साथ मात्र 47% ही है। देवनागरी के टाइपराइटरों के प्रयोग का लक्ष्य 'क' क्षेत्र में 90%, 'ख' क्षेत्र में 66.2% और 'ग' क्षेत्र में 25% ही है।

उक्त अपेक्षित लक्ष्य के आधार पर कहा जा सकता है कि 'ग' क्षेत्र अर्थात् गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब को छोड़कर शेष सभी अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति संतोषजनक नहीं है, जबकि इतने वर्षों में यह 50% से अधिक ही होनी चाहिए थी।

सरकारी परिव्यय के आँकड़ों के आधार पर भी सरकार की हिंदी के विकास से संबंधित विभिन्न वृहद् योजनाओं की क्रियान्विति के प्रति रुचि और सदेच्छा को देखा जा सकता है। सरकार अष्टम् अनुसूची में सम्मिलित अंग्रेजी सहित सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की अपेक्षा हिंदी के उन्नयन एवं विकास पर विशेष ध्यान दे रही है। इसका अंदाजा पिछले कुछ वर्षों के सरकारी परिव्यय के आधार पर लगाया जा सकता है। और आधुनिक भारतीय भाषाओं पर सरकारी परिव्यय के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के सरकारी परिव्यय (नमूने के तौर पर) को देखा जा सकता है—

सरकारी परिव्यय

(रु. करोड़ों में)

भाषा	87—88		88—89		89—90		90—91	
	अनु. ब.	परिव्यय	अनु. ब.	परिव्यय	अनु. ब.	परिव्यय	अनु. ब.	परिव्यय
हिंदी	5.74	4.47	6.22	6.47	5.43	4.72	5.6	5.43
संस्कृत	3.28	2.82	3.28	2.82	3.22	2.83	3.22	3.15
आधुनिक भारतीय भाषाएँ	4.15	1.67	3.62	2.55	3.08	2.8	3.73	2.23

वर्ष 1990-91 के दौरान हिंदी के संवर्द्धनार्थ विभिन्न योजनाओं की क्रियान्विति के लिए सरकारी परिव्यय की स्थिति निम्नलिखित है—

संस्था \ योजना	योजनागत परिव्यय	गैर योजनागत परिव्यय (रु. लाखों में)
1. हिंदी की स्वैच्छिक संस्थाएँ	110.00	50.00
2. दक्षिणी भारत प्रचार सभा	40.00	50.00
3. विदेशों में हिंदी प्रसार	20.00	——
4. हिंदी निदेशालय	60.00	111.25
5. हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा	50.00	173.25
6. वै. एवं तकनीकी शब्दावली आयोग	15.00	45.50
7. हिंदी शिक्षक नियुक्त	240.00	——
8. अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्व.	05.00	——
9. हिंदी छात्रवृत्ति	34.10	——
10. प्रकाशन हेतु हिंदी की स्वैच्छिक संस्थाओं को सहायता	20.00	——
कुल	594.10	430.00=1024.10

इससे यह तो पता चलता है कि सरकार अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिंदी पर अधिक ध्यान देती है पर क्या यह परिव्यय राजभाषा के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए पर्याप्त है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी भाषा नीति

राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी भाषा-नीति के आकलन के उपरान्त अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकार की हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए क्या नीति है, क्या योजनाएँ हैं, किस प्रकार उनकी क्रियान्विति हो रही है और सरकार उनके क्रियान्वयन में कहाँ तक सक्षम एवं सफल है— इन कुछ जिज्ञासाओं के आलोक में हिंदी से संबंधित सरकारी नीति और योजनाओं की यहाँ चर्चा की जा रही है—

1. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के तत्वाधान में हिंदी प्राध्यापकों को हिंदी पढ़ाने के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थानों में प्रतिनियुक्त किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत अब तक बेल्जियम, अमेरिका, बुल्गारिया, चीन, पोलैंड, रूस, दक्षिणी कोरिया, हंगरी, इटली, फिनलैंड, तुर्की, रोमानिया, चैक आदि देशों में हिंदी प्राध्यापकों को प्रतिनियुक्त किया जा चुका है।

2. आप्रवासी बहुल देशों (मारिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गयाना, फ़िजी आदि) में चार प्रोफेसरों को 'विदेशों में हिंदी की प्रचार-प्रसार योजना' के अन्तर्गत प्रतिनियुक्त किया जाता है और वहाँ स्थित भारतीय मिशनों के माध्यम से हिंदी पाठ्य-पुस्तकों और देवनागरी के टाइपराइटरों की आपूर्ति भी की जाती है।

3. भारत में हिंदी-अध्ययन के लिए विभिन्न देशों के विदेशों छात्रों के लिए प्रतिवर्ष 50 छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। इनमें से 40 छात्रवृत्ति प्राप्त विदेशी छात्र केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में अध्ययन करते हैं, शेष 10 अन्य विश्वविद्यालयों में।

इन प्रचार-प्रसार योजनाओं के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक प्रयोजनों हेतु सरकार की भाषा-नीति क्या रही है और इसके लिए सरकार द्वारा समय-समय पर लिये गये निर्णय क्या हैं। इन सब बातों की जानकारी के लिए संविधान निर्माण के समय लिये गये निर्णयों के क्रम को देखना होगा।

3 दिसम्बर, 1955 में जारी किये गये राष्ट्रपति का एक आदेश अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रयोग से संबंधित था, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय संधियों एवं करारों के पाठ अंग्रेज़ी, हिंदी और करार करने वाले देश की भाषा में तैयार किये जाने की बात कही गयी थी। अन्य देशों की सरकारों और उनके राजदूतों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से पत्रव्यवहार तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में भारतीय प्रतिनिधियों के नाम जारी किये जाने वाले औपचारिक दस्तावेज़ों आदि में अंग्रेज़ी के अतिरिक्त हिंदी के प्रयोग किये जाने की भी अनुमति दी गयी थी। अन्य देशों के राजदूतावासों के प्रोटोकोल संबंधी परिपत्र अब अंग्रेज़ी के अतिरिक्त हिंदी में भी प्रस्तुत होने लगे हैं।

दिसम्बर, 1970 में लिये गये एक निर्णय के अनुसार भारत में हस्ताक्षर की जाने वाली सभी अंतर्राष्ट्रीय संधियों और करारों के लिए अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए, किंतु कुछ इस प्रकार के दस्तावेज़ों में हिंदी का प्रयोग न करने की छूट दी गयी थी—

(क) विदेशों में की गयी संधियाँ और करार,

(ख) तत्काल प्रकार की संधियाँ और करार जिनका समयाभाव के कारण हिंदी अनुवाद तैयार करना सम्भव न हो।

(ग) बहुपक्षीय कन्वेंशन और।

(घ) रक्षामंत्रालय द्वारा निष्पादित संधियाँ और करार।

तथापि उपर्युक्त (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित कागज़ों का हिंदी अनुवाद तैयार किया जाता है और अभिलेख के लिए रखा जाता है।

राजभाषा विभाग द्वारा 27 जुलाई, 1979 को जारी एक आदेश में अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में देश की राजभाषा को उचित स्थान देने के लिए इस संबंध में छपने वाले साहित्य, परिपत्रों, बैनरों, बैजों आदि में हिंदी का प्रयोग किये जाने की बात कही गयी थी। इन आदेशों का अनुपालन आंशिक रूप में ही दिखायी देता है।

28 जनवरी, 1986 के राजभाषा विभाग के एक कार्यालय ज्ञापन में विभिन्न मंत्रालयों से विदेश जाने वाले अधिकारियों और शिष्टमंडलों के सदस्यों को हिंदी में बातचीत करने संबंधी आदेश देने की हिदायत दी गयी थी।

हिंदी को राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने की माँग कई स्तरों से काफी समय से उठ रही है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के एक संगठन 'यूनेस्को' में हिंदी अन्य सात भाषाओं के साथ प्रयोग की जा रही है। यूनेस्को का संविधान एवं अन्य निर्णयों संबंधी कागज़ों का हिंदी अनुवाद भी किया जाता है। यूनेस्को के एक विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत हिंदी की साहित्यिक कृतियों के अनुवाद के अतिरिक्त शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रकाशनों का भी हिंदी में अनुवाद किया जाता है। यूनेस्को की मासिक पत्रिका 'यूनेस्को कोरियर' का हिंदी संस्करण भी प्रकाशित होता है।

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी गुरुतर योजनाओं के क्रियान्वयन के प्रयासों के प्रति सरकार की गम्भीरता इसी से झलकती है कि एक ऐसी भाषा, जो मृत नहीं है और न ही उसके प्रयोक्ताओं की संख्या अल्प है, बल्कि वह करोड़ों की संचारिणी है, को संस्कारित और समृद्धि होने के लिए 50 वर्ष भी अपर्याप्त हैं। इसके पीछे छिपे अनेक कारण हो सकते हैं, जो इसकी गति की गत्यात्मकता के प्रतिरोधक हैं। आज आवश्यकता है इन प्रतिरोधकों का अवरोधक बन इसकी मंद-मंथर गति को गुरुतर प्रयासों से द्रुत कर इसके विश्व-पटल पर छा जाने के स्वप्न को साकार करने की।

संदर्भिका

1. कृष्ण कुमार श्रीवास्तव : राजभाषा हिंदी की नीति, विश्व हिंदी (तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित), 1983, नई दिल्ली
2. जय नारायण तिवारी : राजाभाषा के रूप में हिंदी का विकास, उसका महत्व और उसके लिए प्रयास की दिशाएँ, विश्व हिंदी (तृ. विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित), 1983, नई दिल्ली
3. जीवन नायक : केंद्रीय हिंदी निदेशालय— गतिविधियों का मूल्यांकन, स्मारिका-द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन
4. देवेन्द्र चरण मिश्र : भारत की राजभाषा और उसका कार्यान्वयन, विश्व हिंदी (तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित), 1983, नई दिल्ली
5. वीना माथुर : भाषाओं के विकास में सरकारी परिव्यय, गवेषणा-61-62, 1993, कें. हिं. संस्थान, आगरा
6. हरिबाबू कंसल : विश्व में हिंदी, खंड-I, 1995, नई दिल्ली
7. शेर बहादुर झा : संविधान में हिंदी, 1984, हिंदी का सामाजिक संदर्भ, सं. र. ना. श्रीवास्तव एवं रमानाथ सहाय, के. हिं. सं., आगरा

विदेशियों की हिन्दी सीखने की समस्याएँ

(केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संदर्भ में)

अरविंद कुलश्रेष्ठ

स्वतंत्रता आंदोलन में ही हिंदी को एकता की सक्षम वाहिका के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। इस समय हिंदी ने ऐक्य और स्वातंत्र्य भावना की सुदृढ़ कड़ी बनकर स्वतंत्रता आंदोलन को उचित गति प्रदान की थी जिसके कारण उसे राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा मिली। राष्ट्रभाषा हिंदी ने जन आंदोलन को ऐसी जीवन शक्ति प्रदान की कि स्वतंत्रता आंदोलन अधिक सुदृढ़ हुआ और उसी के फलस्वरूप मिल पायी भारत को स्वतंत्रता। आजादी प्राप्ति के बाद राष्ट्र के समक्ष सरकारी काम काज के लिए ''अपनी भाषा'' का प्रश्न सामने आया। संविधान निर्माताओं के गंभीर चिंतन मंथन के बाद यह निर्णय लिया गया कि एकता की सक्षम सुदृढ़ वाहिका हिंदी ही राष्ट्र की अपेक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ है। अत: इसे ही ''राजभाषा'' की प्रतिष्ठा दी गयी। संविधान में यह भी प्रावधान किया गया है कि नियत समय में हिंदी भाषा में राष्ट्रीय अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने का प्रयत्न किया जाए। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं ने हिंदी को विभिन्न व्यवहार क्षेत्र में सक्षम बनाने के लिए अलग-अलग प्रयास किये। और आज यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी ने भारत में नहीं वरन् अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में अपना व्यवहार क्षेत्र बढ़ाया है। हिंदी ने राजभाषा, संपर्क भाषा, ज्ञान-भाषा के रूप में अपनी अलग पहचान बनायी है। हिंदी का विदेशों में भी व्यवहार क्षेत्र कई दृष्टियों से बढ़ा है। एक ओर मारीशस, सूरीनाम, त्रिनीदाद, गयाना, फिजी और अन्य देशों में रह रहे भारतीय मूल के लोग अपने पूर्व संबंधों को दृढ़ करने एवं अपनी मूल संस्कृति, दर्शन, संगीत, योग का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्ति के लिये हिंदी से जुड़े हैं दूसरी ओर पाश्चात्य जगत के लोग भौतिकवाद से ऊबकर आध्यात्म, संगीत योग, दर्शन और ज्योतिष आदि की ज्ञान प्राप्ति तथा कुछ लोग राजनैतिक संपर्क और जीविका उपार्जन हेतु हिंदी सीखने के लिए प्रेरित हुए हैं। भारत सरकार भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न योजनाओं और माध्यमों द्वारा देश विदेश में प्रयत्न कर रही है। इनमें से एक है ''विदेशों में हिंदी प्रसार योजना'' इस योजना के संचालन का कार्यभार भारत-सरकार ने ''केंद्रीय हिंदी संस्थान'', आगरा को सौंपा है। इस योजना के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा स्वीकृत देशों के 50 विदेशी छात्र/छात्राओं का चयन किया जाता है। उन्हें संस्थान से 1200/- रुपया प्रतिमास की छात्रवृत्ति, और आने-जाने का किराया दिया जाता है। आवास

व्यवस्था नि:शुल्क है, जहाँ ये छात्र/छात्राएँ मिल-जुलकर रहते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् वास्तव में यहाँ दिखाई पड़ता है।

सर्वप्रथम यह देखा जाए कि विदेशी छात्र-छात्राओं को अपने देश में रहकर हिंदी सीखने और भारत में आकर हिंदी अध्ययन करने में क्या अंतर हो सकता है। भाषा एक व्यवहार है। अपने देश में हिंदी सीखने के लिए कक्षा अध्यापन पुस्तक और टेप आदि के माध्यम से करते हैं। अपने देश में भाषा अभ्यास का समय बहुत कम मिलता है। अत: मौखिक व्यवहार में वे संकोच करते हैं। कई बार सक्षम भाषा ज्ञान होने पर भी वे मौखिक व्यवहार में संकोच करते हैं। अपने देश में उनका अध्ययन कोशीय आधार पर विशेष रूप से आधारित होता है जो संस्कृति से जुड़ नहीं पाता। इसी कारण भारत में वास्तविक भाषा व्यवहार, सांस्कृतिक और भाषायी क्षेत्र से जुड़कर भारत में वे अपना अध्ययन विशेष रूप से कर सकते हैं। यहाँ पर भाषायी एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भरपूर भाषा व्यवहार का पूर्ण अवसर मिल जाता है। इससे भाषायी क्षमता का विकास होता है। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने विदेशों में हिंदी प्रसार योजना प्रारंभ की है।

वर्ष 98-99 में संस्थान में 19 देशों के 45 विद्यार्थी अध्ययनरत रहे। यद्यपि ये छात्र स्वयं ही संस्थान में हिंदी सीखने आते हैं फिर भी इनकी अपनी समस्याएँ होती हैं जिनका विश्लेषण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है। सुविधा की दृष्टि से इन्हें तीन वर्गों में रखा गया है—

(1) मनोवैज्ञानिक समस्या

यद्यपि ये छात्र/छात्राएँ अपनी अभिप्रेरणा से भारत में रहकर हिंदी सीखने के लिए आते हैं। यहाँ आने पर उन्हें देश और वातावरण में बहुत परिवर्तन मिलता है। 80% छात्र/छात्राओं में हिंदी ज्ञान की बहुत तीव्र ललक रहती है। वे यहाँ आकर रुचिपूर्वक हिंदी ज्ञान प्राप्त करते हैं। प्रवेश के समय कुछ छात्र हिंदी बिल्कुल नही समझ पाते। इनमें हिंदी के प्रति इतनी ललक रहती है कि वे अपनी रुचि, लगन और निरन्तर अभ्यास से तीन महीने में ही हिंदी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं और सामान्य हिंदी बोलने लगते हैं। प्रत्येक छात्र में हिंदी सीखने की अभिवृत्ति है, इसके कई कारण है। कुछ लोग भारतीय संस्कृति, इतिहास, दर्शन, ज्योतिष, योग आदि क्षेत्रों में हिंदी के माध्यम से अपना ज्ञान अर्जित करना चाहते हैं। वे मानते हैं कि अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाने का माध्यम हिंदी ही है। कुछ छात्र/छात्राओं का प्रेम भारतीय संगीत और भारतीय नृत्य से रहता है। संस्थान हिंदी सिखाने के साथ-साथ उनकी संगीत/नृत्य को सीखने की भी अपनी क्षमता के अनुसार प्रबंध करने का प्रयास करना है।

कुछ छात्र/छात्राओं का उद्देश्य केवल भारत भ्रमण से रहता है। उनकी अभिरुचि केवल भारत में विभिन्न स्थानों के दर्शन में रहने के कारण वे लापरवाह दिखायी पड़ते हैं। फिर भी कुल मिलाकर देखा जाए तो ये छात्र हिंदी सीखने के लिए अधिक जागरूक दिखायी देते हैं।

उपर्युक्त योजना के अंतर्गत 1995-96 शैक्षणिक सत्र में 20 देशों के 31 छात्रों ने प्रवेश लिया। यह सत्र अगस्त, 95 से 30 अप्रैल, 1996 तक चलेगा। इन सभी छात्रों का उनकी भाषाई दक्षता/क्षमता स्तर के आधार पर कक्षा निर्धारण के लिए पूर्व परीक्षण किया जाता है। इस पूर्व परीक्षण के आधार पर विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों/छात्राओं की स्थिति इस प्रकार रही—

हिंदी भाषा दक्षता प्रमाण पत्र	कोड सं. 100	17 छात्र
हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा	कोड सं. 200	10 छात्र
हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा	कोड सं. 300	09 छात्र
हिंदी भाषिक अनुप्रयोग दक्षता डिप्लोमा	कोड सं. 400	09 छात्र

विदेशी छात्रों का देशानुसार विवरण इस प्रकार है—

1. अर्जेन्टीना : 01, 2. हंगरी : 02, 3. जापान : 03, 4. उज़बेकिस्तान : 03, 5. त्रिनीदाद : 03, 6. लिथुआनिया : 03, 7. इटली : 01, 8. पोलैंड : 03, 9. दक्षिण कोरिया : 01, 10. इन्डोनेशिया : 02, 11. मंगोलिया : 03, 12. श्रीलंका : 05, 13. तुर्कमेनिस्तान : 02, 14. थाईलैंड : 01, 15. गयाना : 03, 16. सूरीनाम : 03, 17. कज़ाख़स्थान : 02, 18. ताजिकिस्तान: 02, 19. रोमानिया : 02

विदेशी भाषा के रूप में स्तरानुकूल हिंदी का शिक्षण किया जा रहा है। सत्र के अंत में उनकी परीक्षा ली जायेगी। इनकी उपलब्धि का परिणाम सत्र के अंत में उपलब्ध कराया जायेगा। इन विदेशी छात्रों के आवास की व्यवस्था विदेशी छात्रावास में की गयी।

इन विदेशी छात्रों ने शैक्षणिक कार्यों के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी उत्साह से भाग लिया है। भारतीय संस्कृति से व्यक्तिगत साक्षात्कार कराने के लिए इन्हें विभिन्न सांस्कृतिक धार्मिक, साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का परिभ्रमण भी कराया गया है।

संस्थान के दिल्ली केंद्र और आगरा में विगत 29 वर्षों से अब तक लगभग 1727 विदेशी छात्र-छात्राएँ हिंदी सीख चुके हैं। अद्यतन जानकारी के लिए आधार लेख (प्रो. महावीर सरन जैन) का उत्तरार्द्ध देखें।

संस्थान के विदेशी पाठ्यक्रम के

छात्रों की प्रतिक्रियाएँ

(हिन्दी के संदर्भ में)

मोरिशस में हिन्दी

कृष्ण खेमराज रामनोहर

मैं मोरिशस के शिक्षा मंत्रालय के उच्चतर माध्यमिक पाठशाला में हिंदी शिक्षा अधिकारी हूँ। भारत सरकार की ओर से केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में हिंदी पढ़ने आया हूँ। यहाँ से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् मैं अपने देश वापस लौटूँगा तो यहाँ का अर्जित ज्ञान मेरे अध्यापन कार्य में अधिक लाभप्रद होगा। इसी हेतु मुझे पाठ्यक्रम 400 में प्रवेश मिला। मैं यहाँ अक्टूबर सन् 1995 ई. को आया और अप्रैल 1996 ई. में परीक्षा के पश्चात् अपने देश मोरिशस लौट जाऊँगा।

हिंदी केवल भारत की भाषा नहीं है। यह तो विश्व के सभी हिन्दुओं तथा एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित भाषा मानी जाती है। अन्य भाषाओं की तरह इसने भी एक महत्वपूर्ण जन-सम्पर्क की भाषा का रूप ले लिया है। भारत की तरह मोरिशस में भी सर्वाधिक भारतीय मूल के निवासी हैं। वहाँ 53% जनता हिंदू है। वे भी अपने धर्म और संस्कृति को जीवित रखने के लिए लगभग वे सभी त्यौहार मनाते हैं और व्रत रखते हैं जो भारतीय हिन्दू मनाते हैं। वस्तुत: पूजा-पाठ, मंत्रोच्चारण, भजन-कीर्तन आदि भी होता है।

हिंदी भाषा के प्रयोग से इन भीमकार्यों में सफलता प्राप्त होती है उतनी विरले ही किसी अन्य भाषा के प्रयोग से मिलती हो। इसी कारण हिंदी सीखने से इस भाषा में लिखे ग्रन्थ तथा महाकाव्यों, गद्य एवं पद्य साहित्य का अध्ययन बड़ी सुगमता से हो जाता है। आजकल हमारे देश में प्राथमिक स्कूलों में, माध्यमिक स्कूलों में तथा विश्वविद्यालय में भी हिंदी अन्य विषयों की तरह एक प्रमुख विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। इसके अतिरिक्त सायंकालिक पाठशालाओं में भी हिंदी की पढ़ाई आजकल बड़ी जोरों से चल रही है। बच्चों में यह भाषा सीखने की रुचि बनी रहती है। दूसरी ओर रेडियो, टेलीविज़न तथा फ़िल्मों के प्रभाव से हिन्दुओं के अधरों पर हिंदी फ़िल्मों के गीत तथा रामायण की चौपाइयाँ, श्लोक, भजन-कीर्तन आदि लगे रहते हैं। यही कारण है कि मैं हिंदी सीखकर अपने देश में इस भाषा का प्रचार-प्रसार करना चाहता हूँ।

जब अंग्रेज़ लोग मोरिशस में भारत से मज़दूर ले गये तो उन भारतीय आप्रवासी लोगों ने "बैठका" का निर्माण किया। जहाँ वे दिनभर कठोर परिश्रम करने के पश्चात् सायंकाल में जुटते थे और रामायण का पाठ तथा हनुमान चालीसा का पाठ करते थे। अधिक पढ़े हुए लोग दूसरों को हिंदी भी पढ़ाते थे। धीरे-धीरे यही "बैठका" सायंकालिक हिंदी पाठशाला का रूप ले लिया। बाद में श्री मणिलाल डाक्टर के सहयोग से सरकारी पाठशालाओं में भारतीय

आप्रवासियों के बच्चों को सप्ताह में एक घण्टा हिंदी पढ़ाई जाने लगी। धीरे-धीरे अन्य विषयों की तरह रोज 35 से 55 मिनटों तक पढ़ाई की जाने लगी है। इस तरह प्राथमिक पाठशाला से होते हुए आज हिंदी माध्यमिक पाठशालाओं में तथा विश्वविद्यालय तक पढ़ाई जाती है।

मोरिशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी प्रचारिणी सभा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस संस्था की ओर से हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (हिंदी विश्वविद्यालय) से परिचय-प्रथमा-मध्यमा तथा साहित्य रत्न की परीक्षाओं का संचालन होता है। आज हमारे देश में जितने भी हिंदी अध्यापक हुए हैं, सभी ने इसी संस्था द्वारा आयोजित हिंदी की परीक्षाएँ ली हैं। हिंदी अध्यापकों को प्रशिक्षण महाविद्यालय तथा महात्मा गाँधी संस्थान की ओर से प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

हिंदी की पढ़ाई में रुचि रखने वाले बहुत से लोग हैं। आजकल भारतीय रचनाओं के साथ-साथ मोरिशस की रचनाएँ भी पर्याप्त लोकप्रिय होने लगी हैं। श्री अभिमन्यु अनत, श्री रामदेव धुरन्दर, श्री प्रह्लाद रामशरण, श्रीमती भानुमती नागदान आदि के उपन्यास, कहानियाँ और कविताएँ प्रसिद्ध हैं। स्वर्गीय प्रोफेसर-पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी ने अनेक फ्रेंच तथा अंग्रेज़ी भाषा की रचनाओं का हिंदी अनुवाद किया है जिसमें ''पटेल और वर्जिनी'' बहुत ही लोकप्रिय हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए मोरिशस के रेडियो एवं दूरदर्शन केन्द्र द्वारा हिंदी फ़िल्मों के गीत, भजन, श्लोक तथा भारत से प्राप्त हिंदी धारावाहिक, फीचर फ़िल्में, नाटक आदि प्रसारित किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय दूतावास का भी बहुत बड़ा सहयोग मिलता है। वहाँ से अन्य पत्रिकाएँ— जैसे, बाल-भारती, धर्मयुग, इण्डिया टुडे, आदि प्राप्त होती रहती है। यहाँ तक कि भारतीय हिंदी समाचार-पत्र पढ़ने की सुविधा भी मिलती है। हिंदी पढ़ने के लिए एक ओर तो सभी पाठशालाओं में पुस्तकालय हैं, जहाँ अंग्रेज़ी तथा फ्रेंच के अतिरिक्त हिंदी की तरह-तरह की पुस्तकें मिलती हैं। दूसरी ओर भारतीय दूतावास का भी एक बड़ा पुस्तकालय है, जहाँ सभी लोग हिंदी की पुस्तक लेकर पढ़ सकते हैं। हिंदी के अलावा हमारे देश में उर्दू, मराठी, तमिल, तेलुगु पढ़ाई जाती है, लेकिन सबसे अधिक मात्रा में हिंदी की पढ़ाई सुचारु रूप से पढ़ाई जाती है।

आनंददेव बली

आगरा में स्थित केंद्रीय हिंदी संस्थान आज संसार भर में अपना नाम बना चुका है। अन्य शिक्षण संस्थाओं की अपेक्षा यह विश्व प्रसिद्ध केन्द्र शिक्षक प्रशिक्षण के कार्यभार के साथ-साथ विदेशी पाठ्यक्रम का भी सुचारु रूप से संचालन करता है जहाँ पर विदेशी छात्र-छात्राओं को विविध स्तरों पर हिंदी का नियमपूर्वक प्रशिक्षण दिया जाता है।

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के संरक्षण में संचालित यह संस्थान विदेश में हिंदी भाषा, कला एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु प्रायोगिक रूप में एक सुगठित पाठ्यक्रम के आधार पर अपना कार्य सम्पादन करता है। इसमें पठन-पाठन के साथ-साथ अभिव्यक्ति

कौशलों एवं देशाटन तथा प्रतियोगिताओं के आयोजन का भी प्रावधान है। समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन को भी पाठ्य सहगामी प्रक्रिया के रूप में आकलित किया गया है जिससे विदेशियों का शैक्षिणिक आवास काल अधिकाधिक मनोरंजक हो सके।

हमारा प्रयोजन केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी तथा उसका विशाल साहित्य सीखकर अपने देश में उसका समुचित प्रयोग एवं विस्तार करना है। अक्टूबर सन् 1995 से मई सन् 1996 तक हमारे यहाँ ठहरने और प्रशिक्षण पाने का अतिस्वस्थ आयोजन हुआ है। इस बीच हमें चार सौ की द्विसत्रीय अवधि में डिप्लोमा का कोर्स पूरा करना है।

हमारा हिंदी सीखने का उद्देश्य बहुमुखी है। ज्ञान की बहती गंगा से अधिक से अधिक संबल समेटना ही हमारा एकमात्र लक्ष्य भी है। शिक्षा अधिकारी होने के नाते केंद्रीय हिंदी संस्थान में प्रवेश पाना हमारे लिए एकमात्र संयोग की बात नहीं। प्रवेश की पात्रता प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता और विशेष योग्यता की जाँच विविध आयामों पर की जाती है। तद्-परिणामों के आधार पर प्रस्तावित नामों में से दो अधिकारियों का यथोचित चुनाव संस्थानीय अधिकारियों द्वारा होता है। इस स्वच्छन्द प्रक्रिया की परिणति में भारतीय उच्चायोग और शिक्षा मन्त्रालय छात्रवृत्ति की स्वीकृति प्रदान करते हैं और शिक्षा-प्रशिक्षा यात्रा समारम्भ होती है। अत: हमारा यहाँ पहुँचना पूर्णरूप से प्रयोजनमूलक या सोद्देश्य है।

अनन्तर संस्थान में बहुआयामी शिक्षा पाकर एवं शिक्षण प्रणालियों से अवगत होकर हमें अपने देश लौटना है और प्राप्त शैक्षणिक पाथेय से वहाँ की शिक्षण पद्धतियों में एक मील का पत्थर बनना है। आधुनिक शैक्षणिक तकनीकी का यथायोग्य प्रयोग करना और करवाना है। प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चमाध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण प्रकार्य को एक अधुनातन वैज्ञानिक प्रारूप प्रदान करना है। पठन पाठन की प्रक्रिया का नये सिरे से उन्नयन करते हुए नवीन दिशाओं का यथोचित निर्देश भी करना है और इसके लिए हम प्रतिबद्ध भी रहे हैं।

मोरिशस में हिंदी की स्थिति बहुत अच्छी कही जा सकती है। सायंकालीन बैटकों से लेकर शासकीय प्राथमिक, माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयीन स्तर तक हिंदी का शिक्षण नियमित एवं सुचारु रूप से नित्य प्रति सम्पन्न होता है। भारतीय मूल के लोगों का हर सामाजिक, सांस्कृतिक व मांगलिक कार्य भी पर्याप्त समृद्ध है और वहाँ के कई हिंदी लेखक तथा साहित्यकार अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध हो चुके हैं। मोरिशसीय रचनाओं का अंग्रेज़ी, फ्रेंच एवं रूसी भाषा में अनुवाद भी हो चुका है। इसी नवोदित राष्ट्र में दो बार विश्व हिंदी सम्मेलन भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुके हैं।

आज भी देश के बहुतेरे ग्रामों में भोजपुरी बोली जाती है। पठित वर्ग में बेझिझक हिंदी बोली और सुनी जाती है। बहुजातीय, बहुभाषीय, एवं बहुसांस्कृतीय होने के कारण रेडियो पर चार चैनल चलते हैं जिनमें समानान्तर रूप से दो पाश्चात्य भाषाओं के और दो भारतीय भाषाओं के कार्यक्रम एवं गीत संगीत प्रसारित होते हैं। दूरदर्शन पर भी समानान्तर रूप से हिंदी और

अन्य भारतीय भाषाओं के कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। सप्ताह भर में छह-सात भारतीय भाषाओं की फ़िल्में प्रदर्शित की जाती हैं।

हिंदी के कई लघु और वृहद्काय पुस्तकालय हैं जहाँ पर पठन के साथ-साथ शोध की सामग्रियाँ भी उपलब्ध हैं। हर शासकीय विद्यालय का भी अपना हिंदी विभागीय पुस्तकालय है।

भौतिक सुख-सुविधा से भरपूर लघुकाय मोरिशस द्वीप में इतना कुछ होते भी नगण्य सा लगता है क्योंकि अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाषा की तुलना में हिंदी को ऊँचाई की कई सीढ़ियाँ तय करनी हैं जो इतना आसान नहीं।

पर्व उत्सवों के दिनों में तो समाँ पूरे देश में बँध जाता है। हिन्दुओं के शादी-ब्याह तथा अन्य धार्मिक कृत्य हिंदी के माध्यम से पूरे किये जाते हैं, पर व्यावहारिकता की दृष्टि से यह मोरिशसीय आम जुबान से अभी भी दूर हैं।

मोरिशस की माटी पर हिंदी भाषा के पौधे का जड़ पकड़ कर फलना-फूलना कोई आकस्मिक संदर्भ नहीं। पौने दो शताब्दी पूर्व वहाँ पर पधारे गिरमिटिए मजदूरों और कामगरों की यह अमर आस्था का धैर्यपूर्वक संचित प्रतिफल है जो अमरबेल सी फैल गई है। बड़े-बड़े तूफ़ान जिस प्रकार खेतिहरों को क्षति पहुँचाते रहते हैं, और उस पर उनका कोई वश नहीं चलता, उसी तरह पिछले साल, अक्टूबर के महीने में हिंदी जगत में भी एक भारी भूकम्प आया। उच्च न्यायालय के फैसले ने इसे एक दशक पीछे ढकेल दिया। शासकीय शालाओं में प्रवेश पाने के वैकल्पिक विषय में आम मत से प्रस्तावित हिंदी भाषा संघर्ष क्षेत्र में हार गई।

मोरिशस में हिंदी की यह महान त्रासदी हिंदी वालों के चिन्तन का एक मुद्दा बन सके— यही लघु भारत की महान भारत से विनम्र अपील है।

मंगोलिया

नेरगूई पुरेवहू

मेरा नाम नेरगूई पुरेवहू है। मैं मंगोलिया से भारत में हिंदी भाषा सीखने के लिए आयी। मैं 13-09-1995 से 01-05-1996 तक भारत में रहूँगी। मैं 200 पाठ्यक्रम में हिंदी पढ़ रही हूँ। मैं भारत का इतिहास, संस्कृति जानना चाहती हूँ। भारत के बारे में अच्छी तरह से अपने देश के लोगों को परिचय कराना चाहती हूँ।

फिल्मों में और दूतावास में कभी-कभी मैं हिंदी सुनती हूँ। मेरे देश में अनुवाद का कार्य नहीं होता। मंगोलिया में हिंदी के अलावा संस्कृत भाषा पढ़ाई जाती है।

सोमया सुरेजब

मैं सोमया सुरेज़ब मंगोलिया से आई हूँ। आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान में पढ़ने के लिए आई हूँ। भारत में सितम्बर 1995 से मई 1996 तक रहूँगी। दो सौ पाठ्यक्रम में हिंदी पढ़

रही हूँ। मेरी हिंदी सीखने का उद्देश्य यह है कि मैं भारत पर अनुसंधान करना चाहती हूँ। भारतीय संस्कृति केंद्र में हिंदी पढ़ने-पढ़ाने की व्यवस्था है। अनुवाद का कार्य है। फिल्मों और दूतावास में ही हिंदी सुनने का अवसर मिलता है। मंगोलिया में हिंदी के अलावा संस्कृत भाषा भी पढ़ाई जाती है।

कज़ाख़स्तान

गुलनारा

मेरा नाम गुलनारा है। मैं कज़ाख़स्तान से आयी हूँ। मैं भारत में हिंदी सीखने और भारत के बारे में जानकारी के लिए आयी हूँ। मैं भारत में तीन महीने से रहती हूँ। और तीन महीना बाकी हैं। मैं सौचती हूँ मेरे लिए सात महीना काफी नहीं हैं। इसलिए मैं अपनी पढ़ाई यहीं जारी रखना चाहती हूँ।

मैं पाठ्यक्रम 100 में हिंदी पढ़ती हूँ। मैं पत्रकार हूँ और मेरा काम कज़ाख लोगों के लिए भारत के बारे में समाचार और जानकारी देना है। इसके अलावा भारत की संस्कृति और इतिहास को कज़ाख भाषा में अनूदित करना चाहती हूँ। और भारतीय लोगों को भी कज़ाख़स्तान के इतिहास और संस्कृति से परिचय कराना चाहती हूँ। इसलिए हिंदी सीख रही हूँ। हमारे देश के लोगों में रुचि हिंदी भाषा को कज़ाख लोगों की रुची बहुत बड़ी है। लेकिन हिंदी सीखने के लिए न कोई पुस्तक हैं, न हिंदी में बोलने वाला है। सिर्फ भारतीय दूतावास में हिंदी सुनाई पड़ती है।

मैंने हिंदी भाषा के अलावा थोड़ा-सा उर्दू भाषा भी सीखने की कोशिश की थी।

उजबेकिस्तान

इनामुद्दीन

मेरा नाम इनामुद्दीन है। मैं उजबेकिस्तान से आया हूँ। मैं भारत में हिंदी भाषा सीखने के लिए भारत के आजकल और भविष्य के बारे में जानकारी लेने के लिए आया हूँ।

भारत में मैं 31 सितम्बर को आया और मुझे मई में जाना पड़ेगा। अभी मैं पाठ्यक्रम 300 में पढ़ता हूँ। अब उजबेकिस्तान और भारत के बीच में बहुत से समझौते हो रहे हैं। ऐसे समझौतों में से एक समझौता भारत के दूरदर्शन टी. वी. कम्पनी में अच्छे अनुवादक बहुत कम हैं। और अनुवादकों के अभ्यास भी काफी नहीं है। मुझे इस टी. वी. में काम करना है इसीलिए भी हिंदी अच्छी तरह सीखना जरूरी है।

उजबेकिस्तान के अनेक स्कूलों में और कई इंस्टीट्यूट में हिंदी और उर्दू सिखाई जाती है। भारतीय अनेक लेखकों की रचनाएँ उजबेक भाषा में अनुवादकों के द्वारा अनुवाद किया गया है। इनमें से वृन्दावन लाल वर्मा की "झांसी की रानी", अहमद अब्बास की "भारत का बेटा", कृष्ण चन्द के "उलटा वृक्ष" प्रेमचन्द का "गोदान" और आदि हैं।

इसके अलावा भारत की प्रसिद्ध रचनाएँ महाभारत और रामायण का भी अनुवाद किया गया है। इनका अनुवादक उजबेकिस्तान की सबसे अच्छे हिंदी अनुवादकों में से एक, आमीर फ़ायजूल्ला हैं। उजबेकिस्तान हमेशा भारत को अपना दोस्त समझता है। इसलिए सब समाचार जो भारत में होते हैं उजबेक लोग बड़े ध्यान से सुनते रहते हैं। यह समाचार हम टी. वी. और आकाशवाणी से सुन सकते हैं।

भारत की संस्कृति और इतिहास पुराने जमाने से दुनिया के सब लोगों को मालूम है। इसलिए उज़बेकिस्तान के लोग भारतीय फिल्में बड़ी दिलचस्पी से देखते हैं। भारतीय गाने और उर्दू में लिखी हुई गजलें बड़े मेहर और मुहब्बत से सुनते हैं। भारत के दूतावास को जो हमारी राजधानी में स्थित है हमेशा बड़ी इज्जत से याद करते हैं और उनसे अच्छे संबंध हैं।

दक्षिण कोरिया

सन ग्यङ छोई

मेरा नाम सन ग्यङ छोई है। मैं कोरिया (दक्षिण कोरिया) से आयी हूँ। 200 में पढ़ती हूँ। मैं 8 अक्टूबर से अप्रैल तक संस्थान में पढ़ूँगी। उसके बाद अगस्त तक यात्रा करूँगी। मैं भारतीय जीवन के विषय सीखने के लिए भारत आयी। सिर्फ हिंदी नहीं।

पर ऐसा लगता है कि किसी देश को सीखने और समझने के लिए भाषा सबसे आवश्यक होती है। क्योंकि भाषा में उन लोगों के मन की बात समझी जा सकती है। साधारण लोगों को जानने के लिए उनकी भाषा भी जानना चाहिए। इसीलिए मैं हिंदी सीखने के लिए केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आयी हूँ।

मैं कोरिया में हानगुक विदेशी भाषाएँ विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ती हूँ। वहाँ सिर्फ हिंदी नहीं सिखाते हैं। भारतीय विषय भी सिखाया जाता है। मैं भारतीय संस्कृति, दर्शन के बारे में दिलचस्पी रखती हूँ। इसलिए भारत आने को इस कोर्स के बारे में सुनकर आवेदन किया।

कोरिया में तीन विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। हानगुक विदेशी भाषाएँ विश्वविद्यालय (Hanguk University of Foreign Studies) को कैम्पस में बाँटी हुई है। उनमें अलग-अलग हिंदी पढ़ाई जाती है। और बुसान में बुसान विदेशी भाषाएँ विश्वविद्यालय (Busan University of Foreign Studies) है।

उसमें भी हिंदी की कक्षाएँ चलती हैं। इसलिए तीन विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। कोरिया में हिंदी जानने वाले लोग कम हैं। सिर्फ थोड़े व्यापारी लोग और विद्यार्थी हैं। अध्यापक-अध्यापिका के सिवाय। परंतु उनकी हिंदी अच्छी तरह से नहीं हैं।

सिर्फ कुछ लोग इन विश्वविद्यालय में हिंदी के सिवाय भारतीय संस्कृति, इतिहास, साहित्य आदि के बारे में पढ़ाया जाता है। और संस्कृत भी पढ़ाते हैं। हमारे स्कूल में कुछ फिल्म और पुस्तकें हैं पर आम तौर पर नहीं हैं। घर से निकलकर कोई हिंदी नहीं सुनी जाती हैं। और

रेडियो, टेलीविजन से हिंदी नहीं सुन सकते। हिंदी में कोई लिखने का कार्य और हिंदी किताबें हमारे भाषा में अनुवाद का कार्य कोरिया में बहुत कम है। पर आजकल भारतीयों के बारे में रुची बढ़ाई लगी।

जोंग् ऐ, ली

मेरा नाम जोंग् ऐ, ली है। मैं दक्षिण कोरिया से आयी हूँ। मैं भारत में हिंदी पढ़ने के लिए आयी हूँ। मैं भारत में पिछले साल (1995) अक्टूबर से इस साल (1996) जून तक रहूँगी। मैं एक सौ पाठ्यक्रम में हिंदी पढ़ रही हूँ। मुझे भारत बहुत पसंद है और भारत के बारे में अभी से ज्यादा जानना चाहती हूँ। इसलिए मैं हिंदी सीख रही हूँ।

कोरिया में तीन विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में से एक है, ''पुसान विदेशी भाषा विश्वविद्यालय'' में मैने हिंदी पढ़ी थी।

अभी तक हिंदी में लेखन कार्य और अनुवाद का कार्य कोरिया में बहुत कम है। लेकिन आज कल कोरिया लोगों को भारत और हिंदी के बारे में रुचि होने लगी है।

हमारे स्कूलों में हम फिल्मों और पुस्तकालयों से मिल सकते हैं और सुन सकते हैं। तथा दूतावास में भी हिंदी सुन सकते हैं। कोरिया में कुछ लोग तीनों विश्वविद्यालय में हिंदी ही नहीं भारतीय संस्कृति, इतिहास, साहित्य आदि पढ़ाई जाती है। लेकिन आजकल बहुत लोग भारत में संस्कृत भाषा पढ़ रहे हैं। इसलिए कुछ समय के बाद संस्कृत भी अपने देश में पढ़ेंगे।

सूरीनाम

राजेश कुपसिंह गुणो नारायण

मेरा नाम राजेश कुपसिंह गुणो नारायण है। मैं सूरीनाम देश से आया हूँ। भारत में मई तक रहने के लिए सोच रहा हूँ। हिंदी मैं इसलिए सीख रहा हूँ। ताकि मैं अपना धर्म संस्कृति को पहचान सकूँ। एवं दुष्टो को भी पहचानने में सहायता करे।

मैं चार सौ पाठ्यक्रम में हिंदी पढ़ता हूँ। सूरीनाम देश में हिंदी परीक्षा की मुख्य संस्थान, सूरीनाम हिंदी परिषद है। कुछ अन्य पाठशालाएँ जहाँ पर भी हिंदी पढ़ाई जाती है। जैसे अरविंद हिंदी पाठशाला, श्री दंगा समाच पाठशाला। इसी तरह और भी पाठशालाएँ हैं जहाँ पर हिंदी पढ़ाई जाती है। कुछ अध्यापक जो बहुत पहले ही भारत से हिंदी पढ़कर गए थे। तथा अब सूरीनाम देश में पढ़ा रहे हैं। जैसे की भाई हरिदेव सहतू, भाई भोलानाथ नारायण पंडित एम देव रहू वीर। हिंदी में लेखन कार्य किया है। स्वर्गीय शास्त्री चंद्रमोहन रंजीत सिंह जो सरनामी एवं हिंदी कविताएँ लिखी हैं।

अनुवाद की कार्य की है। भाई सहतू जी, भाई भोलानाथ नारायण जी। हिंदी सुनाई देती है। हिंदी फिल्मों द्वारा, आकाशवाणी द्वारा, दूरदर्शन द्वारा जो अपने देश में ही हैं। भारत

की राज दूतावास द्वारा हिंदी पुस्तकालयों में एवं उत्सवों पर जैसे कि होली पर्व, दीपावली पर्व एवं मंदिरों में जब कोई कार्य होता है। सूरीनाम देश में हिंदी भाषा के अलावा संस्कृत भाषा भी पढ़ाई जाती है।

धन्देव भगेलू

मेरा नाम धन्देव भगेलू है। मैं सूरीनाम का रहने वाला हूँ। हम भारत आये हिंदी पढ़ने के लिए। हमारा भारत में रहने का टाईम है ऑक्टूबर 1995 से लेकर अप्रैल 1996 तक। मैं तीन सौ पाठ्यक्रम में हिंदी पढ़ता हूँ।

हिंदी पढ़ने का उद्देश्य मेरा यही है कि हम अपने धर्म के सभी पुस्तकें जो हिंदी में लिखी गयी हैं, पढ़ सकें। जो बाकी धर्म के विषय हैं वो भी समझ सकूँ। हिंदी हमारी मातृभाषा है। खास करके बच्चों को पढ़वाने के लिए। हमारे देश में तीन संस्थाएँ हैं जो हिंदी के प्रचार और प्रसार में जोर तोड़ से लगे हैं। हिंदी परिषद, संस्था माता गौर और भारत दूतावास।

हमारे यहाँ हिंदी में कविताएँ लिखे जाते हैं, नाटक भी। साथ हर महीना पत्रिका भी निकाली जाती है। अनुवाद का कार्य भी चलता रहता है। हिंदी का प्रयोग फिल्मों में होता है, आकाशवाणी से, दूरदर्शन, दूतावास, में भी हम लोग हिंदी सुनते हैं। कोई यज्ञ जब होता है, मन्दिर में, त्यौहार के दिन, उत्सव में। हिंदी का प्रयोग होता है। हमारे देश में हिंदी के अलावा, सिर्फ उर्दू भी बोली जाती है और पढ़ाई जाती है।

रोमानिया

रमोना साव

मेरा नाम रमोना साव है। मेरे देश का नाम रोमानिया है। मैं भारत में हिंदी सीखने के आयी हूँ। क्योंकि मैं रोमानिया में हिंदी संगीत गाती और नाचती थी, इसलिए मैं गाने का मतलब समझना चाहती हूँ। मैं भारत में सितम्बर में आयी थी और यहाँ से मुझे अप्रैल में जाना पड़ेगा। मैं 100 पाठ्यक्रम में हिंदी पढ़ती हूँ। मैं हिंदी अच्छी तरह जानना चाहती हूँ, क्योंकि में अभिनेत्री बनना चाहती हूँ।

रोमानिया में विद्यार्थी थी और माध्यमिक शिक्षा में पढ़ती थी। मेरे देश में हिंदी भाषा सिर्फ विश्वविद्यालय में सीखतें हैं। हिंदी का प्रयोग फिल्मों में सुन सकते हैं और भारत के राजदूतावास में। रोमानिया में कुछ किताबें हिंदी से अनुवाद किया है। हमारी राजधानी में एक अध्यापिका बंगाली भाषा के लिए थीं। बाजार से भी हिंदी संगीत के कैसेट खरीद सकते हैं।

इटली

कियारा दिमासे

मेरा नाम कियारा दिमासे हैं। मैं इटली से आई हूँ। मैं भारत में हिंदी सीखने के लिए एवं इस देश की संस्कृति जानने के लिए आई हूँ।

मैंने मेरे विश्वविद्यालय में भारत का पुरातत्व पढ़ा है। इस समय में मैं "शिव की प्रतिमाओं का प्रारंभ में के बारे में शोध कर रही हूँ। मैं भारत में इस शोध के लिये आई हूँ। मैं भारत में तीन सितम्बर में पहुँच गयी हूँ और मई या जून तक यहाँ रहूँगी।"

मैं दो सो पाठ्यक्रम में हिंदी पढ़ रही हूँ। मैंने हिंदी को पढ़ना शुरू किया क्योंकि मुझे भारत की संस्कृति में बहुत दिलचस्पी है और भारत की भाषा पढ़ने में मेरे लिये भारत को नजदीक आने के लिये एक सुयोग हुआ है।

मेरे देश में हिंदी कोई नहीं बोलता है। मेरे देश में सिर्फ विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ा जाता है। इटली में हिंदी में लेखन कार्य उपलब्ध नहीं है। हिंदी से अनुवाद का कार्य नहीं है लेकिन संस्कृति से कुछ अनुवाद का कार्य है।

हिंदी का प्रयोग, मेरे देश में, विश्वविद्यालय के अलावा, कहीं भी नहीं मैं सुन सकती हूँ। मेरे देश में हिंदी के अलावा, उर्दू, तमिल, बंगाली और संस्कृत पढ़ाई जाती है।

जर्मनी

लार्स थम्क

मेरा नाम लार्स थम्क है। मैं जर्मनी से आया हूँ। मैंने मेरे देश में विश्वविद्यालय में हिंदी सीखी और मैं यहाँ आया क्योंकि मैंने सोचा था कि मैं भारत में भारतीय के साथ बोलता-सीखता हुआ हिंदी भाषा आसानी से और अच्छी तरह से सीख सकूँगा। लेकिन इससे महत्वपूर्ण मेरे लिए ऐसी आशा थी कि मैं भारतीय लोगों के बीच में रहकर उनके रहन-सहन और रीतियों के बारे में पढ़ सकूँ।

मैं सितम्बर ।। को भारत आया और मैं अगले सितम्बर तक यहाँ रहना चाहता हूँ। मैं पाठ्यक्रम दो सौ में पढ़ रहा हूँ। मैं भारतीय संस्कृति के बारे में पढ़ना चाहता हूँ। इसके लिए हिंदी एक माध्यम है। क्योंकि बिना भाषा देश की संस्कृति और समाज में प्रवेश पाना बहुत मुश्किल है। गाँव में रहने वाले लोगों का रहन-सहन मुझे दिलचस्प लगता है। लेकिन छोटे गाँव में लोगों को अंग्रेजी कम आती है जबकि हिंदी वहां भी बड़ा सहायक हो सकती है।

मेरे देश में हिंदी की स्थिति लगभग बिल्कुल नहीं होती। कई विशेष कालेजों के अतिरिक्त हिंदी का विषय नहीं मिलता है। हिंदी में लेखन कार्य नहीं है लेकिन हिंदी साहित्य के प्रमुख ग्रंथों का जर्मन अनुवाद बड़ी पुस्तक के दुकानों में पाया जा सकता है। न सिनेमाओं और टेलीविजनों, न रेडियों के कार्यक्रमों में मिलते हैं। हिंदी सुनने के लिए हमें या युनीवर्सिटी या दूतावास और इनके द्वारा आयोजन किये गये कार्यक्रम या उत्सव में जाना पड़ता है। इसके अलावा बड़े शहरों में कई भारतीय लोग रहते हैं जिनके साथ हम बात-चीत कर सकते हैं लेकिन बड़े शहरों के बाहर हिंदी सुनना काफी असंभव है।

दूसरी भारतीय भाषाओं की स्थिति हिंदी की स्थिति से भी बुरी है। जर्मनी राजधानी बर्लिन के तीन विश्वविद्यालयों में हिंदी के अतिरिक्त सिर्फ उर्दू, संस्कृत, और पाली पढ़ायी जाती है और पैसा कम मिलने के कारण बात ऐसी है कि उनकी आजीविता बिल्कुल निश्चित नहीं है।

श्रीलंका

लियनगे नलिनी मल्लिका

मेरा नाम लियनगे नलिनी मल्लिका परेरा है। मैं श्रीलंका से आयी हूँ। मैं हिंदी सीखने के लिए वर्ष 1995 सितम्बर 14 तारीख भारत आ गयी और अप्रैल के अंत तक यहाँ रहूँगी। मैं आगरा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में विदेशी पाठ्यक्रम तीन सौ कक्षा में पढ़ रही हूँ।

मैं हिंदी भाषा बहुत पसन्द करने वाली हूँ। श्रीलंका में बहुत मुश्किलों के बीच में हिंदी पढ़ती थी और इन्डियन हाई कमीशन में प्राथमिक, मध्यम और राष्ट्र भाषा परीक्षा पास की। मैं श्रीलंका आकाश वाहिनी में काम करती हूँ। अगर मैं अच्छी तरह हिंदी जानती तो मुझे वहाँ बहुत काम (गीत-फिल्म-समाचार, अनुवाद करना, हिंदी कार्यक्रम बनाना और हिंदी घोषक बनना) कर सकते हैं। इसलिए हिंदी भाषा के बारे में ज्यादा जानकारी होकर हिंदी भाषा के लिए सेवा करना पसन्द करती हूँ। इसलिए में हिंदी सीख रही हूँ।

श्रीलंका में हिंदी पढ़ने के लिए मौका बहुत क़म है। मगर कुछ विश्वविद्यालयों में और इन्डियन हाई कमीशन में हिंदी पढ़ाते हैं। इनके अलावा हिंदी जानने वाले लोग निजी हिंदी कक्षा चलाते हैं। हिंदी भाषा से लिखी हुई पुस्तक भी बहुत कम हैं। मगर अनुवाद की हुई पुस्तकें कक्षा में थोड़ा मिलती हैं और संचार साधन आयतन से हिंदी फिल्म, गीत, और समाचार अनुवाद करते हैं। मैं आकाश वाहिनी में (दफ्तर में) हमेशा हिंदी सुनती हूँ। इसके अलावा दफ्तर में और हाई कमीशन में हिंदी लोगों से बात करती हूँ। फिल्म और गीत कैसेट से लोगों को हिंदी सुनने का मौका मिलता है।

श्रीलंका में हिंदी के अलावा, संस्कृत, पाली, तमिल, मलयालम, उर्दू, आदि भारतीय भाषाएँ पंढ़ायी जाती हैं।

गयाना

योगेश्वर देवेन्द्र नाथ सिन्हा

मेरा नाम योगेश्वर देवेन्द्रनाथ सिन्हा है। मेरे देश का नाम गयाना है। मैं भारत में आ गया, हिंदी सीखने के लिए, क्योंकि मैं हिंदी अध्यापक होना चाहता हूँ।

मैं भारत से आया पिछले साल अक्टूबर में और मैं एक डिप्लोमा हिंदी में करना चाहता हूँ। क्योंकि मैं एक सौ का छात्र हूँ और जब मेरी कक्षा खत्म होगी तो मैं हिंदी नहीं सीखना चाहता।

गायाना में संस्थाओं और स्कूल में हिंदी नहीं सिखाता है। केवल कुछ मन्दिरों में हिंदी सिखा रहे हैं। हिंदी में लेखन कार्य नहीं होता। हिन्दू संगठनों मासिक पत्रिका निकालते हैं। मासिक पत्रिका में गीता के श्लोक या रामायण के दोहे/चौपाई या वेद मन्त्र के अनुवाद दिये जाते हैं। गयाना में बहुत हिंदी फिल्मों में है। रेडियो पर सिर्फ हिंदी गीत होते हैं, कभी-कभी धार्मिक उपदेश भी होते हैं। (वेद, गीता या रामायण से) भारत को हाई कमीशन में हिंदी सिखाने की व्यवस्था है।

नोट : छात्रों की प्रतिक्रियाओं में छात्रों की भाषा को यथावत् प्रस्तुत किया गया है।

लेखकों के पते

प्रो. महावीर सरन जैन
निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282 005

डॉ. सीताराम शास्त्री
सेवा निवृत्त रीडर
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

डॉ. टी. के. नारायण पिल्लै
प्रोफेसर-प्रभारी, प्रशिक्षण एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

प्रो. सुरेश कुमार
सेवा निवृत्त प्रोफेसर
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण
हिंदू कालेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. त्रिलोचन पांडेय
सेवा निवृत्त प्रोफेसर
रा. द. विश्वविद्यालय, ज़बलपुर

डॉ. अरुण चतुर्वेदी
रीडर, प्रसार एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

डॉ. श्याम प्रकाश
क. मु. विद्यापीठ
आगरा विश्वविद्यालय
आगरा-282005

डॉ. गीता शर्मा
रीडर, केंद्रीय हिंदी संस्थान
गुवाहाटी केंद्र, गुवाहाटी

डॉ. रविप्रकाश श्रीवास्तव
प्रोफेसर-प्रभारी, समाज-भाषा विज्ञान एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

प्रो. सूरजभान सिंह
सेवा निवृत्त प्रोफेसर
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

डॉ. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव
ओसाका विश्वविद्यालय
ओसाका, जापान

डॉ. चंद्रप्रभा
प्रोफेसर, सामग्री निर्माण एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

डॉ. अरविन्द कुलश्रेष्ठ
प्रोफेसर-प्रभारी, विदेशी पाठ्यक्रम
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

डॉ. ठाकुरदास
प्रोफेसर-प्रभारी, भा. प्रौ. एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

डॉ. वशिनी शर्मा
प्रोफेसर
भाषा प्रौद्योगिकी एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी
अनुसंधान सहायक, प्रशिक्षण एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

कु. पुष्पा बूलचंदानी
अनु. सहायक, विदेशी पाठ्यक्रम एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005

कु. वीना माथुर
अनु. सहायक, पत्राचार एकक
केंद्रीय हिंदी संस्थान,
आगरा-282005

प्रो. कात्सुरो कोगा
ओसाका वि. वि.
ओसाका (जापान)

मारिया नेज्येशी
लोसन्द वि.वि.,
हंगरी

आशुतोष शुक्ल
प्रकाशन विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान
आगरा-282005